नं० ५४८३-घ

सहस्ररजनीचरित्रम् (आख्यायिकाकाव्यः)(हिन्दी भाषायाम्)

पत्राणि १४~~६~~+११६ = २६८ (सम्पूर्णम्)

5483

5483

Part 1st F — 145 - 2 = 143
Part 2nd F — 119

Complete

नं० ६८७५ – क
सहस्त्ररजनीचरित
आख्यायिका काव्य
पत्राणि
कर्ता - ।
लिपिकालः — १९६६

ॐश्रीगणेशायनमः सहस्त्ररजनीचरित्र तृतीयभाग प्रारंभः सोरठा लंबोदर बुधिविधा
म कृपा जासु सुखवेदन अति करत तोहि परणाम तृतीय भाग पुराण करहुगानिम और
फिजनहकीकथा मलकाशहर जादने बादशाह शहर यारसे विनयकीकिहे स्वामी पूर्व
कालमेंएक व्यापारी असब नामकदमिश्क नगरका निवासी महाधनवान श्रीमान्था उसके
गानिम नामक एकपुत्र और अलकनव नाम एकपुत्री अतिगुणवान स्वरूपवान्थी जोको
ई उसपुत्रीको देखताथे वशहोयमोह जाताएकदिन अकस्मात् वहव्योपारी वृजन यन।
छोड़ कालवशभयाथा उसकेगोदाममें सो गठरियां उत्तम उत्तम वस्त्रकी बंधीहुई रक्खी
थीं जिसमें भारि भारिकमखाब और गुलबदन आदिकेथानथे और प्रति गठरीपर बु
गदादी अक्षरोंसे लिखाहुआथा उस समय सुलेमानका पुत्र मुहम्मदजवेनीदमिश्क
का बादशाहथा अपने पिताके मरने के पश्चात् एकदिन गानिमने अपनी मातासे पूछा
मैंने प्रतिगठरीपरबड़े बुगदादी अक्षरोंसे लिखाहुवा देखाहै उसकेक्या अर्थहैं उसकी
माताने कहा तुम्हारे पिताकी यहरीतिथीकि जबकिसीदेशमें व्यापार कोवस्तुलेजा
नेकी इच्छाकरताथा तो उसेबांधकेहरएकगठरीपर नाम उसनगरकालिखदेताकिला
दनेके समय भ्रमन पड़े इनदिनों बुगदादकी यात्राको उद्यतथा परंतुमृत्युने उसेअवसर।

नदिया अकस्मात् कालवश हुवा इतना कह उसकी माता पतिकी सुधि कर रकरोने लगी
तानिम अपनी माता का यह शोक न देख सका निदान उसकाल तो वह चुप हो रहा दूसरे
समय उसे प्रसन्न देख कहने लगा बड़ा खेद है कि मेरा पिता यह असबाब बुगदाद में ले
जाने न पाया अब मैं चाहता हूं कि मैं ही लेजाऊं और बेचूं उसकी माता यह सुन अति चिंता
करने लगी क्योंकि वह उसे बहुत प्यार करती थी फिर कहा हे पुत्र तुम अभी छोटे हो ऐसी
कठिन यात्राको क्यों कर करोगे एक तो मैं अपने पतिके शोक में दुखी हूं दूसरे तुम भी चा
हते हो कि अपने वियोगके दुःखमें मुझे डालो मेरे विचारमें तुम्हें उचित है कि यह मा
ल दमिश्कके व्योपारियों को थोड़े नफे पर देडालो और स्वतः इसको यात्रा मत करो गा
निमने अपनी माता का समझाना कुछ न माना और बुगदादकी यात्रा मनमें ठान न
तो सभेंजाय कईदास अपनी आवश्यकतानुकूल मोल लिये और सौ ऊंट और सब एए।
सामग्री तय्यार कर पांच छः व्योपारियों के साथ जो बुगदादको जाते थे होलिया और
अपने सबको और बहुतसे लोगों के साथ बड़े आनंदसे बुगदादको पयाण मार्ग में सब
मनुष्य थक गये इतनेमें बुगदाद नगर दृष्टि पड़ा उसको देखतेही सबलोग अति प्रसन्न
होय राहका श्रम भूल गये और नगरमें प्रवेश कर एक बड़े सरायमें जाउतरे परंतु गा

सौ॰
२

2

निमने उनसबके साथ रहने की इच्छानकी ओर अलग उत्तम स्थानमें रातको जायरहा भोरउठ उसने एक स्वच्छ गृहजो सुंदर वस्त्रोंसे अलंकृतथा औरउसमें पुष्पवाटिका जो अति उत्तम सुगंधित फूलोंसे सुशोभित थीकिरायेपरलिया औरकई दिन तक उसने उसमें आनंद सेनिवास किया जबभलीभांति विश्राम कर चुका तोएकदिन उत्तम वस्त्र पहिरब्योपारियोंकी सभामें जहांसब अपना असबाब लियेबेचने को एकत्रथे गया औरकईथान दासोंके हाथमें अपने साथले गयावहां जाय ब्योपारियों से भेंटकी उन्होंने यथोचितसत्कारकिया औरनमूने देखपसंद कर असबाव उसका मोललेलिया निदान गानिमने अपनी संपूर्ण वस्तुछोड़ कालमें बहुतसेलाभपरबेच डालीकेवल एकहीगठरी अपने निमित्त रहनेदी फिर दूसरे दिन अपने मंदिर सेनि कल बाजारकी ओरगया वहां सबदूकानोंको बंददेख विस्मित हुवा मनुष्योंसे उ सका कारण पूछा उन्होंने कहा अमुक ब्योपारी जो ब्योपारियोंमें मुख्यथा आज हो कालवशहुआउसके शोककी वहसब गयेहैं गानिमने पूछा वह उसके लिये किसमसजिद परनिवाज पढेंगे औरवहांसे किसकबरिस्तानमें लेजावेंगे ब्योपा रियोंने पता बता दिया गानिम अपने दासको विदाकर आप उस मसजिदकी ओर

गया और वहां पहुंच सुनाकि निमाज पढ़ अरथीको कवरिस्तानको ओर लिये जाते।
हैं गानिम भी उसी लोथके साथ होलिया और उसी कवरिस्तान परजो नगरसे बहुतदू
रथा जाय पहुंचा उस लोथको कबर पहिले सेही पत्थरकी वनी हुईथी और धूपके।
कारण बोरे और डेरे खड़े किये गयेथे लोथको कबरके भीतर लेगये और सब औ
पारी आदि उन डेरों में ठहरे और कुरानकी आयतें पढ़ने लगे लोथ गाड़नेके पश्चात्।
सब बोपारि एकही स्वरसे फातहा पढ़ने लगे इतनेमें रात्रिभई गानिमने रात्रहो जा
ने और शहर बहुत दूर होनेके कारण घर जानेकी इच्छा की इतने में वहांके रीतअनुसार।
भोजन आया जिससे ज्ञानहुवा कि वह डेरे केवल धूपके ही बचावके हेतु नहीं खड़े।
किये किन्तु रात्रिको सब मनुष्य वहां रहेंगे दूसरे दिन नगरको पधारेंगे गानिम यह
वात विचारने लगाकि मैं विदेशी हूं यदि रात्रिको यहां सब रह जावेंगे एसा नहो जा
वेर मेरे घर को लूटेंवा मेरे दासही ओसरपा संपूर्ण स्वालेटे किसी ओर भाग जावेंतो
मैं उनको कहां ढूंढता फिरूंगा इसहेतु स्वल्प भोजन कर मनुष्योंकी दृष्टि बचा अ
पने घरको चला चिंतासे जल्दी जल्दी भागताथा बहुधा एसा होताहै किजो मनुष्य कि
सी विषयमें शीघ्रता करताहै प्रायः दुख उठाताहै दैवयोगसे वह अंधियारे में भूलको

३
सं.र
३

3

रही मार्गमें जाय पड़ा घूमते घूमते आधी रात्रिको नगर द्वारपर पहुंचा परंतु वह द्वार उसकी
अभाग्यतासे बंद होगया था उसे रात्रि बिताने को रहने की जगह ढूंढ़ना अवश्य हुई नि
दान बहुत ढूंढ़ने से नगरके निकट एक कबरिस्तान मिला जो चारों ओर ऊंची दीवारों
से घिरा हुआ था उसके मध्यमें एक नारियल का वृक्ष लगा हुआ था उसने भीतर जाय कि
वाड़ मूंद लिया और एक बराबर जगह ढूंढ़ के घास पर लेट रहा परंतु कबरिस्तान।
के भयसे उसे निद्रा न पड़ी और घबराके उठ खड़ा हुवा और द्वारके सामने टहलने ल
गा इतनेमें दूरसे कुछ प्रकाश दृष्टि पड़ा कि उसी ओर चला आता है इससे वृक्षपर चढ़
गया और उसकी लताओंमें छिपकर बैठ रहा इतने में तीन मनुष्य सेवकोंके सदृश वस्त्र प
हिरे उसी कबरिस्तानमें आये एकके हाथमें लालटेन और दो उसके कई पग पीछे ए
क संदूक अपने कंधोंपर लिये थे अपने कंधेसे संदूक उतार एकने दूसरेसे कहा भाईयो
यदि मेरी बात सुनो तो इस संदूक को इसी भांति छोड़ नगरको चलो दूसरेने कहा हमा।
री स्वामिनी ने ऐसी आज्ञा नहीं दी जो हम ऐसा करेंगे तो बहुत पछतावेंगे क्योंकि उन्हों
ने संदूकके गाड़ने की आज्ञा दी है तीसरे ने कहा सत्य समझ कहता है तदनंतर वह फावड़े
से पृथ्वी खोदने लगे यहां तक कि उन्होंने गहरा गढ़ा खोदा और संदूक उसमें गाड़ प

लेगये गानिम यह सब वार्ता सुनविचारा कि इसमें द्रव्य भरा होगा किसी धनवान पर आ
पत्ति पड़ी है इससे यहां गड़वादिया है निदान हत्तसे उतारा और हाथों मे उसकी मट्टी स
रका संदूक को देखा उस संदूक में कुफल लगा था विचारने लगा कि इसकों कारतो हूं फि
र उसने कई ककड़ पत्थर के उठा एक को कुफल के नीचे और दूसरे को ऊपर रख ऐसा
जोर किया कि वह सुगमता से खुल गया फिर उसने संदूक का पट उठाया उसमें रुपये
के बदले एक अति रूप वती तरुण स्त्री को लेटी हुई देखा समझा कि वह सोती है फि
र यह विचारा यदि वह सोती होती तो कुफल के खड़खड़ाहट से अवश्य जाग पड़ती फि
र उसके बाजूबंद और कान के बालों को देखा कि वह हीरे के हैं और सुंदर बड़े बड़े नि
लमणोकी माला उसके कंठ में लटकती है और राजसी वस्त्र पहिरे है इससे जाना कि य
ह बीबी खलीफा के महल की है फिर उसके रूप अनूप पर रीझकर मोहित हुवा परंतु
इतनी सामर्थ्य न हुई कि वह समझे कि क्यों चुप चाप संदूक में पड़ी है पहिले गानिम ने
वही द्वार जिस से दास खुला छोड़ गये थे जाके मूंद दिया तदनंतर उसे संदूक में से बा
हर निकाल बराबर पृथ्वी पर रक्खा जब उसके बायु लगी तो कुछ हिलने लगी और आ
ये नेत्र खोल गानिम के देखे बिना इस सुंदर स्वर से पुकारी कि अरी जोहरा विस्तान शा

२
सेट
४

4

इसफकरस मरकलां कोसेवोस तहतनिहार तुम भक्करहांहो यहसबनाम उसकी दा।
सियों केथे जो रात दिन उसकी सेवाकरतीथीं और वह उनको सर्वदा सुकारती।
थी इसके रहने से गानिम प्रसन्नहुवा जब उसने देखा कि कोई उत्तर नहीं देती विस्मि
तहुई और भले प्रकार नेत्र खोल का देखा किमैं कबरिस्तानमें पड़ीहूं इससे वह अत्यं
त व्यथित होय बड़े शाहस से कहने लगी यहसुरदा जोने केलिये यहां आयाहैवा प्र
लयका समय आगयाहै संध्या से अपना बुरा हाल देखतीहूं गानिमने उसके सन्मुख
जायकहाहैं विदेशीहूं दैवयोगसे तुम्हारे प्राणबचानेके लिये यहां पहुंचा अबजो आ
ज्ञाहो उसप्रति पालन करूं उससुंदरी ने उसे सन्दूकमें कौन करयहां पहुंची औरको
न सके यहां लाया गानिमने संपूर्ण वृत्तांत कह सुनाया फिर उस मृगनैनीने गानिम
को देखनेहो स्वरवटाय कहाईश्वरका धन्यवाद है कि मेरे प्राण बचानेके लिये उसने तु
मको यहांभेजा इतनाकह फिर गानिमसे बोली कि तुम सवेरे नगरमें जाय एक खच्चर
किराये परलाइयो मैं इसी संदूकमें लेटीहूं तुम इसमें उफल देखच्चर परलाद मुझे ले चा
लियो मैं तो पैदल तेरे साथ चलती परंतु इन वस्त्रों से शरीर न छिपेगी और मैं तेरे यहां प
हुंच अपना संपूर्णवृत्तांत कह सुनाउंगी गानिमने संदूकको गढ़ेसे निकाल मिट्टीसेसा

फ किया फिर वह सुंदरी उसमें जाय लेट रही और गानिम ने संदूक रस्स युक्तिसे बंद
किया जिसमें वायु न रुके भोर को कब्रिस्तान से निकल शहर की ओर चला नगर का द्वा
र खुला देख तुरंत ही भीतर चला गया और एक खच्चर किराया कर फिर उस कब्रि
स्तान में आया और खच्चर वाले से कहा मैं एक खच्चर किराये कर एक संदूक कब्रिस
तान तक लाया था बहुत चाहा कि वह खच्चर वाला रात्रि भर यहां ठहरे और भोर को अस
बाब घर पहुंचा दे उसने न माना वस्तु छोड़ चला गया अब तू इस संदूक को नगर में मेरे
घर पहुंचा दे फिर उन दोनों ने संदूक उठाय खच्चर की पीठ पर रक्खा और उसे चारों ओ
र से बांध नगर की ओर चला गानिम संपूर्ण मार्ग में अति डरता जाता था कि वह हो य
ह भेद खुल न जावे जब वह संदूक समेत अपने घर में पहुंचा प्रसन्न होय खच्चर वाले
को विदा किया और अपने दास से कहा कि घर का द्वार मूंद दे उसने बंद कर दिया।
फिर उस सुंदरी को संदूक से निकाल पूछा अब तुम कैसी हो उस सुंदरी ने उत्तर दिया
मैं अच्छी हूं तदनंतर गानिम एक दास को अपने साथ ले बाजार में गया और उसके हेत
नाना प्रकार के दिव्य भोजन अपने हाथ से मोल लिये और उत्तम मद्य जो बादशाह के नि
मित्त जाती थी और फल वाले की दूकान से उत्तम फल मोल ले घर में आया और उन।

३
सते
५
5

को सथारकेथालियों में लगाय उससुंदरी के निकट लेजाकर कहा भोजनकरो उसनेक
हाजबतक तुम मेरे साथ बैठकेनखाओगे मैं नखाऊंगी गानिमभी लाचार होकर बैठ
गया जबउसने अपने हाथसे वस्त्र उतारएक ओररखदिया गानिम को उसवस्त्र के ए
क ओरबड़े अक्षरों में रेशमके कढ़ाऊ आदेख पड़े उसमें लिखाथा कि हू हाहू एसी
दमें तेरीहूं और तूमेराहै गानिमउसे पढ़बहुत घबराया औरकहनेलगाहे मृगनेनी
तुम अपनानाम औरवृत्तांत बतलाओ उसने कहा मेरानामफितनाहै मैं बादशाह।
हारूंरशीदकी प्रियाहूं बालावस्थासे मैं उनके महलमें आईहूं औरथोड़ेही काल
में मैं औरोंसे सबबातों मेंनिपुणहोगई खलीफा मेरी बुद्धि औररूपको देख प्यार
करनेलगा और अपने निकट एक मंदिर मुझे रहने कोदिया औरबीसदासिया औ
रसेवक मेरी सेवा और रक्षाके लियेनियत किये औरइतनाधन दियाकि मैं औरशा
हजादियोंके समानरहने लगी जबदामलकाजो बाहताकी स्त्रीहै इसवृत्तांतको सुनअ
फसोसाह करने लगी और मेरे मारडालने के विचारमेंहुई परंतु मेरी चातुरता से उसका
बसनचल सका निदान धीरे धीरे किसीमेरी दासीको लोभसे वहकाया जब बादशाह
किसी शत्रुसे युद्धकरने गया उसी बांदीने औसर पायापहिलेरातकोतो मुझे शर बतमें

कोई मूर्छाकी औषधि पिलाई जिसके पीनेसेमैं अचेत होगई तबउसने मुझे संदूकमेंबं
दकर गड़वादिया परंतु मेरी आयु बाकीथी इसकारणईश्वरने तुझेउसके बरिस्तान मेंप
हुंचाया और तेरे मनमें आलातेने संदूकको खोला और मुझे अपने चलाया यदिय
हबात जबदासुनेगातो निस्संदेह तुझे मरवाडाले अबजबतक कि बादशाह बाहरहै ते
स संदेह मैं तेरे भवनमें हूं जबवह नगरमें आवेगा और मेरेनहोनेके समाचारसुन अ
त्यंत विकलहोय अपनी सामर्थ्य भर ढुंढवावेगा औरजिस समय उसेयह मालूम
होगाकि मैं तेरे घरमें हूं उसी समय मुझे बुलवावेगा और तुझे बधकरेगा गानिम यह
सुनि बहुत घबराया और कहने लगा हे मृगनयनी तुमतो बचगई परंतु मेरा बचना
कठिन है फितनह ने कहा कोई किसीके घरका हाल नहीं जानता जबतक कि उ
सके घरका कोई भेदी प्रकट न करेगा गानिमने कहा यह सच है परंतु मेरे दास किसीसे
मित्रता नहीं रखते जिनसे उनका इस विषयमें बातें करें इसके विशेष सबकोई जानते हैं
कि तरुण पुरुष बिना दासीवा किसी सुंदरीके नहीं रहसक्ता यदि कोई तुमको मेरा दा
स देख लेगा तो उसे यही संदेह होगा कि तुमभी वही हो फिर गानिम अपनी शक्ति
भर किसीदासके सन्मुख फितनहको न करता यही बातें लाय करतेथे कि इतनेमें

सते
८
6

किसीने उसका द्वार खटखटाया गानिम उठाइतनेमें एक दासने आके कहा कि भोजन आ
पके निमित्त लायाहूं गानिम भोजनकी थालियां दासके हाथसे ले आप घरमें लेगया औ
र फितनहको भोजन करायके कहा हे देवी अब तुम आराम करो मैं अभी आताहूं यह क
ह बाजारको गया और दो बहुत अच्छी बांदियां और उत्तम उत्तम वस्त्र मोल ले आया औ
र बांदियोंको फितनाके सेवाकी आज्ञा दी वह महाप्रसन्न होकर कहने लगी अब मैं ई
श्वरसे यह मांगती हूं कि मेरे फिर दिन फिरैं और सर्व अधिकार प्राप्त होनेमें तुमसे उऋ
ण होजाऊं फिर फितनाने वार्तालापमें कहा हे स्वामी गानिमने कहा मेरा इतना सन्मान न
कीजिये कि तुम अपना सेवक समझिये फितनाने कहा यह तुम क्या कहते हो यदि इ
ससे अधिक सत्कार करूं तो उचित है क्योंकि तुमने मेरे प्राण बचायेमैं तुम्हारे उपकी
र का हजारवां हिस्सा भी नहीं कर सक्ती फिर क्या कारण है दास समझूं यद्यपि दो
नोंमें अधिक प्रीति होगई थी परंतु गानिमको भली भांति मालूम था कि जो वस्तु
स्वामीकी हो वह सेवकको भाग्य है जब संध्या भई उसने दीपक प्रज्वलित करके
बिछौने बिछाये और उनपर फल स्वच्छ मद्य बुगदादकी रीतिके अनुसार रक्खी वहांके वा
सी दिनको तो मांस और रोटी आदि भोजन करते रात्रिको केवल फल खाते नितदानव

हे दोनों भोजन करनेलगे औरदोनोंने गिलास मदिराके पीकर मदमग्न हो मीठे स्वरों से गा
ने लगे प्रथम गानिमने उसी समयके रचितपदन प्रीतिके विषयमें ललित स्वरोंसे गान कि
ये फिर फितनहने भी उसी विषयके गीत सुनाये जबरात्रि बहुत सी बीती गानिमओफितन
ह से विदा हो दूसरे स्थानमें जाय सोरहा बहुतकाल पर्यंत वह दोनों इसीप्रकार आनंद भोग
ते रहे औरसिवाय बातोंके कोई औरबात न होनेपाई खलीफा के भयसे गानिम रैनिको अ
केला सोता औरदिनको कहीं घरसे बाहर न जाता और जितना गानिम अपने तनमनसे फि
तनह पर मोहितथा उतनाही वह उसपर मोहितथी परंतु किसी विषय से प्रयोजन न रखते
बगदादमें सिवाय एकदासीके इसबातको कोई न जानता औरवह तीनों दास भीजो सन्दूक
कोकबरिस्तानमें गाड़ आये थे न जानते परंतु मलिका जेबदा अपने पतिके भयसे प्रति
समय चिंतामें रहती इसीशोचमें इहाको कि उसीकी दाई औरबाल्यावस्थामें उसेखिला
या बुलवा भेजा जबवह आई तब उससे कहा हे माता मैं तुमसे सदैव अपना दुःख क
हाकरती हूं औरतुम मुझे उसमें सुगम बताय मेरी सहायता करतीहो अबभी तुमको
वैसीही सलाहके लियेकि जिससे मुझे रातदिन आराम नहीं है बुलायाहै तुमकोई इ
स विषयमें उपाय बताओ कि जिससे मैं बचूं फिर सुंदरी अपनाहत्तांत कह सुनाया ब

२ सत्त ८

7

है कहा कि महासतीथी कहने लगी हे प्यारी पुत्री यह कौन बड़ी बात है तुम धीर्य रक्खो।
कुछभी चिंता मति करो मैंने खलीफा को इस बात के खफा न होने के लिये एक यत्न सोचा
है तुम वही करो जुबैदा ने कहा वह क्या है उसने कहा कि एक लकड़ी का पुतला बड़ा सा
बनवाओ मैं उसे पुराने वस्त्र से लपेटूंगी तुम आज्ञा देना कि इस लोथ को बादशाही कबरिस
तान में गाड़ो और तुरंत ही उस पर बड़ा विशाल मकबरा बनवाओ और एक कबर के चिन्ह को
काले वस्त्र से पहिना कबर पर रक्खो और उस कबर के चहुँ ओर बहुत से दीपक प्रज्वलित करा
ना और तुम आप भी उसके सोग में काले वसन पहिन कबरिस्तान में कभी कभी जाना इसी
भांति तुम्हारी और फितनह की दासियां और सब ड्योढ़ी काले वस्त्र पहिन प्रति दिन उस
कबरिस्तान में जाय बिलाप करें खलीफा जब आय यह दशा देखेगा तो अवश्य ये बड़ा
करके पूछेगा उस समय तुम आंसू बहाय कहियो कि यह फितनह का सोग है कि वह
अकस्मात् तुम्हारे पीछे काल बश हुई और मृतक कबरिस्तान में गाड़ी गई और उस
को कबर भी बनवाई गई खलीफा यह सुन निःसंदेह रोवेगा और उसके मरने का बिश्वा
स भी हो जावेगा यदि तुम्हारी ईर्षा को बिचार कर कबर खोद देखा चाहेगा तो कबर खोद
ना और मृतक को निकालना धर्मशास्त्र के विपरीत है और इससे उसका प्रयोजन है कि ए

क दासीके लिये इतनायरिश्रम करे इस हेतु मैं काष्ठका पुतला बड़ी रत्वाके साथ किसी अ
च्छे कारीगरसे बनवाऊंगी जिसमें कोई भी न जानेंगा कि किस निमित्त बनगया है इतनाक
ह उसने कहा है सुंदरी उसी बांदीको जिसने फितनहको शरबतमें मूर्छाकी औषधि दी
थी पिलाई है चुपके सबुत्नाके कहोके अपने लोगोंसे प्रसिद्ध कर कि मैंने फितनाको आप
नी शय्यापर सुवा पायाहै और उसमकानमें जिसमें फितनाथी मृत भीतर उसके किसी
कोन जाने देवे और यही बात तुम्हें कहला भेजे तुम इसबातको सुनतेही मकबर कोस
ग करनेकी आज्ञा देना जबदा यह वचन हुद्दासिहनहीं प्रसन्न हुई और अपनी सहेलकोलाल
अमोल हीरेकी एक अंगूठी उसदी और कंठसे लगाय कहा मैं इस उपाय बतानेसे तुम्हा
री बड़ी उपकार मानती हूं मुझे थोड़ा अजा तुम काष्ठका पुतला तुरंत बनवालाओ और शेषवस्तु
मैं अभी यहां तयार करतीहूं वह बड़ा पुतला बनवालाई और उसपर सुहाने वस्त्र लपेट
दिये और मसरूरको आज्ञा दी कि फितनाकी लाशको लेजाय बादशाहीक बरिस्तान
मे गाड़े उसने उसकी लोथ लेजाय वहीं गाड़ दिया फिर आप दासियों समेत काले वस्त्र प
हिर उसके लिये रोने लगी दूसरे दिन अबैयोंको वहां भेज उसकी बड़न बमीकबर ब
नवाई भोर और संध्याको दास दासियां कबरिस्तानमें एकत्र हो फितनहके लिये सोगक

रते निदान नगर भरमें फितनह कामरना प्रसिद्ध होगया गानिमने इस समाचारको सुन फि
तनह से कहा है मृग नयनी तुम्हारे काल वश होने का समाचार नगरभर में विख्यात हु
आहै फितनाने कहा ईश्वरका धन्यवाद है किमैं तुम्हारे कारण जीती हूं यदि ईश्वर चाहे
गा तो यह सब छल जो वह करती है उसीसे लज्जित होगी और हम तुम दोनों कामनोंके
एक न एक दिन सिद्ध होगा और इस सेवा और परिश्रम का फल जो तुमने बिना प्रयोजन
किया है खलीफ़ा एक न एक दिन तुमको देगा और ईश्वर तुमको मुझे दे डाले गानिमने क
हा मैं यों ही तुम्हारी दया से प्रसन्न हूं बुधजनों ने कहा है जो वस्तु कि स्वामी की है सेवक
को उसे वर्तमान चाहिये कि वहां हाथ भी न करनी चाहिये निदान तीन महीने के पश्चात् खली
फ़ा अपने शत्रुओं को विजय कर बुगदाद में आया सबसे अधिक उसे फितना के भेंट की
लालसा थी पहिले उसी के मकान में गया तो जेवदा और सब छोटे बड़ों को काले वस्त्र प
हिन सोगमें देख विस्मित भया कि यह किसका सोग है जेवदा ने छल से ठंठी सांस खींच
कहा यह विलाप फ़ितनह का है कि तुम्हारे पीछे अकस्मात् मृत्यु के काल वश भई
खलीफ़ा इस समाचार के सुनते ही शोक सागर में अचेत हो गिरने लगा तो जाफ़र बर्मकी
रने जो उसके साथ था उसे संभाल लिया जब वह सचेत भया तो पूछने लगा कि मेरी परम

प्रियाफितनाकोकहांगाजोहैजेवदाने कहाकि मैंनआपही उसकासबकामकिया औरउसकी
मसजिद बनगई यदि आप आज्ञादें तोमैं आपके साथ वहां चलूंखलीफाने कहाकिमैंहजू
रके अवश्यपनहीं और उसी समयवस्त्र बदलनेबिना खलीफा मसरूरको साथलेकबरि
स्तानमें गयातोक्या देखताहै किएक चित्र काले कपड़े पहिने हुये रक्खाहै और उसके
चहुं ओरदीपक बलरहेहैं और एक वस्त्र वहां बड़ी सजावट सेधराहै अमीन विस्मित औ
रआश्चर्यान्वित हुआकि सवेंनियाअमह होनेपर भीजेवदाने इसभांतकैसे कबर बनवाईहै ये
सानहोनेवास्तव मेंफितनान मरीहो औरमेरी स्त्रीने औसरपाय महलसे उसेनिकाल
दियाहोवा किसीहूर जगह भिजवादियाहो जहांसे कोईहालउसकानसुन पड़ेउस के
उपरांत वहविचारने लगाकि मुझे विश्वास नहींकिजेवदाने मेरीप्रियाकी अपेक्षा ये
साकियाहो फिर बहुकाल पर्यंतचिंतितरहा निदान आज्ञादीकि इसचित्रको जोकब
रपररक्खाहै तुरंत उतार उसकेवस्त्र उतारो जबवह नग्नकिया गयातोक्यादेखा किएक
काष्ठके पुतले कोकपड़े पहिराये हैं यहदेख उसे अधिक ब्याकुलतानहुवा औरचाहा।
कि कबरखुदवाके फितनहकी लोथदेखे किवास्तवमें वह मरीहै वानहीं परंतु वि
द्वानों ने उसेमनाकियाकि हमारे धर्मशास्त्रमें कबर खुदवाना वर्जितहै यहसुन खलीफा

१ सन्त ८ ९

ने कबरको न खुदगया और बहुतसे कुरान पढ़नेवालोंको उसपर नियत किया प्रायः आपभी
वहांजाता और रोता निदान एकमासपर्यंत फ़ितना के ध्यानमें जाफ़र वज़ीर और सभासदहे
न रुदन करतारहा कोई दिन ऐसा न था कि खलीफ़ा उसको स्मरण करता और हायहाय क
रके रोता इस अवधिमें सिवाय रोने पीटने के दूसरे कार्यको ओर ध्यान खलीफ़ाने न दिया
चालीसदिन तक उसकी यही दशारही फिर उसने काले वस्त्र उतारे और सबको कपड़े
बदलने की आज्ञा दी तिसपीछे बहुतसी रातों के जागरण के कारण शय्यापर जाय सो
गया दैवयोगसे दो बांदियां अपनी चौकी के अनुकूल एक सिरहाने और दूसरी पांयते।
की और बैठी ऊई चिकन काढ़ रही थीं सिरहाने वालीका नाम नूहतनिहार था और दूसरी
का नाम नगाहतपदिलीने खलीफ़ा को सोया जान उससे कहा मैंने आज शुभ समाचार सु
ना है हमारे स्वामी जब जागेंगे तो उनसे कहूंगी खलीफ़ा सुनते ही प्रसन्न होंगे फ़ितना न
ही मरी वह कुशलपूर्वक है दूसरीने कहा हाय परमेश्वर यह कैसी बात है कि फ़ितना अ
बतक जीती है उसने ऐसे बड़े साहस से इस वचनको कहा कि खलीफ़ा जग उठा और क
हने लगा तुमने क्या शोर करके मुझे जगाया उसने विनय की अय हुज़ूर मेरा अपराध क्ष
मा कीजिये मैंने ऐसी बात सुनी जिससे मुझसे धैर्य न रहा अभी मैंने सुना है कि फ़ितना न

ह जीतोहै खलीफ़ा ने आश्चर्थित होय पूछा वह कहां है उसने बिनती की मैंने आज मे
ध्याको फितना के हाथ का लिखा हुआ पत्र एक मनुष्य के हाथ पाया है जिसमें उसने अप
ना संपूर्ण हतांत लिख दिया है मैं चाहता था कि आपको दिखाऊं पर जब मैंने देखा कि
आपने एक महीने पीछे अब आराम किया है इसलिये वह पत्र देखाना उचित न जाना
खलीफ़ा ने कहा उस पत्र को शीघ्र मुझे देखने में विलंब क्यों किया उसने वह पत्र फट खली
फ़ा को दे दिया खलीफ़ा ने बड़े हर्ष से उसे खोल पढ़ा उसमें फितना ने अपना संपूर्ण हत्तांत
और गानिम की सेवा का हाल लिखा था खलीफ़ा ने वह पढ़ गानिम के नाम पर लज्जित हो
य महा अप्रसन्न हुआ और जैबदा को इतने नाम से बड़े आश्चर्य में हो समझा कि फितना से गा
निम ने अवश्य भोग किया होगा यह विचार मन में कहने लगा है इहात चार मास तक उस त
रुण व्योपारी के घर में रही और सदैव माल्ह मन हुआ मैंने यहां पंच कितना डावने रे मरने मे
उगाया निदान खलीफ़ा कोपित होय शय्या से उठ सभा में आया वहां सभासद उसके आ
गमन की बाट देखते थे वज़ीर जाफ़र नरन के सन्मुख आय परंतो हम हाथ बांध खड़ा हुआ आ
खलीफ़ा ने आज्ञा दी मैं एक विषय में तेरी परीक्षा लेता हूं तू चार हज़ार सिपाही चौकी
पहरे के अपने साथ लेके गानिम व्योपारी दमिश्क के निवासी को जो अबू अयूब का पुत्र है पकड़ला

२
सद
५

10

और फितनह नामक मेरी दासीको जो चार महीनेसे उसके घरमें रहतीहै हाथसे जाने न
पावे उसेभी पकड़ अपने साथ लेते आइयो और उसके महल को खुदवाके धरतीके ब
राबर करडाल मैं उन दोनों को कठिन दंड दिया चाहताहूं वज़ीरने यह आग्यापायसेना
ले सिधारा और गानिमका महल चहुं ओरसे घेरलिया और बेलदारभी खोदने कोलि
ये हाजिर हुये तिसपीछे बरकंदाज़ों को आज्ञादीकि चेतन रहो किसी ओरसे वह चोपा
रीबाहर निकलनेन पावे उससमय गानिम और फितना दोनों भोजनकर चुकेथे अकस्मा
त् फितनाने घरकेद्वारेसे जो मार्गमें थाका देखाकि जाफ़र वज़ीर सेना लियेहुये द्वार पर
खड़ाहै उसे विश्वासहुआकि यह कटक गानिमके पकड़नेके हेतु आयाहै समझग
ईकि मेरा पत्र खलीफ़ाको पहुंचा उसने वज़ीरको मेरे लेनेको भेजाहै महाभयभीतहो
कांपने लगी और यहभी विश्वासहुवाकि खलीफ़ा मेरी आपत्तियोंको सुन कदाचित्‌ ध्
येन हुआ करेहेगा परंतु गानिमको देखतेही बधकर डालेगा यह शोच उसने गानिमसेक
हाकि बहुत सेनाहमें पकड़नेको नगरखड़ीलिये वज़ीर सहित खड़ीहै और कोतवालभी
उसके साथ है गानिम यह वचन सुननेही भयभीत हुआ किबात करनेकी भी शक्ति न रही
फितनह नेकहा बैठेक्याहो समय बहुत नहीं रहा यदि सुझे प्यार करते हो तो उठो और

अपने वस्त्र उतार दासों के कपड़े पहिन अपने मुख और हाथों में काली भस्म मलो और र
सोई के पात्रों का टोकरा अपने शिर पर रख यहां से निकल जाओ जिस भांति हो सके अपा
नी रक्षा करो सेना के लोग रसोइये का मजदूर समझ के कुछ न कहेंगे यदि स[illegible]कि मा
लिक घर का कहां है तो उनसे कहियो घर में है गानिम ने कहा सब के केवल तुम्हारे ही लि
ये भय है अपने प्राण का कुछ सन्देह नहीं फितना ने कहा मेरा कुछ भी शोच न करो मैं अप
ने को घर की वस्तु सहित बचालेंगी और जब खलीफा से मेरा सामना होगा तो तेरी ओर से भी
सफाई करूंगी यदि इस समय तू उसके सन्मुख जावेगा तो निस्सन्देह वह तुझे मार डालेगा
गानिम यह सुन बहुत घबराया कि क्या करूं फितना ने उसे चिन्ता में देख कहा है प्यारे जो
मैं कहती हूं करो गानिम ने निरुपाय हो दासों के महा मलिन वस्त्र पहिरे और रसोइया हो
और हल्के की भस्म देह पर लगाय खाली पात्रों का टोकरा शीश पर रख फितना से विदा
हो बाहर निकला और सीधा किसी कूचे को ओर चला सिपाहियों ने गानिम को रसोइये
का लड़का समझ कुछ न कहा जब वजीर के सन्मुख से होके चला उसने भी न जाना कि य
ह वही है जिसके पकड़ने को यहां आया हूं और रिसालदार आदि सिपाही जो वजीर के
पीछे खड़े थे उन्होंने भी उसे न पहिचाना गानिम इसी प्रकार से नगर के द्वार तक पहुंचा

३
सर
॥

और वज़ीर द्वार खुलवाय भीतर आया तो क्या देखता है कि मंदिर में बहुत संदूकें और थै
लियां रक्खी हैं जिनमें उत्तम उत्तम वस्त्र और बहुतसी द्रव्य भरी है और वह सब धनगा
निमका था जो उसने अपने व्योपार की वस्तु बेचकर धराया फिर तो वज़ीर को देख उठी
और चरण छूकर थरथर कांपने लगी जैसे कोई मारे जाने के समय कांपता है और वज़ीर से
विनती की कि जो कुछ खलीफ़ा की आज्ञा है वह मेरे शीश नेत्रों पर सुख से सब वर्णन की
जिये वज़ीर ने उसके चरण चूमकर कहा है सुंदरी मैं केवल इसी हेतु आया हूं कि तुम्हें यहां से
शाही दर्बार में ले जाऊं और उस व्योपारी को जो इस घर में रहता है खलीफ़ा के निकट प
हुंचाऊं फिर तो उसने कहा मैं वर्तमान हूं सुफल चलो और वह व्योपारी जिसने मेरे प्राण की
रक्षा की है वह तो यहां नहीं है अनुमान एक मास के बीता होगा कि वह व्योपार को व
स्तु लेके दमिश्क को चला गया और मुझे अपनी वस्तु की रक्षा के लिये जो इन संदूकों औ
र थैलियों में है यहां पर छोड़ गया है अब मैं विनय करती हूं कि इन संदूकों और थैलियों
को यहां से उठाके बादशाह के महल में भिजवा दो वज़ीर ने कहा बहुत अच्छा और मजदू
रों के शिर पर उन संदूकों और थैलियों को रख मसरूर को सौंप दिया कि खलीफ़ा के नि
कट भेज दे फिर वज़ीर ने कोतवाल के कान में कहा तुम इस घर को खुदवाके धरती के

बराबर करअला यदिकहीं वहऔयारीछिपाहोगातो विदितहो जावेगा निदानइधर म
कान खुदनेलगा औरउदर बजीर औरफितनाटोनों बांदियों समेत दर्बार शाहीकी सिपा
हे कोतवालेनि क्षणभरमें उसमकानको खुदवाय मैदानकरदिया जबकहींभी गानिमका
चिन्हनपायातो बजीरसे आय यहहालकहा खलीफाने बजीरकोदूरसे आतेदेख कहा
कीक्यातैने मेरी आज्ञापालनकी उसने विनयकर कहा अयहजूर मैंने आपकी आज्ञानुकू
लपहिलेतो गानिमको ढूंढा बिदितहुआकि एकमहीनेसे वहदमिश्कको चलागयाफि
रउसकाघर खुदवाडाला औरजोकुछ धनादिकहाथलगा उसे मसरूरको सौंपदिया
औरफितनाको लेके आयाहूं खलीफा गानिम केनपकड़े जानेपर अधिककोपितहु
वा औरफितनाको अपने समीपबुलवायनतो उससे कुछ बातकी औरनउसको औरदे
खा समझाकियह अवश्य औयारीके साथरहीहै फिर महाकोपितहो मसरूरको आ
ज्ञादीकी इसदुष्टाको लेजाय अमुक काराग्रहमें कैदकरो यहकाराग्रह शाही महल
कीदीवारके समीपथा प्रायः अपराधी बांदियां उसीकाराग्रहमें कैदकीजांती मसरू
रने यह आज्ञापाय उसेवहीं कैदकिया औरखलीफाने उसीक्रोधमें मुहम्मदजवेनी
औरदमिश्कके बादशाहके नामयह पत्रलिखा हारूंरशीदका पत्र मुहम्मदजबेनी

२
सत्र
१२

12

के नामपरभाई तुमजानो औरआगाहहोकिगानिम नामीदमिश्कका सौदागर असव
कापुत्र मेराफिततना अति सुंदरीदासीको बहकाकेलेभागा तुम इसपत्रके पढतेही अपनी
सामर्थ्यभर उसेढूंढना औरजहांपावना बेड़ी हथकड़ी डालनेतीनदिन तक उसे संपूर्णनगर में
फिराना करना किन्तुकोतवालीके सिपाहियोंको आज्ञादेना किहरगलीमें उसकोडंमारें
औरएक मनुष्य उसके आगेयह कहताजावेकि यहदंड उसी मनुष्यकाहैजोकोई बाद
शाहकी चोरीकरेवा उसकीदासीको भगायले जावेफिर पहरेमेंकरके उसे मेरे निकटभेजदे
ना औरउसकाघरखोदडालघलवाना यदिउसके मातापितापुत्री बहिनभाईजोकोई उस
के कुटुम्बमेंसेवहांहोउसकोभी इसीभांतिकादंडदेना औरजो कोई उसनगरका निवा
सीप्रकटवाउनमें उनकी सहायताकरेउनकोभी यहीदंडदेना इतनालिखिपत्रबंद कि
या और उसपर अपनी मुहरबनायहतको दिया औरआज्ञादीकितुरंतदमिश्कको पहुंच
और एक कबूतर अपनेसाथलेताजापत्रकी रसीद जावनीसे लेके उसके पांवमेंबांधइधर
को औरउड़ादीजियो जिससे मुझे मध्यान्ह पर्यन्त मिले उससमयमें कबूतर एकप्रकार
के पैसेथे किमहीनेकारस्ता चारदिनमें लांघ जाते औरजिसनगरवास्थानमें उनमहो
नेवभ्यासजाते वंही पहुंचते निदान हत एकरातदिनमें दमिश्कमें पहुंचा औरजवनीके

सन्मुख जाय पत्र दिया उसने अपने नाखूनसे उनर पत्रको बड़े सन्मानसे ले अपने शीसपर र
क्खा ओर तीन बेर हम कर पढा उसके पढ़नेहो थोड़े परसवार होय अपने सरदारों ओर कोत
वालको साथ ले गानिमके घर गया गानिम जबसे दमिश्कको बुगदादमें गयाथा तबसे
कोई भी पत्र अपनी माताको न भेजाथा केवल उन्ही व्योपारियोंसे जो गानिमके साथ बुगदाद
को गयेथे उसकी माताको कुशलका कुछ हत्तांत विदित हुवाथा इसीकारण उसे विश्वास
हुवाकि गानिम मरगया यदि जीताहोता तो इस अवधिमें कुछ न कुछ हमें समाचार अव
श्य भेजता निदान अति विलाप कर ऐसाशोक किया जैसे कोई अपने हो सन्मुख मरा हु
वा देखे ओर एक कबर गानिमकी अपने गृहमें बनवाय उसका चित्र उस परधर रात दि
न उसी कबर पर रहा करती ओर भोर ओर संध्या उसकी स्तुति करतीथी मानो वास्तवमें उस
की लोथ वहां होगई है ओर स्त्रलकन बउसकी पुत्री गानिमकी बहिनभी उसी भांति।
अपनी माताके साथ रोती पीटती ओर कभी कभी गलीके लोगभी उनका रुदन सुन उन।
के साथ रोते निदान जब नौने उसके द्वार पहुंच हांक दीतो भीतरसे एक बांदी आई ज
बनौने गानिमको पूछा वह दासी प्रथम नो दमिश्कके बादशाहके दरोगाको देख विस्मित हुई फि
र संभलके कहाकि बहुत दिन हुये वह मरगया उसकी मा ओर बहिन कबर पर बैठी रो

२
सत
१३

13

या करतीहैं जबेनीने दासीके कहने परकुछ विचार नकर अपने अथानों और सिपाहियों
से कहा तुम उसके घरमें घुसके ढूंढो इसके उपरान्त आपभी घरमें प्रवेशकरका देखा
तो है कि गानिम की माता और बहिन उसकी कबर परबैठी हुई महाविलाप कर रही हैं
उनदोनों आपत्तिकी मारियोंने परपुरुषको देखमुखअपना ढांपलिया फिर गानिम की
माता दौड़बादशाहके चरणोंपरपड़ी बादशाहने कहा हे सुंदरी हमतेरे पुत्र गानिमको
ढूंढते हैं वह यहां हैयानहीं उसनेकहा बहुत दिन हुयेकि वह मरगया हम अब इसकब
र परबैठी हुई सोगमें हैंयह कह गानिमको स्मरणकर इतना रोई कि आवाज़ उसकी बंदहो
गई और हिचकी लग गई जबेनीकि अमंमद दयावानथा यह दशा देखि विवशहोय रोने
लगा और अपने मनमें विचारा यदि अपराधी है तो गानिम है उसकी मा बहिन ने कौन
सा अपराधकिया हाहारूंरशीद महाकठोर है कि इनबिचारी निर्दोषस्त्रियोंके दुखदेनेको
नाकीदकरलिखा है इतनेमें वह मनुष्यजो नगरमें चहुँ ओर गानिमके ढूंढनेकोगये थे
आये और बादशाहसे कहा हमने गानिमको नहीं पाया और गानिमकी माबहिनके रो
ने पीटनेसे विदितहुवा कि वह मरगया जबेनी बादशाह न चाहताथा कि इनको किसे
भांति कालेश दे परन्तु हारूंरशीदके भयसेलाचारहो गानिमकी मातासे कहा हे माता

तुम और तुम्हारी बेटी इस घरसे निकलो यह सुनत वह दोनों बिचारियां वहां से निकलीं तब ।
जबेनीने अपना वस्त्र जो बहुत चोखा और लेवाथा उन्हें उठादिया और अपने निकट उन्हें
बैठा लिया तिसपीछे उसने पुरवासियोंको आज्ञादी कि इस घरको लूटलो यह सुन ह
जारों मनुष्य उसगृहमें घुसपड़े और जो कुछ धनवस्तु वर्तमान था लूटके लेगये वह दो ।
नों स्त्रियां इस दशाको देख विस्मित हुईं क्योंकि कुछ उनको इस आपत्तिका हेतु न बिदित
तथा इसके अनंतर बादशाहने कोतवालको आज्ञादी कि इस घरको खुदवाय बराबर क
र कोतवालने बादशाहकी आज्ञापाय घरको खोदवा मैदान किया पीछे बादशाहने उनदो ।
नों मावेटियोंको अपने महलमें लेजाय उनसे कहा मैंने सब दुःख तुमको हारूंरशीद बा ।
दशाहकी आज्ञासे दिये दूसरे दिन आज्ञादी कि इनदोनोंको नग्न करडालो और प्रजाके
सन्मुख चाबुक मारो जिस समय वस्त्र उतारे गये जबेनीको उनका शरीर कोमल और ला
ल देखकर दयाउपजी परंतु बादशाहकी आज्ञासे लाचार थी निदान उनके बचाने को ।
एक बहुत मोटा कमाल चोजेंके बालोंका उन्हें पहिना दिया और उनका सिर खुद करउ
नके सिरके केश बिथराय दोनों के थापर डालदिये अलकनके बाल बहुत पतले
और इतने लंबे थे कि उसकी पंडीपर्यंत पहुंच धरनीसे जाय लगे निदान इसीउद्देशासे

२
सत
ख
34

उन्हें पुरवासियों के समूह में विख्यात करते नगर में ले गये और पीछे उनको नवाल सि
पाहियों को लिये हुए साथ भेजा और उनके आगे ठठोरिया यह कहता चला कि यह दंड
उन मनुष्यों का है जो बादशाह का अपराध करें जब वह इस महा दुर्दशा से विख्यात हो
तो हुई चौक में आई तो लज्जा से उन्होंने अपना मुख बालों से छुपा लिया संपूर्ण नगर
के निवासी उन्हें इस दशा में देखने लगे और नगर की स्त्रियां कोठों और झरोखों से इ
स हाल को देख और उनको निर्दोष समझ बहुत पछतांई विशेष अलक नवका रूप अ
नूप और यौवन देख अति चिंता कर हाथ मलने लगीं और बालक उनके रोने पीटने को
सुन भयभीत हुए जब संध्या भई तो उन दोनों को शाही महल में लाये जब वह बेचारियां
आपन की मारी हुई इस घोर कष्ट से अचेत हो गई दमिश्क की मल्का भी उनकी यह द
शा सुन अति खेद को प्राप्त भई यद्यपि बादशाह ने निषेध किया था कि कोई भी इनकी
सहायता न करे तथापि मल्का ने अपनी दासियों को गुप्त भेजकर उनको भोजन भिज
वाया दासियों ने वहां जाय उन्हें मूर्छित देख उन पर गुलाब नीर छिड़का और शरबत
पिलाई जिससे वह सचेत भई तब उनमें से एक ने गानिम की माता से कहा तुम्हारी इस दशा
सुन सब को खेद भया विशेष मल्का को और हमको मल्का ने आज्ञा दी है कि तुम्हारी य

थाशक्तिसेवाकरेगानिमकी माताने उनदासियोंकागुणमाना औरमल्काको बहुतसे आ
शीर्वाद देकर कहा बादशाह नेहमसे यह नहीं कहा कि खिलीफाहमपर कोंइतना को
पितभया जोइसदंड औरअप्रतिष्ठाको आज्ञादीदासियोंने कहाहै सुंदरी तुम्हारे इसदुख
काहेतु तुम्हारा पुत्रहीहुवा जिसका नामगानिमहै उसपरदोष लगाहै किवह खिलीफा
कीएकमहासुंदरी चेरमुत्रवीप्रियाको छलसेलेभागा इसहेतुबादशाहकोपितहोय तु
म्हारे दंडदेनेकी आज्ञाभेजीहै किसीकोसामर्थ्य नहीं किउसकी आज्ञाभङ्ग करेहमारे
बादशाहनेभी उसकेभयसे निरुपायहोतुमकोयह कहदिया परंतुइसबातसे मनमें ब
हुतपछताताहै औरहमभी तुम्हें निर्दोषदेखपश्चात्तापकरतीहैं गानिमकी माताने कहा मैं
अपनेपुत्रके स्वभावकोभलीभांति जानतीहूं उसके शिक्षाऔरउपदेशादिमें मैंनेबहुतपरि
श्रमकिया विशेष बादशाही कार्य्यादिक मैंनेउसे बड़े श्रमसे सिखाये उससेकदाचित् ऐ
सा अपराध नहुवाहोगा औरवहसब जोकिहमपरअन्यायभया हमने उसेअपने मनसेक्ष
मा कियायदि वह जीताहै तोयह सब हानिउस परनिछावरहै अलकनबभी चेतन्यहुई
सबबातें सुनकर माताके कंठसेलगी औरकहने लगी मुझेभी यही स्वीकारहै किजोतु
म कहतीहो मैंभी अपनेभाईके जीनेका समाचार सुन अपनेसबदुख भूलगई इसके अनंत

२
सत्र
५
15

र वह दोनों माबेटियां परस्पर कंठसे लगीं और गानिमको साथिकर बड़ी प्रसन्नतासे रुदन
करने लगीं फिर मल्काकी दासियोंने उन्हें भोजन कराया उन्होंने उनके कहनेसे दोचारग्रा
स खाये दूसरे दिन जबेनी ने खलीफ़ा हारूं रशीदकी आज्ञानुकूल कि उसने तीन दिन त
क बराबर दंड देनेको लिखाथा उन दोनों माबेटियों को पूर्ववत् दाव देनेकेलिये बाहर नि
काला पुर वासियोंने यहहाल देखनेही अपनी हकोंने नबोली और नगरसे बाहर च
लेगये और स्त्रियों भी यहदशा उनकी नदेखसकीं और अपने महलके द्वार मूंद भीतर बै
ठ रहीं फिर तीनदिवस पर्यन्त कोई बाहर न निकला चौथे दिन दमिश्कके बादशाहने सए
ए गली बाजारोंमें यह इश्तिहार दियाकि कोई गानिमकी माबहिन को अपने
घरमें जगह न देवे और न उनकी सहायता कोई और आज्ञादी कि इसनगरसे उन्हें निका
लदो जिधर उनका मन चाहे उधरको चलीजावें निदान वह माबेटियां जिसगलीवा कूचे
और जिस जान पहिचानके निकट सहायताकी आशासे जातीं वह उनसे दूर भागता औ
र बादशाहके भयसे उनके समीप नखड़ाहोता गानिमकी माताने यह दशादेख लाचारहो
अपनी पुत्रीसे कहा बादशाहकी आज्ञासे कोई हमको अपने घरमें न रहने देगा और न भो
जनादिककी सुधिलेगा इससे उत्तम है कि हम तुम किसी अन्यदेशको पधारें फिर बादशाह

जबेनीने संपूर्णसमाचार लिखकरहलरके पुत्रकेमेंबांध बुगदादको औरउड़ाया हारूंरशी॥
दने उस पत्रके पढ़नेसे फिरलिखाकि अपने नगरके तीन मंजिलतकके गांओंमेंभी ढेंढो
पिटवाओकि कोईउनको रहने नदे औरकिसीभांतिसे सहाय नकरे जबेनीने हारूंरशीद
की आज्ञानुसार फिरडोंडी पिटगई औरउन्हें देशनिकालादेके शम आधी आधी अशरफी
उनकोदीपित्तमदोनों अन्यदेशोंमें जाय इसकाकुछ मोललेके भोजनकरना उनदोनोंनेउ
सलेके भिक्षुकोंके समान एकपुरानेवस्त्रकोभोली गलेमेंलटकाई औरबजनहरजाय ए
के ग्राममेंपहुंची वहांकिसानोंकीस्त्रियां उन्हेंदेख चकीऔरसेएकत्रभई औरउनसेस पूछने
लगी तुमनेक्यापेसा खलीफाका अपराधकिया जिसकातुमने इतनावड़ा दंडपाया यह सु
नवहविलाप करनेलगी ग्रामकीस्त्रियोंयह दशादेखसंपूर्णहृतांतके सुननेकोइच्छा कर
उनसेकहाकि अपनासबहाल कहोगानिमको मानोनेनिरुपायहोवह सबहृतांतकह सु
नाया यह सुन संपूर्ण स्त्रियोंको उनपरबड़ीदया उपजी औरउनको योग्यदे भोजनकराया
औरउनके रूपरेस कम्महलउतारवस्त्र पहिराये तिसपीछेवहदोनों आपत्तिकोमारी उ
न्हें आशीर्वाददेलब नगरको औरचलीदिनको चलतीं औररातको मसजिदोंमें उतरतो
रियों परपड़रहतींयदि मसजिदन पातींतो मराओंमें रहजातीं और भराइयोंमेंजायसो

गंती और रोती कई दिन पीछे हलब नगर में पहुंची परन्तु वहां का रहना उन्हें अच्छा न मालू
म हुआ इस हेतु वहां से निकल मवस्सल में आई और वहां से गानिम के भेंट की आशा से बु
गदाद में गई जहां उनके सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध भये यद्यपि गानिम का मिलना वहां उनको दु
र्लभ था परन्तु आशा बलवान है इतने दुख भोगने पर भी गानिम की प्रीति उनको आकर्षण
कर वहां ले गई जो कोई उनको मिलना गानिम को सहज तो अब यहां से फितना का वृत्तान्त क
हते हैं बेचारि फितना उसी सद्म कारागृह में रातदिन गानिम को खोयकर महाविलाप क
रती और उसकी अभाग्यता पर धिक्कार देती बऊ था खलीफा रात्रिसमय मंदिर के सहन में जो
उस कारागृह के निकट था टहलता और राज्य के माली मुल्की उपाय सोचता दैवयोग से ए
क रात्रि को वह स्व वहां टहलता था कि अकस्मात् एक महापीड़ा युक्त शब्द उसे सुनपड़ा वह
उसे सुनके खड़ा होगया और फितना अपनी प्रिया का शब्द पहिचाना कि महाशोक से क
हरही है हे भाग्यहीन गानिम तू कहां है और तुझ पर क्या बीतती है क्यों तूने मेरी सेवा को जि
सके बदले तू इस दुख में पड़ा है मेरे परिश्रम का यही फल था कि भलाई के बदले बुराई हुई
इसने पायें न हुआ वा मुझे मालूम नहीं तू जीता है या खलीफा के भय से मर गया यह क
हा फिर कहा है खलीफा तूने निर्दोष गानिम पर ऐसी अनीति को कि किसी बादशाह ने कि

सी मनुष्यपरयेसान कियाहोगा ईश्वर सेनहीं डरना जिसदिन अर्थात् प्रलयमें मायाथे म
नुष्य ईश्वरके सन्मुख खड़े होंगे औरभले औरबुरे एकठे जावेंगे उस समय तू इस अन्यायका
का उत्तरदेगी औरकोंकर इस अन्यायसे छूटेगा जब फितना यह वचनकह चुकी तो हायहा
यकर महा विलापकरने लगी खलीफ़ा यह सुन अत्यंत लज्जितभया और अपने मनमें क
हनेलगा जोफितनाने कहा सत्यहै बड़ा अनर्थभया कि मैंने केवल अपनेही विचारपरइतना
परतनाकोपकिया औरगानिमकोमाबहिनको इतना दंडदिया यहनीतिकेविपरीतहै इस
के अनंतर अपने महलमेंजाय मसरूरको बुलायकहा शीघ्रफितनाको कारागृहसे निका
ल मेरे सन्मुखला वह फितना सेप्रीतिरखताथा औरउसके कैदहोनेसे खिद को प्राप्तहुआ
थायह आज्ञापातेही हर्षितहोय कारागृहमें गया औरफितनासे कहाहै सुंदरीमेरे संग
चलो तुम्हें खलीफ़ाने बुलायाहै मुझे विश्वासहै अबतुमयहांसे छुटकारा पाओगी नि
दान मसरूरउसे खलीफ़ा केनिकटले गयावह वहां जातेही शीघ्र अपना खलीफ़ाके
चरणोंपर रखरुदन करनेलगी खलीफ़ाने उससे प्रथम यह प्रश्नकिया कि तूने कौंकर मु
के अन्यायी ठहराया समझकह कौनमनुष्यहै जिसपरमैंने अविनीकीत भलीभांतिजानतीहै
किमैं अनीतिनहीं करता यह सुनफितना समझगई किवहीबातेंजो मैंनेकारागृहमें कहीं

१
सर
२

17

थी ख़ेलीफ़ाने हँसी यह सोचा फिर कहने लगी है स्वामी यदि कोई अनुचित वचन मेरे मुखे
से निकले तो आप क्षमा कीजियेगा मैं सम्पूर्ण हत्तान्त वर्णन करती हूं अमुबका पुत्र गानिमद
मिश्कका व्योपारी है और उसका कुछ भी अपराध नहीं है उसने मेरे प्राण बचाये मुझे अपने
घरमें रहने को स्थान दिया और आपके सन्मुख ममसमविनय करती हूं कि प्रथम तो वह
मुझे देख मोहित हुआ था और आज्ञानतो सउसे मुझसे विहारकी इच्छा थी परन्तु जब मैंने
अपना हत्तान्त उससे प्रकट किया तब उसने जाना कि मैं आपकी प्रिया हूं तो उसी समय से अपा
नी इच्छा छोड़ कहने लगा है मृगनयनी जो वस्तु स्वामी की है वह सेवक को कौमान्य है निदा
न उसी दिन से अपनी इच्छा मार गमेरे साथ सच्ची प्रीति रखने लगा यह सुन ख़लीफ़ाने फिन
नहका शिर धरती से उठाय अपने समीप बैठाय लिया और कहने लगा अपना हत्तान्त विस्तार
पूर्वक कह फिननाने अपना सम्पूर्ण हत्तान्त आदिसे अन्त पर्यन्त कह सुनाया ख़लीफ़ाने कहा
मुझे नेक कहने पर विश्वास हुआ परन्तु मुझे अचंभा है कि तूने अपने समाचार न दिये औ
र मुझको आये एक महीना हुआ अब तूने लिखके मुझे ज्ञात किया फिननाने कहा बाद
शाह प्राणनपालनउद्विभजन इसका कारण यह है कि मुझे एक महीना हुआ कि गानिम अ
पने घरकी सम्पूर्ण वस्तु मुझे सौंप अपने दमिश्क देश को किसी आवश्यक व्योपार को लिये ग

या मैंने किसीसे आपके आनेका हाल न सुना था जिस दिन मैंने यह सुना कि आप आ
गये सो तुरंत नहीं एक पत्र लिखकर हर्कारे के द्वारा आपको खबर दी खलीफाने कहा स
मेरे है मैंने बड़ा अन्याय किया परन्तु अब मुझे इच्छा है कि इस दुःखके बदले अपनी सामर्थ्य भर
तेरे विचारके अनुकूल उस व्योपारीके साथ उपकार करूं जो तू उसके लिये विचारे फितनाने
यह कृपायुक्त वचन गानिमके निमित्त सुन खलीफाके चरणों झुककर बिनय की कि आपके क
लमरो भरमें यह ढिंढोरा फिराई जीवे कि मैंने गानिमका अपराध क्षमा किया यह हाल सुनने
हो वह आजावेगा खलीफाने कहा बहुत अच्छा मैं अभी ढिंढोरेकी आज्ञा देता हूं और जो
कुछ द्रव्यादिक उसकी और उसके कुटुंबकी नष्ट हुई है उसका दूना उसे दूंगा और तेरा भी
ह उसके साथ कर दूंगा फितना यह सुन अति हर्षित भई और गानिमके असबाबको दे
खा कि सहूकों में रखवा दिया है फिर दूसरे दिन खलीफाने वजीरको आज्ञा दी कि राज्यभ
रमें ढिंढोरा फेर दे मैंने दमिश्क के व्योपारी गानिमका अपराध क्षमा किया यह अज्ञा पाय व
जीरने सब राजमें ढिंढोरा फेरवादी परन्तु ढिंढोरेसे कुछ लाभ न हुवा न तो वह आया और न
किसीने उसका समाचार दिया तब फितना खलीफाकी आज्ञा लेकर आप ही गानिमको
ढूंढने लगी और एक तोड़ा हज़ार अशरफीका लेके भोरको सवार हुई और दो सबकोंको

अपने साथ ले मसजिद में जाय सिद्ध और याचकों को श्राय कर दिया और उसने अपने
मनोरथ के सिद्धि के लिये आशीर्वाद पाया और दूसरे दिन भी यही काम किया इसी भांति
वह रत्न पारखियों में गई वहां ठहर एक दलाल को अपने समीप बुलाया कि इससे अपना
अर्थ सधे वह दलाल अति धर्मि हुआ और बिदेशियों और रोगियों की सेवा किया कर
ता था इसी कारण उस महा नगर में वह ख्यात था और इससे याचक मंगन उसे ढूंढ़ने आते
और वह एक अमीर और रईस पुण्य के लिये बहुत सा द्रव्य भेज दिया करता वह दलाल उसे
याचक और विदेसियों को बांट देता फिर तनाने भी अशरफियों की थैली उसे देकर कहा इ
स द्रव्य को रोगी और दीन जनों को बांट देना मैं भली भांति जानती हूं कि तुम उचित प्रका
र से इसे खर्च करोगे दलाल ने उसे बादशाही वस्त्र पहिरे देख जाना कि यह किसी बादशा
ह की बीबी है झुक झुक के दंडवत की और कहने लगा हे सुंदरी जो तुमने मुझे कहा मैं उसे
सिर नेत्रों से करूंगा परन्तु आप अपने हाथ से इसे बांटें तो बहुत उचित है यदि मेरे घर में
आइये तो वहां पर दो स्त्रियां दया योग्य हैं तुम अवश्य उनकी दुर्दशा देख अपनी कृपा
करोगी कल के दिन वे इस नगर में आई थीं मैंने उनको महा हीन और फटे पुराने वस्त्र प
हिरे देखा और मारे सप के काली और रक्त पात्रप्ता के मारे मर भाई हुई थीं सो मैंने उ

नदोनोंको अपने गृहमें लाय अपनीस्त्रीको सौंपदिया और कहा इनकी भली भांतिसे खि-
लेनाऐसा न होकि किसी प्रकारसे उन्हें दुःख पहुंचे निदान मेरी स्त्रीने उष्णजलसे उनके
मुख और हाथ पांव धुलवाये और कोमल बिछौना बिछवाय बैठाया और वस्त्रादिक उ-
न्हें पहिराये वहजो मार्गकी थकोटसे अतिडावितथीं इस हेतु मैंने अबतक उनसे नहीं
पूछाकि तुमकौन हो और कहांसे आई फितनायह सुनते हुए उसीके साथ सोथी चली औ-
र दल्लाल उसको सवारीके आगे हुवा फितनाने सवारीके साथ उसका दौड़ना उचित न जान
कर कहा मैं तुम्हारे दासके साथ जातीहूं तुम धीरे मेरे पीछे आना फिर फितना दल्लालके गृ-
हमें पहुंचा वाहनसे उतरी दास दौड़के महलके भीतर गया और दल्लालकी स्त्रीको फितना-
के आगमनका संदेशा दिया उसकी स्त्री अपने मकानसे निकल अगवानीके लिये दौ-
ड़ी आई परन्तु फितनाने उसके पहुंचनेसे पहिलेही दासके साथ भीतर जाय इतने समयमें प-
हुंचीको उसे आनेका अवकाश न मिला दल्लालकी स्त्री उसको देख चरणा छूनेको झुका।
की फितनाने उसका सिर उठाय कहा हे सुंदरी मैं तेरे घर उन दोनों स्त्रियोंके समाचार मा-
लूम करनेको आई हूं जो कलरात्रिको इस नगरमें आई हैं दल्लालकी स्त्रीने कहा वह दोनों
अपनी शय्यापर पड़ी हैं यह सुन पहिले फितना उसी ओर गई जिधर गानिमकी माता थी उ-

२ सत्र ११

19

सके और ध्यान से देख कहा है प्यारी सुंदरी मैं तुम दोनों की सुधि लेने और सेवा के लिये आ
ई हूं गानिम की माताने आशिष दी कि ईश्वर तुम्हें इसका उत्तम फल दे हम ये ऐसी आपदा में
हैं कि ईश्वर हमारे शत्रुओं को भी उसमें न डाले यह कह कर वह रुदन करने लगी उसको रोते दे
ख फितना और दलाल की स्त्री भी रोई तदनन्तर फितनाने गानिम की माता से कहा वृद्धी न तु
म अपना वृतांत कहो कौन हो और तुम्हें कौन विपत्ति पड़ी और को तुम्हारी यह दुर्दशा भई
मैं अपनी शक्ति भर तुमसे सहायता करूंगी गानिम की माताने कहा है सुंदरी खलीफ़ा की
प्रिया फितना नामक हमारे इस दुख का कारण हुई फितना यह वचन सुन चुप हो रही औ
र धीरज पर वेगानों की भांति बातें सुनने लगी गानिम की माताने कहा मैं दमिश्क के व्या
पारी अयूब की स्त्री हूं मेरा एक पुत्र गानिम नामक किसी कार्य्य के निमित्त बुगदाद को ग
या वहां उसको फ़ितना के साथ कलंक लगा इस कारण खलीफ़ाने उसके बध करने की आ
ज्ञा दी जब उसको न पाया तो खलीफ़ा ने दमिश्क के बादशाह को आज्ञापत्र भेजा कि गानि
मके घरको खुदवाके बनके सदृश करदे और मुझे और मेरी बेटी को तीन दिनतक कोड़े
मार खानकर देस निकाला दे इसी से वहां के हाकिमने मेरा संपूर्ण द्रव्य लुटाय और मकान
खुदवाय उसी विधि देउ देनगर की सीमा से निकाल दिया परंतु हम इसी आपदा में प्रसन्न हैं

यदि गानिम जीते जी हमसे आमिले जिस दाण हम उसका स्वरूप देखेंगी उस दुःख और वस्त
के विनाश को भूल जावेंगी खलीफ़ा की प्रिया ने जो हम पर और हमारे पुत्र पर प्रीत की है
उसे हम खुशी से क्षमा करें उस समय फ़िनना बोली है माता जैसे तुम गानिम की निर्दोषता
को प्रकट करती हो मैं भी साक्षी हूं और मैं ही वह अभागी फ़िनना हूं जो तुम्हारी इन आप
त्तियों की कारण हुई अब जिनना कि तुम पर मेरे प्रारब्धहीनता से शोनिष्ठा में अनरथ पड़ा जो ई
श्वर चाहे तो मेरे ही कारण तुम्हारे यह सब दुःख दूर हो जावेंगे और तुम्हारी हानि का पल
टा तुमको हजार हिस्से अधिक मिल जावेगा अब मेरे कहने से खलीफ़ा ने गानिम का अ
पराध क्षमा किया उसने अपने मुल्क में यह ढंढोरा पिटवादी है कि मैंने गानिम का अपराध
क्षमा किया और यह भी आज्ञा दी है कि वह मेरे सन्मुख आवे है माता अब तुम धैर्य रक्खो।
वो खलीफ़ा तुम्हें अपना शत्रु नहीं समझना किन्तु वह गानिम के आने की बाट देखता है
कि उसकी सेवा के बदले जो उसने मेरे साथ की है पारितोषक दिये सत्कार करे और उसको
मेरे साथ ब्याह दे अब तुम मुझे अपनी पुत्री के सदृश समझो गानिम की माता इस वृत्तान्त
को सुन हर्षित भई तदनन्तर फ़िनना उठ गानिम की माता के कंठ से बहुत काल पर्यन्त लगी र
ही फिर उसको लेकर अलक नब के समीप गई और उसे भी हृदय से लगाय धीर्य दिया औ

२
सत
२१
20

रउनकी समझाय कहनेलगी किसंपरा इत्यादिकतुम्हारे पुत्रकाजोइस नगरमेंथ्या मे
रेयासयराहै हानि नहीहवा यद्यपिमैं जानतीहूं कि संसारभरके रवजाने गानिमके देखने
विनातुम्हारेविचारमें तुच्छहै परंतु तुमनिरासे मतिहोअभ्यवाहै तोवहभी शीघ्र आयाम
लताहै जबपरमेश्वरने तुमकोयहांतक पहुंचायाहे उसकीप्रभुतासे कुछदूरनहीं कि
वहभी यहां तुरंतपहुंचे फिननायहोवाती करतीथी किवहीदलाल अपनेघर आयाओ
रफिननासेकहाहेसुंदरी एकअस्पतालमें मैंने देखाकि एक ऊंटवाला एकरोगीमनुष्यको
ऊंटपरलेगये औरउसकोनिर्बलताकेकारणवरुं औरउसेरास्सियोंसेबांधे अस्पतालमें
आयाहेमैंने औरउसकेटांगलेन वारीं औरसेकजावे कीरस्सियां काटकृट मैंउतारा औरउ
सकोजातियांनिसखी वहकुछभी नबोलासेनेके सिवाय कुछअपना हृतांत प्रकटन
किया मैंनेउसे महादुर्बल औरप्राणकदेख उसअपने घरमेंलेआयाहूं औरएक मकान
में उसेसुलाय उसके हेतपथ्य मंगवायाहै औरववहां निकललगये हैं कियदि हिराय उसे भोज
नकरावे जिसमेंबोलनेकी शक्तिहो अनंतर वैद्यको देखाय औषधिकरणफिननाये व
चनसुननेतहीं विस्मित भई औरउससेकहने लगी मुझेवहांले चलोकि मैंभीउसरोगीका
कादर्शनकरूं दलालफिननाको वहीलेगया गानिमकी माताने अपनीवेटीसे कहाय

ह स्थान बहुत उत्तम है कि हर रहर के विदेशी और निर्धन यहां आते हैं कहो यह तुम्हारा
ही भाग न हो निदान फितना ने वहां जाय का देखा कि एक तरुण रोगी जिसके मुख का
वर्ण पीला महा कुरूप हो रहा है और नेत्रों से आंसू बहते हैं पलंग पर पड़ा है उसकी प्री
ति को नासी रसे फितना का हृदय उमड़ आया और अधीर होने लगी जब ध्यान धर देखा
तो पहिचाना कि यह गानिम है तो रोकर रोने लगी है गानिम ने जो यह का दशा भई
गानिम ने फितना का शब्द पहिचान नेत्र खोल और उसकी ओर भली भांति देख बोला हे
सुंदरी तुम हो इतना कहते ही मारे हर्ष के मूर्छागत भया फितना और दल्लाल ने दौड़ के
उस पर रत्नाब छिड़का और उसे शर्बत पिलाई वह सचेत भया तब दल्लाल ने फितना से क
हा है मृगनयनी तुम यहां से चली जाओ ऐसा न हो जो इस महा हर्ष में वह मर जावे यह
सुन फितना उस जगह से चली गई जब गानिम ने फितना को न देखा न उसकी आवाज़
सुना तो चकं और देख बोला है कोमलांगी तुम कहां हो मेरे सन्मुख नहीं आती मैंने तुम्हा
रा चित्र स्वप्नावस्था में तो नहीं देखा वा वास्तव में दृष्टि पड़ी दल्लाल ने कहा नहीं तुम्हारा बि
चार तथा कि तुव वह सुंदरी वास्तव में आई थी अब हमें सचित हुवा कि तुम गानिम हो ख
लीफा ने यह ढंढोरा फिरा दई है कि मैंने गानिम का अपराध क्षमा किया अब तुम धैर्य रक्खो

स
सन्त
२१

21

औरशेषहत्तांत तुम अपनीप्रियासेसुनोगे अबईसप्रतुम्हें आरोग्यकरेगयकरिजितना अ
मदमसेहोसकेगाहमउसे मनसेकरेंगे फिरवहवहां सेउठ औषधिलानेकोगया औरफिन
नावहांसे उठउसकीमावहिनकेपासगई औरगानिमके आनेकाहाल कहा गानिमकीमा
ताको अपने पुत्रके आनेका विश्वासहुवा औरमहाप्रसन्नतासे मूर्छितहोगई फिरफि
कोदहालने उसवर्णकरकहावह अनिअपाकहे तुम्हारेजाने से उसेखेदहोगायसा न
होजोवह अधीरहोजावे उसकीमाताने दहालकाबचन मानगई फितनाने कहायादि इस
रको इच्छाहोगी तोहम तुमसाथहो उसकेपासजावेंगे अबमेंजानीहूं औरखलीफा से
भी हालसुनानीहूं सोफितना उनसेविदाहोय बादशाहकेमहलकी औरचलीवहां प
ऊंचखलीफासेएकांतमेंभेंटकी औरसंपूर्णहत्तांत गानिम औरउसकी माताके आने
का कहसुनाया खलीफाने कहा तेनमौंकर उनतीनोंकोहूंगा उसने दहालकोभेंट
औरवातोंमेंगानिमके मावहिनके रूपछवि अनूपकी प्रशंसावर्णनकी साउनके देख
नेकी इच्छाकर अपने मनमेंप्रतिज्ञाकी जैसे मैंनेगानिम औरउसकी मावहिनकोनि
दोषठहरादिया औरउनको प्रतिष्ठाभई तैसेही उसे औरउसके ऊंटवकोप्रजाकेसन्मु।

खसकार करेंगा जिस्से उक्रण होजाऊं ओर उनकी बस्तुओं के बदले उन्हें इतना द्रव्य देंगा कि
वह महाधनवान होजावेंगो पुनः खेलीफा ने फितन्न से कहा थी थेराव मैंने ता विवाह गानि
मसे करेंगा आज से तू मेरी लौंडी नहीं मैंने तुझे छोड़दिया अब तू जा यादि वह अरोग्य।
होगया होतो उसे उसकी मा बहिन समेत तू रन मेरे सन्मुख ले आ दूसरे दिन प्रातःकाल फि
तन्ना चबाई ऊई दल्लाल के घर गानिम का हाल सब्ब ने को गई प्रथम दल्लाल से भेंट की।
और गानिम का हतांत सब्बा उसने कहा गानिम आज की रात को अच्छी तरह रहा केवल
उसे तुम्हारे ही वियोग का रोग था अब बऊ ईश्वर की परिस्वरणा कृपा से आरोग्य है जब खे
लीफा की क्षमा का सुना और तुमसे भेंट की तो ऊब्ब सावधान हो गया अब तुम्हारी औ
र अपनी मा बहिन के भेंट की लालसा रखता है फितन्ना यह वचन सुनते ही पहिले आप
अकेली गानिम के निकट गई और उसकी मा बहिन को बाहर ठहराया और कहा मैं
अभी तुम्हें बुलाती हूं जब फितन्ना और दल्लाल उसके सन्मुख गये दल्लाल ने गानिम से क
हा मित्र अब इस सुंदरी से भलीभांति भेंट करो जिसे कल देख के तुम बेसुध होगये थे औ
र उसके देखने का तुमने स्वप्न समझा था गानिम ने फितन्ना की ओर देख कहा हे मृगनयनी
चंद्रवदनी तुम कैसे कर बादशाह के महल से मेरी भेंट को आई तुम्हारे देखने बिना तो प्राण

मात्रभी खलीफ़ा नहीं यह समझा था उसने क्योंकर तुम्हें यहां आने दिया फ़ितनाने कहा मैं
खलीफ़ा की आज्ञानुकूल यहां आई हूं और उसने मुझसे यह प्रतिज्ञा की है कि मेरा वि
वाह तुमसे कर देगा गानिम यह सुनकर इतना प्रसन्न भया जिसका वर्णन नहीं हो सकता और
आश्चर्यित होय पूछने लगा सत्य कहती हो खलीफ़ा तुमको दे डालेगा उसने कहा निस्सं
देह क्यों कि खलीफ़ाने सर्वमें केवल शंका से तुम्हारी बधकी आज्ञा दीथी जब तुम उसके
हाथ न लगे तो उसने दमिश्कके बादशाह को लिख तुम्हारी माबहिनको दुःख दिलाया
और तुम्हारा घर खुदवाय सर्वस्व धन लुटवा दिया अब यह अपने अन्यायसे लज्जि
त भया और उसे मेरे मुखसे तुम्हारी निर्दोषता प्रतीत भई इस कारण चाहता है कि तु
मसे उऋण हो जावे इसके अनन्तर गानिमने अपनी माबहिनका हाल पूछा फ़ितनाने
विस्तारसे वर्णन किया वह सुनकर महाविदको प्राप्त होय रुदन करने लगा फ़ितनाने कहा
अब यह तुम्हारा शोक व्यर्थ है जो होना था सो हुआ अब तुम्हारी माबहिन यहां ही है
यह सुन उसे उनके दर्शनकी लालसा भई फ़ितनाने उन्हें बुलाया वह दोनों स्त्रियां कि
फ़ितनाके बुलानेकी बाट देखती थीं भीतर दौड़ी आईं और गानिमके कंठ लग बहुत रोईं दु
हालने उन्हें धोखा दिया इसके अनन्तर गानिमने अपना संपूर्ण वृत्तान्त आदिसे अंतपर्यं

न समभोलिवगोन कियाकिमैं खलीफाके भयसेबुगदाद सेभागकरएकग्राममें जाय
छिपा औरवहां रोगीहोगया एक दयावान किसानने मेरीसहायता की औरअपनी
सामर्थ्य भरमेरेखिलाने पिलाने और औषधि आदि मेंतमररहापरंतु जबवह मेरे प्रा
एसे निरासभया तोउसने एकऊंट कियायाकर ऊंटकालेसेकहा ईसतबुगदाद कोअ
सनाल मेपहुंचादेसो उसने मुझेवहां पहुंचादिया फिर फितना ने संपूर्णवृत्तांत वर्णनकि
याजब सब अपना अपनावृत्तांतकहचुके फितनानेकहा अबहम सबमिलके ईश्वरका
धन्यबादकरेंकिउससच्चिदानंदप्रभुनेहमपर दयाकी औरहमें इसमहादुखसेनिकाल
परस्पर भेंटकरादी जबगानिम भलीभांति आरोग्यभया फितनाने चाहाकिगानिम और
उसकीमाबहिनको खलीफाकेसन्मुखलेजावे फिर शोचनेलगी किइसकेपासअच्छे।
वस्त्रनहीं जिसे पहिरखलीफाके सन्मुखलेजावें यह समझअपने मकानकोसिधारी
औरहजार अशरफी दल्लालकोदेकहाकि तुम अतिस्वच्छवसन अलकनब औरउसके
माताकेलिये मोल लेके आओवह दल्लालकि अतिप्रवीण औरमहाचतुरथा अनुतम
रेशमीथानमोलले तीनदिनमें भरीजोड़े उनदोनों स्त्रियोंके निमित्त बनवायेफिरएकदि
नखलीफाकीभेंटकानियत किया औरउसदिनवह तीनोंकपड़े पहिन तय्यार बैठेथेकि

जाफरवजीरखलीफाकी आज्ञानुसार बहुतसी सेना औरप्रधानसाथलेउसदहालके
घरगानिमकेलेनेको आया औरघोडेसेउतरघरके भीतरगया औरभेटकर कुशलसब
गानिमसेकहाकिमें तुम्हारेलेनेके वास्ते आयाहूं तुममेरेसाथचलो खलीफा तुम्हारे द
र्शनकिया चाहतेहैं सोगानिमउत्तम घोडेपर सवारहुवा औरफितनाने उसकीमाकोदि
नकोदोहुंडो परसवारकराय आप अपने घोडेपरसवारहोउसमार्गोसे उन्हें बादशाहके
महलमेंलेगई औरवजीरनेगानिमको बाजारमें सेखलीफाके साम्हनेलेगया उस समय
खलीफा अपने तख्तपरबैठाथा औरउसकेचहुंओरवजीरसभासद औरदेश देशकेवसीट
औरदेशकेशकौनिवासीवर्तमानथे जबगानिमाखलीफाकेपास पहुंचातो अपना शीश
पृथ्वीचूमनेको खलीफाके तख्तके सन्मुख रकवा औरनिजरचित पदों मेंस्तुति की
जिसकोसुनसंपूर्णसभाउसकी प्रशंसाकरनेलगी खलीफानिकहाकिमें तुझेदेखप्रसन्न
हुआजब तुमसे अपनीप्रियाकेबचानेका वृत्तांतसुनेंगेतो अधिक प्रसन्नहोंगेगानि
मने संपूर्ण वृत्तांत आदिसे अंतपर्यंत कहसुनाया खलीफा उसे सुनप्रसन्नभया और आ
ज्ञादीकि एकभारीखिलअतजैसीकि बड़ेअमीरोंको मिला करतीहैदोगानिमने खिल
अत पहिनदंडवत् करकेकहाकिहेस्वामी मुझे इच्छाहै किजन्मभरआपके चरणोंसे लगारहूं

खलीफा उससे अतिप्रसन्नहुआ फिर अपने घरमें आया और वजीरसे कहा गानिमको अ
पने साथ करके मेरे निकटले आ जब खलीफा एकांतमें गया तो फितनाको बुलवा भेजा
और कहा गानिमको मा बहिनको भी लेती आ फितना उनदोनों मा बेटियोंको खलीफा
के सन्मुख ले आई उनदोनों ने भी खलीफाके चरण छूये खलीफा अलकनब को देखते
ही मोहित हुआ और कहने लगा जैसा कि मैंने तुम्हें निर्दोष अप्रतिष्ठा की वैसे ही अब
मैं अपना अलकनबके साथ विवाह कर तुम्हारा दुःख भुलाऊंगा क्योंकि जब टाम्गो तुम्हा
रे सुःखका कारण हुई उसको यह दंड देता हूं कि अलकनबकी उ... और ईर्षा में मेरे
इसके अनन्तर गानिमकी मातासे कहा हे सुंदरी तुम अभी तरुण हो मेरे वजीर जाफरसे
अपना विवाह करो और गानिमसे कहा तू फितना पर मोहित है और तुझे भी इसके सा
थ ब्याह करना उचित है फिर खलीफा ने काजी और गवाहों को बुलवाया और जीनों ने
ब्याह किया गानिम यह विचारता था कि उसकी बहन लौंडी होगी परंतु खलीफाने उ
से स्त्री बनाया फिर खलीफाने आज्ञा की कि यह वृत्तांत इतिहासकी तौरपर लिखके मा
रे खजानेमें रखवा जावे और नकलें उसकी दिशांतरों में भेजी जावें जब शाहजादी श
हरजाद यह कथा कह चुकी तब दुनियाजादने कहा वाह यह कैसा अद्भुत कथा थी शाह

वैता॰
२४
24

हज़ादेने कहा यदितू हमरी सुनेगीतो महाप्रसन्न होगी शाहरयारने कहनेकी आ
ज्ञादो परंतु भोरहो गयाथा इसहेतु हमरी रातको चरित्र कहने लगी ॥ जैनुस्सनम
शाहज़ादा और रातसौंके बादशाहकी कथा पूर्वकालमें वासरादेशका सकवड़ावा
दशाह प्रजापालक और महा पेश्वर्यवान द्रव्यवानथा परंतु संतानतन होनेसे सदैव म
हाशोकवान रहता नगरनिवासी सर्वदा ईश्वरसे प्रार्थनाकरतेकि हमारे बादशाह
केपुत्र हो निदान उस सच्चिदानंद ईश्वरने उनकी इच्छा पूर्णकी अर्थात मलका सगर्भम
ई और नौमासपीछे उसके पुत्र उत्पन्न भया उसका नाम जैनुस्सनम रक्खा बादशाहने अपने
देशके संपूर्ण ज्योतिषियों को बुलवाय आज्ञादीकि इसका जन्मपत्र बनाओ और इस ल
ड़केका समाचार कहो सबने उसका जन्मपत्र बनाय एकमत होय कहा हज़्रत इसके
संपूर्ण आयु होगी और बड़ा साहसी और प्रतापी होगा परंतु कई विषयोंमें ईसभय प्राप्त हो
गा बादशाहने कहा मुझे भैरवानकी चिंता नहींकी किमेरा पुत्र पुरुषार्थी नोहोगा
बादशाहोंको आपत्ति और ढकावसे ऊंच उपाय नहीं चलना बकरोसे विषयवादशाह
को उपदेशहोतेहैं सो बादशाहने ज्योतिषियोंको पारितोषिक और द्रव्यादिक दे विदा
किया जब वह शाहज़ादा पठनयोग्य भया अनेक प्रकारके गुणी नियतकिये थोड़े ही

कालमेंवह प्रेमकविया औरराएमें निपुणभया दैवयोगसे इसका पितायेसा वी।
मारऊग्रा कि असाध्यहोगया अंत समयउसने जेनुस्सनम अपनेपुत्रकोबुलाय उ
पदेशकिया किंतुकदाचित स्वार्थियोंकीवातनमानियो और अधिक उदारता भी
नकोजियो किंतुदंड औरदान समरीवियोकौंकि वादशाह प्रायःछलमें पडके ऊक
र्ममेंपडऊकर्म्मतजदेतेहैं इतना कहतेही बादशाहने देहत्यागदी जेनुस्सनमसोग
केवल पहिरसातदिन तक विलापकरतारहा आठवेंदिन तख्तपरविराजमानहो बा
दशाही खजानेकी मुहरतोड़ यकही बेरव्यय करनेलगा उसीआनंदमें सज्जनताके प्र
बंधसेनिपट अचेत भयातरुण मनुष्योंकी संगतसे यह आनंदभोगनेलगाथोडेही
कालमेंपिताकासंपूर्णकोषवेश्याऔंकोलुटायदिया उसकीमाताजो अनंत बुद्धिमा
न वतरथी बऊया समझाती परंतुउपदेश व्यर्थजाताथयहांतक किसज्जनताकी अप्रबंध
तासे नगरमें चरचाहोनेलगा औरकोलाहलमचगया औरघरघर यहबात उड़गई
धीरे धीरे संपूर्णकोशखालीहोगये औरसेना निर्धनतासेस्थान स्थानसे उठजाने ल
गीउस समयवहऊबसोचता भया अपने सब तरुण निर्बुद्धिमित्रोंको निकाल बड़ेबड़े
चतुरवृद्धोंकोनियतकिया उन्होंने भलीबातें उसेसिखाई यहांतककिवह सज्जनता।

की अप्रबंधतासे ज्ञानहीन होय लज्जित भया और जाना कि मैंने इतना द्रव्य व्यर्थ खर्च किया रात दि
न इसी चिन्तामें रहने लगा सो एक दिन उसने स्वप्न देखा एक कहने उसे मनुष्य ने आय कहा है जे
तुस्सन मत जान कि संसारमें कोई ऐसा शोक नहीं जिसके पीछे हर्ष न हो कोई ऐसी आप
दा नहीं कि उसके पीछे आनंद न मिले यदि तू चाहता है यह दुःख मेरा जावे तो तुरंत केहून
गर को जो मिसर को दारुल्सलतनत है चला जा वहां पहुंचने ही तेरी संपूर्ण आपदा दूर हो जा
वेगी और तेरा धन पावेगा चमके गा जब वह जगा उसने वह स्वप्न अपनी माता से कहा मा
ता ने कहा है पुत्र केवल स्वप्न के विश्वास पर जो मनुष्य हजारों प्रति रात्रि में देखता है और रवाल
का कहती है सब स्वप्न केवल विचार ही नहीं होते किंतु बहुधा सत्य होते हैं इसके सिवाय व
ह वृद्ध ऐसा न था जिसका वचन असत्य हो वह कोई सिद्ध पुरुष था उसके कहने हो मेरे म
न को धीर्य हुआ मुझे उसके वचन का भली भांति निश्चय है मैं अवश्य केहरो को जाय अपने
भाग्य को परीक्षा लूंगा मां ने बहुत कहा कि वे सन जाने दे पर उसका समझाना लाभका
री न भया निदान अपना राज्य अपनी माता को सौंप अकेला घर अपने महलसे निकल के
रो को सिधारा और बहुत से डाल उठाय उसी विशाल और सुंदर नगर में जाय पहुंचा और प

क मसजिदमें थकिन होयसो रहा फिरउसने उसी हद्दको स्वममें देखा कि कहता है कि पुत्रमें तेरे इस पुरुषार्थ से प्रसन्नभया कि तूने मेराबचन निश्चय कर अपने आनेदको तज इतनी बड़ी यात्राकी मैंने केवल तेरी परीक्षाली और तूने महापुरुषार्थ पाया अ बतमहा इच्छापावेगा और इस संसार में तू बड़ा बादशाह होगा अब तू यहां से निज देशवासयों को लौटजा तू वहीं इतना धन पावेगा कि किसी बादशाह कोन मिला होगा जे तुलसनमने जगके अपने मनमें कहा उस हद्दने मुझे वर्थ केरों में आनेको कहा य दिवोसरामें मेरा मनोर्थ सिद्धथा तो की मुझे यहां के आनेका श्रमदिया अच्छा ऊवा जो मैंने यहभेद अपनी माता के सिवाय किसीसेन कहा नहीं तो लोग आज मेरी निर्बुद्धि ता परहास्यकरते इसके अनंतर वह वांसरा को लौटा जब वहां ऊपाल सर्वक पहुंचा तो माताने उससे पूछाकि पीछे चले आनेका क्या कारण है उसने दूसरे स्वमका वृतांत क हसनाया वह उसे थोर्य देकर कहने लगी बेटा अपने काष्ठमें चिंता न कर यदि तेरे भाग्यमें थ नहै तो घर बैठ मिलेगा परंतु जब ईश्वर तुझपर अपनी परिसणा कृपाकरेतो आगेको भी ति लम्पटमें व्ययनकरना स्वकाष्ठ और आवश्यकताके विशेष एक कौड़ी किसी कोनदे ना उसने स्वीकारकर प्रतिज्ञा की कि अब तुम्हारी आज्ञा पालन करूंगा इसमें बाल भर भी

२
सेत
२९
26

अंतरनपड़ेगा रात्रिकोफिर उसीवृद्ध पुरुषने स्वप्नदियाहै जैन समय आय पंहुचा तुम्हें ब
हुत धनमिलेगा कल अपने पिताके मकानमें जाय फावड़ेसे उसे खोदियो तुम्हें वहां
एकबड़ाकोषमिलेगाजैननें जागके अपनी मातासे कहा उसकी माताने मुसकराय क
हा वह वृद्धके साहै किटोबे रत्नमान कर धूर्ततासे तीसरे बेरतुझसे कहगया जिसका कु
छमूलनहीं जैननें कहा यद्यपि मुझेभीउसके बचनपर विश्वास नहीं तथापि चाहता।
हूं कि मैं अपने पिताका मकान भीखोदकर देखूं वह बहुतहंसी औरकहनेलगीजा
ओ औरदेखो वहां तुम्हें इतना परिश्रम नहीं जितना केरोके जानेमेंथाजैनतुसनमने क
हा मुझे ऊब निश्चय है कितीसरा स्वप्नसत्यहोगा चाहताहूं कि उसको परीक्षा करूं क्यों
कि उसने मुझसे पहिले कहाथा के मकोजा वहां तेरामनोर्थ सिद्धहोगा सोमैंवहांगया
फिर मुझसे दूसरे स्वप्नमें कहाकेवल मैंने तेरे पुरुषार्थ की परीक्षाली अबतूफिरवासरा।
कोलौटजा वंहीतेरीइच्छासिद्धहोगी सोमैं उसकी आज्ञासे यहां आया अबकेवल ती
सरे स्वप्नकी परीक्षाशेषरही माताने कहा अब अधिक इस विषयमें श्रममतिकर उससम
यतो वह चुपहो रहा औरमासे छुप अपने पिताके मकानमें जाय खोदने लगा खोदते
खोदते अकस्मात एकगजके चौकोण गहरा खोदगया जबउसमें सन्दूकका चिन्ह भीन

पाया तो थकके बैठ गया औ अपने मनमें कहने लगा माता मेरी बहुत हंसके कहेगी
यह विदित है कि फूटे लोभसे पिताका मकान खोद डाला और कुछ न पाया निदान स्व
लाय फिर फावड़ा लेके उठा और खोदने लगा तो अकस्मात् एक चट्टान सफेद संगम
रमरका उसे दीखा उसने उस शिलाको वहांसे सरकाया उसके नीचे एक द्वार प्रकट भ
या जैनने फावड़े से ताला तोड़ द्वार खोला उसके साथ संगमरमर की सीढ़ी लगी हुई थी
सो एक दीपक जलाकर उसके उजियाले में सीढ़ीके मार्गसे नीचे उतरा और एक विशा
ल दालान कि उसकी दीवार चीनीकी और बहुत विल्लौरकी बनी हुई थी गया वहां क्या दे
खता है कि सुंदर चार सौ एक कीर्ति पाइयां बिछी हैं और प्रति तिपाई पर दश दश सौ मा
के पत्थरकी उड़ेंगे बराबर बराबर रक्खी हैं जैनउस्मानने समझा कि इन पात्रों में स्वच्छ मदि
रा होगी और पुरानी होने से बहुत अच्छी होगई होगी यह विचार एक पात्रके निकट
जाय ढकना उठाया उसे अशरफियों से भरा हुआ पाया इससे महा प्रसन्न हुवा पुनः स
ब पात्रोंके ढकने उठाय देखा वह सब अशरफियों से भरे हुए थे एक मुट्ठी अशरफि
यों की भर अपनी माताको जाय दिखाई वह देखने ही अचम्भे में हुई और पुत्र से कह
ने लगी ईश्वर ने तुझपर बड़ी कृपाकी अब इस द्रव्यको पूर्ववत् नष्ट न कीजियो जैनने क

२
सत
२७
27

हातम निश्चय मानोमें आपकी आज्ञाके बिरुद्धकोई कामनकरूंगा इसके अनंतर उस
की माताने कहा मुझेभी वहां लेजाय यह दिखा वह उसका हाथपकड़ नीचे उतार ले
गया उसने वहां जाय अशरफियां भरी देखीं अनंतर मल्का कीदृष्टि एक छोटेसे या
ऊपरकि वहभी सीमाके पत्थरका बनाऊ था और उस दालानके एककोणमें र
कवाऊ था पड़ी जैननेने उसेदेखा था सच्चा इस में कौहै उसने उसको खोला उसमें
एक स्वनहली ऊंजी निकली मलकाने कहा है पुत्रनिश्चय यह हमारे किसीकोवकी
ऊंती है इसके उपरांत वहदालानके चहुंओर ढूंढने लगे ढूंढते २ उन्होंने दालान के
एक ओर सुंदरदरवाजा जिसमें कुफल लगाथा पाया नबैना उन्हें विश्वास भया कि य
ह ऊंजी अवश्य इसी द्वारकी है जैननेऊंजीसे कुफल खोलातो एकमहा विशाल ग
ह चौकोण देखा उसके मध्यमें स्वनहले नवखंभे थे आठ खंभों पर एक एक मनुष्यका
चित्र अतिउत्तम औदिव्यहीरेका बनाऊ आया जिनकी चमकसे वह सब मकान प्र
काशितथा जैत्रसेनमैने उन्हें देखतेही अचंभाकिया और मनमें कहने लगा है प्रभु
ऐसे अपूर्व सुंदर चित्र मेरे पिताको कहांसे मिले परंतु नवांखंभ खालीथा केवल सफे
द साटनसे मढ़ा था उसपर यह लिखा था हे मेरे प्यारे पुत्र यद्यपि यह आठों चित्र अपूर्व

है परंतु नवांश्च आठोंसे सुंदर और रत्नजटत्व और चमकदमकमें अधिकहै यदि तू उसेभी
लिया चाहताहै तोकैरूमेंजा वहां मेरादास हस्नमुबारकनामके रहताहै वह बहुत प्रसि
द्धहै जिस किसीसेतू पूछेगा वहतुरंत उसकाघरतुझे बतादेवेगा तू उसके समीप जा
य अपना वृतांत कहना वह तुझे मेरापुत्र जानके येसे स्थान परलेजावेगा जहांसे यह
नवां चित्र हीरेका तुझे सुगमतासे मिल जावेगा जैन यह पढतेही अपनी मातासे क
हनेलगा मुझे येसे अपूर्व चित्रकी अतिलालसाहै क्योंकि यह आठों मूर्तिउसके मो
लकीनहीं पहुंचती अब मैं कैरूको जाताहूं विश्वासहै कि तुम मुझे वहांजाने की आ
ज्ञादोगी उसने कहा तुम येसे सत्पुरुषकी आज्ञानुसारयह काम करतेहो निश्चयहै
तुम्हें किसी भांति से विघ्न होगा इसलिये मैं तुझे मनानहीं करती जबतुमवाहां च
लेजावो मैं और वजीर आजमतुम्हारे सल्तनतका प्रबंध करते रहेंगे इसके अनंतर
जैन बादशाह कईसेवक अपने साथ लेके इसनगरको सिधाराथोड़े दिनों में कुशल
पूर्वक वहां पहुंचा और सबने समाचारमहुवा कि मुबारक नगर में अति प्रसिद्धहै औ
र बड़े आदमियों के समान रहताहै उसके घरमें पहुंच द्वारपरहांकदी एकसेवक ने आ
य द्वार खोला और जैनुल्अस्नामसेनामपूछा जैनुल्अस्नामने कहा मैं इस नगरमें अभीआया

३

१
सत
२८
28

हूं तुम्हारे स्वामीकी उदारता की प्रशंसा को सुनचाहता हूं कि उसके घरमें तू एकदास नेकहा
तनक ठहरो कि मैं अपने स्वामीसे तुम्हारे आगमनका संदेसा दें फिर वह दास शीघ्र हो अ
पने स्वामीकी आज्ञानुकूल जैनको महलके भीतर लेगया जैनुल्अस्नमने भीतर जाय एक
विशाल अति सुंदर मंदिर देखा एकमकानमें मुबारक उसके आनेकी बाट देखता था
उसके देखतेही मुबारकने उठके संदेह वनकी ओर कुशल पूछी बादशाहने उसका उत्त
र देकहा मुझे तुमने पहिचाना नाना नहीं मेरानाम जैनुल्अस्नमहै मैं स्वर्गवासी बांसरा केबा
दशाहका पुत्रहूं मुबारकने कहा मुझेतो उसबादशाहने मोललियाथा आपकी आज्ञाकि
तनीहोगी जैनने कहा बीस वर्षकी इसके अनंतर जैनने पूछा तुमको हमारे पितासे बिछु
डे कितने वर्ष बीते मुबारक नेकहा भाई सर्वथा मुझको कर निश्चय हो कि तुम उसीके पु
त्रहो जैनुल्अस्नमने कहा मेरे पिताका एक मकान था उसमें मैंने चालीस पात्र अशरफि
यों से भरे हुये पाये मुबारकने कहा इसके विशेष औरभी तुमने उसमें कुछ पाया जै
नुल्अस्नमने कहा नौ खिमल्लाणके आठांवमें परएक जात आठचित्र हीरेके अतिसुंदर र
क्खे हुये हैं और नवां खिमा खाली साठनमें मगर वा उसपर मेरे पिताने लिखाहै जिससे मुझे
नवीं मूर्ति जोइन आगेसे बढ़कर उत्तम है मिलेगी तुम उसस्थानको जानतेहो मुझे वहां लेजा

आगे अभी जैनन कह चुका था कि मुबारक उसके चरणोंपर गिरपड़ा और उसके हाथ ब
हुकालपर्यंत हमकहा मुझे विश्वास भया तुम बासरा के बादशाह के जो मेरा स्वामी था पु
त्र हो मैं तुम्हे अवश्य वहां लेजाऊंगा जहां सेनवांचित्र मिलेगा परंतु थोड़े दिन आप यहां
विश्राम कीजिये जिससे मार्ग की निर्बलता जाती रहे आज मैंने पुर के रईसों को न्योता है
मैं सबके साथ भोजन करता था कि तुम्हारे आगमन का समाचार सुनबाहर निकल आ
या अब आप भी वहां चलके रुचिपूर्वक भोजन कीजिये जैनने हर्ष से उत्तर दिया बहुत
अच्छा इसके अनंतर वह जैन को जहां सब मनुष्य एकत्र थे लेगया और उनको भोजन परोसे
ठाय आप सबको के सदृश खड़ा रहा और जैनको सेवा करने लगा नगर बासी यह दशा
देख परस्पर धीरे से कहने लगे यह विदेशी मनुष्य कौन है जिसकी सेवा मुबारक ऐसी
करता है जब सब भोजन कर चुके मुबारक ने लोगों से कहा भाइयो मेरी इस सेवा पर कुछ
आश्चर्य न करो यह बासरा का शाहज़ादा है जो मेरा स्वामी है इसके पिताने मुझे मोल लि
या था और मेरे छूटने से पहिले मरगया अब यह शाहज़ादा मेरा स्वामी है और उस
ने पिता का यह एक ही पुत्र है जैन अस्सनमने बातों तर मैं कहा मैं कहा मैं इस समूह के
सन्मुख यह प्रतिज्ञा करता हूं कि मैंने तुझे छोड़ दिया केवल एक ही बात जो मैंने तुमसे

१
सत्
१९
29

कही वही शेष रहगईहै मुबारकने यह वचन सुननेही प्रणाम किया इसके उपरांत म
दिरा आईहै मुबारकने यह वचन सुननेही प्रणाम किया इसके उपरांत मदिरा आई से
प्यासक वह सब पीते रहे निदान मुबारक ने सब को फलोंके पात्र देबिदा किया दूसरे
दिन जैमनि उसे कहा अबमेरी राहकी मांदगी जाती रही मैं केवल तमाशा देखने न
हीं आया केवल नवे चित्रके निमित्त इतनो श्रम उठायाहै उत्तिन है किहम तुम यहांसे
सिधारें मुबारकने कहा बहुत अच्छा परंत्र एक बात पहिलेसे तुमसे कहनी उत्तमहै कि
इस मार्गमें बहुत से भयहैं आपको उन वस्तुओं से बचना और भय रहना अवश्य है जैन
ने कहा हम भली भांति भयएसा रकवा मैं कदाचित् न डरूंगा और इस बातके लिये मु
के प्राणभी देने स्वीकार हैं तुम मुझे अपने साथ ले चलो जो तुम कहोगे वही करूंगा
किसी डाव और भूतप्रेतादि से भय न करूंगा मुबारक ने जैनको धैर्यवान देख अपने
सेवकोंको यात्रा की तैयारी की आज्ञा दी फिर उसके दूसरे दिन भोरको स्नान और नियम
नहम कर वहांसे चले मार्गमें अद्भुत सुंदर वस्तु देखते हुए कई दिन पीछे एक महा ह
त्म राह में पहुंचे मुबारकने घोडों और औरवस्तुओंको वहीं छोड कई पियादे उनकी
रक्षाको नियत किये और कहा हमारे लौटनेतक तुम यहां सब वस्तुकी रक्षा करना इ

सके अनंतर जैनको पैदल ले आगेबढ़ा और उसी भयभीतस्थानमें जहां वह नवाचित्र।
था पहुंच जैनसे कहा तुम अपने मनको दृढ़ रखना किसी अद्भुत और भय देनेवाले वि
षयको देख मतिडरना इतने में वे एक नदी के कूलपर पहुंचे सुबारक वहां बैठगया
और जैनको भी अपने निकट बैठालिया और कहने लगा हमें इस नदीसे पार होना अवश्य
है जैनने कहा क्योंकर इस नदीसे पार होंगे सुबारकने कहा तुम्हारे और मेरे लेनेको वा
तसोंकी बादशाहकी मायाकी नौका अभी यहां आवेगी तुम कदाचित् न बोलना उसके
केवटोंका अद्भुतस्वरूप होगा ऐसा न हो जो तुम उन्हें देख आश्चर्य कर उनसे कोई बातची
त करो मैं पहिलेसे तुम्हें चिताये रखता हूं जो तुम सवार होकर तनकभी मुखसे बोलोगे।
तो वरन वह नाव इस अथाह जल में डूब जावेगी जैनने कहा मैं कुछ न बोलूंगा औ तुमको उ
चित है कि सब बातें मुझे बतादो जिसमें बचारूं इतने में वह क्या देखता है कि एक चंदन
की नाव अंसतसुंदर जिसका मस्तूल अंबरका और बादबान नीली साटनका है उस नदीमें
उनकी ओर चली आती है और उसको केवल एक मनुष्य खेता था जिसका शिर हाथी का
और देह सिंहकी सी थी जब वह नाव उनके पास पहुंची तो उस केवटने संडसे एक एक
को पकड़ नाव में सवार किया और क्षणमात्र में पार ले जाय उसी भांति उन दोनोंको नाव

१
सन्द
३१
30

से उतार नदीके पारउतारदिया फिरवह नाव शुमहो गई मुबारकने जैनसे कहा यह टी
प जिसमें हम तुम हैं राक्षसों का है और निसंदेह यह स्वर्गके बागका नमूना है देखो
किस विधिके अतिसुन्दर वृक्ष वनरहे हैं और उनकी क्यारियों के चहुं ओर अनेक प्रका
रके सुगंधित खिले खिले पुष्प और सुंदर नरकारियां शोभायमान हैं इसके विशेष टह
नियोंका सुंदर सघन और कलमुक्त वहभारके मारे धरतीसे लगरहे हैं और पक्षियोंकी
प्रियवाणी सुनो कि चहुं दिशासे बड़े अनुराग और आनंद से बोलरहे हैं जैनका थकावट
होके जलवायु लगनेसे जातारहा और उसदास के तमाशे और रंग रंगके फूल और प
त्तियोंकी देख आनंदित भया और पगं पगं पर सवीन और अद्भुत वस्तु देख प्रसन्न होता
निदान चलते चलते वह दोनों ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां एक कोट देखपड़ा वह कोट
हीरेका बनाहुवाथा उसके चहुं ओर बड़ी विशाल और गहरी खाई थी और उस खाईकी
चारों ओर थोड़ी दूर सघन सुन्दर वृक्ष लगे हुये थे जिनकी छाया में एक मकान कोट में थी
और उस मकान के द्वारके आगे एक दिव्य सन्दवारा गजकान्त बाक्य: गज चौड़ा सीप का
बनाहुवा उसके सिरे पर विकराल राक्षसों का पहरा बैठा हुवाथा कि कोई बादशाहकी
आज्ञाबिना भीतर न जाने पावे मुबारक वहीं ठहरगया और जैनसे कहा यदि हम तनक

आगे बढ़ें तो यह महा विकराल राक्षस जो पहरे पर बैठे हैं तुरंत हमको मार डालेंगे अब
मुझे रक्षार्थ कोई मंत्र पढ़ना चाहिये जिससे वह हमारे समीप न आसकें यह कह खवार
ने अपने कमर से एक थैली जिसमें चार पटके थे निकाली एक उसने अपनी कमर में मेल
पेटा और दूसरा अपनी पीठ पर डाला और दो जैन को दिये कि वह भी अपनी कमर और पी
ठ पर लपेटे फिर उसने कपटे की दो चादरें पृथ्वी पर बिछाईं और उसके किनारों पर अनेक प्र
कार के पत्थर राख उनपर वह दोनों बैठे फिर खुवारक ने शाहज़ादे से कहा अब मैं राक्षसपति
का जो इसी मंदिर में है आवाहन करता हूं यदि वह कोप से बड़ा विकराल बनके आया तो
जानना हम बड़े डर में पड़े और समझना हमारे यहां आने से वह अप्रसन्न भया और
यदि वह अच्छे मनुष्य को देह धर आया तो तुम्हारी कामना सिद्ध होगी किसी भांति काभ
य तुम्हें न पहुंचेगा परंतु जिस समय वह तुम्हारे सन्मुख आवे तुम उसे दंडवत करना प
रंतु वह चादर जिस पर तुम बैठे हो कदाचित अपने शरीर से अलग न करना नहीं तो तुरं
त मरजाओगे फिर उससे बिनय कर कहना है राक्षस पति मेरा पिता जो आपका आधी
न सेवक था उसका काल होगया आशा रखता हूं कि जो कृपा उनपर थी मुझ पर भी हो य
दि वह पूछे तू किस विषय की कृपा चाहता है तो तुम कहना वह नवां चित्र मुझे देदीजिये

दानवह उसेभलीभांति समझायचुकाय मंत्रपढने लगाउसके पढतेही बडेवेगसे बिजुली
चमकनेलगीतत्पश्चात् बादल बडेजोरसे गरजने लगा और ऐसा शब्द हुआ कि वह संपूर्ण
द्वीप कांपनेलगा और चारो ओर अंधियारा छाय गया मानो प्रलयहुवा शाहजादा
यह दशादेख बहुत घबराया और भयसे ह्रदय उसका धड़कने लगा मुबारकने
सकराय कहा घबराओ नहीं जोकुछ होनाथासोहोचुका अबउजियाला हुवा जाता
है इतनेमें बादल बिजली जातीरही उजियाला भया और राक्षस पति मनुष्य की दे
ह धर देह धर प्रकट भया जैनेन उसके देखतेही मुबारक के उपदेशानुकूल उसे
झुकके दंडवत् की राक्षस पति मुसकराता हुवा उसके निकट आया और कहने
लगा है मेरे पुत्र मैंतेरे पिताको बहुतप्यार करताथा जब वहमेरे समीप आता तो बिदा
करते समय उसे मैंएक हीरेका चित्र सौगातकी तौरपर देता औरवह उसे अपने सा
थलेजाता अब वही प्रीति मुझे तुम्हारे साथभीहै मैने तुम्हारे पितासे कहाथा कित
मनेवं खम्भ मेंश्वेतसाठन परलिखना जिसहै शाहजादा तुमने पढा और यहांचले
आये मैंने तेरे पितासे प्रतिज्ञा कीथीकि यह नवांचित्र मैंतेरे पुत्रकोदूंगावह इन आठों
चित्रोंसे जो तुम्हारे निकटहैं सुंदरतामें कहीं अच्छाहै मैंने अपनी प्रतिज्ञाके प्रतिपा

तनके लिये इसके स्वरूप में तुम्हें स्वमदिया वह हृदयकुरूप मैं होथी ओर मैंने नहीं तु
केवल गौथ्यथन बतलाया जिसमें तुमने अशरफियों का पात्र ओर हीरे के पात्र रक्खे पा
ये मुझे तुम्हारा मनोरथ विदित है जिस हेतु तुम यहां आये हो धीर्य रक्खो तुम्हारी का
मना सिद्ध होगी यदि मैं तुम्हारे पिता से उसके देने का प्रण नभी करता तो तुमको निस्स
देह देता अब तुम मेरा एक काम करो कि एक स्वरूपवान् कन्या जिसका अंतःकर्ण सु
द्ध हो मेरे लिये लाओ परन्तु चेतनरहू उससे किसी कर्म की इच्छा न रखना जेनने इस ब
चनको मान बड़ी प्रतिज्ञा और बिनती की कि यदि ऐसी कन्या जैसी आपने कही है मुझे
मिलेगी तो लाऊंगा उसके रूप की तो परीक्षा हो सकती है परन्तु उसके हृदय की कौन जा
ने राजसेन मुसकाराय कहा सत्य है मनुष्य दूसरे के अंतःकरण का हाल नहीं जान
ता कि वह मभी अपनी जाति के मनका हाल नहीं जानते अब हम एक दर्पण तुम्हें
देते हैं उससे अंतःकरण का हाल तुम्हें मालूम होगा जब कोई सुंदर कन्या पन्द्रह वर्ष की
तुम्हें मिले तुम उसका मुख इस शीशे में देखना यदि वह गुणयुक्त होगी तो तुम को
उसका मुख स्वच्छ दीखेगा नहीं तो यह दर्पण ऐसा हो पड़ेगा कि कदापि तुम्हें भली भां
ति उसकी सुंदरता मालूम न होगी चेतन रहो इस प्रतिज्ञा में अंतर न पड़े नहीं तो तुझे

२
सत्र
३२
32

मारडालूंगा जैनने फिर यही प्रतिज्ञाकी किमैं अवश्य इसप्रणकोपूरा करूंगा फिर वा
नप्रसपतिने जैनको दर्पण देकरकहा हे पुत्र अब तुम बिदा होइसी दर्पण के कारण
तुम्हारा मनोर्थ सिद्धहोगा फिर जैन और मुबारक वानप्रसपतिसे बिदा भये और उसी
भांतिदोनों नावपरबैठ क्षणभरमेंपार उतरे औरवहांसे अपने वाहनोंपर सवारहोय
सबलोगों समेतकैरू नगरकी ओर सिधारे जबवह दोनोंकैरूमें पहुंचे जैनने कईदि
नतकवहां विश्राम कर मुबारक से बिदा मांगी किकन्याकोढूंढने जावे मुबारकनेक
हाका यहांसुंदरकन्यानहीं हैइस नगर में जितनी तुम्हकन्या मिलेगी दूसरे पुरमें मि
लना उनका कठिनहै जैनने कहातुमसत्य कहतेहो परंतु मैनहीं जानता कि ऐसीकन्या
कहां मिलेगी मुबारकने कहा इससे आपभरोसा रखिये यहांएक वृद्धस्त्रीहै किउसको
ससरण नगरकी कन्याओंका हालभलीभांति मालूम हैउसको बुलवाय उसकार्य्यके
दान उसवृद्धाको किवालव मेहनकर्म मेंनिपुण औरमहाधूर्ततीथी बुलाया वह थोड़े
कालमें बहुतसीलड़किया पंद्रह पन्द्रह वर्षकि रूप अनूपमें रूपमें और चंद्रमाके स
दृशथीलाई परंतु जब जैनउनका स्वरूप दर्पणमें देखता तोमलिन पाताऐसी कोई

भी नथा जिसकी सूरत दर्पणमें निर्मल दीखे निदान निरुपाय यह होय जैन और मवारा
कदोनों के रूपसे बगदाद में गये वहांएक विशाल मंदिर किराये कोले उनने और बड़ी
उदारतासे रहनेलगे उनके घरमें प्रति समय भोजन के पात्र बिछे रहते और नानाप्र
कारके व्यंजन पके रहते और सैंकड़ों मनुष्य उनके साथ भोजन करते जो बचरहता
भिक्षुकों को बांटा जाता निदान उसकी उदारतासे पुरवासी आदि सब आनंदसे रहते
यह समाचार सर्वत्र प्रसिद्ध भया संयोगवश उसगलीमें एक मनुष्य मुरादनामक महा
अहंकारी और ईर्षी रहताथा वह धनवान और उदारको देखकर जलता और विरोध
रखताथा किवह आप निर्धन था जैनुस्सनम की उदारताको देखचिन्तित हुआ एकदि
न संध्याकी निमाज़ के पीछे मसजिदमें बैठ अपने मित्रोंसे कहा भाइयो मैंने सुना है कि
एक मनुष्य हमारी गलीमें आके उतरा है दिन २ हजारों रुपये खर्च करता है मैं इस न
गर में किसी को ऐसा नहीं पाता जिसने उससे कुछ लिया न हो ऐसा जान पड़ता है कि
वह चोर है जो इसवेषसे इस नगरको लूटने आया है तुम सब उससे अपनी रक्षा करो।
क्योंकि खलीफ़ाको यह बिदित न होगा कि ऐसा डकैत इसगली में रहता है तो ऐसा न हो
जो हमभी इसी अपराधमें फंसें सबोंने उसके बचन सुन कहा वास्तव में ऐसे डरसे बचना

२
सत्
३२
33

उचितहै किंतु हमें चाहिये कि ऐसे मनुष्यकी खबर कोनवालसे करें ईखीयह मन सुन
अपने महल में आया और मनमें यहशोचा कि कल अवश्य कोनवालसे यह बात क
हूंगा दैव योगसे मुबारकने भी सबदकी बेदहासे निश्चिंतहोय उनमें बैठ उसी ईखी की
बातें सुनी थी तुरंत एक थैली पांच सो अशरफियोंकी और कई थान रेशमी गठरीबां
धअधानसमय उसके घरगया मुराद उसके आनेका हालपाय भीतरसे बाहर निक
ल आया और कोपितहोय मुख बनाय मुबारकसे कहा तेराक्या नामहै और तू मेरे घर
आया और मुझसे क्या चाहताहै मुबारकने अति नम्रहोय कहा मैं बिदेशी तुम्हारे प
ड़ोस आयरहाहूं फिरवह थैली और रेशमी थानोंकी गठरी उसेदेदी और कहा जनने
जो तुम्हारे पड़ोसमें उतराहै तुम्हारी बड़ाई को सुन मुझे तुम्हारे निकट भेजाहै उस
को तुम्हारे दर्शनकी इच्छाहै और यहभी कहाहै कि यह थोड़ीसी वस्तु लेलो और
मुझे सदैव अपना सेवक समझोवह उसे लेप्रसन्नभया और मुबारकसे कहा मेरा
प्रणाम अपने शाहज़ादे से कहदो कि मैं आपके सन्मुख नआनेसे लज्जित हूं अभा
नको मैं अवश्य आऊंगा निदान दूसरे दिन भोरको मसजिद में जाय मुरादने अपने मि
त्रोंसे कहा भाइयो मुझे भलीभांति ज्ञानहुवा कि वह मनुष्य जिसका दृत्तांत मैंने कल।

तुमसे कहा था बहुत अच्छा आदमी है कुकर्मी नहीं किन्तु वह किसी बादशाहका पुत्र है अब कोई उसको इठो बात बादशाहसे न कहनी चाहिये निदान मुरादने जो बातें आगिले दिन उनके चित्तमें जमाई थीं सब उठादीं इसके अनन्तर अपने महलमें जाय अति सच्छ बस्त्र पहिर शाहजादेकी भेंट को गया जेननने उसका बहुत सन्मान किया मुरादने जेननसे कहा तुम्हारे इस नगरमें आनेका क्या हेतु है और किस प्रयोजन से तुम यहां इतने दिन ठहरे जेननने कहा मैं यहां एक महा सुंदर कन्या पंद्रह वर्षकी ढूंढने आयाहूं मुरादने कहा ऐसी कन्याका मिलना अति कठिन है परंतु मेरे बिचारमें एक है उसका पिता प्राचीन मंत्री है अब उसने बहुकाल से बादशाही सेवा छोड़दी है और अपनी पुत्री को अपनापमें कर्म सिखाया है वह कन्या रूप अनूपके विशेष अंतःकरण की स्वच्छता भी रखती है यदि तुम उसके पिताके समीप जाय उसको कांक्षा करोगे तो वह निस्संदेह उसे तुमे देदेगा जेननने कहा मैं जबतक उसमें वह सब गुण देखन लूंगा कदाचित उसके साथ विवाह न करूंगा मुरादने कहा तुम क्योंकर एकही बेर उसे देखसकोगे यह बातें तो बहुत दिनतक रहनेसे मालूम होती हैं जेननने कहा मैं उसका स्वरूप देखे नहीं जानलूंगा यह सुन मुरादने कहा अब मैं जाय उसके पितासे एक बेर सुख देखनेको

१
सत
२४
34

कहताहूं तब उस समय उसकी परीक्षा लेलेना इसके अनंतर जैनने मुरादके साथ जाय मंत्रीसे भेंटकी मंत्री उसकी जाति पांति पूछके अपनी पुत्रीसे व्याह देने पर राजी हुवा और अपनी पुत्रीको आज्ञा दीकि एकबेर इस शाहजादेको सन्मुख होकर अपने मुखसे बुरका उठादीजियो दिदान जब उसने बहुमूल्य रत्नजटित वस्त्र पहिर अनेप कोमल मुख से बसन उठाया तो वह उसे देखतेही मोहित हुवा और अपने मनमें विचारा के जो होगा मैं इसे अपनेही साथ बाऊंगा राक्षसपति कोन हूंगा फिर उसने उसका स्वरूप उसी दर्पणमें देखा तो अत्यन्त सुन्दर और उज्वल दृष्टि पड़ा और वह दर्पण सूर्यवत प्रकाशित भया इस रीत्या सभी उसे भरोसा हुवाकि जैसा ढूंढता था वैसाही उसे पाया फिर मंत्रीने काज़ी को बुलवाय उसका विवाह बांधा और तीन दिनतक उसे अपने घरमें रख विवाह की सब रीतें बड़ी सजधजसे की सिस पीछे जैनने अपने डेरे पर जाय लाखों रुपये का जड़ाऊ कङ्कण मुबारकके हाथ कन्याके लिये भेजा फिर मंत्रीने बहुत सा दहेज दे मुबारक के साथ कन्या को विदा किया जैनने वहां के अमीरों और मंत्रियों को निमंत्रण दिया और अनेक प्रकारके व्यंजन खिलाय सत्कार किया मुबारकने जैनसेन तत्पश्चात कहा अब यहां रहने की कुछ आवश्यकता नहीं के इकोपथा राजो प्रतिज्ञा तुमने राक्षस पतिसे की है उसप

पर हठरहो उसेन भूलना जैनने कहा मैं इसकन्या परमोहितहूं क्योंकर राक्षस पतिको हूं
अबमैं इसे अपने देशबांसरा कोलेजाय अपनी मल्का बनाताहूं मुबारकने कहा कदा
चित् ऐसा कामनकोजियो राक्षसे पतिसे यह बात छिपन रहेगी तुम्हारे भोगकरनेके
पहिले वह तुम्हें बधकरडालेगा और उसेअपने साथले जावेगा इसकारण तुमअहवि
चार अपने मनसे निकालो जिसभांति बने अपने प्रणके अनुसारइस सुंदरीको उसके नि
कट पहुंचाओ कि उसके अनुकूलरहने सेतुम्हाराभलाहै जैनने अपना चित्त हठकर
कहा तुमइसको मुफसे छुपाओंकि मार्गभरमें मैं उसेदेखनेनपाऊं फिर मुबारिकया
त्राकी तैयारी करके शाहजादे औरउलाहिन समेत सिधारा औरवहांसे राक्षसपति
के दासको राहली मार्गान्तरमें वह चंद्रमुखी बीमारहोगई औरशाहजादेको कि केव
ल विवाह केदिन देखाथा घबराके मुबारिक सेसब्बा कि इतनी यात्रा करके अभीमैं अ
पने पतिकेदेशमें नंहीं पहुंचो मैंने बिवाहके दिनके सिवाय उसे फिर नदेखा इसकाक्या
हेतुहै मुबारकने कहाहे सुंदरी अबमैं तुफसे झूठ नहीं बोलूंगा समतोयह है तुमजे
नका स्वरूपकदापि नदेखोगो उसने जोतुमसेविवाह कियाहैबासराकेलेजानेकेवास्ते
नथा किंतु तुम्हें राक्षस पतिको कि उसने जेनसेतुम ऐसी सुंदर कन्याको मांगाथा ब्रग

२
सत्
२५

33

दाद सेलायाहै यह सुन वह रोनेलगी उसके रुदन करने से मुबारक औरजैन दोनों चिंता
करने लगे फिर उस सुंदरीने कहा यहां मेराकोई नहीं मैंदीनविदेशी हूं तुम उसईश्वरस
च्चिदानंदसे इस विषयकाकि मुझे तुमछलसे यहां लाये और मेरे मारनेकी इच्छा रख
तेहो प्रलयमेंक्या उत्तरदोगे निदान इसीदशासे वह उसे राक्षसपतिके सन्मुखलेगये औ
रउसे सौंपदिया राक्षसपतिने उसेदेखपसंदकिया और हर्षितहोय जैनसे कहा तुमने
अपनीप्रतिज्ञा पूरीकीजैसीमैं चाहताथा वैसी सुंदरकन्या तुममेरे हेतुलाये मैंतुमसे
महाप्रसन्नभया अबतुम यहांसे तुरत अपने देशको जा उसीतैखानेमें जहां तुमने द्र
व्य पायाहै नवों चित्र जिसके देनेकी मैंने तुमसे प्रतिज्ञाकीहै पाओगे जैन राक्षसपति
से विदाहुवा और केहकी ओरसिधारा वहां पहुंचथोड़ेदिन ठहराफिर नवेंचित्र कीला
लसासे बोसराको चला परंतु संपूर्ण मार्गमें उसीचंद्रमुखीको स्मरणकरतारोता और कह
ताथा खेदहै कि हमछलसे उसको उसके प्रिय पितासे छुड़ाय उसके मारनेके लि
ये राक्षसपतिको देआये उसीचिंतामें वह बोसरामें पहुंचा उसके मंत्री सभासद छोटेब
ड़े महाहर्षितभये प्रथम जैन अपनी माताके निकट गया और अपनी यात्राकाहाल
आदिसे अंत पर्यंत कह सुनाया उसने कहा अबतुमशीघ्रउसनवेंचित्र कोपाओगे उ

सोस्थानपर चलो जहां रत्नसपतिने तुम्हेंदेने कीप्रतिज्ञा कीहै परंतु जेनअपनी प्या
रीके वियोगमें नवे चित्रको भूलगया और मनमें कहने लगा अबमें अपनी प्यारी विना
नवा चित्र लेकरका कहूंगा है ईश्वर किसी प्रकार उस प्राण प्यारी को मुझे दिलवादे नि
दान जैनअति चिंतित होयअपनी माता सहित नवाचित्र लेनेको उतरा और वहांजा
य नेवेखम्भपर चित्रके बदले एक सुंदरीको बैठेदेखा शाहजादेने उसपहिचाना किय
हतोवहीकन्याहै जिसेहम रत्नसपतिको देआयेथे देखतेही वह आश्चर्यित हुआ और
विस्मितहो खड़ा रहगया उसकन्या नेजेनसेकहा तुम्हारा अचंभा इसहेतुहै किमेरे ब
दले तुम किसीअन्यवस्तुको जो मुझसे उत्तमहै लेने आयेथे जेनने कहा है सुंदरी इ
सलिये मेरा आश्चर्य नहीं जो तुमने बिचारा किंतु तुम ऐसी वस्तुकोपाके मारेहर्षके
विस्मितहूं ईश्वरजानताहै तुम्हारी प्रीति और मोहमें मेरा बुराहाल हुआ और बराब
र तुम्हारा स्मर्णबनारहा किया बुराकामकियाकि ऐसे स्थानमें फेंक आये परंतुका
करूं इसविषयमें मैं लाचारथा क्योंकि रत्नसपतिने मुझसेवचनलेलियाथा कि मैंउ
से एककन्या तुम ऐसी पहुंचाऊं यदितनकभीइस प्रतिज्ञामें अंतर पड़नातोवह इमुझे
मारडालता मैंने मार्गमें बहुत चाहाकि उसप्राणको भगाकर तुम्हें अपनेदेश में ला

१
सत्र
३९
36

फं औरनवें चित्रसे हाथउठाऊं परंतु मेरे मित्रने जोमेरे साथथा राक्षसपतिके भयसे मु
फे मना किया अबईश्वरने मुझे घर बैठेदेदिया औरनम मुझे उनचित्रों वह संसार के स
म्पूर्ण द्रव्यसे भी अधिक प्रियहो जैनयह कह चुकाथा कि अकस्मात एकघोरशब्द भ
या और मंदिरहिलने लगा शाहजादेकी माता इसदशाको देख भयभीतहुई इतने।
में राक्षसपति मनुष्यरूप से प्रकट भया औरजैन कीमातासे कहने लगाहे मलकामें
तेरेपुत्रसे अति स्नेह रखताहूं जबमुझे मालूमहुवाकिवह इससुंदरी परमोहितहै
औरकेवल अपनी प्रतिज्ञाके पूर्ण करनेको लाचारीसे मुझे यहसुंदरी दीनो मैंने इसे
दंडडालोफिर जैनसे कहा इसीप्रीतिसे सदैव रहना और कोई दूसरी स्त्रीसे ब्याह क
र इसकन्याकोदुःखनदेनाफिर उसनवें चित्रको भीदे शाहजादेसे विदाहो गुप्तभया
शाहजादेने अतिप्रसन्नहो ऐसेही पिटगाई किपुरवासी इससुंदरी को आजसे बांसरा
की मलकाकहैं सोबहुकालपर्यंत वह अति आनंदमंगलसेरहे ॥ शाहजादे खु
दाद औरदरियाबारशाहजादीकाचरित्र इसकथाके मध्यमें दरियाबार देशकाभी वर्णा
न कियाजाताहै हैरन नगरमें एकबड़ा बादशाह प्रजापालक सर्वगुण अलंकृतथा उसप
रमात्मा प्रभूने सबकुछ उसेदियाथा सिवाय संतानके कोई कामना उसे नथी यद्यपि उस

के महल मेंबहुतसी सुंदरसुंदर स्त्रियांथी परंतु किसीसे संतानन उपजती बादशाह स
र्वदा सच्चिदानंद ईश्वरसे पुत्रार्थ प्रार्थना करताथा निदान एक निशाको उसने स्वप्नमें देखा।
कि एक अति उज्वलस्वरूप सत्पुरुष उससे कहताहै कि हे बादशाह तेरी प्रार्थना स्वीका
र भई प्रभात उठ निमाज़ पढ़ ईश्वरसे निजका मनोर्थ प्रार्थनाकर तत्पश्चात् अपनी पुष्पबा
टिका में जाय मालीसे अनार मंगवाय अपनी इच्छानुसार भोजनकर वह ईश्वर सर्वोपरि
है तुझपर कृपा करेगा बादशाहने भोरको उठरात्रिका स्वप्न स्मर्ण कर प्रभुका धन्यबा
द किया तदनंतर वंदना कर घुटनोंके बल खड़ाहो प्रार्थनाकी स्तुति बागमें गया और
बागवान् सेएक अनार मंगवाय पचासदाने गिनके खाय क्योंकि उसकी पचास स्त्रियां
थी उसदिनसे पारी पारी हर एकसे बिहार करनेलगा ईश्वरकी मायासे उसकी संपूर्ण
स्त्रियां सगर्भ भईं परंतु एक स्त्री जिसका नाम पीरोजथा उसके कुछभी चिन्ह गर्भ का प्र
कट नभया इसहेतु बादशाहको उससे ग्लानि हुई और बिचारा कि यहबांझहै क्योंकि
परमेश्वरने इसे कुलक्षण और दुर्भागी समझकर चाहा कि यह शाहज़ादेकी माताहो
तदनंतर उसने चाहा कि पीरोजको मरवाडाले परंतु मंत्रीने उसे वर्जा और समझाया कि
कदाचित यह भी गर्भवती हो और उसका गर्भ और स्त्रियों के सदृश प्रकट नहुआहो बाद

२
सैर
३०
37

शाहने कहा अच्छा इसेमति मारो परंतु यह मेरे नगरमें नरहे मैं इसे नहीं देख सक्ता
मंत्रीने कहा बहुत अच्छा इसको अपने भतीजेके निकट जिसका नाम समीर है भेजदी
जिये बादशाहने उसे समरिया नगरमें भेजदिया और अपने भतीजे को एकपत्र लिखा
कि यह सुंदरी तुम्हारे समीप भेजते हैं यदि उसका गर्भ प्रकट होवे कोई पुत्र इसके
उदरसे उत्पन्न होतो तुरंत मुझे संदेशा भेजना ईश्वरकी कृपासे वह पीरोज़ समरिया दे
शमें जाय एर दिनों बेटा जनी तब शाहजादे समीर ने हैरनके बादशाह को पत्र लिखे
कि पीरोज़ केपेटसे पुत्र उत्पन्न भया बादशाह को इस शुभ समाचारके सुनतेही प्रसन्नता
भई और उसका यह उत्तर लिख भेजाकि यहांभी भगवत्की कृपासे सब स्त्रियोंके उ
दरसे एक २ पुत्र उत्पन्न भयाहै मैं पीरोज़के बेटाहोनेसे अतिहर्ष युक्त भया तुम उसके
नाम खुदादाद रक्खो उसको भलीभांति पालन पोषण करो और जो कुछ तुमको ब
ही आदि रीतोंमें चाहिये यहांसे भेज दियाजावेगा समीर उस कुंवरका पालन मनसे क
रनेलगा जब खुदादाद पाठन योग्य भयातो घोड़ेकी सवारी शरविद्या और संसारके स
कल गुणोंको सीखनिपुण भया जब अठारहवां वर्ष लगातो ऐसा रूप और पुरुषार्थ
हुवाकि कोई उसके सदृश संसारमें नथा उसने अपने को अतिबलवान और साहसी

देख अपनी मातासे कहा मुझे तुम आज्ञादोतो समीरया नगरकोतजकंही अनतजाय अपने पुरुषार्थ कीपरिक्षालूं आज कल मेरेपिताहै इनके बादशाह के कई शत्रुहैं और चढ़ओरके कई बादशाहभी चाहतेहैं कि उसपरचढयावें बड़ा आश्चर्यहै कियेसा ऊसमयमें मेरा पिता मुझेकोंनहीं बुलाता और मुझे इस कठिन समयमें अपने साथ। कों नहीं करता मुझे यहां रहनाउचित नहीं यद्यपिमेरा पिता मेरे पुरुषार्थ और साहस कोनहीं जानता और मुझे नहीं बुलाया परंतु मुझे आपही उचितहै कियेसे ऊसमय। में अपने पिताके निकटजाऊं माताने कहाहै प्यारेपुत्र यद्यपि तुम्हारा बियोग मुझे स्वीकार नहीं परंतु ऐसे कालमें कि शत्रुचढ़ ओरसे तुम्हारे पिता परचढ़ आयेहैं त म्हे वहां पहुंचना अवश्यहै शायदवह तुझे अपनी सहायता के लिये बुलाभेजे खुदा। दादने कहा ऐसे समयमें उसके बुलानेकी बाटमें देखनहीं सका इसके विशेष मुझे अपने पिताके दर्शनकी इतनीलालसाहै यदि मैंजाय उसे नदेखूं औरउसके चरणनचूमूं तो निश्चयहै कि में मरजाऊं मैंवहां पहुंच बिदेशीबन उसकी सेवा करूंगा और जबतक मेरे पिताको मेरा पुरुषार्थ सूचितनहोगा तबतक अपनेको उसका पुत्र प्रकटनकरूंगा। परंतु माताने उसेजानेकी आज्ञानदी एकदिन वह शाहजादा अहेरकेबहाने सफेदघो

सेतु
३८
38

हुई पर जिसकी लगाम स्वर्ण और ज़ीन आदि रत्न जठित मोतियों के फालड़ों की ठकी ऊ
इथी सवार ऊवा और रत्न जठित यत्तुवीण अपनी भुजा पर लटकाय समसिया से चला औ
र शीघ्र ही अपने मित्रों और सभासदों समेत बड़ी धूमधाम से हेरन नगर में पऊंचा और
औसर पाय बादशाह का सामना का दंडवत की बादशाह उसके रूप को देखने ही प्र
सन्न भया और अति कृपा पूर्वक उसे अपने निकट बुलाय नाम और जाति पांति सब की खु
दादाद ने कहा मैं एक धनवान का पुत्र और केहरू नगर का निवासी हूं सैर के व्यसन से अपने
देश को तज देशों को देखता आपके सन्मुख पऊंचा मैं ने सुना है आप को शत्रु ओं ने घेरा
है चाहता हूं कि इस संग्राम में अपनी वीरता आप को दिखाऊं बादशाह उसकी वीरता
युक्त वार्ता सुन अत्यन्त प्रसन्न भया और अपनी सेना का उसे रणधीर किया उसने अपने श्र
योनी कटक को देखने ही सब प्रधानों का सन्मान किया और सब को राजी किया और
यथाविधि साज सामान से उसे अलंकृत किया बादशाह उसे देखने ही प्रसन्न ऊआ
और उसकी सुबुद्धि पर उसे अपना सभासद किया वहां के मंत्री उसके स्वभाव को देख
उसे मन से प्यार करने लगा उसके सामने सकल शाहजादे और अन्य अधिकारी तुच्छ
हो गये ऐसे वह डाह करने लगे खुदादाद उस बादशाह को बऊत प्रसन्न रखने लगा और

दिन २ बादशाहकी कृपा होहिउस पर अधिक होतीजो शत्रु हैं उन देशको पराजय कियाचा

हतेथे कटककाबनाव औरयुद्धकी सामिग्री नेछावरदेव अपने २ देशको चलेगये थीरेथो

रे बादशाहने उसकी बुद्धि परविश्वासकर अपने समस्तपुत्र उसे सौंपदिये किवह होशियार

हों यद्यपि खुदादाद अपने भाइयों से लघुथा परंतु अपनी चतुरतासे सबका हाकिमभया र

ससे वह सब उससे महाईर्षा रखने लगे और शत्रुहोगये औरपरस्पर कहनेलगे हमारे

पिताकोक्या होगयाजो इसविदेशीको इतना प्यारकरताहै किहमसब परइसेहाकिम कि

याहै हम कोई कर्म इसकी आज्ञाबिना नहीं करसके यह बातहमें कदाचित स्वीकार न

हीं इसका कुछ यत्न कियाचाहिये कि इस विदेशीको यहांसे निकालें औरइसे कोई दोष

लगावें एकनेकहा इसे अकेला पायमार डालें दूसरेनेकहा इसभांति इसेबधकरना हमा

रेवास्ते अच्छानहोगाक्यों कि यहबात बादशाहसे छिपीनरहेगी और वह हमारे प्राण।

का बैरीहो जावेगा ईश्वर जाने हमारे साथक्या करेइससे उत्तम यहहै किइससे अहेर।

खिलने की आज्ञालेकर किसी औरको चले जावें औरकिसीदूर देशमें होरहें इससे हमा

रे पिताको बड़ा खेदहोगानिदान अप्रसन्न औरचिंता युक्तहोय इसे मारडालेगाफेर वि

चारसेयह युक्ति उत्तमहै उन सबने कहा निस्संदेह यह मतअच्छाहै यह समयकाउ

सैत
२६
39

उन्होंने खुदादादके निकटजाय कहायदि हमें आज्ञाहोतो हमसबभाई मिलके सैर तमाशा
देखने और अहेरखिलने जावें संध्या पर्यन्त आजावेंगे खुदादादने कहाजाओ वह सबभा
ई अहेरका बहानाकर चलेगये औरफिरन लौटे तीसरे दिन जब बादशाहने उनसबको
नदेखातो खुदादादसे पूछने लगाकि क्याकारणहै किमैं अपनेपुत्रोंको नहीं देखता उस
ने विनतीकी हेखुदावंद तीनदिन बीतेकिवह सब अहेरखेलने कोयक दिनके लिये रु
खसतलेकर गये आजतीसरा दिनहै अबतकलौट करनहीं आये इससेयह सेवकबड़ी
चिंतामेंहै जबवहतदिनबीते औरवहनफिरे बादशाह शोकयुक्त भया औरक्रोधकोप्राप्त भ
खुदादसे कहा हे विदेशी तैने इतनासाहस किया किमेरे पुत्रोंको अहेरखिलनेकी आ
ज्ञादी और आपउनके साथ नगया अबतेरे वास्तेउत्तम यहहै कितजा जहांजाने तरल
उनको ढूंढलानहीं तो निस्सन्देह तेरेबधकरूंगा खुदादाद बादशाहके ऐसे बचन सु
नउदासहुआ और शीघ्र तय्यारहोकर घोड़ेपर सवारहुवा और शाहजादोंढूंढनेको नगर
छोड़ यक ओरको चलाग्राम ग्रामपुर उनको ढूंढताथा जबकहींउनका चिन्ह भीनपा
याती अंमत शोकवानहोय कहनेलगाहे मेरेभाइयो तुम्हेंक्याहोगया औरतुमकहां
हो किसी सबल बैरीकेफंदेमेंतो नहींपड़ेजहांसे निकलनहीं सके जबतक तुम सु

फेन मिलोगेमें हेरन नगरमें नजाऊंगा क्योंकि बादशाहको महाखेद होगा निदान वह ब
न२ ढूंढता ढूंढता एक महानिर्जन बनमें पहुंचा उसके मध्यमें काले पत्थरका एक महल
अति सुंदर बना हुवाथा यह फिरता फिरता उस गृहके नीचे जा खड़ा भया और क्या देखता है कि
एक महासुंदर स्त्री अति दुर्दशामें शिरके बाल खोले उसी घरमें है और उसके संपूर्ण वस्त्र
फटे और मुखका रंग पीला और महा चिंता से कुछ धीरे धीरे कह रही है खुदादादने का
न देकर सुना कि वह कहती है हे बटोही इस स्थानसे भाग नहीं तो अभी इस घरके स्वामीसे बहु
त दुःख पावेगा इस घरका स्वामी जंगी मनुष्य भक्षी है जिनको मनुष्य निकट पहुंचता है वही
इस बनमें आते हैं वह उनमारा उनको पकड़ एक महास्तम्भ अंधियारे तहखानेमें उन्हें
अपने भोजनके निमित्त रखता है खुदादादने कहा हे सुंदरी मुझे बताओ कि तुम कौ
न हो और कहांकी रहनेवाली हो उसने कहा मैंके इदेशकी रहनेवाली हूं और बुगदा
दको जातीथी कि इस उकल्लदाण बनमें पहुंची और वही जंगी मुझे मिला उसने मेरे समा
थ सबकोको मार मुझे इसी गृहमें रख वा है अब मैं जोना नहीं चाहती इससे मरना भला
क्योंकि वह हबशी मुझसे भोगकी इच्छा रखता है अबतक मैंने उससे अपनेको बचाया
यदि मैं कल उसका कहना न मानूंगीतो वह मुझे निस्संदेह मार डालेगा अब मैं अपने प्रा

२
सेतु
धं
40

प्राणसे हाथ धोये बैठी हूं परंतु तुमको अपने प्राण देने यहां आये हो शीघ्र भागो वह ब
टोहियों के ढूंढने को गया है अभी आता होगा वह बड़ी दूरसे बनको देखा करता है
अभी वह स्त्री बातें करती थी कि इतने में वह हबशी आय पहुंचा उसका बड़ा स्थूल
और उग्रस्वरूप था और बड़े टट्टेतरको घोड़े पर सवार भारी खड्ग भुजा में लटकाये हुये था।
उसके सिवाय दूसरेको सामर्थ्य नथी कि उस खड्गको उठा सके खुदादाद उसके बिकराल
रूपको देखके भयभीत हुवा और ईश्वरसे प्रार्थना की कि इस राक्षस को मारे फिर खड्ग नि
काल सावधान हो बड़े साहस और दृढता से उसके पहुंचने की बाट देखने लगा जब वह
समीप पहुंचा था खुदादको निर्बल जानके युद्धकी इच्छा न की चाहता था कि उसे जीता
पकड़े खुदादादने उसके मनका विचार जान लिया कि वह मुझसे युद्धकी इच्छा नहीं र
खता शीघ्र ही खड्ग उसके घुटने पर ऐसा मारा कि वह क्रोधमें आके घोर शब्द करने लगा
उसके चिल्लानेसे सम्पूर्ण बन गूंज गया फिर उस हबशीने फुंफकाय ऐसे बेगसे खड्ग मा
रा यदि वह अपनी और अपने घोड़ेकी चतुरतासे खाली न टेलता तो साफ खीरेकी सदृश दो
टूक हो जाता जब उस हबशीका बार खाली पड़ा तब खुदादादने कपटके ऐसी गदा मारी
कि उसका दाहिना हाथ कटके गदा समेत धरती पर गिर पड़ा फिर एक क्षण पीछे बहुत

घबरागया और आसन उसका विकावसे कूदके पृथ्वीपर आरहा खुदादादने तुरंतथोड़ेसे
उतर अपने शत्रुका शीश काटफेंकदिया वह सुंदरी खिड़की से यह वृत्तांत देखतीथी औ
र ईश्वरसे उसवीरके लिये जयकी प्रार्थना करतीथी जबउस हबशीको मराहुआ और खु
दादादको जयदेखी महाप्रसन्न भई और खुदादाद से प्रकारकेकहा ईश्वरको धन्यबादहै
कि उसनेइस महाउद्दृहको तुम्हारे द्वारा बिनाश किया अबतुमभेरे निकट आओ और इसकी
कुंजिया वह अपने पास रकवा करताथा लोके द्वार खोलो खुदादादजेबके जेबसेबहुतसी कुं
जियोंकागुच्छा निकाल द्वारखोला औरजहां वह सुंदरी बैठीहुईथीगया उसने उस आ
ने देख अगवानीकी औरचाहाकि उसके चरणोंपर गिरपड़े परंतु खुदादादने उसकु
कने भीनदिया इसके अनन्तर उसने इसकी प्रशंसाकी औरकहनेलगी तुम्हारे समान।
योथा संसारभरमें नहींवह सुंदरी पाससे ऐसी रूपवान देख पड़ीकि वैसीहूरसेन देख
पड़तीथी खुदा दादउस देख अत्यंत प्रसन्नभया फिरवह परस्परबैठबातीं करने लगे इतने।
में अकस्मात रोने पीटने का शब्द सुनपड़ा खुदादादने पूछा यह शब्द किसका है औ
र कहांसे आताहै उसने एक द्वारकी ओरजो उस गृहकेनीचेथा सैनसे कहाथहांसे यह
शब्द आताहै इसस्थानमेंबहुत से मनुष्य अभाग्यतासे इसहबशीके हाथमें पड़ेसो इसीज

गए हैं प्रतिदिन वह एकको भून खाताथा खुदादादने कहा मैं उनको निकालनाचाह
ताहूं चलो मुझे बता क्योंकि वह किस मकान में बंद हैं फिर वे वहीं गये और एक कुंजी
कुफल में लगा कर उसे खोलना चाहा परंतु वह न लगी तब उसने दूसरी कुंजी लगाई कि
इतने में वह अधिक शोर करने लगे खुदादादको महा खेदभया किये इतनेको अर्थी
रहोते हैं उससुंदरीने कहा हमारेपांवको आहट औरकुफुलको खड़खड़ाहटसे जा
नते हैं कि वही दुष्ट आया है हममें से एकको भूनकर भक्षण करेगा सब यही विचारते
हैं कि आज मुझे भूनके भोजन करेगा इसहेतु भयसे सबके सब घबराते हैं औरवकुछ
शोरमचाते हैं तो खोने में से उनका शब्द ऐसा सुनाई देताथा मानो वह कूवें मेंसे बोलरहे
हैं निदान जब उसने द्वार खोला तो बहुतसी सीढ़ियोंका ज़ीना दृष्टिपड़ा उस सीढ़ीसे
उतरकर वहां पहुंचा तो वहांबड़ा अंधियाराथा और सहस्रमनुष्यानपाया उसमेंसे मनुष्योंसे
अधिकथे और हरएकके हाथ बेड़ियों से बंधे हुयेथे खुदादादने कहा अब तुमभय म
तकरो तुम्हारे शत्रुको मैंने प्राणसे मारडाला अबईश्वरका धन्यवाद करोकि उसने तु
म्हारेबैरीको बिनाश किया वे सब इसबातको सुनतेही महाहर्षित भये फिरदाने उ
नकी हथकड़ी बेडी खोलने लगे जो बैठियोंहि कुड़ाये जातेथे वह शाहजादेकी स

हायता करतेथे निदान क्षणमात्रमें सबको खोल बहांसेबाहर निकाला तब सबोंने खु
दादादके चरण छुमें ओर उसे आशीर्बाद दियाजबवह सब दालान में जहां भली भांति सू
र्यका प्रकाशथा आये तोउनकेमध्य में खुदादादने अपने भाइयोंको जिनके छूटने के
लिये निकलाथा देख आश्चर्यकिया ओर उसने कहनेलगा उस ईश्वर सच्चिदानंद का ध
न्यवादहै कितुम सब मुझे जीते मिले तुम्हारा पिता तुम्हारे वियोगमें महादुखितहोरहा
है भलातुममें से किसीको उसहब्शीने तो नहीं खाया फिर अपने समस्तभाइयों को गिनके उ
स समूहसे मालाकिया वह प्रसन्नतासे परस्परकंठसे लगेफिर खुदादादने भलीभांति स
बोंकोभोजन कराया ओरबहुतसी वस्तुजो उसकिलेमें ईरानके कालीन ओरचीनकीसा
ठन ओरकमखाब आदिकेथानादिक उसहब्शीने व्यापारीयों के लूटके इकट्ठेकिये थेसब
को दिये ओर जोजोउनकाथा सोसोउनको देडाला फिरकहाजो जोगठड़ी जिसजिस की
होयादिखान केलेले शेषवस्तु सबको बांटदी यथा वस्थित सबको प्रसन्न करके फिर उसने
कहा तुमइस असबाबकोकैसाकरलेजा ओगे सवारी इस निर्जीव बनमेंकहां मिलेगी उन्हों
ने कहा यह सबको हमारे ऊंटभी लूटकर लायाथा वह इसकिलेके पशुशाला मेंहोंगेफि
र खुदादादसबके साथवहां गयातो वहांसौ ऊंठ ओर उन्हीं शाहजादों के सो अश्वबंधेहुये

थे उसने घोड़े और ऊंठोंको जिसजिसके थे देदिये उस पशुशालामें से कई गुलाम ह
बशीथे उन्होंने सबको छुटा देखजाना वह हबशी मारागया इससे भयभीत हो बन
की ओर भाग गये किसीने उनका पीछा न किया फिरवह सब व्योपारी खुदादादसे बि
दा हो अपने अपने देशको पधारे खुदादादने उस सुंदरी से कहा अब तुम किधरजाओ
गी और कहां से यह हबशी तुमको लायाथा हमें बताओ तो हम वहां तुम्हें पहुंचादें
निश्चय है यह सब हैरन के बादशाह के पुत्र तुम्हारे देशको जानते होंगे तुम्हें तो वहां
पहुंचा देंगे उस सुंदरीने कहा मैं कैसे की रहने वाली हूं तुमने मेरे साथ बड़ा उपकार कि
इस महा दुःख से मेरा प्राण और धर्म बचाया अब मैं तुमसे अपना वृत्तांत नहीं छिपाती
हूं मैं बड़े बादशाह की पुत्री हूं उसको पकड़ पकड़ हैने मारडाला और उसका मुल्क
हरलिया मैं अपने प्राण और प्रतिष्ठा को बचाके वहां से भागी यह बात सुन खुदा दाद
और उसके सकल भ्राता ओं ने उससे धीर्य दे कहा है सुंदरी अब तुम आनंद से रहोगी के
सो भांति से तुम्हें दुःख न होगा तुम अपना सब वृत्तांत कहो जब उसने देखा कि वे के
हे नहीं बन पड़ता तब इस भांति कहने लगी ॥ दरियाबार नामक शाहज़ादी का वृत्ता
त एक द्वीप में दरियाबार नामक बड़ा नगर है उसका बादशाह बड़ा प्रतापी था सन्तान न

न्होने सदा चिंतित रहता और ईश्वर से प्रार्थना करता बहुकाल पश्चात् उसके घर बेटा
उत्पन्न भई सो वह मैं ही अभागी हूं मेरे पिता ने मेरे उत्पन्न होने का बड़ा उत्सव मनाया जब मैं सय
यानी भई मुझे उसने लिखाया पढ़ाया और राज्य के प्रबंधादिक भली भांति सिखाये इस
प्रयोजन से कि मेरे पीछे यही राज्य करेगी एक दिन मेरा पिता अहेर को गया था कि उसने
बन में एक गोरखर के पीछे घोड़ा दौड़ाया और उसका इतना पीछा किया कि संध्या हो
गई और अपनी सेना से अलग हो गया निदान थकित होय घोड़े से उतर मार्ग में बैठा
और विचारने लगा कि वह गोरखर थक कर इसी स्थान पर आवेगा इसके अनंतर वृक्षों
के मध्य में कुछ उजियाला देखा तो समझा कि यहां कोई ग्राम है वहां चल रात्रि कि
तो चाहिये भोर भये समझ लिया जावेगा यह विचार वहां से उठ उस प्रकाश की ओ
र चला जब बहुत दूर तक गया तो क्या देखता है कि वह प्रकाश एक गृह से जो घोर
बन के मध्य में है दिखाई देता है फिर उसने द्वार से देखा कि अति विकराल एक हबशी
राक्षस के सदृश उस गृह में बैठा है और बहुत सी शराब की टिलिया सन्मुख रक्खी हैं
और बैल के मांस की कोलों की आग पर भून भून खाता है और टिलियों से उठा उठा मदिरा
पान करता है उसी में उसने एक सुंदर स्त्री को भी देखा कि रस्सी से हाथ बंधे हुये एक कोण में

३
सट
५३
43

मह्हा चिंतासे बेठीहै ओरउसके चरणाके पासदोतीनवर्षका एकबालक बेठाऊवा माता।
कीउर्देशादेख रुदनकरताहै मेरेपिताकोयह वृत्तांतदेखतेही दयाउपजी ओरविचारनेल
गाकि इसदुष्टको गदासे बधकरे परंतु ओसरनपाय उसकी घातमें खड़ा रहा इतनेमें राक्षस
नेबैलका आधामांस खाय सब ठिलियों की मदिरा पीली फिर उसस्त्रीसे कहने लगाहै सु
न्दरी मृगनयनी शाहजादी कबतक तुमुझसे अलग रहेगी ओर मेराकहना न मानेगी दे
खतो मैंनेराकितनासत्कार करताहूं ओरकितनातुझपर मरताहूं तुझेभी उचितहै कि
तुभी प्यारकर उसने दियाहै दुष्ट बनवासी तुझा वकताहै कभीऐसानहोगा जितनातू चाह
हे मुझेउन देवताओंके श्रापसे मारडाले मैंकदाचित तुझसे प्रसन्न नहोंगी वहराक्षस यहवच
न सुनतेही ऊपितऊवा ओरउस चंद्रमुखीको एकहाथसे एकड़खड्ग उठाय चाहा कि उ
सका शिरकाटडाले इतने में मेरे पिताने एक तीरबड़े वेगसे उसके हृदय में मारा कि
छातीके पार होगया ओर उसीसमय वह पृथ्वी पर गिरयम द्वारकोगया फिरमेरे पिता
नेरहमें जाय उस सुंदरीकेहाथ खोले ओर उससे वृत्तांतकोनहै ओरकोंकर यह दुष्ट
के यहां लाया उसने कहा यहांसे पासही समुद्रके तट परसरासगाको जाति बनमानुषों
के सहरशरहतीहै उसके बादशाहसे मेराविवाह भया ओरयही राक्षस जिसे तुमने आ।

मी माराहै मेरेपिताका सभासद मुझपर मोहितथा ओरयही इसकी इच्छा बनीरहतीथी किओ
सर पाय मुझेलेभागे सोएक दिन मेरे भर्तारको अचेतपा मुझे ओर मेरे बच्चेको वहांसे इसबनमें
भगालाया ओरप्रतिदिवस मुझसे भोगकी इच्छा रखताथा परंतु अबतक ईस्वर नेमुझे उससे
बचाया मैने अपने प्राणसे हाथ धोके उससे इसभांति की वार्ताकी तबउसने निरासहोय
मुझे मारना चाहा परयहदुष्ट तुम्हारेही हाथसे नर्कबासी भया मेरा यही हतांतथा जोमैं
ने तुमसे कहा यह सुन मेरे पिताने उसको धीर्यदेकहा प्रभात को मैं तुझे इस निर्जन स्था
नसे दरियाबारको लेजाऊंगा मैंबहांका बादशाह हूं यदि तुम्हें वह नगरपसंदहुवा तो
उसमें रहना उस सुंदरीने यह स्वीकार किया दूसरे दिन भोरको मेरापिता उसबनसे उसको
बालक समेत लेचला इतनेमें अकस्मात् उसके सरदार ओर सेना सकल रात्रिका उसेढूंढ
ते ओर थके ओर दौड़ने फिरनेथे वहां पहुंचे ओरबादशाह के दर्शन पायमहा हर्षितभ
ये ओरउस सुंदरी को बादशाहके साथ सवार देख आश्चर्य करने लगे कि इस निर्जनब
नमें ऐसीरूपवान स्त्रीकहां सेपाई बादशाहने सम्पूर्ण कथा उनसे कह सुनाई फिरएक
ने उससुंदरीको अपने पीछे ओरदूसरे ने उसके बालकको घोड़े परचढालिया थोड़े
कालमें मेरापिता अपने महलमें पहुंचा ओरएक मंदिर अतिसुंदर महा विशाल उसही

के रहनेको बनवादिया और उसके पुत्रको पढ़ानेलगा निदान वह सुंदरी आनंद पूर्वक रह
ने लगी बहुत काल बीता कि उसने अपने भर्तारका कुछभी समाचार नसुना फिर उसने मे
रे पिताके साथ विवाह करनेकी इच्छा की और अति सुंदर हाव भावसे मेरे पिताको मोहि
तकर उससे विवाह किया उसका पुत्रभी थोड़े वर्ष पीछे अच्छा तरुण और सुंदर निकला
राज्यादिक कार्य्योंके विशेष सर्वगुणोंमें अलंकृत भया उसे मेरे पिता और संपूर्ण सभासदों
ने पसंदकिया और सबके विचारमें यह आया कि मेराब्याह उसके साथ होवे और मेरेपि
ताके पीछेगद्दी परबैठे वहयह अबयह बादशाहको अपने रूपरदेख विशेष चाहकी।
खबरसुन अतिप्रसन्नभया फिरएकदिन मेरेपिताने चाहाकि मेराहाथ उसएकजोके मु
केब्याह दे परंतु प्रथम उसने कई प्रतिज्ञाकी उनमें सेएक यहथी कि हमसी स्त्रीसे बिवाह न
करे यहबात उसमक्कार अहंकारीने स्वीकारनकी और समझा कि मुझे नकुछ समझ यह
प्रणकरतेहैं इसीलिये बिवाहनभया इसबातसे वह अतिअप्रसन्नभया और मनमें मेरेपिता
से शत्रुता रखने लगा निदान एक दिन औसर पाय वह मेरेपिताका बधकर मेरे मारने
को महलमें आया परंतु मंत्री यह खबर सुनतेही छिनकी राहसे मुझको तुरंत वहांसे नि
काल लेगया और उसने अपने एक मित्रके गृहमें लेजाय रक्खा और दोदिनकी अवधिमें

जहाज ने प्यारकराय मुझे और एक मेरी दासी को एक देश को कि उसका बादशाह मेरे पि
का मित्र था ले चला आरव्यानुसार कई दिन पीछे ऐसा जल उमड़ा और प्रचंड वायु चली कि
कमान और खलासी उसे देख मूर्छा खाय गिर पड़े निदान तरंगों के वेग से जहाज टूक टूक
होगया और उस अथाह जल में मंत्री आदि सब के सब डूब गये परंतु मैं एक पाट पर ल
हरों के थपेड़ों से समुद्र के कूप पर आय लगी उस सच्चिदानंद प्रभु ने मुझे डुबा देखाने
को अपनी माया दिखाय अब तक जीता रख वा जब मैं सावधान भई तो अपने को तीर पर
पाय ईश्वर का धन्यबाद किया परंतु मंत्री और अपने साथियों को न देख जाना कि वे जल में डू
ब गये इसके अनंतर अपने पिता का मरना याद कर महा विलाप करने लगी और किसी
अपने संबंधी को न देख बहुत घबराई और यह विचारा कि अब मैं भी इस समुद्र में डूब म
रूं इतने में अकस्मात मनुष्य और घोड़ों का बड़ा शब्द सुना और क्या देखती हूं कि कई स
वार शस्त्र सहित हैं उनके मध्य में एक अति स्वरूपवान शाहजादा सुनहले वस्त्र पहिरे
और हीरे का पटका बांधे और शीश पर रत्न जटित मुकुट रक्खे आता है उन सभों ने मुझे वहां
अकेली देख अचंभा किया इसके अनंतर उस शाहजादे ने एक मनुष्य मेरे समीप भेजा कि
मुझसे मेरा हाल सब पूछ कर शाहजादे से कहे उसने मुझ से कितना ही पूछा परंतु मैंने उ

सा॰ त॰
४५

से उतरनदिया औररोनेलगी जबउन्होंने बहुतसे पाञ्जहाज़के तटपरदेखेतोसमझेकेकोई जहाज़हूबगयाहै जिसको यहलकडियां औरघायलवयहां वह आयेहैं यह सुंदरी भी उसी जहाज़परहोगी और किसी तख्ते परपडीवह आईहै फिरउनसबने मुझे घेर लिया और नम्रता पूर्वक पूछनेलगे किमैं अपना वृत्तांत उनसे कहूं जब मैं ने उनसे कुछ न कहा तो शाहज़ादा आधीन होकर आपहीमेरे निकट आया औरसबको मेरे पाससे हटाके मुझसे कहाहै चंद्रमुखी तुमकिसी बातकी चिंता और भय मति करो हम इस देशकेराजा के पुत्र हैं कि तुम्हें अपनेमंदिरमें अपनी माताके निकट लेजावें वह हर प्रकार तेरी सेवा करेगी औरतुमको प्रसन्न रक्खेगी मैंने उसेभला मानुष पायके अपना सब वृत्तांत कह सुनाया उसने सुनतेही अश्रुपात किये और बहुत पछताया फिर मुझे अपने साथलेगया औरअपनी माताको सौंपदिया मैंनेउसकी मातासे भी अपना सब वृत्तांत कहा उसने भी सुन खेद किया और निशिदिन मेरा सन्मान करती रही और अपने पुत्रको मुझपर मोहित औरअधीर देख मेरा विवाह उसके साथ करदिया मैं भी उसके रूप स्वभाव अनूप औरप्रीतिको देख प्रसन्न रही फिर विवाहकी रीतें राजसी प्रकार सेकी गईं भाग्यसे कुछ उपाय नहीं चलता बरातकी रात्रि जंगबारका बादशाहजो उसद्वीपकेनि

कहतीथा औरसदेव उससेयुद्धकी इच्छा रखताथा औरसरयायबड़ा कटकलेचढ़ था
या और उसनगरके बहुत सेमनुष्योंकोमार मुझे और मेरे पतिके पकड़नेकी इच्छाकी
तो हमभीवहां उससे बचके रातों रातसमुद्रकी ओरभागे वहांएकधीवरकीडोंगीहा।
थलगी हमदोनों उसपर सवारहोचले इतनक वह नावजलधारा मेंपड़केएक ओरको
बहीजातीथी परंतुयह मालूमनथा किभागएकहांलेजावेगी निदान तीसरे दिन देवाकि
एकजहाज़हमारी ओरचला आताहै उसेदेख हम प्रसन्नभये और जाना किकिसी ब्यो
पारीकाजहाज़ होगावह हमारी सहायता को आयाहै जबवह समीप पहुंचा तो उस
मेंसे पांचसातडकैत नग्नगदाहाथोंमें लिये हमारी डोंगीपरचढ़ आये औरहम दोनोंको
बांधअपने जहाज़ परलेगये जब उन्हों ने मेरे मुखपरसे वस्त्रउतारदेखातो मुझपर सब
के सब मोहितहोगये औरसबने चाहाकि इससुंदरी को मैंलेवुं कुछकाल पर्यंत वह
परस्पर वादानुवादकरते रहे फिर एकक्षणमें परस्परयुद्धकरकटकर रहगये परंतुए
कमनुष्यजो सबसे प्रबलथा बचरहा मुझसे कहने लगामैं तुझेकेह नगर मेंलेजाय
वहांएक अपने मित्रको दूंगा मैंनेउससे एकदासी लादेनेकी प्रतिज्ञाकीहै अनंतर उस
नेकहायह मनुष्यकौनहै तेरेकुटुंबमें सेहैवातुझपरमोहितहै मैंनेकहायह मेरापति

१
सत्र
५५

46

है उसने कहा यदि ऐसा है तो मैं इस रसडाखिसे बचुंगा क्योंकि यह तफ़को मित्रके नि
कट क्योंकर देख सकोगा यह कह उस महादुष्टने मेरे भर्तारको उठाय उस अथाह जलमें
उसी प्रकार बंधे हुए डाल दिया मैंने रोया पीटा और उसे बचा परंतु कुछ लाभ न भया औ
र उसे जलमें डूबते देख चाहती थी कि मैं भी कूदूं परन्तु उसने तुरंत ही मुझे पकड़ लि
या और मस्तूलको रस्सीसे बांध रक्खा और जहाज चलाया वायु तो अनुकूल होथी शीघ्र
ही एक छोटे नगरमें पहुंचे वह उस नगरमें कई दिन रहे और दास मोल लेके हमको चला
कई मंजिल पृथ्वीके मार्गसे चले थे कि दैवयोगसे स्रोहवशीने जो इस महल में रहा था यह
में आके घेर लिया और जब इसने उसे देख हमने बड़ा ऊंचा मुनार समझा जब निकट आया क
ठिनतासे उसे मनुष्य समझा फिर उसने गदा निकाल उसके कानमें कहा अपने हाथके
दियोंके सदृश बांधकर अपने दासों और इस सुंदरी समेत मेरे साथ होले परंतु चाडीने
बड़े साहससे दासों समेत उसका सामना किया बहुकाल पर्यंत युद्ध होता रहा निदा
न वह दासों समेत मारा गया फिर वह दुष्ट वशी मुझे और ऊंटोंको लूट डेरेको लाय स
मेत भवनके भीतर ले गया और उस मनुष्यके मांससे संध्याको भोजन किया फिर मुझे दे
ख कहा अब शोक और क्रोधको मनसे दूर कर और इस स्वच्छ किलेमें रहकर सुखसे।

आनंदभोग पर्यंत इससमय जो तुमको विदितहै इसहेत आज तुमको उद्धिनकरूंगा कलतुमकसे
विहार करूंगा यह कह मुझे एकमकानमें लेजाय रकूवा और आपद्वार मूंद दूसरे मका
नमेंजाय अकेलासोरहा प्रभातको उठउसने किवाड़खोल और विदेशियोंके छूठनेको दृ
रनिकलगया औरबोली हायफिरा आनाथा कितुमसे सामह्ना भया औरतुम्हारे हा
थों मारा भया जबवह अपना वृत्तांत कह चुकी खुदादादको उसपरदया उपजी और उ
से धीर्यदेकहा अबतुमको किसी भांतिकी चिंतावा भय नहोगा यह बादशाह हेरन के
पुत्रहैं जिसे चाहे स्वीकार कर तुम्हें अपनेनगरमें जाय आनंदसे रक्खेंगे औरइनका पि
ता सबभांतिसे तुम्हारी रक्षाकरेगा यदितुम इनसेभी प्रसन्न नहोतोफिर तुम उस मनुष्य
को जिसने तुम्हें इसडाबेसे छुड़ाया विवाहकरो यहबात उसनेस्वीकारकी सोवहीं बड़े
धूमधामसे व्याहभया वहांसकल वस्तु खाने पीनेफलमदिरा आदिकी वर्तमानथी खुदाद
दने अनेकप्रकारके व्यंजनपकवाये और अपने भाइयोंको खिलाये दूसरे दिनसबवस्तु
अपनेसाथ लेवहांसे हेरन नगरको सिधारे एकमंजिल पहुंच अच्छी जगहदेखडेरेख
ड़ेकर उतरे जबएकही मंजिल नगरहेरनकी शेषरही रात्रिको भोजनकर उनसबनेभली
भांति मद्यपानकी खुदादाद आनंदितहोय कहने लगा मैंने अबतक अपने कोतुमसे छु

२
सत
४०

47

पाया परंतु अबमें अपना हाल वर्णन करताहूं मैंभी तुम्हारा एकभाईहूं अर्थात् हेरनके
बादशाह का पुत्रहूं मुझे शाहज़ादे समेरने पालाहै मेरी माताकानामपीरोजहै और इसी
पाबारसेभी कहाहै सुंदरी अबतक तुमको मेरीजाति पांति ज्ञात नथी अबतुमभी प्रसन्न
होकि तुम्हारा पतिभी शाहजादा है उसनेकहायद्यपि तुमने मुझे अपनावृत्तांत न कहा
था परंतु मुझे पूर्वहीनिश्चयथा कितुमकिसी बड़े बादशाहके पुत्रहो वह सबशाहज़ा
दे उसके वचनसुन प्रगटमेंतो प्रसन्नहुये परंतुमनमें महाईर्षासे उनको यहबात बुरी
मालूमहुई यह दुष्ट ख़ुदादादके उपकारको भूलउसके मारनेकाशोच करने लगे और इ
सीबातकेलिये परस्पर सम्मत करनेलगे एकने उनमें सेकहा हमारापिता उसे विदेशोसे
मक इतना प्यारकरताथाकिहमसबको उसे स्वामी किया औरजबजानेगाकि मेरा पु
त्रहै तोनिश्चय उसे युवराजकरदेगा इसहेतु उत्तमयह है कि इसे यहीं मारडालें यह
विचारकर वह सबउसके ऊपरकेचढ़े और जायगदा मारनेलगे यहां तककि ख़ुदादा
दके टुकड़े टुकड़े कर अपने विचारसेमारडाला दूसरेदिन प्रभात कोहेरन में पंहुचबा
दशाहसे भेंटकी बादशाह उनको कुशल पूर्वक देख बहुत प्रसन्नहुवा और उनसे विलंब
काकारण पूछा उन्होंने हबशीसे पकड़जाना और ख़ुदादादकी सहायतासे छूटने काहालतोन

कहा किंतु यह कहा हमें अदेर विलते विलंव भया बादशाह उनकी वातोंको सच्चजान दु
ष्का होरहा अब खुदादादका वृत्तांत सुनो जब भोरको दरियावारने जागके देखा कि खुदादाद
रुधिरमें डूबा और अनेक घावोंसे घायल पड़ाहै देखतेही उसे मराऊवा जान विलाप करने ल
गी और उसकी तरुणता और रुदन कथनकर आंसुओंसे नदी बहाई फिर जब ध्यान धर उस
का मुख देखा तो कुछ कुछ उसके नथुनोंसे स्वास आताथा और शरीर उसका गर्म पाया तो डेरे
के द्वारको मूंदनगरकी और जर्राह ढूंढने गई और एक जर्राहको अपने साथ डेरेमें लाई वहां
खुदादादको न पाया या तो समझी कि कोई वनपशु इसे उठाय लेगया और रोवाय गया यह विचार
कर इस नीरोंईकी जर्राहिको उसपर दया उपजी और उसे धीर्य्य दे नगरमें लेगया और एक अ
लग मकान उसके निवासको देदोवा दिया उसके सेवार्थ नियत की और भवकया आपभी जा
य उसकी बड़ी सेवा और सन्मान करता एक दिन जर्राहने उसे किंचित् प्रसन्नपाय सच्चा है स
दरी यदि तुम मुझे अपनी आपदा और वृत्तांत सुनाओ तो मैं अपनी सामर्थ्य भर तुम्हारी सहा
यता और परिश्रम करूं उसने उसे चतुर जान अपना संपूर्ण वृत्तांत उसे कह सुनाया जर्राह
ने कहा हे मृगनयनी यदि तुम्हारी इच्छा हो तो हम तुमको तुम्हारे बादशाह तक पहुंचने
का उपाय करें वह नीतिमान है तुमको देख प्रसन्न होगा और तुम्हारा बदला अपने शत्रोंसे

१
सत्व
५८

48

लेगाशाहजादी इसवातपर राजीहुई फिरजरीह नेदोऊंठ किरायेके किये ओरउनपर स
वारहो हैरनहोहैरन नगरमें गया ओरएक सरायमें उतर सराय वालेसे नगरका वृत्तांत सबपूछा
उसने कहा यहांके बादशाहका पुत्र अमेत प्रतापी ओर पुरुषार्थी बहुकालसे लोप है उ
सका हालकोई नहीं जानताकिउसे क्याहुआ जीताहै वामरगया योराज उसकी माताने उ
से ढूंढापरंतुउसका ठिकाना नलगाउसके मातापिताके विशेषपुत्रके सब रईसउसपा
हजादेकी सुधिकर विलापकरते ओर पछताते हैं यद्यपिइस बादशाह के ओर उनवा
स बेठेहैं परंतुकोईभी उसकी वीरता ओरपुरुषार्थ को नहीं पहुंचता यद्यपि उसने बहुतढूं
ढा परंतु कहीं उसका ठिकाना नहींलगता जरीह नेयह सुन यहहाल दरियावार स
कहा उसने चाहाकि खुदादादकी माताके निकटजाय अपने पतिकाहाल उससे कहे य
रजरीहने सोचके उससे कहायदि तुमइस उपायकेलिये वहां पहुंचो ओर शाहजादे
तुम्हारे आगमन कासमाचार सुनेंगे तुरंत तुमको मारडालेंगे तुम्हारे प्राण की वृथा
हानिहो इससे उत्तम यहहै किप्रथम मैं किसीभांति खुदादादकी माताके समीप प
हुंचूं तदनंतर तुम्हें बुलाऊं जबतक तुम यहीं बैठीरहो यहकह वहतो पुरकी ओर
गया मार्गांतरमें एकस्त्रीकोऊंठपरसवारदेखाजिसका साज अतिसरूपथा उसके पी

के बहुतसी बांदियां और अनेक दास और प्यादे एक ओरसे चले आतेहैं पुरवासी उस।
सुंदरीको सवार देखतेही दोनों ओर अगवानी के लिये पंक्तिबांध खड़े होगये जरांहने
भीड़उनसबके साथ उसे दंडवत की एक मनुष्यसे पूछा यहतो कहींकी मल्कामालूमहो
तीहै उसनेकहा निस्संदेह यहांके मनुष्यइससे बहुतसाप्यार करतेहैं क्योंकि यह खुदा
दादकी माताहै निश्चय तुमने उसका वृतांत सुनाहोगा वह यह वचनसुनतेही सवारी
के साथ लगाहुआ चलागया इतनेमें उससुंदरी नेकिसी मसजिदमें पहुंच ईश्वर की।
वंदनाकी औरबहुतसी अशरफियां रुपयेउराय किये क्योंकि बादशाहने प्रतिज्ञा।
कीथी किखुदादादके लौटने तकउसकी माता याचक और मंगनोंको बहुतदानकरे।
कियाचक उसके पुत्रके प्राणको आशीर्बाद दें तदनन्तर जरांहने भीड़में पैठउसके एक
दाससे कहाभाई हमकोएकबात इस समय अवश्यमालूमकरनीहै उसने उत्तरदि
या यदि तुमेकुछ समाचार खुदादादका कहनाहै तोजाओवह निस्संदेह सुनेगी य
दिकोई दूसरा मनोरथहै तोकठिनहै इनदिनों वह अपनेपुत्रके वियोगमें विकलहै ज
रांहने उसके कानमें कहामैं उसीके लाभकीबात कहूंगा दासनेकहा यदि ऐ
साहै तोतुमपकाशाही महल पर्यंत सवारीके साथलगा चलाजा निदानजब फीरोज़

२
सत्व
५९

49

मंदिर तक पहुंची उसी दासीने उससे विनय की एक विदेशी आपसे एकांत में कुछ कहा चा
हता है फीरोज़ने उससे कहा उसे ले आ तदनंतर वह उसे सन्मुख ले गया फीरोज़ने उसे कृपा
दृष्टि से आगे बुलाया जर्राहने पृथ्वी चूम विनय की मैं बड़ी कथा आपसे कहा चाहता हूं
तुम उसे सुन विस्मित होगे तदनंतर उसने संपूर्ण वृत्तांत खुदादाद का कह सुनाया फी
रोज अपने पुत्र के घायल होने का हाल सुनके मूर्छा खाय गिर पड़ी बांदियों ने दौड़के उ
ठाया और उस पर गुलाब नीर छिड़का जब सचेत भई तो जर्राह से कहने लगी तुम जाय द
रियाव को मेरी और बादशाह की ओर से धैर्य दो फिर उसे विदा कर अपने पुत्र की सु
धि कर विलाप करती थी कि अकस्मात उस महल में बादशाह आया और फीरोज को इ
स भांति रुदन करते देख हेतु पूछा उसने जो कुछ जर्राह से सुना था वर्णन किया बाद
शाह सुनते ही अपने पुत्रों से महा अप्रसन्न भया तदनंतर वहां से उठ सभा में आया स
र्व सभा बादशाह को क्रोधित देख कंपित भई बादशाहने तख्त पर विराजमान होय व
जीर को आज्ञा दी कि तत्काल मेरे चौकी पहरे के हजार चपरासी ले जाय उनचालीसों पुत्रों को
पकड़के ले आ और उसी बंदीगृह में जहां खूनी बंधे रहते हैं कैद करो ऐसा न हो कि कोई उनमें
से निकल के न जाने पावे मंत्रीने यह आज्ञा पाय उन सब को पकड़ बंदीगृह में डाल दिया औ

रवादशाहसे आय कह दिया बादशाहनेसभाकों बिदाकर कड़्यएकमास पर्य्यंत उसकेस
भा करनेका अवकाश नहींहुआ एक महीने पीछे आनाफिरवहांसे उठ मंत्रीको अपने सा
थ लिये हुये पीरोज़के महलमें आया और मंत्रीको आज्ञादीकि तुमसराय मेंजायदरिया।
बार शाहजादी को जराह सहित बड़ेसत्कारसे मेरेनिकटला मंत्रीने उसीसमय एक स
पेद ऊंटपर जिसकी सबसामग्री रत्नजटितथी बादशाहकेपशुशाला से लेलिया और।
आपघोड़ेपर सवारहोबहुतसी सेना लेवहां पहुंचा और बादशाहकी औरसेउससबवृ
त्तकहा और उसीऊंटपर सवारकराय औरउसको तुरकी घोड़ेपर चढ़ाय बड़ी धूमधा।
यामसे महलकी ओरलेचला पुरबासी उसकी सवारी औरजलूसदेखनेको दूरदूरसे
दौड़ आयेफिरसबको बिदितहुवा कियह सवारी खुदादादकी पत्नीदरियाबारशाह।
जादीकी है वह सब बहुत प्रसन्नभये औरउन्हें निश्चयहुवाकि हमेंखुदादादका ठिका
नालगेगा निदानजब उसकी सवारी महलके द्वारतक पहुंची बादशाह उसकी अगवानी
को आया उसने अपने बाहनसे उतर बादशाहके चरण चूमे बादशाह उसका हाथपक
ड़ पीरोज़महलकाके घरमें लेगया तदनन्तर वह तीनों परस्पर कंठसेलग बहुत रोये किहि
कियां लगगई जबवहसावधानहुये तब दरियाबार नेबादशाह से बिनय कीमैं आशार

२
सन्त
५१
50

खेतीहूं कि जिन्होंने मेरे पतिको निर्दोष इस निर्दयता से वध किया उनसे उनका बदला लिया।
चाहिये यह सुन बादशाह ने कहा हे सुंदरी तुम भरोसा रक्खो मैं इन सब दुष्टों को मार डालूंगा
पुनि बादशाह कहने लगा यद्यपि मैंने अपने प्रियपुत्र खुदादाद की लोथ नहीं पाई परंतु
उसकी बड़ाई के वास्ते अवश्य है कि एक मकबरा उसका बनवाऊं तदनंतर मंत्री को बुल
वाय आज्ञा दी कि नगर के मध्य में एक मकबरा सपेद संगमर्मर का तय्यार हो मंत्री
ने मेमारों को बुलवाय एक उत्तम स्थान में विशाल मकराव मकबरा बनवाया और उसके मध्य
में खुदादाद का चित्र खिंचवाय रक्खा बादशाह को जब कबर की तय्यारी की खबर पहुंची उ
सने एक दिन उसके रोने पीटने और कुरान पढ़ने के हेत नियत किया जब वह दिन आन
पहुंचा संपूर्ण पुरवासी देखने को एकत्र भये बादशाह अपने समस्त सभासदों और मंत्री
के साथ वहां पहुंचा और एक रथ पर जो काले साठन से मढ़ा हुआ था बैठा थोड़ी देर पीछे सवारों का रिसाला इस रीति से पहुंचा कि उनके शिर नीचे और नेत्र झुके हुए थे और फिर हठी का विच्छेद आया बे
मूंदे झुके ये पहुंचा और दो बेर उस कबर की परिक्रमा कर तीसरी बिरियां उसके सन्मुख ख
ड़े भये और बड़ा शब्द कर कहने लगे हे बादशाह के पुत्र यदि हमारे खड्गवेग और भुजबल से
तुम्हारा छुटकारा होता तो हम प्राणसहित विष मानते हैं यदि ईश्वर को कोई दूसरी आज्ञा है।

तो हम निरुपाय हैं यह कह जिधरसे आये थे तिधर चलेगये तदनंतर ऊटीके रहने गतिशो
ह्द जिन्होंने केवल अपनी आयुमें ईश्वरा राधन किया और कदाचित मनुष्यका रूपभीन दे
खाथा आये उनमेंसे एकके शिरपर बडी भारी अलक रक्खे और उसको अपने एक हाथसे था
मे सबके प्रथमथा वह सब तीनबेर परिक्रमाकर मध्यमें खड़े होगये एकने उनमेंसे बु
ड्ढे शब्दसे कहा यदि हमारे आशीर्वादसे तुम्हारा छुटकारा वा प्राणबचे तो हमभी तय्यारहैं
यह कह वहभी चलगये तदनंतर पचास स्त्रियां अतिरूपवान क्वांरी थाम चंद्रमुखी मृ
गनैनी रत्नजटितः अति सुंदर रत्नित पेंचनी परसवार और शिरोंपर रत्नोंकी टोकरियां भरेहु
ई लिये उसीप्रकार मकबरे के चह्ने और फिरी तदनंतर साम्हने आई उनमें से एक जो सब
से छोटी थी बड़े शब्दसे कहने लगी हे शाहजादा यदि हमारा रूप अनुप तुम्हारे काम आ
वेतो हमवर्तमान हैं हम सब तुम्हारी दासियां हैं परंतु तुम जानते हो इस स्थान पर तनक
सुंदरता भी काम न हो आतो यह कह और आशीर्वाद देवेभी चलीगईं तदनंतर बादा
शाह और उसके साथियोंने तीनबेर परिक्रमाकी और बादशाह खड़ा हो कहने लगा
हे मेरे पुत्र मेरे नेत्र जो तेरे वियोगमें ज्योतिहीन होरहे हैं उनमें प्रकाश कर इस विपकीबा
तोकर रोनेलगा और उसके साथियों नेभी महा विलाप कियाजब निश्चिंत भये बादशाह सभा

२
सत्र
५१
51

सदोंसहितमहलमें आया औरमकबरेकादरवाज़ामूंदागयाफिरअतिसमाऊ एकदिन वहांजा
ना औरसोगकरनातदनंतर बादशाहने उनचालीसों पुत्रों को बदला लेनेकी आज्ञा दीयह समा
चार नगरभरमें प्रसिद्धभया और उनके फांसी की सबसामिग्री तैयारभई संयोगवश कारहुन
पड़ाकि एकशत्रु बादशाहकाजिससे उसने पहिले एतराजकियाथा बहुतसा कटकलियेनग
रकेनिकटपहुंचा बादशाह इससमाचारको सुनबहुतघबड़ाया औरसंशयसमासदभीव्या
कुलहोकहनेलगे बड़ाखेद औरपश्चातापहै यदिशाहज़ादा खुदादादइस समय यहांजो ना
होतातोइसबैरीकोक्षणभरमें पराजय करता निदानबादशाह आपही अपनीसेना साथ
लेसरसेबाहरनिकला औरतैयारीभागजानेकी भीकररक्खीथी किजिससमयपरशत्रुप्रब
लहोगातो नदकेमार्गसे औरकिसीदेशकोनिकलजाऊंगा निदान जबदोनों कटकस
न्मुखभयेयोंनरशत्रुकीसेनाएकाएक औरसे इन्दरघेरचाहतीथीकिविनाशकरे कि अकस्मा
तबहुत सवारोंकी सेनाप्रगटभई दोनों ओरके बादशाह उनकोचातुरतादेख आश्च
र्यितहुए औरनजानायह कटककिसके औरकाहै जबवहसेनानिकटपहुंचीतो हेरना
केबादशाहके शत्रुओंपरचढ़गई और परसेनाको मारकर टुक २ करडालाहैरनबा
दशाहदेख विस्मितभया और ईश्वरकाधन्यवाद किया औरअपने सेवकोंसे कहा इससे

नाके अधिपतिका नाम पूछा कि यह कौन है और कहांसे आया जब उसमन की सेना मारी ग
ई और जो कुछ बची अपना २ माल लेकर इधर उधर भाग गई तब खुदादाद हैरन के बादशा
हको भेंटके लिये आया जब वह दोनों सन्मुख भये बादशाहने उसे पहिचान लिया कि यह
मेरा प्यारा पुत्र खुदादाद है तो इतना हर्षित भया जिसका वर्णन नहीं हो सक्ता खुदादादने
कहा जिसको आपने सुना था मारा गया वह मैं हूं ईश्वरने मुझे आजके दिनके लिये जीता
रक्खा कि आपकी सेवा करूं और आपके बैरीको मारूं बादशाहने कहा हे मेरे प्यारे पुत्र मैं
तुझसे निराश था तेरे मिलनेकी मुझे कब आशा थी कि फिर तुझे जीता देखूं निदान व
ह दोनों पिता पुत्र बादशाहने सवार परस्पर छातीसे मिले पुनि बादशाहने उसका हाथ प
कड़कर कहा मुझे तेरी बीरता प्रथम से ज्ञात हो चुकी है विशेष मनुष्य भली हबशीसे
छुड़ाना और अपने भाइयों से दुःख पाने का हाल तू भली भांति विदित है अब अपनी मा
ताके निकट चलो वह तुम्हारे शोकमें रोते व्याकुल है उसकी अस्थिमात्र रह गई है अ
प तुम्हारे हाथसे पराजयका समाचार सुनकर प्रसन्न होगी मार्गान्तर में खुदादादने बादशाह
से पूछा हे पिता आपको उस दुष्ट हबशीका वृत्तान्त कैसे करके ज्ञात भया कि सो मेरे भ्राताने आ
पसे वर्णन किया होगा बादशाहने कहा नहीं किन्तु दरियाबार से मैंने सब वृत्तान्त सुना व

२
सत
५२
52

है बहुत कालसे हमारे पास रहती है और तुम्हारे भाइयोंसे बुलालेनेको कहती है खुदादाद
ने यह सुनाकि दरियाबार भी यहीं है महाप्रसन्न भया दूसरे दिन खुदादादके सलामत आ
नेका हाल नगरभरमें पहुंचा निदान घरघर उत्सव होने लगा ठौर ठौर नृत्यगीत आदि मंग
ल होने लगे पीरोज़ और दरियाबार खुदादादके कंठसे लगरोई फिर वह चारों एक ही
ठौर बैठ इधर उधरकी वार्ता करने लगे इतनेमें बादशाह और उन दोनोंको यह आश्चर्य
भया खुदादाद इतने भारी घावोंके खाने पर भी क्योंकर जीता रहा सो बादशाहकी आ
ज्ञानुकूल खुदादादने कहा प्रभातको डेरेमें वहांसे एक किसान आया मुझे घायल और
रुधिरसे भरे देख ऊंटपर सवार कर अपने घर लेगया और बनकी बूटियां पीस घावपर
लगाईं सो घाव अल्पकालमें भर आये और थोड़ेही दिनोंमें आरोग्य होगया तबमैं इस नगर
की ओर सिधारा मार्गान्तरमें शत्रुकी असंख्य सेना देखी कि हरनके मारनेको जाती है मैं
ने यह वृत्तांत ग्रामवासियोंसे कहकर उनसे सहायता मांगी और बहुतसे मनुष्योंको
एकत्रकर उनका अधिपति बना और तत्काल औसर पर पहुंचा और आपके प्रतापसे बैरि
योंको परास्त किया बादशाहने खुदादादकी बड़ी प्रशंसाकी स्तुति करनेलगा उनसबको
बैरोंको मारनेकी आज्ञा देताहूं जिन्होंने तुमसे ऐसा अपकार किया उसने विनयकी य

यद्यपि वह इसी दंड के योग्य हैं परंतु आप ही के पुत्र और मेरे भाई हैं मैंने उनका अपराध
क्षमा किया आशा रखता हूं कि आप भी उनका अपराध क्षमा करेंगे बादशाह ने खुदादाद के
कहने से उन सबका अपराध क्षमा किया और समस्त सभासदों को इकट्ठा कर खुदादाद को
अपना युवराज किया और उन चालीसों पुत्रों को अपने सन्मुख बुलवाया वह सब उसी दशा
से बंधे हुये आये खुदादाद सबकी बेड़ियां और हथकड़ियां कटवा करके गले से मिला
और सब से प्रीति करने लगा जैसे कि उनको हबशी के मंदिर में प्यार किया पुरवासियों ने
उसकी सुशीलता परम प्रथम कहा इसके अनंतर उस जर्राह को पारितोषिक और इत्यादि
दे विदा किया मल्का शाहरजादी ने यह कथा संपूर्ण कर शहरयार बादशाह से कहा यदि
आप सोते जागते का चरित्र सुनेंगे तो अति प्रसन्न होंगे इतने में दुनियाजाद ने सर्वतक
हा क्या उत्तम वृत्तांत तुमने सुनाया अब कुछ और कहो उसने कहा अब तो प्रभात हो गया
जो कल मेरे प्राण बचेंगे तो एक अद्भुत कथा सोते जागते की कहूंगी शहरयार ने कहने
की आज्ञा दी सो इस भांति कहने लगी ॥ खलीफा हारूंरशीद और सोते जागते की कथा।
हारूंरशीद खलीफा के समय में एक बड़ा व्योपारी बुगदाद में रहता था उसके केवल
एक ही पुत्र अबुलहसन नामक अपनी ब्याहता स्त्री से उत्पन्न हुआ था उसने बड़े परिश्रम।

१
सन्द
५२
53

से अपनी आयुभरमें बहुतसाद्रव्य संचय किया परंतु महा कृपणथा जबवह मरगया अबु
लहसन अपने पिताके विपरीत बहुतखर्च करनेलगा धीरेधीरे अपनेवह मित्रोंको इतनादि
याकि वहसबधनवान होगये इसके अनंतर उसने अपने शेषद्रव्यके दोभागकिये एकमें न
गरके गृह मोललिये जिनका किराया उसकी आयुभरको काफीथा और द्वितीयभाग से
अपनाखर्च चलाता बहुधा उसके साथ मित्ररहते औरऐसे देवइंद्रके सदृशसभा रहती औ
ररातदिन वह सब अबुलहसन के साथ स्वच्छभोजन खाते जब भोजन तैय्यार होता रंगा
बरंगे उत्तम पात्र जिनमें नानाप्रकारकी चित्रकारियां खिचींथीं बिछाये जाते और वेश्याओं
के नृत्यगीत रातदिन देखते औरभोजनकाल हरदिन अनेकभांतिके उसके सन्मुख नक
लें औरतमाशे करते इसीप्रकार अबुलहसनने एकही वर्षमें अपने पिताको समग्रद्रव्यव्य
य करडालाजब उसे खिलाने पिलानेकी सामर्थ्य न रही मित्रोंनेभी उसके घर आनाजाना
छोड़दियाकिंतु मार्गमें कदापि किसीका सामना होताहो वहउसकी ओरसे मुखफे
र आंखें चुराता औरजोकोई उनमेंसे मिलता औरअबुलहसन उसे ठहराता तो वहकुछ
बहाना करचलाजाता वह उनखोटे मित्रोंकी अशीलतासे विस्मितभया और मनमें प
छताता कि जिनकी प्रसन्नताके लिये मैंने निर्बुद्धितासे अपनासर्व धन खर्च किया उन

के शीलकी यह दशा है निदान महादुखित भया एक दिन अपनी माताके निकट गया और रो
कवान होवेगा माताने उसे चिन्तित देख कहा है प्यारे पुत्र तेरी यह क्या दशा भई मैं सर्वदा ने
त्र चिन प्रसन्न देखती थी आज तू क्यों उदासीन है जान पड़ता है कि तूने अपने पिता का
द्रव्य उड़ा डाला मैं तेरा चलन देख पहिले से जानती थी कि तू शीघ्र ही निर्धन होगा परंतु मैं
भी जानती थी कि कुछ तो बचावेगा परंतु मुझे ज्ञात भया कि तूने कुछ न रक्खा सब लुच्चों
और ठगोंको अपना मित्र बनाय खिला दिया अब इस दुख में कौन काम आता है वह अप
नी माताके यह बचन सुन रो दिया और उन अपने मित्रोंके निकट गया जिनपर निश्चय र
खता था और उसने ऋणकी तौरपर मांगा वह तो उसीसे धन पाय अपना भलीभांति निर्वाह
करते थे सभोंने इन्कार किया ऐसे बन गये जानो कभी की जान पहिचान न थी अंत में अशीलता
से साफ जवाब दिया वह उनसे निराश होय माताके निकट आया और कहने लगा तुमने स
च कहा था वास्तव में वह सब ठग अपस्वार्थी थे निदान उसे भली भांति उन स्वार्थी मित्रोंका
कुनीत ज्ञात भया तब उसने निश्चा की कि कदाचित बगदाद के वासियों से मित्रता न करूंगा अपने
से वस्त्रोंको बेच थोड़ा द्रव्य एकत्र किया और उसे थोड़ा थोड़ा खर्च करने लगा केवल एक वि
देशीको अपने घर ले आता रात्रिको उसके साथ भोजन करके और आधी रात तक उससे मित्र

उचत बातें करता और प्रभात को उसे विदा करता दूसरे दिन दूसरे को बुलाता और इसी भांति व्यव
हार रखता और भोर को भोजन पकवाय पांच चार घटी दिन रहे बगदाद के पुल पर विदेशियों
की ढूंढ में जाय बैठता और रात्रि को उसका सन्मान करता और बातों में अपना मन बहलाता औ
र प्रात उसे बिदा कर कहता अब तुम कदापि मेरे घर में न आना और न मुझ से भेंट करना निदान व
ह उसका मित्रों की मित्रता से उसका ऐसा विश्वास जाता रहा कि वह अधिक भेंट से भागता और उ
से यही टेव पड़ गई थी कि बिना किसी अतिथि के भोजन में स्वाद न लगता इस हेतु यह बात।
ठानी कि केवल दो पहर बिदेशियों का सन्मान करना और दूसरे दिन फिर उसे न बुलाना यदि क
दाचित कोई उससे मिलता तो उसकी ओर नेत्र भी उठाके न देखता बरु प्रणाम का उत्तर भी न दे
ना एक दिन अबुल हसन अपनी प्रकृति के अनुकूल बगदाद के पुल पर बैठा था कि उस दिन
खलीफा हारूंरशीद से उसकी भेंट हुई परंतु खलीफाने अपना भेष ऐसा बदला था कि तनक न प
हिचाना जाता यद्यपि उसके साथ बहुत से मंत्री और सेवक थे और वह सब रात दिन नगर
की रक्षा करते थे तथापि खलीफा आप भी भेष बदल नगर का हाल मालूम करने के लिये नि
कलता खलीफाने इस विषय के लिये यह नियम किया था कि मास की पहिली तिथि को
संध्या से बगदाद के मार्गों में भेष बदल कर निकलता और नगर का बुरा भला देखता सो सब स

लकाबोपारी देखकर उसके बराबर जाय प्रणाम किया पुनि बिनयकी मुझे आशा है की आजकी
रात मेरे घरविश्राम करेंगे और मेरे उत्तम भोजन को खायमुझे कृतार्थ करेंगे निदान उस विदेशी
कोकि वास्तव में वह खलीफा था अपने घरमें ले आया मार्गान्तर में अपनी प्रकृति को उससे प्रकट
किया खलीफा उसके भोले और सुंदरवचन सुनसमझा कि इसका हाल भी मालूम करना चाहि
ये इसलिये उसके साथ होलिया उसने उसे अपने घर में लेजाय अतिस्वच्छ स्थान में जो महासुंद
र शीशे आदिवस्तुओं से अलंकृत था मसनदपर बैठाया इसके अनंतर उत्तम उत्तम भोजन
बिछाय अनेक भांतिके सुंदर पाक उसपर परसदिये उसकी माता पाकक्रिया में अद्वितीय
थी और अपने पुत्रकी प्रीतिसे आपही श्रमकरती सो उसदिन तीन पात्र पाकके लाई प
कमें कई कुक्कुटका मांस था अथवा और दूसरे भाजन में अति उत्तम भुना अथवा मांस तीसरे में क
बूतरका वह सब भोजन इतना था कि उससे कई मनुष्य भोजन करें अबुलहसन खलीफाके स
न्मुख होबैठा और भोजन करने लगा जब तृप्त भये खलीफाके दासने जलभरा पात्र लाय उसके
हाथ धुलाये जब पात्र उठाये गये अबुलहसन की माताने पात्रों में फल बादाम आदिक लगा
य उनके सामने राखे जब सायंकाल भया अबुलहसनने दीपक जलाकर स्वच्छमद्यके शीशे
और गिलास लाये और माता से कहा इस मनुष्य के सेवक को भली भांति भोजन कराना फिर

२
सं०ट
५५

55

उसने मदिराका पात्रभर खलीफाको दिया तत्पश्चात् आपपीगया इसीभांति खलीफाने भीउ-
सेपिलाया फिर आपपीगया इसीप्रकार वह्हदोनों मयपी आनंदित भये खलिफा अबुह्हस-
नके स्वभाव से अतिप्रसन्नहुवा और उसका नाम औरजाति सेपूछी उसने कहा मेरानाम अबु
लह्हसन ह्है मेरापिता स्वर्गवासी व्यौपारीथा यद्यपि अमीरों कीसामिग्रीनथी परंतु प्रतिष्ठा स-
र्वकयह्हो व्यौपारियोंके सदृश निर्वाह्ह करताथा जबवह्हकालवश भया उसका धनसंक्रमि-
त्रोंमैंने उसेबहुतसा खर्चकरडाला परंतुजब आपायन लम्पटता औरमित्रोंकेसन्मानेमें ख-
र्चह्होगया तो मित्रोंने मुझे बांसके सदृश भीतरखोखलापायमेरे घरका आनाजानाछो-
ड़दिया मुझे रुपये लुटादेनेसे डाहभया इस लिये ह्हरएक मित्रकेनिकट सहायताकेलि-
ये गया परंतु किसीनेमेरी सह्हायतानकी सब अप्रीतह्होगये तबमैं समझाकि वह्हसब।
मित्रस्वार्थीथेमैंनेभी उनसे मिलना छोड़दिया औरयह्ह प्रतिज्ञाकीकि बुगदादके वासि-
यों सेकिवह्हकिमह्हा अशीलहैं कदाचित्नमिलूंगा किंतु प्रतिदिन विदेशी को केवल
एकरातके लिये लाकर अपने साथभोजनकराऊंगा औरदोपह्हर उससे वार्ताकर प्रभातको
उसेबिदाकिया करूंगा जैसाकिरात्रमें आपसे कह्हाथा खलीफा अबुलह्हसनके यह्हबचन
सुनबहुतप्रसन्नभया औरकह्हने लगा तुमने भलाकियाकिऐसे स्वार्थीझूठे मित्रों सेमिलना

छोड़दिया अबतुम निस्संदेह आनंदसे रहतेहो और दिन दिन विदेशियोंसे अपना जीवबह
लाकर भोरको उन्हें बिदाकर फिर उनसे प्रयोजन नहीं रखते तुम्हारा स्वभाव बहुत अच्छा है मु
के तुम्हारे इस आनंदपर बड़ी ईर्षा है अनिबद्धकाल पर्यंत वह मद्यपान करते और हास्यादि
क की वार्ता करते रहे इसमें रात बहुत बीती खलीफा ने कहा रात्रि बहुत बीती तभई मुझे
खबर कौ मंजिल चलता है कहा तो सो रहूं और तुम भी अब आराम करो भोरको मैं तुम्हा
रे जगने के पहिले चला जाऊंगा परंतु मुझे यह इच्छा है कि मैं तुम्हारी इस सेवासे उऋ
ण होजाऊं जो कुछ तुम कामना रखते हो करो उसे सराकहूंगा मैं बुगदादियों के समान
अशील नहीं अबुलहसन ने खलीफा से जिसे ब्योपारी समझे था कहा हे मेरे परमप्रिय
सखा तुमने जो कहा मैंने सुना परंतु तुम समझो कि मेरे मनमें कोई इच्छा नहीं है जो तुम
से कहूं मैं अपने भाग्य पर प्रसन्न हूं और जो तुमने कहा कि उऋण हो जाऊं ईश्वर साक्षी है
मैं आपही तुम्हारा कृतज्ञ हूं कि तुम कृपा कर मेरे घरमें आये और यथोचित अन्नजल जो
आपके योग्य नहीं भोजन किया परंतु पकवान से मुझे सदा खेद रहा करता है यदि तुम्हा
री इच्छा होतो वर्णन करूं यह तुम भलीभांति जानते हो कि बुगदाद नगर में हजारों गलियां
हैं और प्रत्येक गली में एक एक मसजिद उनका मवज्जन । अर्थात् निमाज पढ़ाने वाला

र
सत्र
५९

८६

पांच विरियां अजों पठनिमाजके वास्ते वुलाताहै इसमहलेका मवजन हह अमंतहस्वभाव
औरखतेहै उसकेचार मित्रहैं किवहभी उसके सदृश मनुष्योंकोडुःख देनेहैं प्रतिदिनव
हचारों हहकी घरमेंजाय मनुष्योंके डुःखदेनेकीवार्ता करतेहैं मुझेभी वडथाउनसे उ
खपजताहै वहउह मेंदेवसवको धमकाते औरवुराभला कहते इससेहतहम सब उ
नके डुःखदेनेसे व्याकुल औरभयमानहैं मेंउनको देखमहा अप्रसन्नहोताहूं खलीफाने
कहा तुमने इसका कौनसा उपायसोचाहै उसनेकहा उनके दंडदेनेकोमें ईश्वरसेप्रा
र्थना करताहूं किवही ईश्वरकल मुझे खलीफा हारूंरशीदके तख्तपर वैठादे खलीफाने
पूछायदितुम खलीफाभीहोयतोक्याकरोगे उसने कहामें आज्ञादूंगा कि सौसौ चावुक उ
न्हों वुड्ढों को और चारसौ केवल उसीमवजन कोलगाये जावें तो मेरे मनका अरमान
वडारसीलय्या मानोंउसनेहासका सलपाया औरकहने लगाहै मित्रमैंभी यहीचाहता
हूं कियैसे डष्टोंकोदंडमिले औरइच्छाजो तुमरखतेहो ईश्वर कीमायासे उत्कृष्टरनहीं
औरजव आश्चर्यनहींजो वादशाहको तुम्हारा यह यत्न औरवुद्धिमानहो औरएकदि
न तुम्हें अपनेस्थानपर वैठाय तुम्हें संसारका अधिकारदे तवतुम भलीभांतिउनको दंडदो

गे मैं तो एक बिदेशी ब्योपारी हूं नहीं तो मैं उनको अवश्य देउ देता उसने कहा तुम मुझे मंदबुद्धि
समझ हास्य करते हो निश्चय है कि खलीफा भी इन्हीं विचारों को जो शाबविहीके सदृश हैं
रखनेके हंसेगा खलीफाने कहा नहीं नहीं मैं हास्य नहीं करता ईश्वरने यह निषेध किया है कि
कोई किसी को न हंसे विशेष तुमसे कि जिसने मुझे ऐसा स्वादिष्ट भोजन प्रीति पूर्वक खिला
या हास्य करे और खलीफा भी तुम्हारे इस विचारपर कदाचित् न हंसेगा अब तुमने मुझे प्रस
न किया आधी रात बीती अब सोनेका समय आया पहुंचा अबुलहसनने कहा सच कहते हो
बहुत रात बीती शेष जो मद्य रह गई है हम तुम पीके सो रहें पकवान तुमसे कहनी अवश्य
है जिस समय प्रभात को तुम यहांसे सिधारो तो इस मकानका द्वार मूंद जाना उसके दावें
न खेला न छोड़ना खलीफाने उत्तर दिया बहुत उत्तम ऐसा ही किया जावेगा पुनि खलीफाने
मदिराका पात्र भर प्रथम तो आप पिया और दूसरे पात्रमें मस्तीकी औषधि जो उसके साथ थी घो
लकर अबुलहसनको दी और कहा संथ्यासे तुमने मुझे पात्र भर भर पिलाये अब यह अंतिम
पात्र है इसे मेरे हाथसे पियो उसे वह ले तुरंत पी गया उस औषधिने तुरंत अपना फल किया अ
र्थात् उसने वह पात्र बड़ी कठिनतासे रक्खा और अचेत होया शिर उसका घुटनोंपर जाय लगा
खलीफा इस दशाको देख बहुत हंसा इसके अनंतर खलीफाने अपने सेवकको जो भोजन करा रहा

२
सफ़
५०
57

थ बांधे खड़ा था बुलाय आज्ञा दी कि इस मनुष्य को अपने कंधे पर उठाले और इस मंदिर को
भलीभांति पहिचान रख जिस समय मैं कहूं तू फिर उसे यहीं लाय छोड़ जाइयो वह दास कि
अति बलवंत था चोर से अबुलहसन को कंधे पर रख खलीफा के साथ होलिया खलीफा व
हां से निकल उस द्वार को खुला छोड़ अपने महल में पहुंचा और चोर दरवाजे से दास को सा
थ लिये हुये अपने मंदिर के भीतर जहां उसका शयनालय था वहां वह सेवक और दासि
यां जिनकी पारी उस रात की थी खलीफा के आगमन की बाट देखती थीं खलीफा ने उनको
आज्ञा दी कि इस मनुष्य के वस्त्र उतार हमारे रात्रि के शयन के वस्त्र पहिराओ और मेरी शय्या पर
सुलाओ चेतन रहो कोई यहां का नियत मनुष्य न सोवे और जिस समय यह प्रभात को जा
गे तो उसे मेरी जगह समझ के दंडवत आदिक करना निदान मुझमें और उसमें तनक अंत
र न समझना और उसको मेरे सदृश बादशाह कहना उन्होंने कहा बहुत अच्छा फिर वह तो
अपनी संबंधित सेवा टहल करने लगे और खलीफा यह आज्ञा दे बाहर आया और वह अपने व
जीर को बुलाय आज्ञा दी कि कल एक मनुष्य जो मेरी शय्या पर सोता है मेरे शाही वसन पहि
र तख्त पर बैठेगा तुम सब उसे मेरी जगह समझ बादशाह ही भाव बनौना और उसकी आज्ञा पाल
न करना जो द्रव्य और पारितोषकादि किसी को दिलवाये मेरे कोष से देना और संपूर्ण सभा

सदभोर आयउसकी अगवानीकरें औ वहां उपस्थितरहैं और मसरूरकोभी यही आज्ञा
दीकि भोरकोजिसभांति मुझे निमाज़के निमित्त उठाया करताहै उसीप्रकारउसेभी उठाना
निदानखलीफानि उनसबको समझायबुझाय किसीदूसरे मकानमेंजाय सोरहा जबप्रभात
भयातो खलीफा अरुणोदय पर्य्यन्त वहांजाबैठा जहांसे सबकाम औरबातें अबुलहसनके
सुने औ उसेकोई नदेखे वहां सबचोबदार औरशय्याकी दासियां विद्यमानथी अबुलहसन
के जागतेही अपनेस्थानपरखड़ीभई जबनिमाज़की बेरआयपहुंची मसरूरखोजीनेजो श
य्याके सिरहानेथा स्फंजका टुकड़ा सिरकेमें डुबाकर उसकीनासिकाके समीपलेजाय सुं
घाया अबुलहसन सिरकेकी तीव्रगंधसे चौंका औरशिरउठाय नेत्रखोलचाहा किखखा
रथूकेतो पकबांदीने तुरंतउसे स्वर्णके उगालदान मेंलेलियाथा किकालीनपर गिरके बि
छौना खराबनहो जावे यहनियत रीतिथी किइसी भांति खलीफाको स्फंजके टुकड़ेकोसि
रके सेभर सुंघाय उठातेकि जगकेईश्वरका आराधनकरे इसके अनंतर अबुलहसनेना।
फिर अपना पीशानकिये परपरदीपकके प्रकाशमें बड़ाविशाल दालान अनेक भांतिसे अ
लंकृतदेखा उसकी छत भांतिभांति केचित्रोंसे चित्रितथी और अतिस्वच्छकालीन बिछेहु
ए औरस्थान स्थानपर महासुंदर सुंदरचित्रलगेहुये पुनिकादेखताहैकि अतिरूपवा

२
सत्र
५८

58

वान चंद्रमुखी चम्पकबरणी दासियां उसके सन्मुख हाथ जोड़े खड़ी हैं कईतो निजहस्त
कमलों में उगालदान लिये और कई कोमल हाथों में सुंदर रुमाल और कई गाने बजाने
के साज लिये और खोजी अति सुंदर सुनहले कपड़े पहिरे चुपचाप खड़े थे जब उसकी दृ
ष्टि लिहाफ और पलंगपोश पर पड़ी तो वह अति स्वच्छ गुलाबी रंग कमख्वाब के और उसके
चहुं ओर हीरे और मोतियों की झालरें इसी भांति मसहरी आदि शय्या की सामग्री ऐसी ही थी
और उपधान के समीप खलीफा का मुकुट धरा था वह ऐसी सामग्री देख आश्चर्यित हुवा औ
र विचारने लगा क्या मैं स्वप्न देखता हूं वा सावधान यदि मैं जाग्रतः अवस्था में देखता हूं तो मैं अ
वश्य खलीफा हूं रात्रिको उस अतिथि से हास्य में खलीफा का वर्णन हुवा था कहीं वही
बिचार मेरे चित्त में तो नहीं समाया और वास्तव में कुछ नहो इसी चिंता से फिर अपनी
आंखें मूंद सोने की इच्छा की कि एक खोजीने उसके समीप आय हाथ बांध बिनय की
हे बादशाह दीनपालक यह सोनेका समय नहीं यह काल ईश्वर की बंदना का है औ
र सूर्य उदय हुवा चाहते हैं उसने इस बातको सुन अचंभा किया और अपनेको सोता हुवा जा
न फिर नैन मूंदे जब खोजीने उत्तर उनसे न पाया और कोई चिन्ह जगनेके न देखे तो पकड़ चरण
पीछे फिर कहा हे कृपानिधान दासकी यह बिनती है कि यह समय आपके जगनेका है

उठिये और ईश्वरकी वंदना कीजिये सूरज निकला चाहतेहैं अबुलहसनने यह बात सुनम
नेमें कहा तुम योंरवे मेंहोसोतेनहीं यह सोनेका समयहै सोयाजवा मनुष्यजागनहीं सुन
ना मैंतोसबबातें सुनताहूं सुनिउसने आंखें खोलकरदेखाकि दिन निकल आया वह ब
स्तुजोरात्रिको दीपकके प्रकाशमें देखीथी दियउजियाले मेंभीदृष्टि पड़ीफिरवह आनं
दितहो शय्यापरसे उठबैठा औरजान गया कि उस परमात्माने मुझेयह राज्यकृपा कियाखे
लीफा बनेहीपर बैठा भवाउसके विचारों कोसमझता औरप्रसन्नहोताथा इतनेमें एकदासीने
उसके सन्मुख आयचरण चूमे औरगायनियोंने सामने आयमीठेस्वरों सेबांसुरी बजायसि
तारमीठी और सहनाई आदिक बाजोंके ललित स्वरोंसे उसे मोह लियाकिवह अपने
कोभूलगया फिरउसे प्रथमयहबिचार उठाजो ज्योंकि देखता सुनताहूं स्वप्नहै यावास्त
वमें फिरदोनोंहाथों को आंखोंपररख मनमें कहने लगा यह सबदास सुनहलीबसन प
हिरे औरऐसी यौवनवती सुंदरस्त्रियां ऐसेमनोहर औरशोभायमान वस्त्रपहिरे और य
ह उत्तम साजलिये जिनको मैंदेखताहूं काहै औरमैं कहांहूं और इसजगह में कहां
आयामैं सावधानहूंवा नहीं निदानउसने हाथ अपने मुखपरसे उठाय नेत्र खोले इतने में
खोजो मसरूर आया और शिरनीचे कर धरती चूमी फिर शिर उठाय कहा हुजूर आजका

कारणहै कि आपने अबतक ईश्वरकी वंदना नहीं कीकहीं रात्रिकोनिद्रामें विघ्नतो न
होऊवा वाऊवा आपके शत्रुओंकी देहमें वतिक्रम भया अबउठके सभामें विराजमा
नहूजिय औरसन्ननंत के कार्योंकी कीजिये सपूर्णसभासद आपकीबाटदेखतेहैंइस
भाकासमय आनपऊचा मसहरके वचन सुन उसे निश्चयऊवा कि मैं जागताहूं औ
रवहवस्तु औरसपा स्वप्न नहीं वास्तव मेंहै पुनि विचारनेलगा यह पदवी मुझेकोंकरप्रा
प्तऊईफिरमसहर से पूछनेलगा तेने यहवात किससे की औरकिसे बादशाह कहताहै
मैंतो तुझे नहींपहिचानता तूने किसी औरधोखे से मुझे बादशाह कहा मसहरे नेक
हाहे कृपासागर का यह आप समकहतेहैं वा इस किंकरकी परीक्षालेतेहैं आप
का बादशाह नहीं औरपूर्वसे पश्चिम पर्यंत आपका राज्य नहीं आशा रखताहूं कि
इससेवकपरप्राचीन कृपादृष्टि रखिये जानपड़ताहै कि आपनेकोई स्वप्नरात्रिको देखा
है जिससे ऐसेउलटे वचनकहतेहो अबुलहसन मसहरके यह वचनसुन बऊतहंसा
किहंसते हंसते पीठउसकी तकियेसेलगगई खलीफा भी आनंदित होय चाहता था
कि ठहामारके हंसे परंतु हंसी दबाली कि कहीं अबुलहसन उसका शब्दपहिचानना
ले निदान वह बऊकाल पर्यंत हंसता रहाफिर भलीभांति अपनी शय्यापरहोके बे

औरएकदास पुत्रसे किउसका कालारंग मसहूरकी सदृशथा कहनेलगा ससकहो मैंकौनहूं
उसदास बालकने बिनतीकी किआप बादशाह हैं अबुलहसन नेकहातू बड़ाझूठाहै इसी
सेतेरा स्वरूप कालेथानके सदृशकालाहोगयाहै फिरउसनेएक बांदीकोकि औरोंसे निकट
खड़ीथी कहाहै सुंदरी इधरआ औरअपना कोमल हाथ आगेबढ़ाकर कहा मेरी अंगुली की
पोर अपनेदांतसेकाट किमैंजानूंकि सोताहूं याजागता उसबांदीने जानाकि खलीफाभी समझ
सहातोंनको देखरहाहै महाहर्षितहोय उसकीअंगुलीका पोर आगे जाय धीरेसे दांतके नीचे
दबाया उसने तुरंत अपनाहाथ खींचकर कहा ईश्वर मैंकौंकर एकही रात्रिमें खलीफा बनग
याबड़ाआश्चर्यहै सुनिउसने कहनेलगा तुफेईश्वरकी सौगंदहै सत्यकहनाकामैं वास्तवमें
बादशाह औरतुम्हारा स्वामीहूं उसनेकहा आपवास्तव मेंहमारेस्वामीहैं जबउसने उठनेकी
इच्छाकीतोएकदासनेदौड़केउसकाहाथ थांभउठाया जबवह खड़ाहुवासारे महलमें प्रणाम
कानाद गजसी रीतसे फैलगयासबबेगीजीऔरदासियोंने अगवानीकर आशीर्बाद दियाकिव
हपरमात्मासच्चिदानंद आपकायह दिन कुशल औरआनंदसे बितावे अबुलहसन नेमनमें
कहा हेप्रभु यहक्याबातहै किकलतोमैं अबुलहसनथा आजमैं खलीफा बनगया मेरीसम
फमें कुछ नहीं आताकौं करमुझे यहपदवी मिली फिरसबको नेउसे बादशाही कपड़े प

२
सत
८१

61

ह्लिए और सब दोनों ओर से पंक्ति बांधे द्वार पर्य्यंत खड़े भये और मसरूर आगे होके उस दरबा
र में लेगया अबुलहसन भीतर जाय तख़्त के समीप खड़ा भया कि मनुष्य उसका हाथ पकड़
चढ़ावें सो बड़े दो प्रधानों ने आयके उसकी भुजा पकड़ तख़्त पर बैठाया उसके विराजमान होतेही
बड़ा शब्द प्रणाम का भया जिसके सुनने से वह महा हर्षित हुवा और दाहिनी गई और को दे
खता है कि बड़े बड़े सरदार हाथ बांधे पंक्ति बांधे खड़े हैं सो सबकी बिनती सुनने लगा राजा
मंत्री कि जो ख़लीफ़ा के पीछे राज्य प्रबंध करता था अबुलहसन को देख आया और दंडव
त कर आशीर्वाद दी कि तुम पर ईश्वर की छाया रहे और असंख्य वर्ष की आयु हो मित्र प्रस
न्न और शत्रु आपके प्रताप से भस्म हों यह सब दशा देख उसे निश्चय भया कि मैं जगता हूं स
मन नहीं देखता मैं अवश्य ख़लीफ़ा भया जैसी मेरी इच्छा थी वैसहि प्रथम ईश्वर ने सबों को और
आज्ञा चलाने लगा प्रथम मंत्री से जो हाथ बांधे खड़ा था कहा तुमको कुछ कहना है उसने
बिनय की कि सर्व सेवक और सेना अगवानी करने और आज्ञा पालने के लिये बाहर खड़े हैं
यदि आज्ञा हो तो आपके सन्मुख आय प्रणाम करें अबुलहसन ने आज्ञा दी कि सभा का द्वार
खोलो यह आज्ञा पायके संत्रियों ने चोबदारों को आज्ञा दी कि सबको आने दो फिर सबने आ
यके दंडवत की और अपने अपने स्थान पर जाय चुपके खड़े हो गये जब अगवानी हो चुकी।

तब मंत्रीदेतो तख्तके सामने अकेलाखड़ाथा लोगोंकी अरजियां दीं और प्रतिदेश और अ
वस्थाका वृत्तांतकहनेलगा अभीकहचुकाथाकि अबुलहसनने नगरके कोतवाल कोबुलवा
य आज्ञा दीकि अमुकगलीमें जायमवज़्ज़िनकोजोउस मसज्जिदकाहै चारसौ कोड़े उसके पां
वपर लगा औरचार मनुष्योंकोजोउसके संगतीहैं सौ सौ चाबुक मारियो पुनि पांचोंको ऊं
टोंपर उलटसवारकराय नगरके बाजारों मेंघुमाइयो औरउसके आगेएकमनुष्ययहकहता
जावे कियहदंड उनमनुष्यों काहैजो अपनीगलीवालोंको डाबदेवें औरउनको झूठादोष
लगादें फिर देशनिकाला दीजियो कोतवालने यह आज्ञापाय अबुलहसनकी गलीमें
जाय वहांकामकिया खलीफानेभी निश्चयनकिया क्योंकि सर्वसे उस अबुलहसनकेमु
खसे उसहद्द औरउसके संगतियों की उद्दतताका वृत्तांत ज्ञातहोगयाथा इस समयांतरमें मं
त्रीभीकह सुनकर निश्चिन्तभया औरकोतवालने आ अबुलहसनसे कहाकि मैंने आपकी
आज्ञासेइनपांचों मनुष्योंको दंड देकर देशनिकालादिया यह सुन अबुलहसनने मुस
कराय कहामैं तुमसे बहुत प्रसन्नभया खलीफा छिपे छिपे उसकी प्रसन्नताकोदेखता औ
रहर्षितहोता इसकेउपरांत अबुलहसनने बज़ीरको आज्ञादीकि हज़ार अशर्फी इसनगरकी
अमुक गलीमें अबुलहसनकी माताको भिजवादे मंत्रीनेवही किया वहहृद्द अर्थात् अबुल

हसनकीमाताकिइस वृतांतकोनजानतीथी रुपयेलेकर अतिप्रसन्नहुई और आश्चर्यमेंहो
य विचारनेलगी किखलीफाने मुझपरबड़ी कृपाकी इतनेंमें मंत्रीनेभीजाय अबुलहसन से
रुपये देनेकाहाल कह दियाजब बादशाही कामों कामोंसे निश्चिंत भयादरबारी अगवानीक
रबिदाभये केवल मंत्री और मसरूर अबुलहसनके निकट रहगये तब अबुलहसन मंत्री और
मसरूरकी सहायतासे नीचे उतरा औरउसी सुंदरमकानमें जिसमें प्रथमथागया मार्गमेंउ से
दिखालगी इतने मेंखलीफाके पाखानेको खोलदिया वह पाखाना अतिउत्तम बनाथा उसप
रअतिशोभायमान मखमल बिछाया उसके रत्नकाने खगरहुलीन्हना कि खलीफाउसे यहिरक्का र
दिखाकोजानेथ उसके सन्दुखरक्खा अबुलहसन ने उसको उठाय अपनी चोड़ी आस्तीनमें
धरलिया इसबातसे मंत्री औरबोजीको बहुतहंसी आई परंतु खलीफाके भयसेचुपरहे नि
दान मंत्रीने बिनयकी किहे बादशाह यहखज़ाना पहिनदिखाजाते हैं यहसुन वहउसे घरा
ऐोंमे यहिरदिखागया जब बाहर निकला मसरूरउसे रसोईकी ओरलेगया उसके पहुंचते
ही दावाउलगया और सेवक गानेवालियोंकोबुलाने कोगये अब अबुलहसन भोजन परा
बैठतोगाना आरंभहुआ जिसके सुननेही वह प्रसन्नभया और ऐसा चैन लगाहे भगवान यह
आनंदमें स्वप्नमें देखता हूंवा साक्षात पुनि विचारने लगा यहतो जाग्रतअवस्था है इसमें स

उष्णस्वप्न नहीं देखता है जब मनुष्य सोजाता है तब स्वप्न देखता है मैं तो साक्षात् जाग्रत अव
स्था में चलता फिरता हूं इस समय तक मुझे मालूम था कि मैं बादशाह नहीं मेरे सिवाय को
ई दूसरा इस देश का स्वामी है परंतु जो मैंने आज्ञा दी उसका पालन अथवा यह सब आदि केवल मे
रे ही हेत है मैं ही बादशाह हूं वहां अति वस्त्र विचित्र थी बहुतसे सोने रुपे के पात्र थे जिसमें अ
बुलहसन देख प्रसन्न होता और सात बांदियां अमित रूपवान् छविधाम अपने गाने के साज
लिये उसके चहुं ओर मीठे स्वरों से बजा रहीं औ अति स्वच्छ प्रकाश के सात फानूस उस मंदिर की
छत में सुशोभित मध्य में भोजन के पात्र महा सुंदर बिछे थे और स्वर्ण की सात अंगीठियां इ
त्र भरी हुई जिसमें नाना भांति की सुगंध थी जलाई जातीं जिन सुगंधों से हृदय प्रसन्न होना और
सात दासियां अति रूपवती नखसिख से सिंगार किये और रंग बिरंगे आभरण पहिरे उसके चहुं ओ
र खड़ी और सबके हस्तकमलों में मोरछल और रत्नजड़ित अति विचित्र डंडियों को पंखियां
थीं तब अबुलहसन उस मनोहर मंदिर में बैठा तो पग पग पर ठहर के उन अद्भुत वस्तुओं
को देखता और विस्मित होता निदान उस महल में जाय भोजन पर बेग उसके बैठते ही वह सा
तो अनुचरियां उस नवीनावली फा के मोरछल हिलाने लगीं अबुलहसन उन्हें देख आनंद को
प्राप्त भया और रस सकराय उनसे कहने लगा तुम में से सफे पारि पारी से मोरछल हिलाओ औ

स्वे॰
९३

63

र बुद्ध भोजन करें निदान तीन को दाहिनी ओर और तीन को बाईं ओर बैठा पलिया वह बुद्ध
दासियां उसकी आज्ञानुसार बैठ गईं परंतु खलीफा के भय से भोजन में हाथ न डाला फिर अ
बुलहसन ने मुसकराय कहा तुम भी भोजन करो और इन से उनका नाम पूछने लगा तो प
हिले ने कहा मेरा नाम चंद्रकला दूसरी का ललिता तीसरी का नाम शशिमुखी और चौथी का नाम सु
मेला पांचवीं का स्वर्गीयप्सरा छठी का नाम चपला सातवीं का जो पंखा जुलाती थी और उसकी
सुंदरता से वह महा प्रसन्न था सुकांति पूर्वक नाम है उसने कहा मेरा नाम चंद्रकांति है खलि
फा भी कुछ एक ऐसा ही बातें सुन रहा था और इसके प्रिय वचन सुन प्रसन्न होता जब अ
बुलहसन भोजन कर चुका तो सेवकों ने जो खड़े थे दौड़ के एक ने जल का पात्र और दूसरे
ने सोना बचीलाय उसके हाथ धुलवाये फिर उस दूसरे मकान में ले गये उसमें अति सुंदर
सुनहली चित्रटी वारों में लगे थे उसके भीतर जाते ही गाने वालियां गान करने लगी उस मका
न में मणिजटित सात कंदीलें सात स्थान पर लटकी थी उनके नीचे सात भाजन सोने के
फलों के भरे धरे थे वहां भी सात लौंडियां अति सुंदर पवान थीं जिन्हें देख वह मोहित
हो गया और उन सब के साथ फल भोजन करने लगा और उनके नाम पूछे उन्होंने भी बताय
दिये फिर मेवे उठा कर हर एक को देने लगा और उनको खिलवाना गया पुनि वहां से उठ म

सहूरसमेत तीसरे मकानमेंगयावहभीवैसाहीसजाथा वहां सातसम्रहगाने वालियोंकेथे।
और अप्सराके सदृश सात अनुचरियां रत्नदूलीसानयात्रलियेभांति २कोशरबतेंलिये खड़ी
थीं वहांभी उसकेपहुंचतेहीगाना आरंभहुवा उसमेंसेथोड़ीसीपीकर उनसे कहातुम्हे जौन
सीशरबत अच्छीलगेपीजा औफिरसातोंकेनामपूछे औरउनकेनामसुन प्रसन्नभया फिरब
हुकालपर्य्यंत उनसेहास्यादिकवार्ता करतारहा खलीफाभी उसकेबचन सुनप्रसन्नहोताज
वसत्यंप्रसन्नभया अबुलहसन चौथेमकानकोगया वहभीउसीप्रकारअतिवस्त्रसे अलंकृत
औरशोभितथा सातमणिजटितफानूसजिनमेंकाफूरीबत्तियां जलाईगईथींवहांदिनके ब
राबरप्रकाशथाजोसौंदर्य्यइसमंदिरमेंथावैसासर्वमंदिरोंमेंनथा इसबारहदरीमेंसातसु
रगानेवालियोंकेथेजोमीठे औरललितस्वरोंसे गायबजायमनका आकर्षणकरती और
मनुष्यकेहृदयको अतिकोमलकरदेती विशेषइसकेस्वरूपछबि अनूपमें अद्वितीयकिंवा
पूर्णमासीके चंद्रमाकोलज्जादेती अपनेहस्तकमलोंमेंरत्नदूली पात्रकेलचे औरमिठाई
आदिकलिये खड़ी औरगजक आदिकजो मद्यकेपश्चात् अवश्य होताहै उनकेनिकटथी
और उसमकानमेंएककटोरारूपेकी सातसुराहियां स्वच्छमद्यसे भरीहुई औरउनकेनिकट
महास्वच्छबिल्लोरी गिलासधरेथे बग़दाद नगरकीपहरीनिथी किसरदाररात्रिकोछिप

१
सत्र
६४
64

करमदिरापीते औरदिनकोउसेग्लानिरखते नित्यजब अबुलहसन मचघरमेंजाय बै
ठावहांसातदासियांमहाकोमलांगीबांकपनेसे खड़ीथी जिनकेदेखतेही अबुलहसन
बेबशहुवा औरउसकास्वरपलटगया औरउनसबको सर्वको सबदासियोंसेजितकोदे
खाथा अधिकसुंदरपाकरमोहितभया औरइच्छाकी किइनसेवार्ताकरे परन्तुगान औ
रसारंगीमृदंगकेशब्दसेउसेकुछसुननाईनदिया इसहेतुउसनेहाथोंसेतालीबजाईजिस
सेगानाबजानाबंदहुवा जबसबचुपभये उसनेउसलौंडीकोजो उसकेसमीपही खड़ीथी
हाथपकड़ अपनेनिकट बैठालिया औरउसकानाम पूछने लगाउसने कहाहै बादशा
हमेरानाममणिमाला उसनेकहातेरोदंतमालाहीरेसे अतिउज्वलहै जिसने तेरायह
नामरक्खाबड़ीभूलकी उचितथा किइससेकोई उत्तमनामहोता अबतूएकमयकाप्या
लाभरमुझे पिलाकिमैं तेरेकोमलवत् हाथोंसेपिऊं मणिमालाने तुरंतभरउसेदिया ब
हपीगया पुनि उससे कहा अबतू एक गिलास आपपी उसने एकपात्रभरकरएक वि
चित्रराग गायाजिसे अबुलहसन सुनप्रसन्नभया फिरबहध्यान करगई अनंतर अ
बुलहसनने उनपात्रोंमें सेफलउठाय दूसरी दासीको दिया और अपने निकटबैठाय
उसकाभीनाम पूछा उसने कहामेरानामपाषाणसुरवीहै यह सुनतेही उसनेकहा

तेरे नेत्र चंद्रमा से अधिक प्रकाशयुक्त हैं उचित तथा इससे बढ़के कोई नाम होता सो उसने उसके हा
थ से भी मद्य पिया इसी भांति नौसरी लौंडी को बुलाया और उससे भी वही व्यवहार किया जब
उसने कई मदिरा के पात्र पिये मणिमाला बांदी खलीफा की सैन से फिर पात्र मद्य से भर औ
र उस में मूर्छा की औषधि डाल उसके समीप ले आई और कहने लगी हजूर इस अंतिम मदि
रा के पात्र को मेरे हाथ से पान कीजिये मैं एक गीत गाती हूं वह मैंने आज ही प्रभात को रचा है
अब तक उसे किसी ने नहीं सुना फिर वह बांदी बांसरी हाथ में लेके बजाने लगी उसने वह
राग ऐसा गाया जिसको अबुलहसन ने सुनके धन्यवाद किया और दूसरी बेर फिर उसे वही गी
त गाया था जब वह गा चुकी तो अबुलहसन ने चाहा कि उसकी प्रशंसा करे परंतु मूर्छा की
औषधि के गुण से स्वाव खिल के रह गया कोई बात न कह सका नेत्र उसके मुंद गये और हाथ
फैल गये जैसे कोई मूर्छा खाया हुवा सो जाता है निदान उसकी वही दशा भई जो पहिले दि
न हो गई थी पात्र उसके हाथ से छिटक गिरने लगा परंतु एक दासी ने दौड़के उसे थाम लिया
खलीफा उसे बेसुधि देख अपने स्थान से उठ वहां आया और शाही वस्त्र उसके शरीर से उतरवा
य उसके कपड़े उसे पहिना दिये और उसी दास को आज्ञा दी कि इसे इसी भांति उठाय इसके घ
र के उसी मकान में लिटाय आ और लौटने ऊपर हार खिड़की को ड़ियो वह दास उसे उठाय के

२
सन्त
६५

65

ये परसर खबोर दरवाजे से खुला आया फिर खलीफा ने अपने जीं बसे कहा कि यह मनुष्य ईश्वर से प्रार्थना करता था कि जो मैं एक दिन के लिये खलीफा हो जाऊं तो अपनी गली के मवज्जन और उसके चार संगती बूढ़ों को दंड दूं क्यों कि उसने उसने बहुत कष्ट उठाया था इस हेतु मैं ने इस यत्न से उसे एक दिन के लिये खलीफा बनाया और उसने अपनी इच्छानुसार दंड दिया अबुलहसन रात्रिभर मूर्छित रहा जब प्रातःकाल हुवा और दिन चढ़ा तो देखता है कि मैं अपने घर में हूं इस से बड़ा आश्चर्य किया और मणिमाला पांशा स्वावी आदिक वादियों के नाम उसे स्मरण थे पुकारने लगा कि तुम कहां हो मेरे निकट आवो निदान वह बड़े नाद से बादशाही महल के खोजियों और अनुचरियों को बुलाने लगा उसकी माता शब्द सुन उसके निकट दौड़ी आई और पुत्र से कहने लगी है पुत्र तुझे क्या हो गया जो ऐसी बातें कहता है अबुलहसन अपना सिर उठाय अपनी माता को बड़े अहंकार से देख कहने लगा है सत्यरूपिणी तू किसे अपना पुत्र कहती है उसने कहा मैं तुझे अपना पुत्र कहती हूं क्या तुम मेरे पुत्र नहीं का एक रात्रि में ही तुम मुझे भूल गये उसने कहा है डहाका मैं तेरा बेटा हूं क्यों इतनी ठिठाई करती है तू झूठ बोलती है मैं अबुलहसन नहीं मैं खलीफा हूं उसकी माता ने कहा है प्रियपुत्र तू पर इतनी बड़ी बात स्वाब से मत निकाल अभी तुझे [illegible] विक्षिप्त समझ लोंगे उसने कहा मैं विक्षिप्त नहीं

कि जैसा तू समझता है मैं सावधान हूं फिर मैं तुझ से कहता हूं कि मैं खलीफा हूं जो संसार भर
का स्वामी है उसकी माने कहा बेटा बड़ा खेद है तेरी बुद्धि ठिकाने नहीं तुझे कोई भूत लगा है
वा सैतान ने औ सरपाय तेरी बुद्धि पलट दी जिससे तू ऐसी बहकी बातें करता है मैंने तुझे ईश्व
र को सौंप या तू मेरा पुत्र अबुलहसन है और मैं तेरी माता हूं और कई चिन्ह उसने दिखाये कि
वह सावधान होजावे पुनि कहने लगी तू नहीं देखता यह घर तेरा है वा खलीफा का तू इस
देख इसी घर में जबसे तू उत्पन्न भया मेरे साथ रहा किया जो बातें मैंने तुझसे कहीं उन्हें सो
च जो तू कहता है उस विचार को छोड़ दे यह पदवी तुझे प्राप्त नहीं और कदाचित न होगी
फिर कदापि ऐसा किसी से वर्णन न कीजियो अबुलहसन माता से यह बचन सुन आंखें
खोल और अपना सिर हाथ पर रख इस तरह सोचने लगा जैसे कोई मनुष्य कुछ भूल गया
हो और उसे सोचे फिर अपनी माता से कहने लगा जो तूने कहा सो सत्य है और मैं भी भली भां
ति जानता हूं कि मैं अबुलहसन हूं और तू मेरी माता है और यह मेरा घर है पुनि चकित और
देख कहने लगा इसमें संदेह नहीं कि मैं अबुलहसन नहीं परंतु मैं नहीं जानता कि किसलि
ये मेरे मन में यह विचार समाया उसकी माता समझी कि मेरा पुत्र बीमार होगया जिससे ऐ
सी बहकी २ बातें करता है वा उसने कोई दुःस्वप्न देखा था यह चिंतना कर वह हंसने लगी औ

सते
८९

66

रउससे सहनेलगी हे पुत्र क्या तुमनेरात्रिकोदुःस्वप्न देखा अबुलहसननेचौंकके अपनीमा
तासेकहा हे दुष्टा तू समझके नहींबोलती तू क्या मुझेमारती है मैंकदाचित् तेरापुत्रनहीं
औरनतूमेरी माताहै तूने बुड्ढीठिगाईकी कि मुझे अपनापुत्रसमझतीहै नहींजानती कि मैं
खलीफाहूं तू अभीभ्रमहै मैंनेउसहठ्ठाने कहाहे पुत्र ईश्वरकेवास्ते ऐसीबातें मुखसेमत
निकाल तूनेमवज्जनकाहालनहींसुना किवह औरचारउसके संगती अपनेगलीके मनु
ष्योंकोपमकाते औरउन्हें डरदेतेथे कलकोनवालने आयउनचारोंमनुष्योंकोपमका
ते औरउन्हें डरदेतेथे कलको आयउन कोपकड़करचारसौ कोड़े मवज्जनको औरसौ २
उनचारों हरहोकोलगायेपुनिउलटाऊंटपरचढ़ाय नगरभरमेंफिरायाफिर महाकष्टदे औरउ
नको अप्रतिष्ठाकरदेशनिकालादिया मैंडरतीहूं बेटाकहीं तेरीभीऐसी होगतिनहो अ
बुलहसनकीमातातोयहनजानतीथी कि अबुलहसनहीकी आज्ञासेवह सबदण्डदिये
गयेउसकीमाताने डरानेकेलियेयहहालकहाथा अबुलहसनइसबचनकेसुनतेहे
कहनेलगा अबतुमभलीभांतिजानोगी तोमैं तुम्हारापुत्र औरन अबुलहसन किंतु खली
फाहूं क्योंकि मवज्जन और उसने चारसंगियोंको मेरीही आज्ञासे दण्डदिया गया अब मैं
निस्संदेह खलीफाहूं तू इसे स्वप्नमत समझकोतवालको मैंनेहीदण्डदेने को आज्ञा दी॥

थी उसने तुरंत मेरी आज्ञा प्रतिपालन की तेरेही वचनसे प्रतीत भया कि मैं खलीफ़ा हूं उस
कों मां उज्झन समझी कि अबुलहसन मजन का हाल सुनकर अपनी बात पर को हठ भवा
परंतु उससे कहा ईश्वर कुशल करे जो कोई तेरे इन वचनों को सुनेगा क्या कहेगा वह सुनते
ही महाकोपित भया और कहने लगा हे दुष्टा चुप रह नहीं तो उठके तुझे ऐसा मारूंगा
कि मरणपर्यंत स्मरण रक्खेगी मैं अवश्य खलीफ़ा हूं उस बिचारी ने जाना कि यह अधि
क बहका और विह्वल भया इससे अति चिंता कर रोने लगी अबुलहसन कि उस बिचार में
डूबा था अपनी माता के रोने पर तनक ध्यान न देकर क्रोधाग्नि से उठ खड़ा भया और एक ला
ठी उठाय अपनी माता से कहने लगा दुष्टा समझ कि मैं कौन हूं उस वृद्धा ने उसकी ओर प्री
ति की दृष्टि से देख कहा तू मेरा पुत्र अबुलहसन है और मैं वही हूं जिसने तुझे उत्पन्न किया।
और तथा पिता या ने भूल से अपना नाम इतना बढ़ाया क्योंकि यह संज्ञा केवल हारूंरशीद की
है जिसके हम तुम और सब अंगदेश आज्ञा पालने वाले हैं और वह हमारा स्वामी है अभी।
कल ही उसने मुझे पांच हज़ार अशर्फियों का तोड़ा भेज दिया था उस अशर्फियों का नाम सुनते
ही निश्चय भया कि मैं खलीफ़ा अवश्य हूं क्योंकि मंत्री ने उसी की आज्ञा से उसकी मा को अशर
फियां भिजवाई थीं इति अपनी माता से कहने लगा अरे दुष्टा अब भी तुझे मेरे खलीफ़ा होने

सं०२
९०

67

कानिश्चयनहीं मैंनेहीतो अपने राजमंत्रीजाफरकेहाथ हजार अशरफियां तुफेभिजवांदी
थीजो आज्ञामें देताथा उसका तुरंत प्रतिपालहोताथा तोभीतू मुफे अपनाऋनकहतीहै
तुफे झूठबोलनेकादंड अवश्यदेना चाहिये इतनाकहउसने अपनी माताका हाथ पकड़
लड़कीसेबहुतमारा वह बेचारीमहारुदनकरनेलगी उसकारोनासुनगलीके सबमनुष्य
दौड़आये परंतु अबुलसन मारताजाताथा औरकहताथाकि मैंखलीफाहूं वह बुढ़िया।
मारखाती जाती औरकहतीथी कितू मेरापुत्रहै जबपड़ोसी वहांपहुंचे तो वहहक्काबक्कासा
अबुलहसनतफेकाहोगया ईश्वरसेनहीडरता औरनही समझताकि कोईसपूत अप
नी मातापरहाथ उठाताहै तुफेलज्जा नहीं आतीकि अपनी माताको इसभांति सेमार
ताहै औरवहतुफेइतनाप्यारकरतीहै अबुलहसनमहाकोधित होयनेत्रलालकर क
हनेलगा अबुलहसन कौनहै यहतुमने किसका नामरक्खाहै पड़ोसी इसबचनको
सुनतेही घबड़ाये और कहनेलगा तुइसलगी औरघरमें नहीं रहता औरयहनेवी मा
ता नहीं तुफेइसने नहींजना उसने कहामैं इसडूडाको नहीं जानता तुमहो जानताहूं
किन्तुमकौनवलाहो मैं अबुलहसननहीं मैंखलीफाहूं सभोंने जानाकि यहविक्षिप्त

होगयोहै जैसेहमने अपनीमाताको माराहैतैसेही हमेंभीमारेगा उनमेंसेएक मनुष्यनेय
हकहातोतदारोगा सेजायकहा दारोगाकहनेनेही अबुलहसनकेघरदोड़ा आया जब मनुष्योंने अ
बुलहसनकोपकड़ातो उसनेइच्छाकीकि यहांसे छूटकरभागे यहदेखकेदारोगा नेपकड़ब
ड़े वेगसेकोड़ेमारे जिनकेलागने सेवहरूपकाहोगया पुनिदारोगा उसेबयवायहाथ पांवों
मेंहथकड़ी बेड़ी औरगले में मंगलडाल बंदीगृह की ओरलेगया कोईतो उसेसदा मारता
औरकोई तमाचा औरकोई उसेउंवीचाकहता जैसाकि मोटार्केसाथ व्यवहारकरतेहैं
जबइसभांति मारखाई औरअप्रतिष्ठा भईतब अपने मनमेंबिचारनेलगा किशहर वासियों
नेमुझेविक्षिप्त बनाया औरमैंनेतोसाक्ष्यानहूं निदानजबअबुलहसन उसीदशामें केदक
मा दारोगाने उसकी विक्षिप्तताको असाध्य समझलीहैके पिंजरेमे बंदकिया औरप्रतिदिन
पचास कोड़े उसकी पीठ औरकंधोंपर मारता तीनसप्ताह पर्यन्त उसकी यहीदशारही दारो
गा उसकोड़े मारके कहता अबतसावधानहुआवानहीं कहअबत अपनेकोखलीफा
समझताहै यानहीं अबुलहसनने कहामैं विक्षिप्त नहीं मैंने अभाग्यतासे इतनीमारखाई और
अप्रतिष्ठागवाई उसकी माताजो प्रतिदिन बंदीगृहमें उसे देखने जाती उसकायह कष्टदेखरो
तो फिर उसने देखाकि वहदिन २ दुबलाहोताजाताहै नतोदिनको आनंद औररातको

२
सत
६८

68

चैन औरसे देख पीडासे रोना और हाहा खाना है पीट और उसकी भुजा मारसे काली और घाय
त होगई है और देह की खाल उधड़गई उसको उसपर बड़ी दया आई तब इच्छा की कि उ
ससे बोली कर परीता ले कि वह चैन में होगया वा नहीं सो उससे बातें करने लगी वह भी
बादशाह के महल का सब व्यवहार भूल गयाथा और समझा कि वह सब स्वप्न था यदि
वास्तव में होता तो मैं जाग्रत अवस्था में कौन देखता और कौन वह सब बतादिया मेरे समु
ख आती परन्तु यह विषय अर्थात् कि मेरी आज्ञा से मंत्री ने आय हजार अशरफियां मेरी
मात को दी और सवजन आदिक को दंड दियागया मुझे भ्रम में डालते हैं कि मैं खलीफा
हूं परन्तु यह अचंभा है कि किसको स्वप्न समझूं और किसको न समझूं एकदिन वह इ
सी चिंता में था कि उसकी माता आई और उसकी अति दुबली देह देख और दिनों से अ
धिक रोई अबुलहसन ने उस बूढ़ी नम्रता से प्रणाम किया उसकी माता ने सावधान हो
ने का चिन्ह पाके कहा हे पुत्र अब तेरी क्या दशा है वह विचार जिसने तेरी यह दशा की
तेरे सिर में तो नहीं उसने कहा हे माता मेरा अपराध और ढिठाई जो अबतक मुझसे हुई उ
से क्षमा करो और यही पड़ोसियों से भी मेरी ओर से बिनय करना कि जो अबतक मैंने अनुचि
त कहा क्षमा करें मैं खलीफा नहीं हूं अबुलहसन तुम्हारा पुत्र हूं और तुम मेरी माता हो

इसीप्रकारके बहुतसेवचन कहेजिसके सुननेसे उसकीमाता हर्षितभई औरसमझीकि मे
रापुत्र परमेश्वरकी पूर्णकृपासे अबचैतन्यहै अतिप्रसन्नहोय उससे कहने लगी कि मैंबिचा
रतीहूं वह बिदेशी जिसको अपनेघरमेंलायाथाप्रभातको उठद्वार मूंदने बिना चलागया औ
र शैतानने आके तुझे वहकायाजिसहेतु तूनेयहवचन कहे अबुलहसनने कहा अभी
तक मुझे निश्चयथाकि वहव्योपारी मुवस्सलका मेरे मकान काद्वार मूंदचलागया अबमा
लूमहुआकि वह खुलाछोड़ चलागया औरऔसर पाय सैतानने मुझे वहकाया ईश्वरने
कुशल किया अबमैं अच्छाहूं शीघ्रमुझे यहांसेबाहर निकालनिदान दारोगाने अबुल
हसनकोमाताके कहने सेउसेछोड़दिया वहवहांसे छूट अपनेमकानमें आया औ
रसर्वदा एकबिदेशी को अपने घरबुलाता औररात्रि कोउसेभोजन कराय प्रभातको उसे
विदाकरदेता एकदिन अबुलहसनीक पहिलीतिथिको विदेशी ढूंढने केलिये पुलफो
औरगया अकस्मात उसदिनभीखलीफाहारूंरशीद सर्वदावत मवस्सलके व्योपारीकाभेष
किये वहीपंजा वहतापहिलेसेबैठाथा हसने उसेदेखपहिचान गयाकि यह वही मवस
लीव्योपारीहै जिसके कारणमैंने यहदुःखउठाये यदिकिवाउन्मत्त जानतानोपी नानचुरा
कर मुकेनवहकाला उसेदेखतेहीकांपा और मनमें कहनेलगाहै ईश्वरइस मनुष्य।

३
सै०
९९

से मुझेबचाइयो उसकी ओरऐसे मुखफिरजलकी तरंगदेखनेलगा ओर अपनेको छिपाय
लियाकिवह नदेखले खलीफातो ऐसे हटकनाहीथाकि उसेफिर अपने महलमें लेजायकर
उसकातमाशादेखे ओरजो इसनेदुख उठायाहै उससेउऋणहोजावे ओरउसके साथऐसा उप
कारकरे किजन्मभरआनंदमें बितावेनिदान खलीफानेभी उसेदूरसेदेखलिया ओर उसके
सन्मुखजायखड़ाभया ओरदंडवतकर चाहाकि उससेभेंटे करे परंतुउसनेतनकभी उसकी
ओरनदेखा ओरबिशीलहोय कहामुझे तुम्हारीदंडवत अंगीकारनहीं अपनारस्ता लो
खलीफानेकहातूने मुझेनहीं पहिचानायकमहीना बीताकिमुझे इसीतीर्थमें तुमने अ
पने घरमेंलेजाय सन्मानकरभोजनकरायाथा उसने अवहोके कहामें तुझेनहीं पहिचा
नताजाबाभाई अपनाकामकरो खलीफा रुखाईका कारण कुछन समझसकाफिर
सोचनेलगाकि वह अपनी प्रतिज्ञाके अनुसारकेवल एकही बेर विदेशीको अपने
घरमेंलेजाता उसीपर दृढ़है इसीहेत यहरुखाई करताहै यह बिचारकहनेलगा
तुमभलीभांति अपने मनमेंबिचारो ओरस्मरणकरो कि तुमसे हमसेजानपहिचान है
यानहींबड़ा खेदहै किहम मुझेविस्मरणकरगये बिदित होताहै कितुमने इस अवधि
में किसी प्रकारकादुख उठायाहै जिससे तुम मुझसे अलग होतेहो विस्वास करजा

नोकि मुझे तुम्हारी बड़ी प्रीतिहै यदि मुझे तुम्हारे दुःख और क्लेशका हालमालूम होतो मैं
तुम्हारी सहायता करूं यह सुनउसने उत्तरदियामैं नहीं जानता कितुमसे मेरी कुछ सहा
यहोसके परंतु मैं इतनाजानताहूं कि तुम्हारे कारणमैं विदीत कहलाया भाई तुम मु
फसे मतिबोलो औरमेरे पाससे चलेजाओ दूसरेबेर मुझे दुखसतिदेव खलीफाने उस
केकंठसेलगकरकहाभाई इतना अप्रसन्नमहो अबमैं तुम्हें छोडदूसरी येरनहीं जासका
मैं बड़ाभाग्यवानहूं किफिर तुम्हें अच्छीतरहदेखा औरतुम्हें भी अवश्यहै किआजमुझे
यरमेंलेजायबैसेहीभोजनकराओ औरमुझे इच्छाहै किफिर तुम्हारेसाथ मद्य पीऊं
अबुलहसनने कहा मुझेकुछ अवश्य नहीं उसमनुष्यसे जिससेमुझे कष्टपहुंचा मि
लूंजैसेचतुरकहतेहैं किमृदंग अपनालेजाओ और आपबजाओ तुम्हारे कारण मैंने
बड़ी आपदा उठाईमैं नहीं चाहताकिफिर उसमेंपडूं खलीफा दूसरीवेर उसकेह्रद
यसे लगकहा हे मेरे प्रियमित्रतुम मुझसे अप्रसन्न मतिहोमुझे अपना मित्रसमझो
औरबताओ कि तुम्हें मुझसे कौनसादुखपहुंचा यदि अनजाने मुझसे कोई अपराध
हुवातो उसका बदलादूंगा अबुलहसन उसके दममें आगया औरउसे अपने निकट
बैठालिया और अपना संपूर्ण वृत्तांत आदिसे अंतपर्यंत वर्णन किया जिसे खलीफा

२
सत.
८.

70

भलीभांति जानताथा पुनि कहनेलगा यह स्वममेरे चित्तमेंयेसा समागयाकि मैंनेजाना
कि मैंखलीफाहूं इसपर पड़ोसियोंने मुझे विक्षिप्त समझके टकरवाया औरबंदी गृह
में मैंनेमहाकष्ट उठाया औरमुझपर बड़ी मारपड़ी तुम्हीइसदुखकाहेतुहो किभोर।
कोजाते समय मैंरेमकानका द्वारखुलाछोड़गया औरदेवताननेदरवाजेसेआय मु
झे वहकाया उनसमूर्णाडःखोंकेविशेष मैंनेउसदशामें अपनीमाताको मारा औरउसेबु
राभला कहा औरपड़ोसियों कोउगवाक्यकहे इसकारणउन्होंने बंदीगृहमें मुझेमारखि
लवाईइन सबविपत्तियोंके आपहीहेतुहैं निदानउसने सबयहदशाविदशाजोकुछकि
बीतीथीकोयमैंखलीफासेकहसुनाई वहइन सबबातोंकोपहिले सेजानताथा उस।
कीइनथोभोलीबातें सुनभलीभांतिठहामारहेसायह देखअबुलहसन कहनेलगामैं
जानताथा कितुझसे प्रीतिरखनाहै और मेरा डावसुनयच्छता वेगा औरअपने
हा अप्रसन्नहुवा औरक्रोधितहोय कहनेलगा यदितुझे मेरेकहनेकाविश्वासनहो
तो मेरीपीठ औरकंधोंकोदेख किकोड़ोंके चिन्ह अवतकवर्तमानहैं निदानवह उसकी
देहपर निशानदेख बहुत पछताया औरउसेथोड़ीदेरफिर कंठसेलगाय कहनेलगा भाई

मुझे तुम्हारे चिन्ह देह महाखेद भया परंतु होनाथा सो हुवा अब मेरा अपराध क्षमा करो और
मुझे अपने घर ले चलकर भोजन कराओ प्रातकाल को मैं दरवाजा मूंद चला जाऊंगा यद्य
पि अबुलहसन ने पूर्व में यह प्रतिज्ञा की थी कि दूसरी बेर किसी को अपने घर न ले जाऊंगा
विशेषकर ऐसे मनुष्य को जिसके कारण इतना डाव पहुंचा परंतु उस दीन को इसके सिवा
यकि उसे ले घर में जावे कुछ न बन आया निदान दोनों वहां से उठ नगर की ओर सिधारे मार्ग।
तर में खलीफा ने उससे कहा तुम मुझ से भरोसा रक्खो मैं प्रण करता हूं कि अपनी प्रतिज्ञा।
विपरीत न करूंगा परंतु तुम्हें उचित नहीं कि मुझ से परम प्रिय मित्र को किस दशा में तु
म्हारी भलाई और प्रसन्नता की कांक्षा करता है ऐसा करो उसने कहा जो तुम कहते हो
वह सत्य है परंतु फिर मेरे घर आने की आशा मत रखना क्योंकि वह सब डाव जो मुझे पहुं
चे उसका तुम ही हेतु थे यह सुन खलीफा ने मुसकराय कहा तुम बड़े मनपापी हो इतने क
हने पर भी फिर तुम्हारे मन में संदेह बना रहा इसी विधि परस्पर वार्ता करते संध्या को घर में
पहुंचे उसकी माता ने भोजन लाय सन्मुख रक्खा अबुलहसन खलीफा के साथ बैठ के
खाने लगा जब निश्चिंत भया तो उसकी माता और पात्र बिछाय उस पर फल मदिरादिक ला धर
दी और आप भीतर जाय सो रही उन दोनों ने मद्य के कई पात्र पिये और अनेक प्रकार की वार्ता

२
सत
७१

करतेरहे जब खलीफाने देखा कि अबुलहसन उन्मत्त भया तब उससे पूछनेलगा तुमकभी किसी परमोहितभयेथे उसने कहा नतोमें किसी पर मोहितभया और नतुझे विवादका ख्यालमदे उसने पूछा फिर किसपर तुम्हारी रुचि हे उसने कहा कि मेरी यही इच्छाहे कि सबकुछ मदिरा पीऊ और अपने मित्रों से वार्ता करूं इसके विशेष एक और इच्छाहे कि मैं एक सुंदर स्त्री से जो स्वप्न में मेरे साथ बैठके मदिरापान करतीथी विवाह करना चाहताहूं परंतु ऐसी सुरूपवान छवि धाम सिवाय महलबादशाह वा मंत्री के घरके किसको मिले सुनि एक मद्यकापात्र भर खलीफाको दिया और कहनेलगा यह अंतिम पात्र हे मेरे हाथ से लेके पियो वह तुरंत पीगया फिर खलीफा नेभी एक पात्र भर उसमें थोड़ी सी मूर्छाकी दवा डाल उसे देकर कहा कि उस सुंदरी को जिसे तूने स्वप्न में देखाथा सुपिकार से जो अबुलहसन ने मुसकराय वह पात्र अपने हाथ में ले उस स्त्री की रुचि में पिया और मूर्छा खाय सोगया फिर खलीफा ने उसी दास को सैनकी कि इसे बड़े रस्ता से महल में लेजा वह उसे कांधेपर उठायले चला और खलीफा उसके घर से निकल द्वार मूंद उसके साथ होलिया जब अपने घर में पहुंचा दास से कहा ऐसे चौथी बारह दरी में जहां से उसे उठायले गयाथा मेरी पाथ्या पर लिटायदे और खोजियों को आज्ञा दी कि उस के कपड़े उतार मेरे वस्त्र पहिना ओ उन्होंने तुरंत वही किया खलीफा प्रभात होतेही अपने शया।

शयनालयमें गया और छिपके बैठ रहा कि वहां अबुलहसन का तमाशा देखे निदान जब उसने
देखा असर गया तो वह जगा और नेत्र खोले तो सोने का उगालदान और अनेक वस्त्र वहां वि
द्यमान देखे गाने वालियों के साथ समूह तुरंत अपने बाजे ले स्वर मिला अति ललित गीत गा
ने लगे वह सहनाई का अति मिष्ट पाहुस्वन प्रसन्न हुवा और रंगना डा(?) खेड़ गाकर जो फिर वह शा
मा न देखा तो अधिक आश्चर्यित भया और अपने चऊं ओर खोजियों को खड़े देख सर्व समय के
साथ की और उस बारहदरी को भी देख पहिचान गया और वही प्रकाश और वही वस्त्र देखे
गाना बजाना बंद हुवा कि खलीफा उसका रूप और उसकी बातें सुने इस हेतु शयनालय के से
वक चुपचाप अपनी २ ठौर पर हाथ बांधे खड़े रहे अबुलहसन ने अपनी उंगली आश्चर्य से दां
त से काटी और कहने लगा बड़ा विद है कि आज मैं फिर वही स्वप्न देखता हूं जो प्रथम में दे
खा था निश्चय है कि मैं फिर सर्व लोह के पींजड़े में बंद किया जाऊं और बेड़ी हथकड़ी पहि
न कई दिन तक मार खाया करूं वह मनुष्य जो कल मेरे घर गया था महाडहक है वही इस स्व
प्न और अप्रतिष्ठा का कारण भया यद्यपि उसने मुझसे प्रतिज्ञा की थी कि मैं जाते समय मका
न का दरवाजा बंद जाऊंगा परंतु फिर वह किवाड़ खुला छोड़ गया शैतान ने उस द्वार से आय
मुझे बहकाया और ऐसे स्वप्न फिर दिखाये जिसमें मैंने अपने को महा खलीफा समझा है ईश्वर

१
सत्र
७२

72

उसकी माया औरदृष्टिबंदीसे मुझेबचा यहकह उसनेफिर अपनी आंखे मूंदी औरबहुतकाल
पर्यंतशोचतारहाकि यकलख्त पीछे आंखें खोलकर सबसामग्री औरखोजियो औरस्वादियोंको
देख आश्चर्यकरकहने लगाहे परमात्मा सच्चिदानंद प्रभुमुझे शैतानके छलसेबचादे फिरवे
नम्रहो मनमें कहनेलगा इसीभांति पड़ारहूं तबतक नबोलूं चाहे मध्यान्ह भीहोजाय शैतान
फरेबमार आपचला जावेगा परंतु लोगों ने उसेचुपकार हनेनदिया शाणानंदिनी नामक अनु
चरीजिसको उसनेपहिलीवेर देखाथाउसके समीप आयबैठी और उससे कहने लगीहेबा
दशाहू यदि मेरा अपराध क्षमाहोतो मैंविनयकरूं यह आपके सोनेका समय नहींजागि
येसूर्य उदयहुये अबुलहसन नेशाणानंदिनीका शब्दपहिचान करकहने लगा शैता
नमेरे पाससे उठदूसरे मनुष्यके धोखेसे मुझे खिलाफा कहताहै शाणानंदिनीने कहा आ
पही बादशाहू हैं और यहनाम जोमैंने आपकोदिया मुझे आपहीकाहै क्योंकि आप
हिंदू मुसलमानकिंवा संसारभर केचक्रवर्ती बादशाहू होजिसकी मैं किंकरी अनुचरीहूं
आपने रात्रिको कुछ दुःस्वप्न देखाहै जिससे आपयह कहतेहैं यदि आपभलीभांति नेत्र
खोलेंतो यहसंदेह आपका निवृत्तहोजावे औरसमझेंकिमैं अपने मंदिरमेंहूं औरयहबां
दियां आपकी सेवाकेलिये खड़ीहैं आपकुछ अचंभान कीजिये क्योंकि रात्रिको आपनेबा

ऊकालपर्यंतशयन किया इसनिआपकी निद्रामेंविघ्नहोनेसे नजगाया निदान आएणानंदिनी
ने इसभांतिकी बऊतीवातेंकी इतनेमें वहउठ बैठा औरनेत्रखोले और उनलोडियोंको जिन्हें
स्वदेखाथापहिचाना वहसब हरबराय उसकेनिकट आयखड़ी भईइतनि आएणानंदिनी उस
से बातेंकरनेलगी औरकहने लगीहै बादशाह यह समय आपके जगनेकाहै देखिये उजि
याला प्रकटभया उसनेअपनी आंखेंमल उससे कहामैंतो बादशाह नहींहौं मैं अबुलहस
नहूं मुझे अपनाहनांमभलीभांति मालूमहै तैने उसकेबिपरीत मुझे बादशाहक्यों कहा
उसने उत्तरदियाहम अबुलहसनकोनहीं जानती किवह कौनहै येतानकाहियेकि आप
बादशाह नहींअबुलहसन् नेचौंक औरदेखकर कहाक्या अद्भुतभयाहै किमेंउसबा
रहदरीमेंबैठाहूं जिसमें पहिलेथा औरवही स्वप्नदेखताहूं जोपहिले देखाथा येसाना
होजो इसस्वप्नके देखनेसे बड़ीहानि उठाऊं मेराईश्वर रक्षकहै खलीफायहसबवातें सु
नाचाहताथा किठठामारहंसे परंतु हंसीको दबाये रहा फिर अबुलहसन नेलटकरअ
पनी आंखे मूंदली तबफिर आएणानंदिनीनेकहा यद्यपिकिंकरी नेदोबेर आपसे कहाकि स
मयबीता जाताहै आपकोनहीं जागते समस्त सभासद अगवानीकेलिये खड़ेहैं आपही
की आज्ञाहैकिआपको सूर्योदय केपहिले जगादेंफिरदो वादियों नेउसकी भुजा पकड़उठा

१
सत्व
७३

73

य दिया और बारहदरीके मध्यमें गद्दीपर लेजाय बैठाय दिया और हाथ बांधकर उसके सन्
मुख नृत्य और ललित स्वरोंसे गान करने लगी और चंग और रसे सुंदर बाजे बजने लगे अबुहसन
सन इस दशाको देख मनमें कहने लगा क्या मैं वास्तवमें बादशाह हूं और चाहताथा कि कुछ
वार्ता करे परंतु नाद और वाह वाहमें कुछ सुनाई न देता तब उसने हाथकी सैनसे शाशि खावी
कोजो उसके सन्मुख नृत्य करतीथी बुलाय सच्चा समकहमें कौन हूं उसने उत्तर दिया हे बाद
शाह इस प्रश्नसे आप परीक्षा लेते हैं आपही बताइये क्या आप बादशाह नहीं फिर कौन हैं अ
तो हम उन सब बातोंको जो कल आपने कीहैं स्मरण करावें फिर कहने लगी कल आपने स
भामें जाय कोतवालको अमुक गलीमें भेजकर मवज्जन और चार उसके संगतियोंको दंड दि
लाया और मंत्रीको भेजकर हजार अशरफी अबुलहसनकी माताको दिलाई और जब फि
र बारहदरीमें आप गये और अमुक पाक भोजन किया और अमुक वचन कहे और अमुक
वचन कहे और हमको स्वामिवत् दयालुतासे बैठाय भोजन कराया और फल दिये और हमा
रे हाथसे मद्यपान किये और हमारा गाना सुनाफिर शय्यापर रात्रिभर ऐसे सोये कि दिन
होगया और फिरभी आपकी आंख नहीं खुलती मणिमाला और अमृतउर्वरियां और रावजी।

भीपक मतहोय उसशशिमुखीके वचन कायत्त करतेरहे फिरसब कहने लगेकि अबआप
उठिये औरभोरकी वंदनाकीजिये अभीसमय ऊछशेषहै अबुलहसन ने इनबातोंको स
नकहाहै महाप्रभुतो यद्यपि तुमरूप अनूप सबकी और योवनमेंपकीहो परंतुबुद्धि औ
रचतुरतासे खालीहो पूर्वमें मैंने ऐसाही स्वप्नदेखाथा तबवडेबडे डाव औरकष्ट उठाये
और बहुकाल पर्यंततोहके पींजडे मेंहथकडी औरबेडी डालिगये पडारहा प्रतिदिवस
पचास कोडे मुझपर पडाकरतेथे जिससे मेरीपीठकी खाल उधडगई और उसपर काले
चिन्ह पडगये तुमउसे स्वप्नसमुझतीहो यहसुन शशिमुखीने उत्तरदिया यह वृत्तांत तो
मर्थ्यकेदहोना औरमारखाना आपके वैरियों ने स्वप्नमें देखाहोगा क्योंकि आपकलसे
कहींनहीं गये सम्पूर्णरात्रिइसी बारहदरी में सोया कियेइस समयमें आपकी आंख खुली
है अबुलहसनने उसकाबचन सुनकहा तु सचकहतीहै और समझा जबसेमैं इसमहल
में आया फिरयहांसे बाहर नहीं निकला परंतुफिरचिंता करनेलगाकि उसदशाका जिस
मेंमारखाई स्वप्नसमझूंवास्से जोसाक्षात् देखताहूं हे प्रभु मैं अबुलहसनहूं वा खलीफा
जोसमझोसो विदित होजावे इसके अनंतर अपनी भुजाओंको जिनपरमारके चिन्ह पडेथे
खोलके उनस्त्रियोंकोदिखाये औरकहनेलगा तुमविचारो किनिद्रित मनुष्यके शरीरप

१
सन्द
७४

74

भी कहींमारकेचिन्ह पड़गेहैं इस विषयको साक्षात समझो अभीतक इनके दबाने सेपीड़ा
होतीहै अवइठ खचितभाया किमैं खलीफा नहीं हूँ केवल अबुलहसन हूं यदिकोई इसखमस
मझेतो कोई विषय संसारमें अद्भुतनहोगा कि स्वप्नमें मारपड़े और उसका परिणामता
मध्य पीड़ा जाग्रित अवस्थामें ज्ञातहो इसके उपरांत उसने एकबांदीको बुलाकेकहा
मेरामांसकाट जिससे मुझे मालूमहोकि मैंजागताहूंवा सोता उसने वैसाही कियातोव
ह पीड़ासे चिल्लानेलगा उसके चिल्लातेही एकहीबेर सबबाजे बजनेलगे औरसब खो
जी और लौंडियां गानेबजाने लगींफिर अबुलहसनने अपनेवस्त्र उतारफेंकदिये केव
ल एकपायजामापहिरे रहा और उनसबके साथहोनाचता औरतालियां बजानेलगा क
भीइतनाकूदताकि दोहराजाता निदान कोई बात मसखरे पनकीनछोड़ी खलीफा य
ह दशादेख हंसते हंसते लोटगया निदान उसने पुकार करकहाअबुलहसन बसकर।
क्या हंसते हंसते तुमुझेमारडालेगा जबखलीफाने यहकहा तबसबचुपहोरहे और
बाजोंका शब्दभीबंदहुआ अबुलहसनभी चुपहोय आवाज की तरफदेखने लगा उसने।
वहां खलीफाको देखपहिचानकरकहा आपही बौपारीकाभेष बनेहुयेथे इतनाकह
कुछलजितहुवा औरसमझाकि मैंजगाहूं स्वप्ननहीं देखता और यह सबबातें खली

फाकी औरयदेखकहनेलगाकि आपही मवस्सलके बौपारीके भय मेंथे और आपही मेरे
मारपड़ने औरअतिथ्यांके हेतङ्कये खलीफाने कहा अबुलहसनतू मत कहताहै मैं इ
सकातुफे यथार्थबदला कहेंगा और मैं ईश्वर को साक्षी करताहूं किइसके बदले तेरे।
साथ येसाउपकार करूंगाकि आजतक किसीसेन किया होगायहकहखलीफा उसम
कानेसनीचे उतरआया औरमसरूरको आज्ञादीकि तुरंतवस्त्र लाय इसेपहिना औजब
वहपहिनचुका खलीफाने उसे अपनेकंठसे लगायकहातू मेरा भाईहै जोतूकहेगावही।
करूंगा अबुलहसनने कहाहे दयालुकृपाल पहिले आपकहिये किमेरे विक्षिप्त बना
नेसे आपको कालाभथा खलीफाने उसेथोड़ाछादे कहा महीने कीपहिलीतिथिकोभेष
बदलनगरके बुरेभलेहालतके मालूम करनेको नगरकि गली कूचों में फिराकरताहूं त
था अस्तुकरात्रिको तूने मुझे अपने घरमेंलेजाय अतिस्वादिष्ट भोजन खिलाये तेरीबा
तोंसे ज्ञातहुवा कियदि तुझे ईश्वर यकदिनकेलिये खलीफा करदेतो अपनी गलीके अ
मीक मवजन औरचार उसके संगती मनुष्यों कोदंडदेगा इस हेतु मैंने तुझे मदिरामें
मूर्छाकी औषधी पिलाय अपने मंदिरमेंउठवालायातू रात्रिको बीतेविचार खलीफा
बन बैठा औरहरयकको मारने औरबुराभला कहने लगानिदान केदहोके मायबाई प

२
सत
७५

75

क मासयीछे दूसरीबेरमें फिरतेरा अतिथिहोके उसीभांति तुझे यहां उठालाया अबा
तू योंछपर अबुलहसन नेकहाहे बादशाह जोकछ मुझपर पड़ीसोजन्मभर स्मरणरहेंगे
कि खलीफ़ाके कारणमेरीयह दशाभई औरविश्वासहे कि आपमुझपर सर्वदा कृपाक
रते रहेंगे परंतु मेरी यह इच्छाहे कि आपकी सेवामें रहूं औरप्रतिसमय आपके सन्मु
खउपस्थित रहूं खलीफ़ाने कहा मैंनेतेरी यह इच्छा स्वीकारकी औरतुझे मेंहरसमय
आनेकी आज्ञादी तुझे कोई नरोकेगा फिर एकमंदिर अतिसुंदरनिवासार्थ दिया औरह
जार अशरफ़ी देकेयहही मासिक उसका नियत कियाजब खलीफ़ा सभामें गया तो अबु
लहसन अवसरपाय अपने घरमें आया और अपनी मातासे संपूर्ण वृत्तांतवर्णनकिया
किजोकुछ बीताथा स्वप्ननथा किंतु यहसबजाग्रत अवस्थामें खलीफ़ाकी इच्छासेहु
आ औरउसने मुझे एकरातदिनकेलिये अपना राज्यपद देमेरी सब आज्ञाप्रचलितक
राई अबमुझे उसने अपनासभासद नियतकिया फिर यहवृत्तांत संपूर्ण बुगदाद नगर
में विख्यातहुवा औरवहांसे और नगरोंमें प्रसिद्धभया उसदिनसे अबुलहसन खलीफ़ा
के निकटउपस्थित रहकर अपने हास्य औरबाचालतासे प्रसन्नरखता एकदिन खलीफ़ा
अबुलहसनकोजबदा अपनी मलकाके समीपलेगया औरइसका संपूर्ण वृत्तांत कहक

नायावह यह सुनकर हर्षित भई अबुलहसन बक़्या ख़लीफ़ाके साथ महल में जाता और बज़्
याचंद्रकला नामयक अनुचरीकोप्यारकी द्दष्टिसे देखता जेबदाने यह वृत्तांत ख़लीफ़ासे कहा
कि अबुलहसन इस सुंदरीको बहुत देखा करता है और वह भी उसे प्रसन्न मालूम होती है
यदि सलाह होतो उनदोनों का बिवाह करदें ख़लीफ़ाने कहा है प्रिया तुमने मेरे मनकी।
बातकही क्योंकि मैंने इससे प्रतिज्ञाकीथी कि इसे अतिसुंदरी स्त्री दूंगा परंतु अबतक मैं
ने इसकी रुचि किसीपर न पाई अब तुमसे ज्ञात भया इससे क्या उत्तम कि उनदोनोंका विवा
ह करदियाजावे जितना कि जेबदा को चंद्रकला प्रियथी उतना ही ख़लीफ़ाको अबुलह
सन सुनिउसका विवाह बड़ी धूमधाम से हुवा जेबदाने असंख्य द्रव्य देहेज में दिया और
ख़लीफ़ाने भी अबुलहसनको बहुत रत्न औरधन दिया अबुलहसन चंद्रकलाको उसी मका
नमें लेगया जो ख़लीफ़ाने उसे दियाथा और बड़ा उत्सवकिया कईदिनतक आनंद रहा फिर
वह दोनों प्रीतिपूर्वक रहनेलगे सिवाय इसके कि वह ख़लीफ़ा और जेबदाकी सेवामें जा
ने वियोग न होता वास्तवमें चंद्रकला अत्यंत चातुरा और बुद्धिमानथी इसहेतु अबुलहस
नमोहित रहता वह दोनों प्रिया प्रीतम अति उदारथे सदैव उत्तम भोजन करते और स्वच्छव
स्त्र पहरते और दिव्य मदिरा पीते और भोरसे सायंकाल पर्यंत भोजनके भाजन बिछे र

सत्य
७८

76

हते जो खोजी वा कोई अनुचरी उनके भेंटका आताथा वह उसको बिना भोजन कराये बिदा नकरते इसके विशेष उनकी प्रतिष्ठानुसार् बस्त्र देते और स्कइयों को याविलोषकादिक बिदा करते और रात्रिको फल और मिठाइया मुख्य अचार भोजन की बिरियां रहते गाना बजाना आदिक आनंद रहता निदान इसी भांति इन्होने धनवानो के समान अपना निर्वाह किया उनके रसोइने भी बहुत दिनोंतक अतिस्वच्छ भोजन पकाये और निश्शंक लुटादिये सो एकदिन रसोइये ने खर्चेका हिसाब उन्हें लाय दिखाया और इसी प्रकार वस्त्रवालेने कि उनदोनो के वस्त्रोंमें खर्च किया था रुपया मांगा उन्होने जो कुछ कि बचा था देदिया तथापि हजारों रुपये का ऋण उनके मथ्थे निकाला और खर्चे की ओर से दुःख पानेलगे अबुलहसनने इस भांति जाना सिकि कदाचित् खलीफासे कुछ न मांगूंगा खली फासे कुछ मांग न सका और सर्वकाद्रव्य जो बिवाहके प्रथम पाया था अपनी माता को दे डाला था अब कुछ मातासे भी न मांग सका था और चंद्रकलाभी कि जेबदाने उसे इतना द्रव्य दिया था कि जन्मभर उसे बहुत थान मांगसकी द्रव्य के न होनेसे अति दुःख पाकर अबु लहसनने अपनी स्त्री से कहा अब कोई उपाय करना चाहिये सो परस्पर सहायता करनी अवश्य है चंद्रकलाको इसके कहने पर कुछ ढ़ाढ़ना हुई और कहनेलगी मैं तो निकट

निरासथी अबतुमबताओ कि वह कौनसी युक्ति है उसने कहा वह ऐसा उपाय है कि वह तुझ
बचन उत्कृष्ट वस्तु देगी वह यह है कि हम तुम दोनों में से उसने कहा जो तुम चाहो तो मेरा
मैं अभी नहीं मरती मुझे तो अभी संसार का सुख भोगना है यदि इस उपाय के विशेष कोई
अन्य यत्न हो तो निस्संदेह मैं भी इसमें संयुक्त हूं उसने कहा निदान स्त्री को योनि है मरने
का नाम सुनके घबरा गई उसके मरने का हाल न कहने दिया मेरा प्रयोजन वास्तव में मर।
ना नहीं किंतु केवल मकर करना है चंद्रकला ने कहा यदि मरने से तुम्हारा यह अभिप्राय
हो तो इससे उत्तम दूसरा कोई उपाय नहीं अब उस मकर को बयान करो कि मैं भी उसे समझ
लूं उसके पति ने कहा मैं लेटके मृतकवत् बनूंगा तुम मुझ पर एक उज्वल चादर डाल
देना कि मानो मैं वास्तव में काल वश हुआ फिर मुझे दालान में रख यथोचित विलाप करा।
ना और एक पगड़ी बंधी हुई मेरे शीश पर रख कर मेरे चरण पश्चिम की ओर कर देना और।
वस्त्र फाड़ शिर के केश खोल रुदन करती हुई जबदा के निकट जाना वह तुझे अवश्य कुछ
कह देवेगी मेरी अर्थी बड़ी समर्था मसे उठाई जावे और तेरे वस्त्र फटे देख अति उत्तम था।
न देगी जब तुम वहां से रुपये लेके आओगी तो मैं उठ खड़ा हूंगा और फिर तुम लेटके
मृतक बनना मैं तुझे वह पहिरा खलीफा के निकट जाय यही छल उससे करूंगा नि

२
सन्द
८७

77

अथवेहै किवह इसहाल कोसुननेवदासे कमनदेगा जबवह यह उपाय वर्णनकरचुका
उसकी स्त्रीने कहा यहउपायबहुत अच्छाहै वह निस्संदेह हम तुमको बहुतकुछ दें
गे अबहम मेंसेकोई वहउपाय करेजिससेलाभहोजबहम परस्पर मिलकर उसको क
हेंगे तोनिश्चय बहुतरुपयामिलेगा अबविलंब मतकरोफिर अबुलहसन कालीनपर
मसनचादरबिछाय चितलेटगया औरपांव अपनेलंबे करदिये औरएक चादरलपेट मृ
तकके सदृश बनगयाउसकी स्त्रीनेपश्चिमकी ओरउसके चरणफेरदिये औरमहीन
वस्त्रसेउसकामुखछिपादिया औरपगड़ी उसकेमुखपरइसभांति रक्खीकि स्वासउस
कानरुकेपुनि अपनेशिरकी ओढ़नी फारकेश खोल बहुतविलाप किया उसीदशासे
रुदन करतीहुई जेवदाके महलमेंगई औरउससे अबुलहसनके मरनेकाहालकह
सुनायाजेवदा औरअम बांदियां यहसुनरोने औरपछतानेलगीं जेवदाकिइसे बहुत
चाहतीथी उसकेवचनपर निश्चयकरएक हज़ार अशरफ़ी औरएकभारीथान कमख्वा
बकाउसेदेकरकहा किइसे अरथीपरडालियो और अशरफियों कोफातिहा औरदफ़
नमें खर्च करना वह उसले अपनेघरमेंलाकर अबुल हसनको रुपये औरवस्त्र दिखादि
ये वहहर्षित होय उठखड़ाहुआ पुनिचंदकलाने कहा अबमैं बहाना करके मरनीहूं

त्नमेरे मरनेकाहाल खलीफ़ासे जाकेकहु और अशरफियां औरथान उसेलाउसने कहा।
त्नमुझे इसविषय मेंक्यासिखातीहै मैं तुझसे आपही चतुरहूं अबतुमदेखत मृतकबन वन
देखोमें क्याकामकरताहूं निदान अबुलहसन अपनी स्त्रीको वस्त्रसे ढांपकर दरबार।
को समय रुदन करताहुवाचला खलीफाने उसेरोतेहुये देख अपने सबकाम छोड़ दि
ये औरउसकी ओरदेखनेलगा औरउससे रोनेकाहेतुपूछा उसने बिनयकीहे दयाल
कृपालस्वामी मेरीस्त्री चंद्रकला मरगई खलीफाने बड़ा खेदकिया औरउसे रोतेदेखव
ज़ीर आदिक सकल सभासदों नेभी महारुदन किया औरखलीफाने हज़ार अशरफ़ी
औरभारीथान: कमखाबका दिलवाकर उसेबिदा किया उसनेहंसी खुशी लाकर चं
द्रकलाकोदिखायावह प्रसन्नहोय उठबैठी खलीफा औरज़ेबदा को उनदोनोंके मर
नेसे महाशोकथा सुननेमें खलीफा सभाको बिदाकर मसरूरको साथलेज़ेबदाके म
हल में आया औरउसे अंमत चिंता करते औरआंसू बहाते देख खलीफानेउसे धीरज
देकरकहाकि यद्यपि चंद्रकला तुम्हारी हितैषी लौंडीथी परंतु ईश्वरसेकुछ उपाय न
हीं चलता संतोष राखोज़ेबदाथह सुनतेही आश्चर्य मेंहो समझीकि खलीफ़ा को
धोखाहुवाकि अबुलहसनको चंद्रकला समझायह सोच कहनेलगीहुज्जूर चंद्रकला

तो जीतीहै अबुलहसन तुम्हारा सभासद मरगया खलीफाहंसकर मसरूरसे कहने
लगा इसकी समझ से मुझे अचंभाहै कि ऐसी उलटीबात कही कि चंद्रकला के बदले
अबुलहसन कामरना बतातीहै पुनि अपना मुसाहिब ज़ेबदा से कहनेलगा हे सुंदरी
तुम अबुलहसन केवास्ते मतिरो वहतो चंगाभलाहै अभी अपनी स्त्रीकेलिये विलाप
करताथा अबतुम अपनी प्रियबांदीके लिये रुदनकरो अबुलहसनथोड़ी देरहुई कि
मेरेपासरोताहुवा आयाथा मुझेभीउसे देखरोना आया और उसने मुझसे अपनी स्त्री
के मरनेकाहाल प्रगट किया सोमैंने एकथान कमख्वाब औरएकहज़ार अशरफ़ी उसे
दिलवांदी जिससे उसेथोरीढ्हो उससमय मसरूरवंहा खड़ाथा यहसब बातें जो मैंने
हताहूं उसने देखीयदि तुम्हें संदेह वा भ्रमहोतो इससेपूछलो ज़ेबदाने खलीफ़ा
से कहा तुम्हारा स्वभाव हंसीकाहै परंतु यहसमयहंसी कानहीं तुममेरी लौंडी
कासोगकरते हो और वास्तव मेंउसकापति मराहै तुम्हें चाहियेकि अबुलहसन
केवास्ते रुदनकरो खलीफाने कहाहे सुंदरी मैंहंसी सेनहीं कहतावास्तवमें अबु
लहसन जीताहै औरचंगाभलाहै तुमधोखे मेंहो ज़ेबदाने उत्तरदिया ऐसानहीं जैसा
तुमकहतेहो लौंडी जीतीहै थोड़ीदेरहुई किवह रोतीहुईमेरे समीप आईथी व

ऊ कालपर्य्यंत अपने पतिके मरनेसे विलापकरतीरही सोउसकी दशा देख मैंभी रोई मे
रा रोना देखसबबांदियांभीरोई आपसबसे यहकहनांन सुकेंकि मैंनेउसे एकहज़ार अशर
फ़ी औरएकमकानबाबका थान दिया यानहीं सुफ़ेजो आपने शोकमें देखा सुके अबुलहस
नके मरजाने काहीं शोकहै और मैंचाहतीथी कि आपको कहला भेजूं इतने में तुमआ
पहीं आयेनिदान बहुतकाल पर्य्यंत इसीविषयमें तकरारहो खलीफाकहताथाकि
अबुलहसन जीताहै औरचंद्रकला मरगई औरजेबदा कहतीनहीं चंद्रकला जीतीहै
निदान खलीफानेखिसियाकर मसरूरको आज्ञादीकि यद्यपि मैंजानताहूं किचंद्र
कलामरगई तथापि शीघ्रजाय ठीक ठीक हालवहांकालाकि उनदोनों मेंसे कौ
नमरा और कौन जीताहै जबमसरूरजाचुकातो खलीफ़ाने ज़ेबदासे कहा अभी
मालूमहुआ जाताहै किसच्चाकौन झूठा कौनहै जेबदाने कहामैंसच्चीहूंगी औरतुम
अभीहारोगेकि अबुलहसनमरानिदान दोनों अपनी २ बातपरहठपकड़े उनदोनों ने
परस्पर प्रणकिया खलीफानेकहा यदिमैं हारूंतो अमुकबाग तुम्हें दूं औरजोतु
महारोतोतुम्हारा चित्रोंवाला मकानलूं जेबदा राजीहुई वहदोनों परस्पर यह प्र
णकर मसरूरके आगमन कीबाट देखने लगे अबुलहसन तोप्रथमहीं जानताथा कि

१ सदे ८५

79

इसविषयमें खलीफ़ा औरज़ेबदीमें अवश्य नकरारहोगी किंतु परीक्षाकी बार आवेगी
इसहेतु उसेत्तप्रथमसे एक उपायशोचरकवाथावह अपने मकानमें बेठाऊवा खीसेवा
नीकरताथाकि किवाड़की दरारसे मसरूरको आतेदेखाकिसूथाउन्हीके घरकी ओरचा
ला आताहै और समझगयाकि इसीहेतु खलीफ़ाने उसेभेजाहै यहदेख उसने अपनीस
त्रीसे कहाकि तुरंततुमफिर एकबेरमरजावो चंद्रकला तुरंतलेटकफ़न पहिनमृतक
त्तसबनगई और अबुलहसन नेएक कमरनाबकाथान जिसे खलीफ़ाने उसेदियाथा उ
सपरडालदिया औरघरका हारखोल अपनी रोनीसूरत बनाय रूमाल अपने नेत्रोंपर र
खलीयके सिरहाने बेठगया इतनेमें मसरूरभीतर आया औरचंद्रकला कोमरादेख मन
में प्रसन्नभयाकि हमारा खलीफ़ा सच्चाहै जबनिकट पऊंचातो अबुलहसनने उठबड़े
आदरसे उसकेहाथोंको चूमकर कहनेलगातुमदेखतेहो मैंकिस शोक औरआपदा
मेंहूं चंद्रकलाऐसीस्त्री इससंसार सेउठगई तुमभीउसपर दयारखतेथे मसरूरभी उ
सकी स्तुतिकरके बऊतरोया और शिरके ओरसे वस्त्रउठाय उसकी सूरतदेखी फिरआंख
छिपाय कहनेलगा ईश्वरकी मायासेकिसीका कुछउपायनंहीचलता चंद्रकलामेरी
अच्छीबहिनथी ईश्वर तुझपर दयालहो पुनि अबुलहसन सेकहने लगास्त्रियोंकी

आदेशहै भलेप्रकार निश्चय करनेके बिनाहरएक बातपर बादकर अपने बातको हठरखती
हैं और हससेर का बचन नहीं सुनती यद्यपिजेबदा बुद्धिमानहै परंतु यही कहतीहै कितुम म
रगये और चंद्रकला जीतीहै वहीदेरसे खलीफासे तकरार करतीहैं यद्यपिमैंनेभी साक्षी
दीकेंकि तुमने मेरे सामने यहहालकहालकहाथा तोभीजेबदाको निश्चय नहीं और स
बतक वह अपनेही बचनकोहठ करतीहैं और खलीफाको झूठा जानतीहै उसनेकहा
ईश्वर खलीफाको जीता रक्खे कि उन्होंने इसडरवेमें मेरीबड़ी पालनाकी मैं आपहीजाव
समझताथा कह आताथा परंतु अरथी छोड़कर नहींजासका मसरूरने कहायदि अबतुझे
खलीफाके पासजानेकी आवश्यकता नहोतीतो ऐसी दशामेंतुम्हारे संयुक्त होतातु
म्हारे जानेकी बड़ी आवश्यकतानहीं अबजाय इसहालकोसविस्तर वर्णनकरता हूं
यह कह वह विदाभया अबुलहसन द्वारतक उसके साथ गयाजब मसरूर हटनिक
लगया अबुलहसनने अपनेस्त्रीके ऊपरसेथान और बादलउठायकहा अबतुम उठबै
ठो परंतुमुझे विश्वासहै कि जेबदा मसरूरके कहने परनिश्चय करेगी और किसी अप
ने विश्वसितदासीको यहांदेखनेके लिये भेजेगी चंद्रकलाने तुरंत उठ अपने बस्त्रपहिर
लियेफिरवह दोनोंद्वारके समीपबैठ मार्गके दरवाजेको द्वारसेदेखनेथे किदेखिये

२
सत्व
८०

80

अबकौन आताहै मसरूर महलमेंपऊंचकर हंसा औरअपने दोनोहाथमारेहर्षके बजा
ये अर्थात खलीफा सच्चाऊआ औरजेबदाकी जीतिलिया जेबदाने अप्रसन्नहोय अर्था
त खलीफा सच्चाऊआ औरजेबदाकीजीतिलिया जेबदाने अप्रसन्नहोय कहाउत्तमह
बशीडहै यहहंसनेका समयनहींहै समकह कौनमराहै स्त्रीवापुरुष मसरूरने क
हाचंद्रकला कालवशऊई अबुलहसन उसके शोकमें रोरहाहै खलीफायहबचन
सुनतेही उछलपड़ा औरठठामारकेहंसा औरजेबदासे कहनेलगाहै सुंदरी तुम्हारा
चित्रोंवाला रहहमेंजीनाइसके अनंतरखलीफा मसरूरसे कहनेलगाकि संक्षेप हुनो
न वहांकेजाने और अरथीके देखनेकाविस्तारसे वर्णनकर उसनेकहाहै स्वामी जिस
समयमें अबुलहसनकेघरपऊंचा हारउसका खुलापाया भीतरजायकादेखाकि अबुल
हसन अरथीके सिरहाने बैठाऊवा रोरहाहै औरचंद्रकलाकफनाई ऊईदालानेके म
मेंउससोथके निकटगया औरसिरहानेकीओरसे उसके मुंहपरसे वस्त्रउठायदेखा उस
के मुखकी कांतिबदलीऊईथी परंतुकिंचित शोथऊवाथा फिरउसके मुखपरवस्त्रढांं
पचला आया वहांकायही हालथा जो मैंने आपसे कहसुनाया खलीफाने कहा मु

कि इसविषयमें कुछसंदेहनथा अब तेरेदेखे आनेसे दृढ निश्चयभयापुनि खलीफा जेबदा
से कहने लगातुम्हे भीस्त्रीके मरनेका निश्चय हुवा होगा तुमने शर्तहारीजेबदाने खली।
फासे कहामुझे इसदासके वचनका निश्चय नहीं यहदास महादुष्ट औररक्षतहै नेमें अथी।
रू नविलिम में ने अपनी आंखोंसे चंद्रकला को देखाकि रोती पीटती आईथी मैंने उस
आपबातेंकी औरजो उसनेकहा मैनेसुना मसरूरकहनेलगा हेसुंदरी मुझेतुम्हारी औ
रखलीफाकी किमुझे संसार मेंइससे अधिकप्रिय कोईनहीं सोगंदहै किचंद्रकला मरी
और उसका पति जीताहै खलीफाने क्रोधित होयकहा कि भलामैं अभीतकसे समझूं
गो फिर अपनी दासियोंकोबुलाया उनसेपूछाकि खलीफाके आनेकेपहिले कौनरोता
हुवा मेरेपास आयाथा दासियोंनेबिनयकीकि चंद्रकला रोतीहुई आईथी फिरजेबदाने
उसबांदीसे जोउसकी खजानचीथी पूछाकि किसको मैंने अशरफियां औरथानदि
लवाया उसनेकहा चंद्रकलाको फिरजेबदाने क्रोधितहोकर मसरूरसे कहाहेदुष्ट
योगपत्रको इनसबके प्रतिकूलकहताहै मैंतेरे कहनेकानिश्चय करूंवासबबांदि
यों कामसरूरने बहुतकुछकहा निदान चुपकाहोरहा औरखलीफानेजेबदाको औ
रदेखेहंसके कहाजिसने स्त्रियोंकोअल्प बुद्धि कहासमझकहाहै हेसुंदरी इसी समय म

२
सत्र
८१

81

सरूर अपनी आंखेसे देख आयाहै कि चंद्रकला दालान में मुई पड़ी है और अबुलहस
न उसके सिरहाने बैठा रोरहा है जिसपर तुम्हें विश्वास नहीं आता जेबदाने खलीफा से
कहा मेरा अपराध क्षमा हो मसरूर के बचन का मुझे निश्चय नहीं वह तुम्हारा सेवक है
तुम्हारी सी ही कहेगा और उसके कहने पर तुमने मुझे बुद्धिहीन बनाया मैं विनय कर
ती हूं मुझे भी आज्ञा हो तो मैं भी किसी अपने मनुष्य को भेज मालूम करूं कि मैं सच्ची हूं
वा झूठी खलीफाने कहा बहुत अच्छा तुम भी किसी को भेजो जेबदाने अपनी दाई को
जिसका दूध उसने पिया था बुलाय कहा कि तुम अबुलहसन के घर जाओ और भली भां
ति मालूम करो कि अबुलहसन मरा है वा चंद्रकला मैं तुझे इनआम में दूंगी वह दंडवत
कर सिधारी खलीफाने मन में कहा दाई का जाना अच्छा हुआ उसके मुखसे सुनकर
जेबदा को विश्वास होगा और मसरूर से साफ हो जावेगी अबुलहसन कि अपने दरवा
जे की दरार से मार्ग की ओर देख रहा था दाई को आते देख समझा कि वह जेबदा की
तरफ से हाल के मालूम करने को आई है अब जो उचित हो सो करना चाहिये तो अप
नी बीबी से कहा कि दाई जेबदा की ओर से आई है अब मुझे चाहिये कि मैं मरूं सो वह
पहिले की भांति लेट गया और अपने को मुर्दा बना लिया चंद्रकला ने उसे कफन पहिरा

यथानकमखाबका जो जेबदाने दियाथा डालदिया औरपगड़ी उसके सिरपर रखदी
औरदाई तुरंत उसके चरयऊपची औरकादेखतीहै किचंद्रकला अपनेशिरकेबाल नो
चे खसोट खाती पीटती औरकहरहीहै दाईउसके समीपजाय आनेनमुतासे कहनेल
गी मैं इससमय मातमपुरसीको तुम्हारे पासनहीं आई उसनेकहाहै मातादेखो मैंकि
सदुखमेंहूं अबुलहसन किजिसके साथखलीफा और जेबदाने बड़ी दया करके मेरा
विवाह कियाथा मरगया फिरउसने पुकारके कहाहै अबुलहसन तुमसुफे रांडकि
येजातेहो मैंतुम्हारे पीछेक्याकरूंगी ईश्वरमेकोन कहरसुफपर डालादाई नेदेखा कि।
जो ख्वाबमें यहदेखतीहै मसरूरके कहनेके प्रतिकूलहै फिरउसने अपनासिरऊ
परकरके कहा धिकारहै उस मुंह काले गुलामपर जिसनेझूठ बातें कहके मेरी स्वा
मिनी औरखलीफामें फगड़ाडाला औरचंद्रकलासे कहावची तुमने अजब अचंभे की
बात औरभी सुनीउस अयोग्य हबशी अर्थात् मसरूरने खलीफासे कहाकिचंद्रकला
अर्थात् नेरेशत्रु कालवस भये और अबुलहसन् तुम्हारापतिजीताहै औरइसबातपर
लड़फगड़ जेबदाको अप्रसन्न किया उसनेरोके कहायदिहै माताजो मसरूर कहता।
है वही सचहोजातोमें आज अपने प्रियप्रीतमके सोगमें नपड़ती यहकह महाविला

१
सह
८२

82

पकरनेलगी दाईभी उसेइस दशामेंदेखिरोनेलगी औरचतुरतासे अबुलहसनके सिरा
हाने जायवस्त्रउठाया औरउसे भलीभांतिदेखकरनेत्र ढांपदिया और आशीर्वाद दिया
हैदीन अबुलहसन् तुमपर ईश्वरदयाकरे और चंद्रकलासे कहनेलगी तेरा ईश्वर र
क्षाकरे मैं चाहतीहूं किमैंभी तेरेसाथ सोगकरूं परंतुक्या करूंऐसी आवश्यकता है
किमैं तनकठहर नहींसकती ज़ेबदा मेरेपहुंचने कीबाटदेखती होगी उसदासने झूठ
कहाउन्हेंइस समय अप्रसन्नकर रक्खाहै औरनिर्लज्जतासे उनके सन्मुख इसबातकी
सोगंधखाई कितुम मरगईहो औरतुम्हारा स्वर्गवास पति जीताहै इतनाकह दाईआं
सुयांपोंछतीहुई ज़ेबदाकेमहलको सिधारी उधर अबुलहसन उठबैठा औरवहदोनों
किवाड़की दरारसे मांगकी औरदेखनेलगे किदेखिये अबक्याहोताहै किउसकास
मयपर उपायकरें अबतक तो अपनीबुद्धि औरधूर्ततासे अपनेको बचातेरहे यद्यपि
बहुबुद्धियामहानिर्बलथी तथापि शीघ्र अपने आंसुओंको उठातीहुई चलीजो चंद्रक
लाके जीने और अबुलहसन केमरनेका समाचार कहज़ेबदाको प्रसन्न औरखिलखिला
को निरुत्तरकरे निदानमंदिरमेंहांफतीहुई ज़ेबदा औरखिलखिलाके निकटगई जोकुछ
कि उसने वहांदेखाथा सबज़ेबदा सेकह सुनायाथा ज़ेबदा उसकीबातें सुनकहने लगी

अब यह संपूर्ण वृतांत जाय खलीफ़ासे कहा कि वह हमें निर्बुद्धी समझकर हंसकर कहता
है कि सब धोखे में हैं और उसका एक अनुचर समझता है और मसरूर अपने मन में
प्रसन्न था और बगलें बजाता था कि अब दाई अपने नेत्रों से देख आई है वही कहैगी
जो मैंने वर्णन किया दाईने मसरूरसे कहा तू बड़ा झूठा है तैने को स्वामी के सन्मुख झूठ
कहा चेष्टकला तो जीती है मैं अभी देख आई कि अबुलहसन मरगया अब तू दंडयोग्य
है निदान दाईने बजनसे ऐसेही बहुत बचन कहे मसरूर ने उसके कठोर बचन सुन क
हा है पापली बुढ़िया तू बड़ी झूठी है कि मुझे झूठा बनाती है तैने एक बात भी समझ क
हो मैं अपने नेत्रों से स्त्री को मरी हुई देख आया हूं दाईने कहा वाह २ तू बड़ा लबा
र है कि मुझे झूठी बनाता है अभी मैं उसके घर से आती हूं अबुलहसन को मुवा देखक
र उसकी स्त्री को रोती हुई उसके सिरहाने छोड़ आई मसरूरने कहा ओ महाअसत्य
वा[illegible] मुझको फेर बदे दाईने कहा मक्कार झगड़ता है कि स्वामी के सन्मुख
झूठ कहता है जब दाईने जो ऊवाच्य उसकी दाई को कहे थे सुनकर खलीफ़ासे कहने
लगी कि इस अनुचर की ढिठाई और बात सुनते हो कि का काम मेरी दाई को उसने क
हा तुम कुछ नहीं बोलने यह कह उसने खिसियानी होगा दिया खलीफ़ा इस पर सार

की बानी और विशेषकर जो जेबुदनि कहाथा तनके तनझगवा और कहनेलगा इसविषा
यमें सिवायचुप रहने के अब और कुछ उपायनहीं विस्मित होय चुपहोगया उधरजेब
दा और उसकी सौंगिया जो वहां उपस्थितथी सबको सब विस्मित होय चुपहोरही थो
ड़ी देर पीछे खलीफाने जेबदासे कहाहम एक दूसरेके आगहलतेहैं पहिलेमें फिरख
म और इसीभांति मसरूर और दाई हमसे किसीका कोई निश्चय नहीं मानता अब उचि
तहै कि हमसब अबुलहसनके घरमें चलें कि सबकुछ खुलजावे अब इसके सिवाय
कोई दूसरा उपाय नहीं कि यह संदेह दूर होवे खलीफा आगे और जेबदा पीछे होके
चले सबके आगे मसरूर और पीछे सबके दाई और संपूर्ण दासियां होली मार्गान्तरमें
परस्पर दाई और मसरूर कोइस विषय में तकरार होने लगी जेबदाने दाईका पक्षकर
चीहै तो मेरेसाथ पांतेकरे दाईने कहा बहुत अच्छा इसके अनंतर उनदोनोंने एकप
कथान स्थानहरि कमखाबका खलीफा और जेबदाके सन्मुख था नै बांधा वह महल
जिसमें अबुलहसन रहताथा जेबदाके मंदिरके सन्मुख था सो अबुलहसनने देखा
खलीफा जिसके आगे मसरूर और खलीफाके पीछे जेबदा और उसके पीछे दाई बां

दियो समेनचले आतेहैं यहदेख अपनीस्त्रीसेकहा देखसबके सबघरकेपास आन।
पहुंचे वहदेख घबराई और कहनेलगी अबहमारा भेद खुलजावेगा और हमदोनों ल
ज्जित होंगे उसने कहा तुममत घबराओ तुमउसको भूलगईकि मैंनेजो अभी तुमसे
कहाथा उनकेद्वार पहुंचनेतकमें उपायकरलूंगा सुनिवह दोनों अपना अपना कफ
नपहिन दालानके मध्यमें चित्तलेटगये जब सब द्वारपरपहुंचे खलीफा मसरूर औ
र जेबदा दाई इत्यादि अनुचरियोंके साथ भीतर गयेतोक्यादेखतेहैं किवह दोनों मरग।
ये हैं यहदशादेख आश्चर्यमेंहुये औरकिसीके बिचारमें कुछन आयाकिवहक्याबा
तहै निदानजेबदानेखलीफासे कहाहा क्याअनर्थहै कियहदोनों मरगये सुनिदाई
और मसरूरकी औरदेख कहनेलगी तुम्हारे बरबरकी तकरार और आदमियोंके भे
जनेसेमेरी प्रियलौंडीभीमरगई खलीफाने कहाकि ऐसानहीं जैसातुम कहतीहो
किंतु प्रथम चन्द्रकला मरीहै अबुलहसन उसपरमोहितथा उसने उसकेशोकमें अप
नेको मारडाला अबमैंजीता और तुमहारी तुम्हारा चित्रोंवाला महल मेराहुवा जेबदा
ने उत्तर दियानहीं किंतुमैंनेयह प्रणजीता और तुमहारे तुम्हाराअमुकबाग मेराहुआ
क्योंकि अबुलहसन पहिलेमुवाहै मेरीदाईने आके साक्षी दीहै यहबातखलीफा औ

र
सह
८४

84

रजेबदामें फिरहोने लगा और इसी विधि दाई और मसहूरमें भी हरएक कहता था कि मैं सचा
हूं और मैंने यह शर्त जीती और दूसरा उसकी बात को काटता और अपने वाक्य को स्थापित
करता निदान खलीफा कुछ शोच दोनों मनुष्यों के मध्य में आ बैठा और पुकार के कहने ल
गा मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि एक हजार अशरफी अभी उसे दूंगा जो मुझे ठीक बता दे कि पहि
ले कौन मरा यह सुनते ही मसरूरने कहा जिसपर पगड़ी रखी थी अर्थात् अबुलहसन ने
यह बात सुनी जो प्रथम मरा था सो मैं हूं मुझे हजार अशरफी कृपा कीजिये एक साथ ए प
ड़ा उसकी स्त्री भी इसी भांति उठ जुबेदा के पाद कमलों में गिरी जुबेदा डर गई और खलीफा के चरणों पर गिरप
ड़ी और खलीफा को लिपट गये जब उसका भय निवृत्त हुवा तब वह
ड़ो की सुके जी के मुझे और खलीफा को लिपट गये
वह कलास कहने लगी हे अभागी तेरे ही कारण आजका सब दिन हमारा लड़ने झगड़ने
में बीता अच्छा मैंने तेरा अपराध क्षमा किया मैं इसी को बहुत जानती हूं कि तुझे कुशल
पूर्वक देखा इसी प्रकार जब अबुलहसन का शब्द खलीफा ने सुना तो हंसने लगा और उ
न दोनों को कुशल पूर्वक देख प्रसन्न हुवा पुनि अबुलहसन से कहने लगा तुझे कारस्तानी
थी कि तूने मकर कर सबके और रानी को लड़वा दिया और महल के नौकरों को कष्ट दि

या ग्रौरमुझे हंसाते हंसाते मारडाला उसनेकहाहै खुदावंद मैंसंपूर्ण हत्तांत समसम वर्णन
करताहूं मैंजबसे ग्रापके शरणमें ग्राया ग्रौरग्रापने मेराविवाह करदिया तबसे मैं यथा
वस्थित ग्रपना निर्वाह करताथा परंतु ग्रनेक भांतिके खर्चसे सम्पूर्ण द्रव्यजो ग्रापने कृपा
कियाथा व्ययहोगया ग्रौरमैं करजदारहोगया ग्रौरमेरे नौकरोंने मुझे बहुतदुःखदिया तो
मैंने लाचारहोजो कुछकि वस्त्र ग्रौरद्रव्य मेरेपासथाहिसाब करदेदिया जबकुछभी हमारे।
पासनरहा तोहमनेयह उपाय ग्रौर छलकिया स्सयत्नके सिवाय जो हमने निर्लजतासेकि
याकुछ ग्रौरनसूझा ग्राशारखतेहैं किहमारी ठिगाई क्षमाहो खलीफा ग्रौरजबदा ग्रबु
लहसनके सम कहनेसे ग्रतिप्रसन्नभये ग्रौग्रबुलहसन ग्रौर उसकी स्त्रीको ग्रपने।
साथलेजाय हजार ग्रशरफी जिसकी प्रतिज्ञाखलीफाने कीथीदीसो वह दोनो ग्रप
नेस्वामी ग्रौर स्वामिनी की उदारतासे बड़े ग्रानंदसेरहे शाहरजादने जबयह कथासंपूर्ण
कीतो खलीफासे कहनेलगी हे स्वामी कलकोरात्रि कोमैं इससे विचित्र कथासुनाऊंगी
जिसे सुनकर ग्रापप्रसन्नहोंगे निदान दूसरी रात्रिको डनियाजादने सूर्यके उदयके
पहिले सुधिकराई ग्रौर खलीफाने कहाकि मैंभीउसकथाके सुननेकी इच्छारखता।
हूं सोवहकहनेलगी ॥ ग्रलादीन ग्रौरविचित्रदीपककाहत्तांतकिसी उजबल नगर

मे मुस्तफानाम स्वीकाररहताथा वह अपनेकार्य्यमें बडीकठिनतासे अपने कुटुंब समे
त अपना निर्बाह करता उसकापुत्र अलादीन अति आलसी औरखिलंदराथा माता पि
ताका वाकउल्लकता प्रभातसे अपने घरसे निकलजाना और सर्वदिन बालकोंके साथ।
जो उसकेहमजोली और उसकीभांति अयोग्यनकटेथे खेलता जबवह बडाहुवाउसके
पिताने बहुतसा श्रमकियाकि कोईगुण उसेसिखावे किसीकार्य्यमें उसकामनन लगा
निदानलाचारहोउसे अपनीदुकानपर जिसपर वह बैठाकरताथालेजायाकरता और
अपना काम उसे सिखाता परंतुनतोवह प्यारसे नमारपीटसे सीने मेंचित्तलगाता और
सदा अपनेपिताको अप्रसन्न रखताजब मुस्तफा किसीकार्य्यके लियेदुकानसे उठताव
ह दुकानसे भागजाता औरसंध्या पर्य्यन्त नआता बहुतसोमारखाता परंतुकुछ्न संभला
औरकोई काम उसनेनसीखानि पट्टगुणहीनरहा मुस्तफा उसपरसदैव क्रोधकरता और
महाचिंता करताकि यहक्योंकर मेरेपीछे अपनानिर्बाह करेगा इसीचिंतासे वह बीमा
रहोगया औरकईमासपीछे मृत्युवश भया अलादीनकी माताने देखा कि इससे दुकानन
संभल सकेगी इस लिये उसनेबंदकरदिया और असबाब बेंचदई कातनेलगी वह बे
चारी सूतबेंच बेंचके कालक्षेप करतीयदि अपनेपुत्रको कुछ काम करनेको कहती तो

वह उसे यम काता और भय देता और सर्वदा कठोर वाक्य कह उसे डराव देता और बुरे मनुष्योंसे
संगति रखता जब वह चौदह वर्षका भया तोभी वैसाही रहा और अपने निर्बाहको चिंता मा
त्रनकी इसी दशामें एकदिन वह बाज़ारमें खेलताथा कि एक बिदेशीने अलादीनको देखा
विदित होवह महाधूर्त जादूगरथा इसलिये उसे अफरीका का जादूगर कहतेथे और व
ह अफरीका खण्डका रहने वाला था दो दिन ऊये थे कि वह इस चीन देशमें जगत में ह
मताऊवा पऊंचाथा और वह रमल आदिक विद्यामें भी निपुण उसने अलादीन को देख
पहिचाना कि यह बालक मेरे कामका है जिसको ढूंढता २ देशदेश नगर नगर फिरा
निदान जादूगर ने दूसरे दरजियों और पडोसियों से माल्लम कर एकदिन अलादीन
को अकेला पाके कहा बेटा क्या तुम मुस्तफा दरजी कारके पुत्रहो उसने कहा हां मैं उ
सीका पुत्र हूं परंतु बऊ काल बीता कि मेरा पिता कालवश भया इतना सुनतेही उ
समायावी ने उसके कंठमें हाथ डाल उसे अपने हृदयसे लगाय बऊकाल पर्यंत प्या
र किया और ठंठी ठंठी सासें भरने लगा अलादीनने उसे रुदन करते देखा पूछा तुम
क्यों रोतेहो उस जादूगर ने कहा है पुत्र मैं इसका क्या कारण वर्णन करूं तुम्हारा पिता मे
रा बड़ा भ्राताथा बऊत वर्षोंसे मैं यात्रा करता रहा अब इस नगरमें केवल उन्हीके दर्शन

२
सत्र
८९

86

को आया अपने मनमें महाप्रसन्नथा किउससे बहुतबरसोंके पीछे भेंटकरूंगा ओरवहभी
मुझसे मिलप्रसन्नहोंगे अवतुम्हारेमुखसे उनके मरनेका समाचार सुनऐसा शोकउत्प
भया जिसका वर्णन नंहीकरसक्ता अबसबमनोर्थमेरा मिट्टीमें मिलगया ओर मेरा
श्रमसत्यानष्ट होगया अब भगवान तुझेजीता रक्खे तेरा स्वरूप तेरेपितासे मिलताहै
ओरसबचिन्ह उसके तेरेमें पाताहूं निदान तुझेदेख मेंसन्तुष्ट भया पुनिउसने अपनी
जेबसे एकमुट्ठीभर पैसेनिकाल उसेदिये ओरपूछने लगा बेटा तुम्हारी माताकहां
रहतीहै तुमउसके निकटजाय पहिले मेरी ओरसे प्रणाम करना ओरकहनायदि
कलमुझेअवकाश मिलेगातो मैं अवश्य आऊंगा मैंवहां पहुंच जंहाकि मेराभाई
रहता ओरबैठताथा ओरजिसठोरपर वहमृत्यु वशहुवा है देखके अपने मनको
धीर्यदूंगा यहकह वहतो चलागया अलादीन दोड़के अपनी माताके निकट आ
या ओरउससे पूछने लगाहेमातामेरे कोईचचा भीहै उसने कहाकोई नंहीकिंतु
संसार मेंसिवाय मेरे ओर तेरेपिताके कोई कुटुंब मेंसेनंही है उसने कहा अभी
कोई मुझसे कहताथाकि मैंतेरा चचाहूंजब उसने मेरे पिताके मरनेका सुनातो
मुझे कंठसेलगाके बहुतरोया ओर मुझेप्यारकर पैसे दिये ओर तुम्हें प्रणाम क

हाहै और यह कहा है कि यदि तुझे कल औसर मिलेगा तो मैं अवश्य आऊंगा वहस्सघ
रके देखने को अति लालसा रखता है विशेष उस स्थान का जहां मेरा पिता रहता और उ
ठता बैठता था उसको माताने कहा तेरे पिता का एक भाई था सो बहुत काल बीता कि तेरे
पिता के जीते ही वह कालवश हुआ मैंने उससे नहीं सुना था कि कोई उसका और भी भा
ई है दूसरे दिन फिर मायावीने अलादीन से कि वह बाज़ार में बालकों के साथ खेल रहा था
भेंट की और उसको हृदय से लगाय दो अशरफियां दी और कहने लगा है पुत्र तू अप
नी माता को देके कहना कि आज संध्या को मैं तेरे घर आऊंगा तुम अशरफी उनाके भो
जन पका रखना जिसे हम तुम मिलके खावैंगे अब तू मुझे अपने घर का पता बताओ
कि किस गली में है उसने ठीक ठीक बता दिया वह सुन चला गया और अलादीन ने
वह अशरफियां अपनी माता को दीं और अपने अनुकरण चचा का वाक्य भी कह सु
नाया यह सुना उसकी माता अच्छी वस्तु पाक निमित्त बाज़ार से मोल लाई और रखी।
नी और तब के भाजन जो उसके पास न थे सो पड़ोसियों से मांग लाई और दिनभर र
सोई पकाती रही जब अनुमान सायंकाल के भोजन बन चुका तो उसने अलादीन से
कहा तेरा चचा घरको ढूंठता फिरता होगा तू उसे अपने साथ घर में लिवालाय यद्यपि अला

३
सन्दु
८७

87

अलादीनने उसेठीक अपनेघरका पता बतायदियाथा तथापि वह उसके लिवाने कोउठा।
जबद्वारकेनिकटपहुंचा तोसुनाकि कोईमनुष्यकिवाड़ खुलवाताहै जब उसने दरवा
ज़ा खोलातोवही अफरीकाका जादूगरदो शीशेमद्यके औरफल हाथमेंलियेहुये।
आया उसने वहसबवस्तु अलादीनकोदी और आपभवनकेभीतर चला आया औरउ
सकीमाताको नम्रहोय दंडवत्की औरउससे पूछनेलगा मेराभाई सदैवकहां बै
ठाकरताथा उसने बतायदियातो प्रथमउसने अपनासिरवहां नवाया औरकई बेरउ
सेचूमाफिर अतिविलापकर कहनेलगा मैं कितना अभागीहूं यद्यपि मैंनेइतना प्र
हिलेतबैहै कालहुवा उसकीमातानेउसठौरपरजहां उसकापतिबैठा करताथा बै
ठनेकोकहा उसनेकहामैं क्योंकरवहां बैठसकताहूं जहांमेरापिता समानप्रिय भा
ईबैठा करताथा अलादीनकीमातानेउससे अधिकनकहा औरकहनेलगो जहांत
म्हारामनमानेबैठोबह उचितस्थानपरबैठगया औरउससे वार्ताकरनेलगाकि भा
भी तुमघबरातानहीं कितुमनेमुझे पहिलेनहीं देखाक्यों किमेरे चालीसबरष बी।
ते किमैंने इस नगरकोजहां उत्पन्नहुवाथा छोड़ाइस अवधिमें पहिलेमैं हिंदुस्तान।

मैं गया फिर पारस से मैं फिर मिसर में इन सब विशाल देशों को देखा फिर मैं अफरीका खंड के विचित्र
नगरों में गया वहां के वासियों को बुद्धिमान देखा वहीं निवास अंगीकार किया परंतु अपने न
गर को नहीं भूला और न अपने परिवार और इष्ट मित्रों को विशेष अपने भाई को नहीं भू
ला सदैव उनकी सुधि बनी रहती थी और यही कामना थी कि फिर जाके उनका दर्शन करूं
इस हेतु इतनी बड़ी यात्रा कर यहां आया परंतु उसके काल होने का सुन मुझे बड़ी व्यथा
हुई जिसका वर्णन नहीं कर सकता हूं खेद है कि मेरा इतना परिश्रम सब वृथा गया परंतु
किंचित अलादीन के देखने से थोड़ा धैर्य हुआ कि मेरा भतीजा है इसके स्वरूप में मेरे भाई के
चिन्ह दिखाई देते हैं इसीलिये मैंने एक ही बेर इसको देखने से पहिचान लिया उससे तू
ने सुना होगा कि मुझे कितना दुःख भया परंतु ईश्वर का धन्यवाद है कि उसके पुत्र को
देख मुझे थोड़ा धैर्य हुआ मानो मैंने उनके दर्शन किये जब उसने देखा कि बहुत शोक के
वार्ता करने से अलादीन की माता का मन भर आया और उसको सुधि कर रोने लगी त
ब उसने बहु बातें छोड़ दीं और कुछ कहने लगा और अलादीन की ओर मुख कर उ
सका नाम पूछा उसने बताय दिया फिर पूछा बेटा तुम कौन सा उद्योग करते हो तुमने
जीविका के लिये कौन सा उपाय सीखा है वह लज्जित होय कुछ उत्तर न दे सका और अप

३
सत्र
८८

88

पनाशिर निहुराय लिया उसकी माताने कहा यह महा आलसी है इसके पिताने अपने जीते जी ब
हुत कोशिश की कि इसे आपना काम सिखावे परंतु इसने कुछ न सीखा और अपना जन्म निप
ट खेल में खोया दिन भर लड़कों के साथ खेला करता है जैसा तुमने देखा अब उचित है कि
तुम इसे कुछ समझाओ और कहो इतनो कि सुमार्ग में लगे और खेल आदि परित्याग क
रे निस्संदेह तुम्हारे पोषक का कहना मानके सुमार्ग में लगे और अपने पेशे के सीखने
में मन लगाये क्योंकि वह भलीभांति जानता है कि इसका पिता कुछ धन अथवा वस्तु छो
ड़ कर नहीं मरा जिससे हम अपना यथोचित निर्वाह करते और यह भी देखता है कि मैं दिन
भर चरखा कातती हूं तथापि बड़ी कठिनता से भोजन मात्र प्राप्त होता है मैने कई बेर
खिसियानी होके चाहा कि इसे अपने घर से निकाल दूं कि वह क्षुधा से पीड़ित होय कोई
उद्योग करे परंतु पुत्र की पीड़ा से यह भी स्वीकार नहीं इतना कह वह स्त्री रुदन करने लगी
मायावी ने कहा का बेटा यह बातें सत्य हैं तुम अब समर्थ हो तुम्हें उचित है कि तुम कुछ
उद्योग करो यहां अनेक प्रकार के व्यवहार हैं यदि एक पर तुम्हारा मन न लगे तो दूसरा
स्वीकार करो यदि वह जिसे तुम्हारा पिता करता था पसंद नहीं और जो तुम उससे कोई
श्रेष्ठ काम की इच्छा करते हो तो मुझसे मत छिपाओ साहस कहो कि मैं उसमें तुम्हारी स

हायता कहंजब उसने देखाकि अलादीन कुछ उत्तर नहीं देता तो कहने लगा हे पुत्र यदि त
म चाहते हो कि अलादीन कुछ उत्तर नहीं देता तो कहने लगा हे पुत्र यदि तुम चाहते हो कि
अच्छा पेपणा सीखो वा यह इच्छा है कि उच्च पदवी और प्रतिष्ठित होतो में तुम्हें बजाज़ी की ह
कान करदूं जिसमें अनेक प्रकार के थान और भांति भांति का कपड़ा हो और तुम उसमें बै
ठकर कमाओ अपने मन की बात सब कसे कहो मैं तुमसे प्रतिज्ञा करता हूं जो ईश्वर चाहे तो
तुम्हारा मनोर्थ पूरा करूंगा अलादीन उसके यह बचन सुन अति प्रसन्न भया क्योंकि वह
जानता था कि वह व्योपारी जो ऐसी हकान करते हैं और कपड़े का लेन देन रखते हैं नि
श्चिन्ताई से अपना निर्वाह करते हैं अच्छे २ कपड़े पहिन और भांत भांति के पाक भोजन
करते हैं सो उसने उसे कहा यदि तुमने यह काम पसंद किया तो कल मैं तुमको सुंदर
वस्त्र पहिराय एक व्योपारी के निकट भेंट के लिये लिवाले जाऊंगा और एक हकान चौक
में तुम्हें किराये परले दूंगा अलादीन की माता कि उसे अब तक वास्तव में अपना देवर
न जानती थी उसकी अपने पुत्र पर यह दयालुता देख उसका गुणानुवाद करने लगी
और उसे धनवान समझ अलादीन का हाथ उसके हाथ में पकड़ाय कहने लगी जो इसके
वाले अच्छा हो सो करो इतना कह आप भोजन निकाला और उसके आगे परसदिया

१
सन्दे
८९

89

और नौकों ने तृप्त होय भोजन किया इसके अनंतर मायावी कहने लगा रात बहुत बीती मैं बिदा होता हूं यह कह वह चला गया दूसरे दिन वह फिर आया और अलादीन को उस व्योपारी की दूकान में जिसमें अनेक प्रकार के कपड़े के जोड़े सिये हुये रहते थे ले गया और अलादीन से कहा तू अपने चित के अनुसार जोड़ा पसंद कर कि मैं तुझे ले दूं अलादीन अपने अंकल की चचा की ऐसी उदारता देख प्रसन्न भया और जोड़ा पसंद किया उसने वह जोड़ा सामान सहित मोल ले के उसे दिया वह उसे पहिन शिर से पांव तक अपने को देख अत्यंत प्रसन्न भया फिर वह जादूगर उसे चौक में ले गया जहां बहुत से बड़े २ व्योपारियों की दूकानें थीं और उससे कहने लगा यदि तुम चाहते हो तुम भी इन व्योपारियों के सदृश होतो बहुधा यहां आया करो और इनकी रीति और व्यवहार देखा करो फिर उसे बड़ी प्रसिद्ध सराय में जहां विदेशी उतरा करते थे ले गया और वहां से बादशाही मकानों में ले गया और सब सो नगर में फिराय उस सराय में जहां वह आप रहता था गया वहां बहुत से व्योपारियों जिनसे वह जान पहिचान रखता था अपने भतीजे को मिलाया और सब भांति मिलके भोजन किया जब सायंकाल हुआ तो अलादीन ने अपने चचा से बिदा मांगी उसने उसे अकेला जाने न दिया और आप साथ होके उसे घर में पहुंचा आया उसकी माता ऐसे उत्तम वस्त्र उ

से पहिरेदेख अति प्रसन्न हुई और मायावीको हजारों आशीर्वाद देनेलगी और कहनेलगी
मैं तुम्हारी उदारताका गुणानुवाद नहीं करसकी मेरापुत्र इसकृपाके योग्यनथा वहतुम्हा
री सदासेवामें रहैगा जिस मार्गमें तुमलगाओगे चलेगा मायावीने कहा अलादीन बहुत अ
च्छालड़का है जो मैं कहूंगा वही करेगा अफसोस है कि कल शुक्रवार है सबदूकानें बंद
होंगी इसलिये कोई दूकान किराये न मिलसकेगी और कोई वस्तुमाल नहीं लेसका हू
कानदार सब सैरतमाशा देखनेजावेंगे जो ईश्वरचाहैतो यह सबकार्य परसों करूंगा क
ल मैं इसेबागोंकी सैरकोलेजाऊंगा उसने उनवायों और मार्गोंको अबतक नहीं देखा
अबतक बालकोंकेसाथ हथाखेलाकियाहै अबइसे उचितहै कि बुद्धिमानोंकी संग
ति में बैठाकरे यहकहकर विदाहुवा अलादीनने जबबागोंमें जानेकोसुनातो असं
तहर्षित हुवा क्योंकि उसबेचारेने केवल नगरके महल्लोंके द्वारहीदेखेथे और कदापि
नगरके बाहर औरग्रामोंमें न गयाथा निदान दूसरे दिन प्रभातको उठ अपनेवस्त्रपहि
ने और अपने चचाकीबाट देखताथा जब विलंबभया और वहन आयातो द्वारखोल
उसकी मार्गदेखने लगा इतने में क्यादेखता है कि वह चला आता है वह अपनी मातासे
विदाहो आया और द्वारमंद मायावीके निकटगया मायावीने उसबड़ी प्रीतिसेप्रकार

२
सत्
९

९०

कर कहा आजमैंकर २ उत्तम मकान और हरे २ दरख्त और दिव्यबाग दिखाताहूं जो तूने कभी न देखे होंगे पुनि वह उसे बहुत दूर लेगया जब अलादीन नये २ सुंदर २ मकान और बाग देखता तो प्रसन्न हो कहता चचा क्या भले २ विचित्र बाग हैं वे जाते २ नगरके बाहर निकल गये और थकित भये वह मह सुनके कि अपने कार्यके लिये आगे जानेकी इच्छा रखता था इस लिये एक निर्मल जलके कुंडके तटपर बैठगया और छल युक्त यह बचन अलादीनसे कहे हे मेरे प्यारे पुत्र तू मथकित भये और मैं भी थक गयाहूं आ बो तनक यहां बिश्राम करें फिर आगे चलेंगे यह कह उसने अपनी कमरसे एक रूमाल जिसमें भांति भांति के खाने पदार्थ और मिष्ट फल और कुछ रोटी बंधे थे निकाला उनमें से अर्धभाग उसे दिया और आधा आप लिया और कहने लगा फलजितने तुम चाहो अच्छे अच्छे चुनके खाओ भोजनांतरमें उसे उपदेश करतारहा कि हे पुत्र तुम बालोंकोंसे मत खेलाकरो चतुर मनुष्योंकी संगतिमें बैठउनके स्वभावोंपर ध्यान रक्खा करोजिससे तुम्हें लाभ प्राप्त हो और तुम समझदार और बुद्धिमान होजावोगे जब खाचुके तो वह उठ दम दिलासा देताहुवा अलादीनको बहुत दूर लेगया और नगर बहुत छूटगया पहाड़ दिखने लगे अलादीन कि कदापि इतनी दूर न चला था।

थकित भया ओर रोने लगा तब मकिननी हर जा ओगे हम बागोंसे बहुत दूर निकल आ
ये उसने कहा भतीजे तुम न घबड़ा मत डठ रहो मैं तुझे एक बाग दिखाऊंगा जिसके आ
गे यह सब तुच्छ हैं वह यहांसे बहुत दूर नहीं जब तुम उसे देखोगे आप ही दौड़के उसमें
जा ओगे निदान वह उसे फुसलाये उसके हाथ पकड़ खींचे लिये जाता था ओर उसके जी
बहलाने को मनोहर कथा भी कहता जाता था अंतको वह एक चोर बनमें जो दो पहा
ड़ोंके मध्यमें था पहुंचे यह सुखेव वही स्थान है जहां वह मायावी अलादीन को ले जाने की
इच्छा रखता था और जिसके हेत इतना परिश्रम कर अफरीका खंडसे वह आया था निदा
न वहां पहुंच उसने उससे कहा इसी ठौरपर वह बाग है जिसमें तुझे दिखाऊंगा तू उसे
देख प्रसन्न होगा मैं आग लेनेके लिये जाता हूं तू लकड़ी का इकट्ठा कर तबमें आग जलाऊं
गा अलादीनने वहीं किया ओर उसने आप आग जलाई ओर उस अग्निसे अपनी बनीज
लाई ओर थोड़ासा अतर ओर सुगंधित वस्तु उस बत्तीपर डाली इतनेमें एक बड़ा धुआं
कार धुआं उसमेंसे उठा उसने कुछ मंत्र पढ़ा इतनेमें धरतीकांपी ओर जिस स्थानपर व
ह खड़े थे एक चौकोण शिला अनुमान डेढ़ फुट गोलके प्रगट हुई जिसके बीचमें लोहेका
कड़ा उठानेको लगा हुआ था अलादीन उसे देख डरकर वहांसे भागा जादूगरने दौड़के

२
सद
४१
91

उसेपकड़ाऔरक्रोधितहोय बड़े वेगसेएकतमाचा उसके मुखमें मारा जिससे अलादीन बैठ
गया औरउसकेदांतोंसेरुधिरकी धारावही और कहने लगा चचामैंने तुम्हाराऐसा कौ
नसा अपराध कियाकि तुमने मुझे इस भांतिमारा उसने कहा मैं तुम्हारा चचाहूं तुम मु
झेपितासमान समझो मेरेमार औरक्रोध करने परबिलगमति मानो पुनिप्यार औरनम्र
तासे कहनेलगाहे पुत्रमैं तुमसे औरकुछनहींचाहता सिवाय इसके जोमें तुमसे कहूं
हूं उसेतुम कियाकरो मैंतुम्हें बड़ाआदमी बनाहूंगा निदान इसभांतिके बचनकह उस
का भयहरकिया जबदेखाकि अलादीन अबराहपर आयातो कहनेलगा तुमनेदेखा
मेरे पढ़नेसे पृथवीहिली औरयहशिलानिकल आई अबतूनिश्चय मानइसशिलाके
नीचे एकगोप्यवस्तु मुखतेरेही लिये धरीहै वहएकदिन तुझे महाधनवान करदे
गी औरसंसारमें सिवाय तेरेकोईदूसरानहीं कि इसकोहाथलगासके अबतू इस
शिलाकोउठा औरउसके भीतरजामैं भीइसके भीतर नहीं जासक्ता सिवातेरे औरकि
सीका कामनहीं कि इसद्रव्यको जाके लेवे अबजोमैं कहूं वहीकीजियो उसके भी
तरजाने औरलौटनेमें कुछदेरनलगेगी इसकार्यको सिवातेरे औरमेरे दूसरा को
ईनहीं करसक्ता अलादीन नेलाचारहो अंगीकारकिया और कहनेलगा चचामैंतय्यार

रहूं जो आज्ञा तुम आज्ञा देोगे मैं तुरंत पालन करूंगा मायावी यह वचन सुन उस पर प्रसन्न हुवा और उससे अपने कंठ से लगाय कहने लगा यही बात चाहिये मेरे निकट आ जब व ह उसके पास गया मायावी ने उसे एक छल्ला देकर कहा कि इसे अपनी उंगली में पहि न इस शिला को उठा उसने कहा है चचा मैं अकेला इस भारी शिला को न उठा सकूंगा तु मभी हाथ लगाओ और बल करो जादूगर कहने लगा मेरी सहायता की तुझे आवश्य कता नहीं जो होता तो तेरे कहने बिना मैं करता तुम अपने बाप का नाम लेके तिनुके की भांति सरकाओ उसने लोहे का छल्ला अपनी उंगली में पहिन उस शिला को अति सुगमता से सरकाया उसके नीचे तीन चार पग का गहरा गढ़ा उसे दृष्टि पड़ा जि सके भीतर एक ओर को छोटा सा दरवाजा लगा हुवा था और उसकि बाड़ के बाई ओ र सीढ़ी लगी थी जिससे मनुष्य नीचे उतर जा सकता था मायावी ने उससे कहा है मेरे प्रि य पुत्र तुम मेरे इन बातों को भली भांति स्थिर रखना चेत न रहो उन्हें विस्मर्ण न करना। अब तू इस गढ़े में उतर कर एक द्वार को पावेगा उसके साम्ह एक सीढ़ी लगी है तब वहां एक अतिविचित्र सुन्दर मकान पावेगा जिसमें तीन बराबर दालान हैं उनके मध्य में तांबे के अति स्वच्छ विशाल पात्र सोने रुपे के भरे हुये रक्खे हैं परंतु तू उन्हें न

छूनाजब तुम पहिले दालानमें जाओगे तो तुम अपना वस्त्र कमरसे भलीभांति कसके बांध
नाफिर तुम दूसरे दालानमें चलेजाना और इसीविधि तीसरे में और उस मकान की दी
वारको कदाचित स्पर्श न करना यदि तुम्हारा वस्त्र उसे छू जावेगा तो तत्काल भस्म हो
जावेगा इसलिये तुम्हें कहे रखता हूं कि वस्त्र अपने हठकरके कमरसे बांधलेना फि
र तीसरे दालानमें एक द्वार तुम्हें और मिलेगा जब उसमें से होके भीतर जाओगे तो ए
कबाग देखोगे जिसमें अतिसुंदर अनेकप्रकारके फलितवृक्ष देखोगे तुम सत्पथ आगे
को उसमार्गसे जो तुम्हें मिलेगा चलेजाना निदान एक मज्वपर जिसमें पचास थापकी सी
ढीहै मिलेगी उसके ऊपर एक छत है जबतुम उसपर चढ़जाओगे तो वहां एकताक है
जिसमें एक दीपक जलता हुआ रक्खा है तुम उसे वहांसे उठाकर बुझायदेना तेल औ
र बत्ती उसकी फेंक उसे अपने दामनमें रखलेना और मेरे समीप चले आना तुम्हारा व
स्त्र चिकना नहीं होगा उसमें तेल नहीं जबतुम उसताकसे उठालोगे तो वह तुरंत सू
खजावेगा यदि तुम्हारा मनचाहे तो उनवृक्षोंके फल जितने लेसको लेलीजियो निदा
न जब उसने सब यह किया उसे भलीभांति सिखाई और विधि समझाई तो उस माया
वीने उसलोहके छल्हेको जो लेलिया था फिर उसे पहिनायदिया और कहने लगा ६

सके कारणतुम अति दुखसे कितमपर पड़ेबचे रहोगे यह बातेंजो तुमसेकहीभलीभां
ति स्मरणरखियोअरुलियो नंहीं अबहे मेरेप्रियपुत्र तुमइसगढ़ेमें कूदो जिससे हमतुम
दोनों धनपात्र होजावें और जन्मभरराज्यभोगें अलादीन अतिसाहसकर उस गढ़ेमें कू
दपड़ा औरसीढ़ीसे उतरआगेको जिसमें तीनदालानथे गया और उतरतारहा ऐसानहो
कि उसकावस्त्र उसगृहकी दीवारोंसे लगजावे जबबागके भीतरपहुंचा तो सीढ़ीकेद्वा
रा छतपर चढ़गया औरदीपकके जोप्रज्वलितथा उठायअपने दामनमें रखलियाफिर
उस छतसेउतरबागमें आया औरमार्गमें जितने उस अच्छेफलमिले चुनलिये बहांके
वृक्ष अति विचित्र अनेक रंगोंफलों सेप्रफुल्लितथे कईतोफलश्वेत औरप्रकाशयुतवि
लौरके सदृशथे औरकोई कोईहरे और ऊदे औरपीले निदान अतिअद्भुत उनकारंग
के जोश्वेतथेवह हीरे औरलालथेवह जोहरे सोज़मुर्रद औरजो अन्यरंगथे बहुमूल
रत्नकिंतु रत्नोंसेभी अधिक सुंदरथे अलादीनतो उनरत्नोंकेगुणनजानता औरनउन।
कामोलजानता सोउनफलोंको अंगूर और अंगीरके सदृश जैसेउसने नगरमें बिकतेहुये
देखेथे समझ उनकेलेनेमें अधिकलोभनकिया उतनेही रत्नलिये जितनेउसकोजेब
और आस्तीनमेंसमाये औरजेबोंको अपनीकमर सेबांधलिया और आस्तीनें मुखपरसे

३
सत्
९२

93

बांधंदीकि कोईफल उनमेंसेन गिरपडे औरकुछ अपने गिरेवान औरकमरमें जहां जितनीजग
ह्थीरखलियेफिरनीतोव्हालानोंसेहोताहुआ उसी गठे में आय पहुंचा क्योंकि जानताथाकि
चचा मेरेआगमनकी बाट देखताहोगा सोवहां पहुंचकरहाकदी कि चचामें आयाहूं हाथप
कड़ मुझेऊपरखींचलो उसनेकहाबहुत अच्छामैं तुझे निकाललेताहूं परन्तु प्रथम तुमु
झे दीपकदे अलादीनने कहा इससमय मैं दीपकनहीं निकालसक्ता बाहर आकरनिका
लदूंगा वास्तवमें दीपक निकाल देने मेंकठिनताथी क्योंकि पहिले उसनेदीपकको अ
पनीछातीमें रक्खाथा फिरबहुतसे फलवहीं रखके उसपरऔरसे वस्त्रबांधाथा कि
किसी औरसेकुछनगिरे औरसीढ़ियोंके उतरने औरफलोंके बोझसे थककरहांफताथा
उस समययहीचाहताथा कितुरतबाहरे निकले औरशीतल वायुके लगनेसे ठंढा
हो औरमायावीयह चाहताथा किपहिले दीपकउससे लेलूंफिरउसे गठेसे निका
लूं निदान इसीतकरारमें जादूगरऐसाक्रोधितभयाकिथोड़ी सी सुगंधित वस्तुलेकेउ
सी जलती आगमेंडालदी औरनिर्दयता से मंत्रपढ़ सेनकीकि वह शिला उठउसी गठे य
हगरवास्तव मेंसुलफा स्वीकारकाभाईनथा औरनवह अलादीनकाचचा वह अफरी

काफ़्रिका निवासी और वही उसकी जन्मभूमि थी उस नगर में जादू की विद्या बहुत थी वह वाली सब वर्ष जादू पढ़ता रहा इसके विशेष ज्योतिषादिक विद्या में अद्वितीय और बहुत सी पुस्तकें मलकी उसने पढ़ी अन्त को उसे विदित हुवा कि जगत में किसी स्थान पर एक विचित्र दीपक है जिस मनुष्य के हाथ वह दीपक लगे कई वीर उसके आधीन रहें और ज्योतिष विद्या से उसे यह मालूम हुवा कि वह दीपक चीन देश में अमुक स्थान पर है इस बात पर निश्चय कर अफरीका से चीन में उसे लेने आया नहीं ले सक्का इसलिये उसे दूसरे मनुष्य की आवश्यकता हुई कि उसे निकाल देवे तो उसने अलादीन को भी लालच या देख भतीजा बनाया और जाना कि इसी के हाथ से मेरा मनोरथ सिद्ध होगा और उसकी यह इच्छा थी जब वह दीपक उसके हाथ लगे तो इस भेद के न खुलने के लिये उसी दिन अलादीन को मन्त्र से मार डाले नि दान जब उसका अर्थ सिद्ध न भया पकड़े जाने के भय से उसी दिन अफरीका को भाग गया पे सो चिन्ता में उस भूलेका लेना भी भूल गया परन्तु अलादीन ईश्वर की इच्छा से इसी वास्ते के द्वारा बचा परन्तु वह मायावी उस दीपक के पाने से निराश भया इस विषय में यह हो। निराश न हुवा किन्तु बहुत मयेस ऊकम्मी निराश हो जाते हैं अलादीन तो इससे अपकार की

आशानरखताथा आश्चर्यमेंभया औरजब उसनेजोतेजी अपनेकोकबरःमेंदेखातो हजारोंबे
र अपने चचासे चिल्लाकरकहनेलगाकि अपनादीपक मुझसेलो औरमुझेयहांसे निका
लोपरंतु यहसब कहना इसकाव्यर्थथा इसकाउत्तर उसने कुछ नदिया और अपनेको अंधि
यारेमेंदेख घबराकर रुदनकरनेलगा औरसीढ़ीमेंनीचे उतरनेलगा परंतु सब चरित्रमा
याकेजोबागइत्यादिथे सबगुप्तहोगये जबकेवल अंधियाराही देखातो कईबेरदहिनो
औरसवांई आगया: औरइधरसे उधरपर किसीतरफसेराहनपाई औरनकुछ उजिया
लादेखा इससे अतिदुखितहोकररुदन करनेलगा औरनिपट निराशाहोय उसकालको
ठरीके एकअच्छीठौरपरबैठगया औरउसे निश्चयहुवा किइसस्थानसेकभीननिकलूंगा
इसीस्थानपरसबके भूखसे आईहै दोदिनतक वहइसीगढ़ेमेंरहा तीसरेदिन मरना अ
पना अवश्यजान दोनोहाथ उठायईश्वर सेप्राथना करनेलगा दैवयोगसे जबदोनोहा
थउसके परस्परमिलेतोवह छल्लाभी पत्थरसेरगड़ागया ज्योंही रगड़ात्योंही महा वि
करालस्वरूपवीर धरतीसेनिकलप्रकटभया ऊंचा इतनाथाकि शिरउसकाआकाशमे
जालगा उसनेबड़ेशब्दसेकहा तुमुझसेक्याइच्छारखताहै मैंतेरा आज्ञापालकदासब
नाहूं औरमैं उसका आधीनहूं जिसकेहाथमें मैं यहछल्लाहै मैं औरहमराबीरभी

इसी प्रकार उस गुफा से बाहर नहीं जो यह कहा पहिले है उसने किये मा विकराल स्वरू
प कभी न देखा था उस वीर के प्रगट होने से भयमान हुवा और कुछ बात उसने कर सका नि
दान जब कुछ सावधान हुवा तो उसे कहने लगा यदि तुझे सामर्थ है तो तू मुझे इस स्थान
से बाहर निकाल इतना कहते ही उस बीर ने उसे बाहर निकाल खड़ा किया जब वह अ
पने को बाहर देख अचंभित भया सो वा कि कैसा करके गुफा से बाहर निकल आया कि उस गु
फा का कुछ चिन्ह भी दृष्टि नहीं पड़ा फिर नगर को और देखा कि उसके बड़े और बाग हैं औ
र जिस मार्ग से आया था उसे पहिचाना और उसी को पकड़ ईश्वर का धन्यवाद किया फिर उ
जियाला देखा निदान अशक्तता के कारण बड़ी कठिनता से घर पहुँचा जब उसने अप
ना पांव अपने घर के द्वार के भीतर रक्खा तो माता को देख हर्षित हुवा परंतु तीन दिन कु
छ खाया पिया न था अति निर्बलता से मूर्छित होगया उसकी माता ने कितने दिन तक
उसे नहीं देखा था और यह समझती थी कि वह मर गया वा कहीं गुम होगया रोती
थी उसकी यह दशा देखते नमन से उसे सचेत करने लगी जब उसने होश सम्हाला तो पहिले
उसने अपनी माता से यह बात कही कि कुछ भोजन लो तीन दिन से मैंने कुछ नहीं खाया
भोजन पहिले से पका हुवा था उसकी माता ने आगे रख के कहा हे पुत्र भोजन में उतावली

नकरना बहुतखाने सेमरनेकाभयहै थोड़ाखोकेचुपकेहोके सोरहु फिरमुझसे बात
कीजियो अलादीनने वही किया और थोड़ाही खाना खाया और थोड़ाही जलपिया औ
र कहनेलगा उसदुष्टने जोमेरेसाथ अपकार किया उसका वर्णन अतिविस्तृतहै वह।
अपनेविचारसेमुझे यमकोसौंपगया यहवही मनुष्यहै जिसे तुममेराचचा जानतीथी
और मैंभी नियत उसके छलमें आगयाथा परंतु तुमनिश्चयमानो वहबड़ानिर्दयीथा।
यह सबप्रीति जोउसने मेरेसाथकी सबछलनाथी केवल उसकोयह कांक्षाथी कि।
अपने किसीप्रयोजनकेलिये मुझेवधकरे पुनि अलादीनने किंचित् अपनेमें सामर्थ्य
पा अपनासंपूर्णवृत्तांत अपनीमातासेविस्तारपूर्वक कहसुनाया औरवहफलउसे दिये
उसकीमाताकि उसकेरत्न और मोलको नजानतीथी सो इसवहलेके पत्नीपर रख
दिये परंतु अंधियारेमें उनकाप्रकाशसूर्यवत् दीखता उसेज्ञानहुवाकि यहवस्तुदेख
नेमें अच्छीहै जब अलादीनने संपूर्णवृत्तांतकहसुनायातोउसने उसदुष्ट मायावीको
बहुतसेदुर्वाच्यकहे और ईश्वर कायमवाद कियाकि मुझरांडकोबालककोउससेछु
ड़ाया जोवह तीनदिन तक नसोयाथा इसलियेवहांसे उठदूसरीजगहपरसोरहा अ
लादीनभीउसीरात्रिकोभलीभांति सोरहाप्रभातको अपनेकोक्षुधासे महाविकलपा

पाकर अपनी मातासे कहा मैं इस समय बहुत भूखा हूं कुछ मुझे भोजन दो उसकी माताकि
अति निर्धन थी कहने लगी बेटा इस समय पर तो मेरे पास रोटी का टुकड़ा भी नहीं हो जो तुझे खा
नेको दूं यह दिन तक संतोष रक्खो तो थोड़ासा सूत जिसे मैं ने काता है बाज़ार मे ले जाय बेच
और कुछ भोजन मोल लाऊं उसने कहा सूतको तुम और दिन बेचना आज तुम उस दीप
कको जिसे मैं लाया हूं ले जाके बेचो और खाने को वस्तु मोल लाओ किसान दिन कटे वह उ
ठकर वही दीपक लाई और उसे देखकर कहने लगी बेटा यह दीपक मैला हो रहा है यदि
इसे साफ कर देवेगी तो कुछ अधिक मिलेगा इसके अनन्तर वह थोड़ासा जल और रेत ले
कर उसे ज़ोर से मलने लगी उसके मलते ही एक विकराल उग्र और बड़े वेग से धरती को फा
ड़ निकला और बड़े नाद से मानो बादल गरजता है कहने लगा क्या इच्छा रखती है मैं उ
सका अर्थ के करने में दास बना उन मनुष्यों का हूं जिनके हाथ में यह दीपक है और मुझ से
आदि ले सब और भी इस दीपक के आधीन हैं वह तो उसका खन्नपदेखने ही मूर्छा खाय
गिर अलादीन कि गंठ में वह स्वरूप देख चुका था इतना न डरा कि अचेत हो जाता किंतु उ
सने झपटके एक हाथ से माता को संभाला और एक हाथ से दीपक पकड़ बारके पास जा
कर अपनी माता के बदले उत्तर दिया मैं भूखा हूं कुछ भोजन लाव यह वचन सुनते ही

२
सत
९९

96

शुभ्र होगया एक दासीके बड़ाभारी रत्नहलीपात्र अपने शिरपर रक्खे प्रगटहुवा जिस
में अति स्वादिष्टपाकोंकी ब्यारह रूपहलीरिकाबियां रक्खी हुईं और दोशीशे स्वच्छमद्यके
और दोरूपेके गिलासदोनों हाथोंमें लिये आया और सब पात्रोंको दालानमें रखशुभ्र होग
या अलादीनने अपनीमाताकोजो मूर्छितथी जलछिड़का जिससे वह चैतन्य हुई औ
र उससे कहनेलगा अबमतिडर उठबैठ और आकरभोजनकर बिलम्बमतिकर नहीं तोभो
जनठंढाहोजावैगा वह यह उत्तम २ नानाव्यंजनदेख आश्चर्य्यमें हुई और मनमें शोचने ल
गी यह कहांसेआया कदाचित् यहांके बादशाहने हमारी आपदाकाहाल सुनकर भेजा
है अलादीननेकहा अबआकेभोजनकरो मैं इसकासमाचार तुमसे वर्णनकरूंगा फिर वा
ह रुचिसेखानेलगे भोजनांतरमें उसकी माता वह रत्नहलीरूपहलीपात्र देखविस्मित
होपूछनेलगी यहभाजनकिसवस्तुकेबने हैं मैंनेऐसे सुंदरभाजनचमकदार कदाचित्
नहींदेखे जबवह तृप्त भयेतो शेषभोजन रखछोड़ा और तीनदिनतक उसेखाया कि ये
और अलादीननेसंपूर्णहत्तांत बीरके भोजनदेजाने का उससे कह सुनाया उसने सुनअचंभा
माना और कहनेलगी मुझे निश्चय नहीं क्योंकि मैंने कदापि बीर नहीं देखा और न कभी
अपनीजानपहिचानवालोंसे सुना कि ऐसी दीपकके कारण जिसको तुम अपने साथ लाये

होवइडइसप्रकार भयाथाइसको मेरीदृष्टिसेदूरकरो तुमइसे किसीदूसरीजगहछिपाइरक्खो
कि मेराहाथ उसपरकदापिनलगेकिंतु उनमेंहै कितुमइसेफेंकदोवाकिसीकेहाथइसेबे
चडालोकि किसीकेस्पर्शसेऐसाविकराल रूपनदेखूं औरइसछल्लेकोभी उंगलीसेनिका
लफेंकदो हमको वीरोंका आवाहन कुछ अवश्यनहींहै उसनेकहा इसदीपककोक्यों
वेचें इसमेंतोहमकोइस आपदामेंबहुत २ लाभहुये और आगेको इससे अधिकलाभकी
आशाहै तुमभलीभांति सोचोकि इसीकेवास्ते मेरे अनुकर्णा चचाने इतनीदूरकासफरउठा
यायहबहुत अच्छीवस्तुहै उसकासबश्रम इसीकेवास्तेथा किउसेयह विचित्रदीपक
मिलेऔरवहभलीभांति इसदीपक केगुणकोजानताथा औरउसने इसदीपक की अपे
क्षा रत्नादिककोतुच्छसमझा परंतुउसईश्वरनेमेरीदीनतापरदयालुहोकर उसकाभाग्य
औरयतन मुझेकृपाकिया मुझे इसदीपककेलाभ उठानेदेइसबातकोगुप्तरखनाकिकोईनजा
ने औरपड़ोसीजाह औरविरोधनकरें परंतुमैं इसेतुमसे छिपाकेऐसेस्थानपररक्खूंगाकि
आवश्यकतापर उसेपाऊं परंतुइसछल्लेको अलगनहींकरसकताक्योंकि मैं इसीसे जीताब
चा नहींतोमैं कबका उसी गढ़ेमेंमरगयाहोता अबतुमकेआज्ञादेतो इसे उंगली मेंहीपहि
नेरहूं कौनजानताहै कि किस समयपर अकस्मात आपदापड़े तोमें इसकेद्वाराबचसकाहूं

३
सत्र
५०

67

उसके माता यह बातें सुन चुप होरही। फिर कहने लगी जो उचित जानो सो करो। परंतु मुझे बी।
तीसे कुछ प्रयोजन नहीं दो दिन तक वही भोजन उन्होंने भली भांति तृप्त होय खाया जब ती
सरे दिन कुछ न रहा तो प्रातःकाल अलादीन को व्यथा लगी वह एक रुपहली बीरकाला।
या ऊबा पात्र अपने वस्त्र में छिपा बाज़ार की ओर बेचने गया संयोगवश एक यहूदी से जो सो
ने चांदी के पात्रों का व्यवहार किया करता था भेंट भई अलादीन ने उसे एकांत में ले जाय वह भा
जन दिखाया और कहने लगा तुम इसे मोल लोगे वह यहूदी जो कि अति बुद्धिमान और ध
र्त था इसलिये के परखा उसको चांदी बहुत उत्तम पाकर कहने लगा इसका मोल क्या चाहते हो
अलादीन जी खोटी खरी चांदी का हाल न जानता था और कभी चांदी के लेन देन का का।
म न पड़ा था कहने लगा जो कुछ तुम दोगे सो ले लूंगा क्योंकि तुम इसका मोल जानते हो मु
झे तुम पर विश्वास है उसने एक अशरफी निकाल उसे दी यद्यपि वह रिकाबी अशरफी अ
से सैकड़ों दिरहम मोल में अधिक थी परंतु अलादीन ने उसे प्रसन्न होके ले लिया और वह म।
ने इतना लाभ उठाकभी पछताया कि क्यों मैंने उसे कम न दिया यह विचार अलादीन के पी
छे दौड़ा कि कुछ अशरफी में से फेर ले परंतु अलादीन दूर निकल गया था मार्ग में अलादीन
ने अशरफी तुड़ाकर भोजन मोल लिया और घर में पहुंच जो अशरफी में से शेष बचा था अपनी

माताको दिया कि बाजार में जाके कोई दिन के लिये अंन मोल लावे इसी भांति कई दिन उन्हों
ने कालक्षेप किया जब वह भी हो चुका तो अलादीन ने दूसरा पात्र उसी यहूदी के हाथ बेचा
और यहूदी ने वही मोल जो पहिले दिया था प्रति भाजन का दिया इस भय से कि अलादीन
भड़कके फिर उसके हाथ न बेचे एक अशरफी से कम हर एक भाजन को मोल न किया
निदान जब अलादीन बारह भाजन बेचके खर्च कर चुका तो उसने सब नहली बड़ा पात्र जि
स में वह बारह भाजन रक्खे थे जाय दिखाया उसने उसे तोल दश अशरफियां उसके
हाथ में रक्खीं अलादीन ने प्रसन्न होय ले ली और स्वच्छन्द कारन की आगे तो अलादीन
बालकों के साथ खेलता था परन्तु इस मायावी के हाथ से दुःख के देने के कारण बहुधा
बाजार में जाता और बुद्धिमानों से वार्ता करता और बहुधा बड़े २ व्योपारियों की दूकान
के पास जाय खड़ा होता कि अनेक प्रकार के व्यवहार के व्यवहार की वार्ता उनकी सुने
थोड़े दिनों में अच्छा संसारिक व्यवहार को जान गया जब वह सब अशरफियां ए
खर्च कर चुका तो उसी दीपक को उठा लाया और उसी स्थान पर जहां उसकी माता ने उसे
मला था रेत लेके पोंछ से मलने लगा इतने में वीर प्रकट हुवा और नम्रता पूर्वक कहने
लगा तू क्या चाहता है मैं और दूसरे वीर उसके आधीन हैं जिसके हाथ में यह दीपक है

२
सत्रे
५८

98

अलादीनने कहा मैं भूखा हूं कुछ भोजन मेरे लिये ला वह यह सुन गुम होगया फिर एक द
म में ऐसा कि पहिले लाया था उसी तरह से एक खोन्चा खाने का ले आया और अलादीन
के सामने रख कर गुम होगया उस समय उसकी माता कहीं होगई हुई थी जब घर आई और भो
जन देखा तो जाना कि यह मोहरे के बदल इसी दीपक के द्वारा आया फिर दोनों ने बैठ के तृप्त हो
कर भोजन किया और खाना को दो दिन तक खर्च किया जब तृप्त खाये से उनके पास न रहा तो
चांदी के पात्र लेके उसी यहूदी के पास बेचने गया मार्ग में वह एक भले मानस सुनार की दु
कान से होकर निकला सुनार ने उसे अपनी दुकान पर बुलाकर कहा है पुत्र मैं ने तुझे बहु
धा कुछ वस्तु अमुक यहूदी के पास लेजाते देखा है और उधर से खाली हाथ आते पाया अ
जभी कुछ लिये हुये उधर को जाते हो जान पड़ता है कि तुम कुछ बेचने को उसके पास जा
ते हो परंतु तुम्हें मालूम नहीं कि वह यहूदी महा छली और अधर्मी है जिसने उसके सा
थ व्योहार किया वह उसकी छलनता को भलीभांति जानता गया मेरा प्रयोजन यह है
यदि तुम कोई वस्तु बेचने को लेजाते हो तो मुझे दिखा औ मैं उसका ठीक मोल दू
गा और जो मैं उसे न ले सकूंगा तो मैं और व्योपारी के पास लेजाऊंगा जो तुम से छल न
करेगा उसने यह वचन सुन वह दो पात्र वस्त्र से निकाल उसे दिखाया उसने उसे परख कर क

हाकि इसकी चांदी बहुत चोखी है फिर कहने लगा इस प्रकार का तूने कोई और पात्र यहूदी
के हाथ बेचा है उसने उसका तुके वा मोल दिया है उसने कहा बारह भाजन इसी प्रकार के
उस यहूदी के हाथ बेचे हैं उसने प्रति पात्र पर मुझे एक अशरफी दी है सुनार ने कहा बड़ा
अनर्थ हुवा उस दुष्ट ने तेरे साथ ऐसा छल किया जिसका कुछ वर्णन नहीं हो सकता फिर
पात्र को तोल कहने लगा ठीक मोल इसका बहत्तर अशरफी है और सैंतालीस अशरफियां
निकाल दीं और कहने लगा भाई जो तुम्हें संदेह हो तो तुम दूसरे सुनार के पास ले जाओ औ
र उसे दिखाओ जो वह इसका मोल अधिक दे तो मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि उसका द्विगुण तु
म्हें दूंगा परंतु यह बात यहूदी से न कहना अलादीन उसका गुण मान कर घर में आया औ
र फिर कभी और पात्रों को और किसी के पास बेचने न ले गया और सब पात्र उसी सुनार के
पास बेचे इसी प्रकार बहुत काल पर्यंत अपना निर्वाह करते रहे यद्यपि वह दोनों चाहते तो
उसी दीपक के कारण उन्हें अंसख्येय धन प्राप्त होता परंतु कई वर्ष तक वही पात्र बेच कालक्षे
प करते रहे और उसकी माता बराबर चरखा कातती रही इस समयांतर में अलादीन बहु
धा चौक के बज़ाज़ और सर्राफ़े में जाकर घूमता विशेष रत्नपारिखियों की दुकान पर बैठक
र हर एक प्रकार के जवाहिरों को देखता और उनका व्यवहार देखता और उन जवाहिरों को।

सत्र
५५

देखना और उनका व्यवहार देखना और उन जवाहिरों को अपने रत्नों की अपेक्षा जिनको अज्ञा
नता में शीशे के रङ्ग बिरंगे टुकड़े जानता था चमक दमक में कहीं कम पाता था धीरे २ वह जानने
लगा कि वह पोथे के टुकड़े नहीं किन्तु वह अति उत्तम रत्न हैं परन्तु यह बात अपने ही मन
में रक्खी अपनी माता से भी न कही एक दिन वह नगर में सैर करता था अकस्मात् डौंड़ी का
शब्द सुना कि आज कोई अपनी दुकान न खोले न अपने घर से बाहर निकले क्योंकि बदरुल
दौर शाहज़ादी स्नान करने को हम्माम में जावेगी और नहाकर अपने महल में आवेगी इस
कालान्तर में कदाचित् कोई मनुष्य बाज़ार वा गली में न निकले यह सुनकर उसे यह लालसा
उठी कि किसी उपाय से उस सुंदरी का मुख खुला हुवा देखिये इस हेतु उसने एक ठौर ह
म्माम के पास ढूंढ़ रक्खा कि उसके दरवाजे की दरारों में बैठकर शाहज़ादी के रूप को
देखे और यह पहिले से उस घर में जाय बैठ रहा क्षणभर पीछे वह भी पहुंची और हम्माम के
निकट अपनी बांदियों और खोजियों में अपने कोमल चन्द्रमुख से वस्त्र उतारा अला
दीन ने कि तब तक सिवाय अपनी वृद्ध कुरूप माता के कोई सुंदर स्त्री न देखी थी और यह
ही जानता था कि सब स्त्रियां उसकी माता के सदृश होंगी परन्तु जब इसे देखा तो समझा
कि ईश्वर ने ऐसे स्वरूप भी उत्पन्न किये हैं निदान उस रूप छबि अनूप मनहरण को दे

देखना और उनका व्यवहार देखना और उन जवाहिरोंको अपने रत्नोंकी अपेक्षा जिनको। अज्ञानता में शीशे के टुकड़े बेरंगे टुकड़े जानता था चमकदमकमें कहींकमपाताथा रे २ वह जानने लगा कि वह शीशे के टुकड़े नहीं किंतु वह अति उत्तम रत्न हैं परंतु यह बात अपने ही मनमें रक्खी अपनी माता से भी न कही एकदिन वह नगरमें सैर करताथा अकस्मात् डौंडी का शब्द सुना कि आज कोई अपनी दुकान न खोलें न अपने घरसे बाहर निकलें क्योंकि बदर बादौर शाहजादी स्नान करने को हम्मानमें जावेगी और नहाकर अपने महलमें आवेगी इसकालांतरमें कदाचित् कोई मनुष्य बाजार बागलीमें न निकले यह सुनकर उसे यह लालसा हुई कि किसी उपायसे उस सुंदरीका मुख खुला हुआ देखे इस हेतु उसने एक शहरहम्मामके पास ढूंढ रक्खा कि उसके दरवाजेकी दरारोंमें बैठकर शाहजादीके रूपको देखे और पहिलेसे उस घरमें जाय बैठ रहा क्षणभर पीछे वह भी पहुंची और हम्मामके निकट अपनी बांदियों और खोजियोंमें अपने। कोमल चंद्रमुखसे बस्त्र उतारा अलादीनने कि अब तक सिवाय अपनी ही माँ के रूपमाताके कोई सुंदर स्त्री न देखी थी और यही जानता था कि सब स्त्रियां उसकी माताके सदृश होंगी परंतु जब इसे देखा तो समझा कि ईश्वरने ऐसे स्वरूपभी उत्पन्न किये हैं, ने

३
सन्द
१०
140

निदान उस अनूप छबि अनूप मनहरण को देखते ही मोह का बाण उसके हृदय से पार हो
गया और मूर्छा खाय गिर पड़ा जब सचेत भया और जाना कि वह सुंदरी हम्माम में गई
तो मन में कहने लगा अब इस स्थान पर ठहरना उचित नहीं क्योंकि अब वह हम्माम से मु
खदीप निकलेगी तो उस समय इसका देखना वा न देखना बराबर है यह शोच शुभ मा
र्ग से अपने घर पहुंचा और मोह की व्यथा अपनी माता से छुपा न सका उसकी माता उ
सकी इस दशा देख अति बिकल हुई और उसे रोते पीटते देख अचंभा कर पूछने लगी हे
पुत्र तुझे क्या दुख हुआ जो तू रोता है तू कुछ भी मारतो नहीं होगया उसने कुछ उत्तर न दि
या बहु काल पर्यंत अपनी प्यारी की सुधि में चुपका बैठ रहा माता उसकी रसोई प
काने में लगी थी इसलिये फिर उससे न पूछा जब उसने भोजन पकाय थालियों में प
रस उसे बुलाया तो वह माता के कहने से थोड़ा सा खाके फिर चुप हो रहा उसकी माता ने भो
जनोतर में उससे उसकी बिकलता का हाल पूछा पर वह कुछ न बोला जब भोजन क
र चुका तो फिर उससे पूछा परंतु वह न बोला रात्रिभर उसी सुंदरी की सुधि में तड़फता
रहा दूसरे दिन भोर को अपनी माता के पास जो चरखा कातती रही थी बैठकर कहने
लगा हे माता अब मैं अपनी व्यथा तुमसे कहता हूं मुझे कोई बीमारी नहीं जैसा कि तुम

ने विचार किया है कल जो यहां के बादशाह की पुत्री हम्माम में गई तो मुझे उसके दे
खने की लालसा हुई सो मैं एक घर में जाय छिपा जब वह चंद्रवदनी आई और अपने मु
ख से वस्त्र उठाया तो उसके रूप छबि अनूप मन हरण को उसी घर की दरार से देखने से
मोहित होगया मेरी बिकलता का यही कारण है इस बीमारी का यत्न सिवाय इस
के और कुछ नहीं कि बादशाह के पास जाकर उसके पुत्री को मांग उसकी माता यह ब
चन सुन हंस कर कहने लगी बेटा चुप रह ऐसी बात मुख से मत निकाल तेरे इस कहने
से मालूम हुआ कि तेरी बुद्धि भ्रष्ट होगई है अलादीन ने उत्तर दिया मैं तो सावधान हूं मैं
तो पहिले से ही जानता था कि तुम मुझे अवश्य बुद्धिहीन समझोगी पर मैं अवश्य बा
दशाह की कन्या लूंगा उसने कहा है बेटा क्या तू अपने को भूल गया तू गरीब दस्तकार
का पुत्र है जो एक तुच्छ इस बादशाह का प्रजा है क्या तू शाही रीतों को नहीं जानता कि
वह अपने संतान का विवाह अपने बराबर वालों के सिवा दूसरे से नहीं करते जो व
ह ऐसा न करें तो उनकी नाम धराई हो और सल्तनत में बिघ्न हो अलादीन ने कहा है माता
जो तुम यह कहती हो सो सत्य है परंतु मैं बादशाह ही से इस बात के कहने के बिना न रहूं
गा तुम्ही मेरी ओर से जाकर बादशाह से कहो जो तुम इस कार्य्य में परिश्रम न करोगी तो मैं

सत्र ११

101

देहत्याग हूंगा अब तुम्हारे हाथ मेरे प्राण हैं मैं तो अपनी प्राणप्रिया के वियोग में मर जाऊंगा उस
की माता यह सुन अति चिंतित हुई और कहने लगी है पुत्र ऐसे बड़े कार्य्य करना चाहिये और वह
बात मुख से निकालनी चाहिये जिससे लज्जा को न प्राप्त हो कहां राजा भोज कहां गंगा तेली
कहां गरीब और कहां शाहजादी जो तेरे जान की कमाई होती तो निःसंदेह मैं जाती अपनी
और देख हम ऐसे अयोग्य बादशाह को कन्या के वास्ते कह सकते हैं मुझे इतना साहस कहां कि
बादशाही के सन्मुख जाय इतनी बड़ी बात कहूं जब तेरा पिता मुझ पर क्रोध करता तो मैं डर
जाती और मेरे मुंह से बात न निकलती सिवाय इसके जो कोई बादशाह के पास जावे तो उसे
चाहिये कि अपनी इच्छा के प्रकट करने के पहिले अपनी प्रतिष्ठानुसार भेंट दे मैं बादशाह के
पास कौन सी भेंट इतने बड़े कार्य्य के लिये ले जाऊं तू ऐसी बात करना चाहता है कि वह नहीं
हो सकती अलादीन ने अपनी माता के वचन सुन कहा है माता मैं उसकी प्रीति में ऐसा नहीं फं
सा कि उसे मन से निकालूं इसलिये फिर विनय करता हूं कि ईश्वर के वास्ते यह सब विचार
अपने हृदय से निकाल कर जिस तरह से बने बादशाह से जाकर उसकी पुत्री के लिये प्रार्थ
ना करो और इस काम के लिये परिश्रम करो मेरा मन साक्षी देता है कि मेरा कार्य्य सिद्ध होगा
जो तूने कहा कि राजाओं को भेंट देना अवश्य है और मेरे पास कोई ऐसी वस्तु नहीं जो बादशा

होंके भेंटदेनेके योग्य होंहैं माता उन रत्नोंको जोमें अपने साथ लाया था और तुम उनको
अबतक शीशेके टुकड़े जानती हो क्या वह बादशाह के भेंटके योग्य नहीं पहिले मैंभी न
जानता था जौंहरियोंकी दुकानपर जानेसे उनकी अवस्था मुझे ज्ञात हुई संसारके सब
रत्न मेरे रत्नोंके आगे तुच्छहैं न तो वैसे रंगदार और न उतने बड़े परंतु बड़ा विदितहै कि
हमतुम दोनों उनके मोलको नहीं जानते मैं भलीभांति जानताहूं कि वह सब जवाहर
बादशाहोंकी भेंट देने के योग्य हैं तुम उनसबको उठालो औ कि मैं सबको साफकर
और हरएक प्रकारको अलग २ करकिसी स्वच्छ पात्रमें लगाय रक्खूं फिर तुम उन
कीसफाई और चमक मालूम करोगी वह बहुत सुंदर चीनीके भाजनमें उन्हें उठा
लाई और उनको सजाया फिर तो वह सूर्य चंद्रमाके सदृश प्रकाश देने लगे और उ
नदोनों की दृष्टि उनपर न ठहरती थी अलादीनने अपनी मातासे कहा यह बादशाह
की भेंटके लिये एक वेहैं मेरे विचारमें इससे उत्तम और कोई वस्तु भेंट देने के योग्य न
हीं अबजाकोई और बात हो सो भी कहो यद्यपि वह बड़े चमकदार और सुंदर थे परंतु
उनका हाल मालूम न होनेसे फिर उसकी माता बादकरने लगी कि तुम्हारी यह भेंट
ऐसी नहीं कि बादशाह प्रसन्न हो और तेरी कामना सरी हो मैं अर्थ रहित लौट आऊंगी।

३
सट
१२

102

जोमैं तुमसे कहूं तो हूं वही होगा जो मैंने साहस कर अपना मनोर्थ बादशाह से कहा तो
वह मुझे बावली और निर्बुद्ध समझ मेरी बातों पर हंसेगा और सिद्धिन समझ दरबार से
निकलवा देगा अथवा कोपित होय मुझे और तुझे मरवा डालेगा निदान अलादीन की
माताने उसे बहुत समझाया कि यह विचार छोड़ देवे परन्तु वह ऐसा मोहित हुआ था
कि कुछ न समझा और बड़ी कठिनता से अपनी माता को जाने के लिये तय्यार किया
सो उसकी माता कहने लगी मैंने माना कि मैं बादशाह के सन्मुख साहस कर गई औ
र उससे विवाह के लिये प्रार्थना की जो उसने मुझ से पूछा कि तुम कहां रहते हो और
कितना धन तुम्हारे पास है और तुम्हारी जाति पांति क्या है तो उस समय में उसका उत्तर
दूंगी उसने कहा इस विषय की चिंता भी मत कर पहिले देखो कि बादशाह तुमसे कैसी
कर भेंट करता है और इस मनोर्थ का क्या उत्तर देता है मुझे दीपक पर बड़ा निश्चय है औ
र जानता हूं कि जो वस्तु मैं मांगूंगा वह मुझे तुरन्त उसके द्वारा प्राप्त होगी जैसा कि क
ई बरस से तुम देखती हो उसकी माता यह सुनकर चुप हो रही और समझी कि इसी दीपक
के कारण मेरे संपूर्ण मनोर्थ सिद्ध होजावेंगे उस समय जो उसे थोड़ा धैर्य हुवा और वह सब बा
तें जो उसे कठिन जान पड़ती थीं सुगम मालूम भईं और अपने पुत्र से जाने की प्रतिज्ञा की

अलादीनने कहाकि इसभेदको किसीसे मति कहना और बादशाहसे भी एकांतमें कहना। इतना कह दोनों सोरहे परंतु अलादीनको अपनी प्रियाके मोह में रात्रि पर निद्रा न आई इत उप २ रात्रिबिताई प्रातसमयउठ अपनी मातासे कहने लगायह दरबारको समय है शी घ्रवस्त्रपहिनकर जासो उसहृद्वानेएक उज्वल रुमालमें रत्नोंसे भरापात्रलपेटा पुनिह सेवक्त्रमें बांधगिरहदे दरबारकी ओरचली उससमय राजमंत्री आदिकसर्वए सभासद बादशाहके सन्मुख विद्यमानथे इतनेमें वह भी पहुंची और उन मनुष्योंके साथजो अ पनी व्यवस्था और नीतिके लियेजातेथे उनके साथ दीवानखानेके भीतर जोबड़ा विशा लथा गई क्यादेखती है कि बादशाहके साम्हने सब खड़े हुये अपना २ वृत्तांतकहते और बादशाह उनकी व्यवस्था को सुनता और यथोचित उनका निर्णय करताजब मुक द्दमोंका फैसला हो चुकातो बादशाह वहांसे उठ अपने मुख्यमकानमें आया और सिवाय राजमंत्रीके सबको बिदाकरकेदेश प्रबंधके उपायविचारनेलगा जबउससे भीनि श्चिंत हुआतो अपने महलमें गया जबअलादीनकी माताने देखाकि अब बादशाह दरबा रमें नहीं आवेगा और सबलोगभी चलेजातेहैं तो अपने घरमें लौट आई अलादीन उसके हाथमें रत्नोंका पात्र देखे समझाकि मेरी माताको बादशाहसे विनयकरनेका अवसर न

२
सत्र
१०४

104

मिला जब राजा पूछने लगा है माता कुशल तो है उसने संपूर्ण वृत्तांत ब्योरेवार वर्णन करा।
कहा मैंने बादशाह को भली भांति देखा और बहुत काल पर्यंत उसके सन्मुख खड़ी रही
किसी ने मुझे नहीं रोका और बादशाह भी मुझे बहुत काल तक देखता था परंतु उसे
अवकाश न मिला कि मुझसे कुछ पूछता और मुझे भी अपने प्रयोजन के वर्णन करने
का औसर न मिला परंतु इतना मालूम हुआ कि बादशाह एक २ का हाल सुन के उस
का उत्तर बहुत स्पष्ट देता है उसकी प्रजापालकता में संदेह नहीं छोटे बड़े सब जा के
उससे बातें करते हैं किसी को बुरा भला नहीं कहता आज उसने बहुत सी व्यवस्था सुनी
जब सब सुन चुका और समय भी हो चुका तो उठकर अपने महल को पधारा कल फिर
जाऊंगी अलादीन ने उसका बड़ा गुण माना और उसे विश्वास हुआ कि यह भी निःशंक
और निर्भय होकर बादशाह से अपना मनोरथ कहेगी दूसरे दिन भोर होते ही वह फि
र बादशाह के दरबार में गई परंतु उसका जाना निपट व्यर्थ था क्योंकि दरबार का द्वार
मुंदा पाया और वहां के मनुष्यों से सुना कि दो दिन तक छुट्टी रहेगी इस लिये अपने घर
लौट आई और अलादीन से वह हाल कह सुनाया दो दिन पीछे फिर उसको सभा गई
परंतु उस दिन भी बहुत लोगों के होने से न तो बादशाह ने उससे पूछा और न उसने साब

काश पाया इसीभांति कईबेर उसकी माताकेसन्मुख जाती और कहनेकी ओसर नपाती नि
दान एक दिन बादशाहने मायादिग्रंथसे निश्चिन्तहोय वजीरसे कहा कईदिनसे मैं स्त्री।
कोदेखताहूं कि प्रतिदिन मेरसन्मुखखड़ी रहतीहै और अपनेहाथों मेंकुछ लपटे लिये र
हती और दरबारके छुट्टीपानेके पीछे कुछ कहेबिने बिना चलीजातीहै तू उससे पूछके
उसकीकाइच्छाहै मंत्रीभीकि उसके हालको नजानताथा विह्वाकि अपनी अज्ञानता को।
बादशाह सेप्रकट नकरे इसलिये विनयकी किहेहुजूर स्त्रियांथोड़ीथोड़ी बातके लिये
निरर्थ नालिशकरतीहैं सोवहभी वैसेही आतीहोगी किसीने उसमांस वाहसभी वस्त्र।
चुरोवाजोलमें कम उसके हाथबिकी होगी इसउत्तरसे बादशाह कोबोधनहुवा दूसरे
दिनबादशाहने सभामें विराजमान होकरमंत्रीको आज्ञादीकि जबवहस्त्री मेरे दरबा
रमें आवेतो उसेमेरे पासलाइयोकिमैं उससेपूछूंकि उसकी कौनसी इच्छाहै उसनेकहा
बहुतअच्छा और अपने शिरपरहाथरखवा अर्थात यदि आपकी अज्ञा पालननकरूंतो
मेरा शिरकटाजावे इतनेमें अलादीनकी माताबादशाहके सन्मुखखड़ीहुई परंतु मंत्री
ने उसेबादशाह केसामने नबुलाया बादशाहने आपही उसेदेख मंत्रीसे कहा वहस्त्रीआ
ईहै उसे मेरेपासले आकिमैं उससे कुछपूछूं मंत्रीनेएक मनुष्यसे कहाउसस्त्रीको बु

६
सन्दे
१५
106

लोके बादशाहके सन्मुखलेजायेवह उसेनाम्नपाही केपासलेगया और अपनी जगहपरजा
य खड़ा हुआ अलादीनकी माताने औरोंकी भांति अपनेशिरको पृथ्वीसेलगाके सब्ज़काली
नको जोतख्तके नीचे बिछायाथा छूआ और देरतक धरतीसे लगीपड़ीरही यहांतक किबा
दशाहने उठनेकी आज्ञादी वह उठखड़ी भई बादशाहने उससे कहामैं तुझको बहुत दिना
से देखताहूं किंतुहर दिनमेरी सभामें आतीहै अब अपनामनोर्थ प्रकटकर किंतु किस
अर्थके लिये आया करतीहै उसने हाथ यह सुनफिरधरती छूमी औरहाथ बांधबिनय
कीहे बादशाह दीनप्रति पालकजो मुझे प्राणदानहो और मेरी ढिठाई क्षमाहोतोमैं अ
पना अर्थवर्णनकरूंपरंतु वहबात सबके सामनेनहीं कहसकी बादशाहने सबको से
नसे बिदा किया केवल वज़ीर आज़म वहां रहा तब बादशाहने उससे कहा अब तू वर्णन
कर उसने बादशाहको एकांतमें अपनेपरदयालुपाकर फिरविनय की यहकिकरी आ
शा रखतीहू किमेरे बिनतीसे आपकोदुख नहोमेरी ढिठाई क्षमाकरो बादशाहने कहामैं
नेक्षमाकिया जोतेरे मनमेंहोउससे निशंक औरनिर्भयहोकर प्रकटकर पहिले उसने किके
सनरह अलादीनने उसकी कन्याकोदेखाथा वर्णनकिया फिर कहनेलगी किउस समय
सेवह उसपर मोहितहै अबउसकी यह इच्छाहैकि आपकी पुत्रीका उसके साथविवा

ह होजावे और इसीलिये मुझे आपके सन्मुख भेजा है बादशाह उसकी बिनती सुन कुछ अप्र-
सन्न हुवा किंतु ननकभी मुंह नमोड़ा और खोलने लगा इस वस्त्र में का बंधा है उसने रत्नों का
पात्र खोल बादशाह के अर्पण किया वह अति विचित्र और उज्जल और बड़े २ रत्नों को देख
आश्चर्य में हुवा और प्रसन्न होय लेलिया और एक एक उठाय २ देखता और वाह २ करके
कहता कि ऐसे बहुमूल्य रत्न भी ईश्वर ने संसार में पैदा किये फिर उसने उन रत्नों को एक ठौ-
र रख मंत्री को बुलाय दिखाया कि ऐसे तूने भी कदाचित् रत्न देखे हैं उसने देखकर कहा
कि मैंने कभी भी नहीं सुने सुनि बादशाह ने मंत्री से कहा कि यह मनुष्य जिसने यह रत्न भे-
जे हैं इस योग्य है कि उसका बिबाह अपनी कन्या से करूं मंत्री यह सुन महा दुःखित हुवा क्यों-
कि उसे बिश्वास था कि बादशाह सिवाय मेरे पुत्र के और किसी को अपनी कन्या न देगा
अब ऐसे रत्न देख उसके विपरीत कहता है सो एक बात मन में ठान बादशाह के कान में
कहा है स्वामी यह भेंट आपका कन्या के अत्यन्त तुच्छ है आशा रखता हूं कि तीन महीने
का अवकाश मिले तो कि मेरा पुत्र इससे उत्तम भेंट देगा यद्यपि बादशाह जानता था कि ये सा
तोहफा कि जो अलादीन की माता ने दिया और किसी को प्राप्त न होगा परन्तु उसके कहने से
उसकी प्रार्थना स्वीकार की और अलादीन की माता से कहा अब तुम अपने घर जाके अपने पु

सत्र
१०८
106

उसेकहा कि हमने उसकी इच्छास्वीकारकी परंतु अभी दहेजका असबाब जो हम अपनी ल
ड़कियोंकोदियाकरतेहैं तय्यारनहींकिया तीनमहीने केपीछे सबतय्यारहोगा तब तुम य
हां आनावह अति प्रसन्नहोय अपने घर आईयह प्रसन्नता उसे कईदिन और सेआमऊई एकतो
आनेजानेसेछुटी औरदूसरे अपनीइच्छानुकूलउत्तरपायाथातीसरे इसभयसे किईश्वरजाने बादशा
ह इसविनयसेकोपितहोकरउसे और उसके पुत्रकोनजानियेक्यादंडदे अलादीन अपनी माता
कोदेखकर अपनीबुद्धिसेजानगया किमेरी माताकार्थ्य सिद्धकरआई क्योंकिदरबारसे शीघ्र
चले आनेसे यहबातउसेमालूमहुई और मुखउसका औरदिनोंसे प्रसन्नथा जबनिकटपहुंची
अलादीननेपुकारके कहाहेमाताकुशलतोहै उसकीमातादरबारके वस्त्रउतारकहने लगीहे
पुत्र अबप्रसन्नहोफिर उसने संपूर्णवृत्तांत कहसुनाया और कहा मुझे बादशाहने अ
भीहांनाकाकुछ उत्तरनदियाथाकि मंत्रीनेबादशाहके कानमेंकुछकहा तबमैंडरगई
कियेमानहोकि बादशाहको वहकावे परंतु जबबादशाहनेहंसके मुझसेकहाकि अब
इयो तबमुझेभरोसाकुबा वह यह शुभसमाचार अपनीमातासे सुन महाहर्षितहोकर उस्का
गुणानुवाद करनेलगा परंतुतीन महीनेको अवधिजो बादशाहने कीथी उसचंद्रमुखी की।

प्रीतिमें इतनी बड़ी मालूम हुई मानों तीन वर्ष का अंतर है दिन और घड़ी गिनने लगा जब दो म
हीने बीते तो एक दिन सायंकाल को अलादीन की माता ने दीपक जलाने की इच्छा की और
यह देखा कि घर में तेल नहीं सो बाजार से मोल लेने गई वहां क्या देखती है कि चहुं ओर विवा
ह की सामग्री हो रही है और हरएक दूकानदार हरएक दूकानें मंद दीपमाला में लगे हैं और बरात का
समान एक ओर से दूसरी ओर जाता है और गली कूचों में प्रधान और अधिपति तथा उनके हस्ती व
रथ पर हैं और कुछ घोड़ों पर जिनके रूपहली सुनहली सुंदर साज हैं सवार हैं और बहुत से
सेवक उनके साथ बड़ी सामग्री से आते जाते हैं अलादीन की माता ने उस तेली से जिससे ते
ल लिया था पूछा आज यह कैसी सामग्री है उसने कहा तुम कहां से आई हो क्या तुम इ
स नगर की रहने वाली नहीं हो यह बात सब कोई जानता है कि आज रात को यहां के व
ज़ीर आजम के पुत्र से शाहजादी का विवाह है सब एक घड़ी पीछे शाहज़ादी भी स्नान
करने को आवेगी इसलिये सब प्रधान उसके जलूस के वास्ते तय्यार होके महल बाद
शाही के ओर जाते हैं वह यह सुनते ही अपने घर दौड़ी गई और अलादीन के निकट जाय क
हने लगी है पुत्र बड़ा खेद है कि मेरा परिश्रम और वह सब रत्न वृथा गये बादशाह ने बड़ा
छल किया अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहा वह सुन चिंतित भया और माता से पूछने लगा

२
सन्द
१०७
107

दशाहने कौंकर अपनाप्रणतोड़ा उसनेजोकुछ बाजार मेंदेखा औरसुनाथा वोसबवर्णनकि
या औरकहने लगी आजरात्रिकोनेरोप्यारीका राजमंत्रीके पुत्रसेविवाहठहराहै सोइस समयव
हस्नानकरने कोहम्माम में जावेगी अलादीन यह सुननेतही महाव्यथितभया कि जैसे कि।
सीयर विजली पड़े जिसके गिरनेसेवहमच्छीको शामहोथोड़ी देरके पीछेजबसचेतहुवा।
तोमनमेंविचाराहा बलीलजाकी बातहै कि बदरबदोरको सिवाय मेरेकोई हसरालेजावे
अबइसमें देरीनकरनी चाहिये कोई ऐसायत्नकरो कि मंत्रीकापुत्र व्याहके लेजानेन पावे
सोचते २ दीपककोयादकिया औरमानासे कहनेलगा कुछबिना मानिकर मंत्रीका पु
त्रउसे भोगनकरसकेगा तुमभोजन पकाओमें अपनेमकानमें पकवानोंके लिये जाताहूं
वह समफाईकि यहदीपकनिकालेगा औरउसोसे कोई ऐसा उपायकरेगा जिससे उनके
विवाहमेंविघ्नहो वहतो भोजनपकानेलगी औरइधर अलादीनने अपने मकानमें जातेही
उसदीपककोवहांसे निकालकररगड़ातोवही वीरप्रगटभया अलादीनसे कहनेल
गा हुकुमक्या आज्ञाहै मैं औरहमसेरवीर इसदीपके आधीन उसकामको तुरंतप्रतिपालन।
केरेगे अलादीन नेकहा आजतक मैंने तुमसे खानेकी वस्तुके सिवा औरकोई कामनही
कहा अबतकसे एककाम कहताहूं वह यहहै मैंनेयहांके बादशाहसे उसकीपुत्रीव

दरबदीरके साथब्याहकरनेकी प्रार्थना कीथी उसने स्वीकारकर कहाथाकितीन महीने
पीछेमें तुझेकन्या विवाहदूंगा अबवह अपनीप्रतिज्ञाके विपरीत उसअवधिके पहिलेउ
सकाब्याह राजमंत्रीके पुत्रसे कियेदेताहै सो इसीरात्रिको विवाह नियतहुआहै अभीमैं
नेयहसमाचारसुनाहै अबजोमैंकहूं सोसुनकर अर्थात् जबदूल्हाडुलहिनइकट्ठे सोवेंतब
उनदोनोंकोबिछौने समेत मेरेपासलेआइयो उसबीरने कहायहकितना बड़ा कामहै
औरजोकोई आज्ञाहोतोवहभी कहो उसने कहा इससमयतो सिवाइसके औरकोईका
मनहींजोतुझसेकहूं यहसुनवह बीरगुमहोगया इसके उपरांत अलादीन वहांसे निक
लकर खुशीसे भोजन करने लगाजब भोजन करचुकातो अपनीमातासे बड़ीकालप
र्यंत अपनीप्यारीकीबातेंकरतारहा फिरमातासे बिदाहो अपनेमकानमें सोनेगया यहां
तो वीरकीबाटमें उसेनिद्रा न आईजबशाहीमहल मेंविवाहकी रीतेंहोचुकी औररात्रि
भीबहुत बीतीतोमंत्रीके पुत्रकोमकानमें लेगये वह पहिले शय्यापर जाकरलेटा औ
र डुलहिनकोबांदियों मसनदलेजाय रीतिकर औरउसके वस्त्र उतार रात्रिके वस्त्र पहिरा
य दूल्हेके पास लेटायदिया औरआप अनुचरियों समेत बाहरनिकल आई औरउ
समकानका द्वारलौंडियोंने मूंदलिया द्वारके मूंदतेहीवही बीरप्रकटभया औरइससे

३
सत्व
१०८

108

पहिले कि दुल्हाऊब्बडुलहिनसेबात चीनकरेगा उसकामुखदेखे उनदोनोंको शय्यासमे
तउठाय अलादीनके मकानमेंलाया अलादीनजोबाट देखताथा वीरसे कहनेलगा इसदुल
हकोले जायपाखानेमें बंदकरदेभोरको फिर इसेयहां पहले आइयो यह आज्ञापाय वह
वीरउसे शय्यासे उठालेगया और एक पाखाने में जिसमेंदुर्गंधित मलभराथा बंदकियाजिस
कीदुर्गंधसे उसका दिमागफटाजाताथा और इधर अलादीनने दुलहिनसे अधिक बातो
नकीकि वह रूननाहो उसेकहाकि हेमेरीप्रिया तुमकुछभय मतकरो तुम्हें यहां किसी
भांतिसेदुःखनपहुंचेगा मैंनेयहबात इसलिये कीकितुम्हें मंत्रीकेपुत्रसेबचाऊं क्योंकि तेरेपि
ताने मुझसे प्रतिज्ञा कीथीकिमेरा विवाह तेरेसाथ करदे अबअपने वचनकेविपरीत तुझे मं
त्रीपुत्रकेसाथ ब्याहदियावह बेचारीकि कुछ न जानतीथी सुनके चुपहोरही कुछ उत्त र
नदियाकिंतुसहमगई और थरथरागई अलादीनने उससेकुछ न कहा और अपने वस्त्र और प
गड़ी उतारकर उसकेसाथ पीठफेरकेसोरहा और एकखड्ग उसके और अपने मध्यमें रख
दी किवहसुंदरी इसबातको जानेकिजोमें उससेकिसी कर्मकीइच्छा रखताहूं तो इसीखड्गसेमा
रजाऊं इसउपायसे उसने अपनीप्रियाको दूसरेसेबचाया और अतिप्रसन्नहोकर रात्रि
भरआनंदसेबेखटकसोयाकियापरंतु उससुंदरीको वहरात्रिमहादुःख और चिंतामेंकटी और

अथिकतरमंत्रीकेपुत्रकी रात्रिदुःखमेंबीतीकिरातभरसेइ पाखानेमेंबंदरहाभोरको अला
दीनको दोषककेरगड़नेकीकुछ आवश्यकतानपड़ीक्योंकि प्रभातहोतेही वह वीर आप।
हो आया ओर अलादीनसेकहनेलगाहेस्वामि मैं आयाहूं जो आज्ञाहोसोकहूं अलादीनने
कहा हल्लेको उसजगहसेजहांतूने उसेविदाकियाहै जाकेलेआ ओरउसे शय्यापर सु
लाकरशाहजादी सहित उसीमकानमें पहुंचादेयहकहउसने खड़बीचमें सेनिकालाव
ह वीर मंत्रीकेपुत्रको पाखानेसेबाहर निकाल उससुंदरीकेपास उसेलिटाकर जहांसे ला
याथा छोड़ आयासबसे अधिकदुःखहल्लाडलहिनको उसमहाबिकराल बीरकेदेखने
सेहुवा यदिविछौनाफटकेवहदोनो मरजातेतो आश्चर्यनथानिदानजब वह वीरछो
ड़आयातो उसीसमय बादशाहने अपनीपुत्रीको देखनाचाहाकि सच्चेकियहरात्रिउसकी
कैसेकरबीतीसोमकानकेभीतर आयाहल्लह किमलकोडंगय ओरशीतसे अतिदुःख
पाकरमृतकवतहोरहाथाबादशाहका शब्दसुनतेही पलंगसेकूदबाहरनिकलआ।
या ओरदूसरे मकानमेंजहांरात्रिको अपनेवस्त्र उतारकर सोनेकेमकानमेंगयाथाजा।
करयकपड़े पहिनेजबबादशाह भीतरगया ओर अपने जातिकीरीतिके अनुसार खुस
कराय अपनीपुत्रीसेसहुवा तुम्हारीरात्रिकैसेकरबीतीफिरजब आगेबढ़के ध्यानकरकेउ

२
सत्
१०९

109

सकी सूरत देखी और माथे को चूमा ने उसका मुख मलिन और उदास देख विस्मित हुवा औ
र उलझन समझा कि यह दुख उसे लज्जा से है वा किसी और कारण से चाहा कि उससे सबके दल
हिन निर्बलता के कारण अपने उसका वृत्तान्त नहीं कहा उसको बादशाह समझा कि लज्जा
के कारण अपने दुःख का वृत्तान्त नहीं कहा सकीना कोई दूसरी बात रात्रि में हुई जो इससे न
हीं भाई जिससे वह चुप है निदान वह लोग मल्का के निकट गया और उससे शाहजादी के
हाल वर्णन किया मल्का ने कहा है हुजूर बादशाहजादी के इस हाल से मत घबरा औ क्यों
कि बहुधा ऐसा डाव नौसंगम के समय नई दुलहिनो पर होता है तीन दिन पश्चात उनको य
ही दशा होती है मैं आप जाकर उससे वृत्तान्त सब पूछ तुमसे कहूंगी फिर मल्का शाहजा
दी के मकान में गई और उसको कंठ से लगाया परन्तु उसे चुप औ डाव में उदास देख
आश्चर्य में हुई और समझी कि इसे अवश्य रात्रि को डाव हुवा है जिससे वह वर्णन नहीं
कर सक्ती तब मल्का ने उससे बहुत समझाया और कहा सुना वह ठंडी सांस ले कह
ने लगी है मेरी माता यदि इस हाल में मुझसे कोई बात ढिठाई की होतो क्षमा करना
क्योंकि एक ऐसा अद्भुत चरित्र रात्रि को हुवा जिससे मैं अबतक अपने होश में नहीं औ
र उस भय से कांपती हूं पुनि अपना और अपने दुलह का सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया कि

रात्रिको जब लौंडियोंने मकानका द्वार मूंदा तो तुरंत ही वह शख्स जिसपर मैं और मेरा पति
था किसीने उठा ले जाकर एक बड़े विशाल कोठे में रक्खा और मेरे भर्तार को मुझसे अ
लग कर और कहीं ले गया फिर मैं नहीं जानती कि उसके साथ क्या व्यवहार किया फिर।
मैंने एक तरुण पुरुष को देखा कि मुझे चौथे दे अपने और मेरे मध्य में खड़ा रहा मेरो।
और से पीठ फेर सो रहा प्रभात को फिर मेरे पति को मेरे साथ लिटाया और यह शख्स कि
सीने एक क्षणमें यहीं लाकर रक्खी जब मेरा पिता मेरे मकानमें आया था तब मैं ऐसे शो
कमें डूबी हुई थी कि उनसे भी उत्तर न दे सकी वरञ्च रोती थी कि मेरे दूर रहने से पिताजी को
चिन्ता हुई होय परंतु मुझे निश्चय है कि जब मेरा हाल खुलेगा उन पर ज्ञात होगा तो निस्संदेह मे
रे अपराध क्षमा करेंगे उसको माता यह सुन विस्मित भई और इन बातों पर उसे विश्वा
स न हुवा और कहने लगी बहुत अच्छा हुवा कि तुमने यह वृत्तांत बादशाह से न कहा अ
ब किसी से यह हाल न कहना नहीं तो तुमको विक्षिप्त समझेंगे उसने कहा तुम निश्च
य मानो कि मैं सावधान हूं और मेरी बुद्धि भंग नहीं हुई यदि तुम्हें विश्वास न हो तो इ
स वृत्तांत को मेरे पति से जाय पूछो वह भी तुमसे यही कहेगा उसने कहा भला मैं उससे।
भी पूछूंगी जो उसने भी यही कहा तो मैं सच जानूंगी तब तक तुम उठो और इस चिन्ता को

३
सत्र
११०
110

अपनेचित्तमे टालोयह विषय अद्भुतहै क्यात्वमनेोबन और वाजेोका शब्दनहीसुननेजोबडे
औरनगरमेंबजरहेहैं अपनेमनकोसावधानकरो औरयहदुःस्वप्नजोतुमनेदेखाहै अपनेजी
सेभुलाओपुनिउसने उसकासुखपुलवायाफिरबादशाहकेनिकटगई औरकहनेलगी
कि आजरात्रिकोतुम्हारी पुत्रीनेकोईदुःस्वप्नदेखाहै जिससेवह भयभीतहुई और मंत्री
के पुत्रकोबुलाय पूछाकितूनेभीवहीदुःस्वप्नदेखा जोतेरीस्त्रीने देखाहै उसनेक
हामें नहीं जानताकि तुमने मुझसे कौनसाप्रश्नकियाबादशाहनेकहा जोस्वप्न ते
री स्त्रीनेरात्रिकोदेखातूनेभीवह देखाहै मंत्रीकापुत्रनेविवाह होनाही अतिकठि
नजानताथा औरइससे उसकीप्रतिष्ठा वृद्धिकोप्राप्तहुईथी इसलिये उचितनजा
नाकिरात्रिकी बातोंकोवर्णनकरे सोमल्कासेकहा मैंनेकोईस्वप्ननहीदेखा य
द्यपिरात्रिकोमहाघोरदुःखभोगाथा तथापि अपनीखुशीप्रकटकी मलकाकोनिश्च
यहुवाकिकेवलउसकी पुत्रीनेदुःस्वप्नही देखाहै वहसंपूर्णवार्त्ता अलादीनको
दीपकके आधीनहोनेसे मालूमहुई औरयहभीविदितहुवाकि आजरातकोभीदु
ल्हीदुल्हिनइकट्ठे सोवेंगेसोरात्रिकोभीदुल्हे इकट्ठे सोनेनदेनाचाहियेयहविचार
संध्याको उसनेदीपकमलातो बड़ोवीर प्रकटभया अलादीनने आज्ञादी आजरात्रि

कोफिरवहीउल्लाउलदिहनरकहै सोवेगेत इसमेंसेपहिलेकिवह बातचीतवाभोगादि करै स
वेवत शय्यासमेतमेरे मकानमें ले आइयोवहवीरउनकोशय्यापरलेटेहुयेही शय्यासमेत
उठाकरअलादीनकेमकानमेंले आया औरमंत्रीकापुत्रफिरउसीमलस्थानमेंबंदकरदि
या औरशाहजादीनेभीएवेवत अपनेसाथ अलादीनकोसोतेहुयेपाया औरवहभीबी
चमेंरक्खाहुवादेखाशभानको वहवीर राजमंत्रीके पुत्रकोपाखानेसेनिकाल औरशा
हजादीकेपासलिटायजहांसेलायाथा वहीरखआयाबादशाहतोपहिलीरात्रिकाहा
लसुनचिंतामेंथाही औरइसरातभीशाहजादीके मकानमेंहालपूछनेकेलिये पहुंचा
तोइसलड़काशय्यापरसे शीघ्रउतर निकलभागा और दूसरे मकानमें वस्त्र पहिननेकोग
या औरबादशाह भीतरगयातो अपनी प्यारीपुत्रीको उसीभांतिशोकवानपाकर सं
तोष नरहा औरपूछाहेप्यारीबेटी तेरोबादशाहहै मैंतुझे प्रसन्ननहीं पाताशाहजा
दीने कुछउत्तरनदिया बादशाहने जानाकिकलसे आज औरभी उसकाबुराहालहै
औररात्रिकोकोईउपाधिहुईहैसो कोपितहोय खड्गखींच लालनेत्रकर कहनेलगा जोतू
कपटबोलतीहै साकहतीनहीं तोमैंतुझे बधकरडालूंगा वहनंगी खड्गदेखभयभीतभई औ
रप्राणकेभयसे रुदनकर अपने पितासे कहनेलगीयदिकोई मुझसे अपराधहोवे

२
सत
॥

तोउसे क्षमा कीजिये और मुझे विश्वास है कि जब मैं आज और कल की रात्रि का हाल बिनय क
रूंगी तो आपका सब क्रोध शांत होजावेगा बादशाह इस बात को सुन कुछ थोड़ा उबा
फिर शाहजादी ने अपना सम्पूर्ण हत्तांत विस्तारपूर्वक कह सुनाया पुनि कहने लगी।
जो इस में कुछ आपको संदेह होतो मेरे पति से जा पूछ लीजिये कि उसके वर्णन से मे
रे बचन की समता सूचीत होगी उसने उसके थोड़े के लिये कहा जो तूने कहा उस पर
मुझे विश्वास है परंतु मैंने तुझे फड़ाव देने को तेरा विवाह नहीं किया थोड़ी रात्रि आज
रात्रि को यह उपाधि न होगी यह कह बादशाह अपने मकान में आया और मंत्री को बु
लवा भेजा और उससे कहने लगा तूने अपने पुत्र को देखा और उससे कुछ सुना उसने
कहा मैंने अबतक उसको नहीं देखा फिर सम्पूर्ण हत्तांत जो अपनी पुत्री से सुना था स
विस्तर वर्णन किया और कहने लगा यद्यपि जो मैं पुत्री ने कहा मैं उसे सत्य समझता
हूं तथापि मेरी इच्छा है कि मैं तेरे पुत्र से भी सुनें तू उससे सब हाल जाय पूछ मंत्री ने
वह हाल अपने पुत्र से जा पूछा और जो कुछ बादशाह से सुना था उससे भी सुना कि।
जो कुछ बादशाह ने अपने पिता से कहा उसमें संदेह नहीं दीवान से कोई शय्या को उठा
कर एक विशाल मकान में रख के तुझे एक सडे पाखाने में केवल एक पाजामे समेत

जिसे मैं पहिले होता हूं लेजाकर छिपाता है वहां सबके हाथ हिलाने की सामर्थ्य नहीं रहती।
कि कहां रहती है यदि दो तीन दिन मेरी यही दशा रही तो मैं दुर्गंध और सर्दी से देह त्याग दूंगा
यही दशा मेरी स्त्री को भी विचारना चाहिये अब मुझे उससे अलग रहना अवश्य है मैं नम्र
ता से एक विनय करता हूं कि बादशाह को इस बात पर राज़ी करो कि मेरे निकाह से अपनी
पुत्री अलग करे इस बात से मैं उनका बड़ा गुण मानूंगा नहीं तो शाहज़ादी अधिक दुखित हो
गी मंत्री ने जब यह सुना और समझा कि दो दिन में तो उनकी यह दशा हुई कि मरणभय।
और दुःख से वह तन दुबला होगया है जो दो चार दिन और शाहज़ादी के साथ सोवेगा तो उसके
प्राण पर बन आवेगी अब उचित है इसे शाहज़ादी के पास न जाने दें आगे समझ लिया जा
वेगा इस बात को अपने मन में ठान बादशाह के सन्मुख गया और कहा इस दास के सुनने वही
कहा जो कुछ आपने अपनी पुत्री से सुना था अब मेरे विचारानुकूल उचित है कि दूल्हा।
और दुलहिन को एक जगह न सुलावें जिससे दोनों कुशल से रहें और आज्ञा दीजिये कि वि
वाह की रीतें सम्पूर्ण राज्य में बंद की जावें बादशाह इस बात पर राज़ी हुआ और विवाह
के उत्सव के बंद होने के लिये आज्ञा दी घर २ और गली २ में जो मंगलाचार होता था एकही
वेर बंद होगया और यह अशुभ समाचार सुनते ही पुरवासी चिंतित हुये और दूल्हा दुलप

स
ट
११२

112

गयाकि खुशी के बंद होने का क्या कारण है फिर सबने सुनाकि मंत्री का पुत्र बादशाही म
हलसे निकालागया परंतु अलादीन के सिवाय इसका हेतु किसी को विदित नथा जब
अलादीन को निश्चय हुआ कि मंत्री का पुत्र राजमहल से निकालागया तो उसने फिर दी
यक कोन रगड़ा और उसी तीन महीने की अवधि को जो बादशाह ने उससे की थी उसी।
को गिनता रहा जब वह अवधि बीती तो अलादीन ने अपनी माता को बादशाह के नि
कट भेजा कि वह उसको प्रतिज्ञा की सुधि करावे वह दरबार में जाके बादशाह के सन
मुख खड़ी हुई बादशाह ने उसे पहिचाना उसने चाहा कि वही प्रतिज्ञा स्मरण करावे इत
ने में मंत्री कोई बात सुनने के लिये बादशाह के निकट गया बादशाह ने उसे ठहरा के
कहा वह स्त्री जिसने वह बहुमूल्य रत्न मुझे भेंट दिये थे फिर आई है उसे आगे बुलाके
सुनूं कि वह क्या कहती है मंत्री ने चोबदार से कहा कि वह स्त्री जो सन्मुख खड़ी है आ
गे बुलालो चोबदार उसे आगे ले गया उसने सर्ववत् शीस झुकाय तख्त का पाया चूमा बा
दशाह ने उससे पूछा तू क्या मांगती है उसने विनय की मैं आपको वह प्रतिज्ञा स्मरण कराने
को आई हूं जो आपने कहा था कि आप मेरे पुत्र के साथ जिसका नाम अलादीन है तीन
महीने के पश्चात् अपनी कन्या से विवाह करेंगे अब वह अवधि बीत गई इसलिये आ

एको स्वयं दिखाने आई है यद्यपि बादशाह उस स्त्री को देखते ही जान गया था कि शाहजादी
के मांगने के लिये आई है और अब भी उसके कहने से यही बात मालूम हुई तो मन में अति
चिंतित हुआ कि इस स्त्री को क्यों कर साफ उत्तर दूं क्योंकि उसे वचन हार चुका हूं अब जो इनका
र करूं तो बड़ी अशीलता है जो राजी हो जाऊं तो क्यों कर ऐसे अप्रकट मनुष्य को जिसे देखा भी न
हीं अपनी पुत्री दे डालूं इस विषय में मंत्री से सम्मति पूछा उसने विनय की आपने जो कहा सो
चाहे सो सत्य है यह बात कुछ कठिन नहीं आप अलादीन को कहला भेजिये कि मेरी पुत्री
का मेहर बहुत है जो तुझ में उसके देने की सामर्थ्य हो तो मेरी कन्या को ब्याह ले जा नहीं तो।
फिर कभी नाम मत लीजियो जो और बड़ा काम आप समझें और वह ऐसा हो कि उससे पूरा
न हो सके उसी को आप कहिये बादशाह को यह सम्मति बहुत पसंद हुआ और अलादी
न की माता से कहने लगा हे सुंदरी मैं तुझे वचन दे चुका हूं अपने वाक्य से नहीं फिरता मैं
न यह चाहता हूं कि अपनी पुत्री तेरे पुत्र को ब्याह दूं परंतु शाहजादी ने एक प्रतिज्ञा की है जो तेरा पु
त्र उसे पूरा करे तो ब्याह हो अब तू जा के उससे कह कि बादशाह अपने वचन पर दृढ़ है परंतु
तू पचास पात्र सोने के जिसमें उसी प्रकार के रत्न भरे हुए हों जो पहिले तूने भेंट दिये।
थे चालीस सम आप हबशियों के सिर पर रख के और इतने हबशी के आगे एक एक गुला

स
त्ं
११२

म महासुंदर और रत्नहलीवस्त्र और रत्नपहिरे उधे मेरे समीप भेजे सो तू जाकर यह प्रतिज्ञा
उससे वर्णन कर जो कुछ इसका उत्तर दे मुझसे शीघ्र आनकर कह मैं तेरी वाट देखता रहूंगा यह।
सुन वह नाइके पायंको चूम अपने घरको और यथारी और मार्गभर अपने पुत्रकी निर्बुद्धि।
तापर हसती थी कि अब उसको क्योंकर वह रंग बिरंग शीसेके टुकड़े प्राप्त होंगे जो वह बा
दशाहको भेंट देगा अब तो वह नहरवानामी तपगया होगा और कहां से इतने दास हवशी।
सुतरंगके और सुंदर पावेगा उसने व्यर्थ मुझे आवागमनका दुख दिया यही चिंता करती
हुई अपने घरको पहुंची और अलादीन से कहने लगी क्यों बेटा मैं तुझसे कहती थी कि शा
हजादीकी प्रीति अपने मनसे दूरकर यद्यपि बादशाहने अपनी सुशीलतासे मुझपर कृपा
की थी जिससे निश्चय था कि मुझे अपनी पुत्री देडालेगा और तेरी मनोकामना सिद्ध होगी।
परंतु मंत्रीने उसे बहकाया क्योंकि जब मैं बादशाहके सन्मुख गई तो उसने मुझे अपने निक
ट बुलाय सब बात का मांगता है मैंने विनय की कि सर्व मैं मैंने आपकी सेवा में अमुक विषय
के लिये कहा था सो आपने स्वीकार करके कहा था कि तीन मास होने के पीछे बदरबदौराका।
विवाह तेरे पुत्रसे करदूंगा अब वह अवधि बीत गई इस कारण मैं सुधि कराने को आई हूं उ
सने येसी पकशाते मुझसे कही जिससे लपनक तस्पानकर सकेगा फिर उसने वशीशाते विश्वा

113

रसर्वेक कहती उसनेकहाहैमानायहकुछकठिन नहीबादशाहनेथोखाखायाकि इसीप्राण
पर अपनीपुत्रीको देताहै यहजोउसनेमांगेहैं उसशाहजादीकी अपेक्षाजोरूपअनूपमें अधि
कथेहैं अनित्यतुच्छहैं मैंतोनामशर्तकासुनकरडरगयाथाकिकोईकठिनहोगी अबदेखो।
क्योंकरयहवस्तुमुझेप्राप्तहोतीहैं अबतुमभोजनपकाओवह यहसुनबाजारसेपाक मोल
लेनेगई अलादीननेदीपककोउतारकरगड़ातोवहीवीरप्रकटभया औरउनप्रसन्नकीबातें क
हनेलगा अलादीननेकहा बादशाह अपनीपुत्रीदेनेकोतय्यारहै परंतुवह पहिलेचालीस
पात्रउन्हीफलोंकेभरेहुये उसवाटिकासे जहांसेमैं इसदीपककोलायाथामांगताहै और
चालीसदासहबशीसम आपुवैसे रत्नमयीपात्रोंकोसिरपररखलावें औरप्रतिहबशीके
आगेयक २ हबशीसम आप्रसुवर्णमहासुंदरभारीसुनहले वस्त्रपहिनेहुयेहो अब
तुम्हाके यहसब पदार्थलाकिमैं उसेदरबार उठजानेके पहिलेबादशाहके समीपभे
जहूंवीरने अलादीनसेकहा बहुतअच्छा अभीलायातिसके उपरांतथोड़े कालकेपीछे
वह सुनहलीभाजनरत्नमयीसमवयहबशीयोंके शीसपररक्खे औरचालीसदास सुवर्ण
महारूपवानभारी २ सुनहले स्वच्छवस्त्रपहिरेहुये लाकेप्रकटभया औरअनेकप्रकार
केमहासुंदरबड़े २ मोतीहीरे औरविविधभांतिके मणिउन्हीरत्नोंके सदृशजो उसनेपहि

स
ट
११४

114

ले भेंटदियेथेलायाथा औरप्रतिपात्रपरतोड़हयोशरुपहलो औरउनपररत्नहलो चित्रकारि
याथीपड़ाथा जबवहवीर इननेश्रतुचरादिकलायातो उसके छोटेसे चरमेंवेपात्रश्रयपड़
नेसे ऐसेफलकते दिखाईदेतेथेमानोंपुष्पबाटिका अनेकभांतिकेरंगवरंगी सुंदरफूलों
सेखिलरहीहै फिरबोरने अलादीनसे कहाजोकछ औरभी आज्ञाहोतो प्रतिपालन करूं
उसनेकहा अबतुम्हाराकछकामनहीवह रत्नगुप्तहोगयाजब अलाद्दीनकोमाता बा
जारसे आईतोयह चरित्रदेख विस्मितहुई फिरउसनेवहभोजन जोबाजारसेलाईथीरख
जातीहै तबमतबंननयह पदार्थदरबारके उठजानेकेपहिलेही बादशाहके निकटपहुचादो
किबादशाह मेरीप्रवीणतादेखकर अपनीपुत्रीके बिवाहके योग्यजाने उसनेकहाबहु
नम्रश्चात् यहपात्रयथाक्रमकरदे औरवहरएक पात्रके आगेसफेदरंगको बशीहोले जब
यहपात्र अलादीनके चरसे निकले औरपीछे २ उसकोमाताचलीतो अलादीनद्वार मूं
दकर अपने मकानमें बेठरहाकिदेखियेइसभेंटकेलेने सेबादशाह मुझेदामादबनातोहै
बानहो औरवहरएकहबशी ऐसेस्वच्छ आभूषण पहिनेथाकि एक २ करोड़रुपयेकामा
लसमफनाचाहिये जबवह सबबादशाहके महलकी औरचलेतो सुखवासीकादेखतेहैं

किस्तधीयंक्तिकाले श्रोरसफेद दासोंकी जातीहै नतोउनकी दृष्टि चित्रितटकेनों श्रोरनउनसु
नहली वस्त्रश्रोर रत्नोंपर ठहरती उनकेदेखने कोहजारों तमाशाईचऊ श्रोरसियकत्रहोगा
येफिरजबवह बादशाहकी सभाके समीपपऊंचेतोहलकारोंने यह समाचारजाय बाद
शाहको सुनायाउसने श्राज्ञादीकिउनसबको मेरे सन्मुखलाश्रो वह श्रस्सी दासदोपंक्तिबां
धकरबादशाहके सन्मुखगये जबतख्तके समीपपऊंचे तो अर्धगोलाकारकेसदृश बाद
शाह तख्तके श्रागेखडेऊये फिर अनुचरोंनें पात्रोंपरसेजोड़े पोशउतारलिये श्रोरहाथ बां
धतख्तके श्रागेखडेऊयेफिर अलादीनकीमाताभी बादशाहके सन्मुखश्राई श्रोरथरतीहु
मविनयकरनेलगीकि अलादीनने श्रापकोदण्डवत् करकहलाभेजाहै यदियह थोड़ातोह
फाजो श्रापकेयोग्यनहीं परश्राशारखतीहूं किकृपाकरके श्रापइसे स्वीकारकीजिये बाद
शाहवह सबवस्तु श्रोरदासभलीभांतिदेखश्राश्चर्य्यमेंऊ श्राश्रोरमंत्रीसेकहाजो मनुष्य ऐसे
अलभ्यवस्तु केदेनेकी सामर्थ्यरखताहो वह मेरेविचारमें इसयोग्यहै किमेरीपुत्रीउसे ब्या
हीजावेवानहीं उसनेउहसेचाहाकि बादशाहका मनउसकी श्रोरसेहटावे सोबऊतसे उपा
य श्रोरयत्नकिये परन्तुबादशाहने उसका कुछभी कहनान माना श्रोरभेंटबऊत पसंद
करस्वीकारकी श्रोर अलादीनकी मातासेकहातुमजाके अपनेपुत्रको यहांलाश्रोमुझेउस

सत

११५

115

केदेखनेकी बहुतलालसा है और जो मैंने प्रतिज्ञा की है उसे संपूर्ण करूंगा अलादीनकी माता
यह शुभसमाचार सुन अलादीनके बुलानेको घरदौड़ीगई और उधर बादशाह दरबारियोंको
बिदाकर अपने महल में गया और अपनी पुत्रीके सेवकोंको आज्ञा दी कि वह सब पात्र मेरी पु
त्रीको मकानमें लेजाओ और आपभी उनरत्नोंके देखनेको वहां होगया और उन असीगुला
मोंको अपनी पुत्रीके घरमें बुलवाय बराबर खड़ा किया शाहज़ादी दरवाज़े की दरारसे ऐसे
पदार्थ और गुलामोंको देख विस्मितहुई जब अलादीनकी माता घरमें पहुंचीतो अलादीन।
से कहा बेटा धन्य है तेरी सौगात बादशाहने पसंदकी और सबने एकमन होय कहा कि तू
योग्य है कि शाहज़ादी बदरबदौरा तेरेके व्याही जावे तथा बादशाहने भी तेरेके बुलाया है
कि अपनी पुत्रीका हाथ तेरे हाथमें पकड़ादे अलादीन यह शुभसमाचार सुन महा प्रसन्न
हुवा और मातासे कहनेलगा कुछ ठहरजा मैं अभी चलताहूं यह कह मकानमें गया औ
र दीपक को निकाल रगड़ा रगड़तेही वह वीर प्रकट हुआ और उसी विधिसे आधीनता क
रनेलगा अलादीनने कहा है वीर मैं हम्माम किया चाहताहूं तू एक कपड़ेका जोड़ा बादशा
होंके पहिरनेका मेरे डौलके बराबर तैयार ला वह बात सुनतेही उसका हाथ पकड़ एक सं
गमरमरके हम्माममें जो बहुत सुंदर और अनेक विधिके रंगोंसे चित्रित और अलंकृत था लेगया।

या अलादीनने तोशाखाने में वस्त्र उतार कर थोड़े गर्म जल में गया और भले प्रकार मल मल न्हा
या और भांति २ की सुगंधे अपनी देह में मली और वहां से निकल उसी तोशाखाने में जहां परि
ले वस्त्र उतारे थे आया वहां उसने अपने शरीर को पहिले से गोरा और कोमल पाया और रु
ख उसका चंद्रमा के सदृश दमकने लगा और सब शरीर के जोड़े में खुली और चलाकी
आ गई और उस स्थान में एक जोड़ा बहुत भारी एक बाफ़्ता देखा सो उसने बीर की सहायता से
उसे पहिना और प्रतिवस्त्र को देख आश्चर्य में हुवा जब पहिन चुका तो बीर ने उसे घर में प
चाकर सखा ऊबछ और आवश्यकता हो तो उसको भी आज्ञा दी मैं उसको यहां ले आऊं उ
सने कहा एक घोड़ा बहुत सुंदर ला कि वैसा किसी बादशाह की अवश शाला में न हो और
उसका साज सामान एक करोड़ रुपये का हो इसके विशेष बारह गुलाम स्वच्छ मेरी सेवा
के हेतु मेरे दहिने बांये और मेरे पीछे रहें और बीस सेवक मेरे आगे चलें और छह बांदि
यां अति स्वच्छ और उज्ज्वल वस्त्र पहिरे मेरी माता की सेवा के लिये और दो लौंडियां और।
दो स्वच्छ जोड़े मेरी स्त्रिया और उसकी माता के लिये और दश तोड़े अशरफियों के मेरे वास्ते व
ह यह आज्ञा पानही गुम हुवा एक क्षण पीछे वह सब वस्तु ले आया अलादीन ने चार तोड़े
तो अपनी माता को दिये कि आवश्यकता पर बादशाह के मकान में काम आवें और छः तो

सत्
११९
116

ई छः दासोंको देकर कहा तुम मेरे घरसे बादशाहके मकान तक मुट्ठी भर अशरफियां भिक्षुकों
को फेंकियो और तीन बांई और तीन दहिनी और रहना और बीस आगे २ चलना और छः बां
दियां अपनी माको देकर कहा कि यह दासियां तुम्हारी सेवाके निमित्त हैं और दो भारी जोड़े
दुशाले हैं जो और उसकी माताके लिये देना फिर वीरको विदा किया कि अब तुम्हारा कुछ का
म नहीं आगे जो कुछ होगा तुमसे कहूंगा यह सुनकर वह प्रसन्न भया अलादीनने एक दाससे पहि
ले अपने आगमनका समाचार बादशाह को कहला भेजा जब वह दास बादशाहके सन्मु
ख गया और यह पैगाम अलादीनके पास लाया कि बादशाह तुम्हारी बाट देखते हैं शीघ्र
चलिये तो अलादीन घोड़े पर सवार हुवा और सेवक उसके दाये बाये और आगे पीछे हुये
यद्यपि अलादीन जन्मभर घोड़े पर सवार न हुवा था तथापि घोड़े पर सवारों के सदृश सवा
र होकर दो उत्ता कुदाता गलियों से निकल बाजार में पहुंचा हजारों लोग चकित और देखने
को इकट्ठे हुये और वह छः दास अलादीनके दोनों ओरसे मुट्ठी भर २ अशरफियां फेंकने
लगे भिक्षुकोंने अलादीनकी उदारता देख आश्चर्य किया और परस्पर कहने लगे आज त
क कोई मनुष्य ऐसा दाता इस मार्गसे न होगया और पुरवासी जिन्होंने अलादीनको आगे फटे
हालोंसे देखा था इस सजधजसे उसे देखकर न पहिचान सके और विस्मित हो कि यह कौन न

वोन मनुष्य इसहमथामसे जाताहै जिसने बादशाहको ऐसी सोगातभेजी और आपभीऐ
सेही वस्त्र पहिरेहैं किकभीहमने बादशाह कोपहिने नंहीदेखा औरघोडाभी वैसाही
बहुमूल्य जिसकासाज औरसामान बहुमूल्य रत्नसेजड़ाहुवाहै निदान यह समाचार
सुनकरकि बादशाहने अपनीपुत्रिकाविवाह इससेठहराया है अतिप्रसन्नहुये औ
रएक मतहोय कहनेलगे यह मनुष्यनिस्संदेह शाहजादीके विवाह के योग्यहै फिरज
बबादशाहके महलमें पहुंचा औरउधरसे वजीर आजम औरदेशा देशोंके सरदार उस
की अगवानीको आये अलादीनने दरवाजेपर पहुंचकर चाहाकि घोड़ेपरसे उतरैपरस
दोंने उसेउतरनेसे वर्जा औरआगेभी उसेसवारलेगये जबवहकरीबबादशाहनिक
टपहुंचातो वहांके लोग उसे घोड़ेसे उतारदो पंक्तियोंके मध्यमें बादकेशाहके समीप
लेगये बादशाह उसकास्वरूप और आभूषण वस्त्र देखमहाप्रसन्नभया अलादीननेचा
हाकिबादशाहके चरणोंःपरगिरे परंतुबादशाहने हाथपकड़ तख्तपर उसेउठालि
या और अपने औरमंत्रीके मध्यमें उसेबैठाया ~~औरअपने औरमंत्रीके~~ अलादीनबादशा
ह से कहनेलगामैं यहांका बासीहूं औरबदर बदौराके मोहसेमेराजीना कठिनहै बा
दशाहने उसेकंठसेलगाय उत्तरदियाहै पुत्रका तेने मुझे अन्यायीसमझा औरमेरे वा

कापार विस्वासनहीं रखते और एकदलाणके लिये ऐसा कहते हो मुझे तुम्हारे प्राण बहुत प्यारे हैं जैसाकि मैं तुझे सुनताथा वैसाही पाया इतना कह बादशाह ने सैन कीतो बहुत और ऐसे ढोल नफीरी और दमामे बजने लगे इसके अनंतर बादशाह अलादीन को अपने महलमें ले गया जहांसब असबाब भोजनका तैयार था सो उन दोनों ने इकट्ठे बैठकर भोजन किया बादशाह लाण पलपर अलादीनको देखता और हरतरह की बातें उससे करता रहा निदान जबतक वह भोजन करते रहे तबतक परस्पर बातें करते रहे बादशाह ने अलादीनको बाचालता में बहुत चतुर पाया जब भोजन से निश्चिंत हुये तो बादशाह ने नगर के काज़ी को बुलाया और निकाह नामा लिखने की आज्ञा दी फिर मंत्री और अपहालाओं के सामने अलादीन से वार्ता की अलादीन ने ऐसा अच्छा उत्तर दिया कि सब ने पसंद किया और उसकी बुद्धि और चातुर्य्य और बाचालता पर सबने धन्य २ कहा जब विवाह हो चुका तो बादशाह ने अलादीन से कहा जो चाहो तो आज के दिन इसी महल में रहो कि सब विवाह की रीतें की जावें उसने बिनय की कि यह बात मेरे खुशी और इच्छा पर रखिये मैं एक अति सुंदर महल अपनी प्रिया के लिये बनवाया चाहता हूं बादशाह ने कहा मेरे महल के सामने बड़ा विशाल मैदान है जहां कहीं तुम चा

हो अपना महलबनवाओ यहकह बादशाहने हृदयसे उसेलगाय विदाकिया वहघो
ड़ेपरसवारहो उसीविधिसे अशरफियां लुटाताहुवा गया औरचहुं औरसे धन्य २ काशब्दहु
वा जबवह अपनेघोड़ेसे उतरघर पहुंचाता तो अपने मकानमेंगया औरउसदीपककोर
गड़ा तुरंतही वही वीरप्रकटहुवा औरजोवह बाक्यकहताथा कहे अलादीन ने क
हा आजतक जोमैंने कहा वहतूनेकिया अबमैं कहताहूं किमेरे वास्ते एक महल अ
मुकमैदान मेंबादशाहके महलके सन्मुखजितना अच्छा औरजल्दी बनासकेकि मेरी
प्रिया उसमें आकेरहे औरजिसपत्थरकाचाहे उसीपत्थरका बनाना औरउसकेऊ
परएकबड़ी बारहदरी गुम्बज़दार केवलसोने रूपेकीहो और हरतरफ छः छः दरवा
जे तय्यारकर और उनमेंहीरे लाल आदिक जड़िये परंतुएकदरवाजह सादारखिये
उसमें रत्नमति जड़िये प्रयोजन यह हैकिवह बारहदरी एसीसुंदर बनेकि वैसीसंसा
रभरमें नहो औरमैंचाहताहूंकि आगेउसमहलके दीवानखानहो औरएकबहुतबड़ी
स्वच्छपुष्पवाटिका और रसोईघर औरएकखजाना जिसमें असंख्य धनरुपये अशरफी
हों और उसमें वस्त्रप्रति ऋतुकेतय्याररहें औरएक अश्वशाला जिसमें अच्छेबहुमूल्य
घोड़े औरसाईस और दारोगा समेतरहें औरसोईमें बहुतसे रसोइये जोसबभांतिका

भोजनपकासकैरहैं और असंख्य अनुचरियां मेरीप्रिया कीसेवाकेलिये इसके विशेषरहैं
जो कुछमैं इससमयवर्णनकरने मेंभूलगयाहूं वहसब शीघ्रहीतय्यारकर जब बनाचुके
तोमुझेसकहदीजियोउस समयसबथीलहोनेवालाथा जिससमय अलादीन नेयह आ
ज्ञादीयह सबवीरउसमहोगया अलादीन रात्रिकोउस महासुंदरी कोमलांङ्गी कीसुधिमें
महा चिंतितरहा निदान पिछलीरात्रिको तनक उसकी आंखलगी औरप्रभातकोजाग
तेही वीरने आयकहाहे स्वामीमहल आपकाबनगया चलके उसे देखियेकि तुम्हारी
इच्छानुसार बनावा नहीं।पुनिवह वीरउसे उठाकेक्षणभरमें उसनवीन महलमें लेगया
अलादीनने उसे आपने विचारके अनुसारपाया औरउस मकानकोदेखाकिठौर २ मेंला
खों औरकरोडें रुपये कीवस्तुलगी इसके विशेष उसमेंहरप्रकारके दारोगा औरकाम
करने वाले स्त्रीपुरुषलौंडी आदिक बहुत उत्तम २ वस्त्रपहिनेहुये औरसब अपना २
कामकरतेथे औरइसीभांति बहुतसेकोष खजानचीसमेतदेखे जिसमेंबडे २ संदू
कभरेहुये औरसुनहलीथैलियां औरविविधभांतिकी वस्तुओंकोयथेच्छ विद्यमान दे
खकर अति प्रसन्नहुआ फिरवहवीर अलादीनको अश्वशाला मेंलेगया वहां नानाप्रका
रके संसारके चुनेहुये घोडेदारोगा औरपालक समेतथे इसके अनंतर वह उसे तोशाखा

ने मैं लेगया जहां प्रतिवस्तु आवश्यकता की वर्तमान थी निदान संपूर्ण मकान नहरवालों
से वाला खोनों तक अलादीन ने देख विशेष बाहरदरी जिसमें चौरवीस दरवाजे थे औ
र उसमें असबाब और सामान सोने चांदी और चित्र के देख अति प्रसन्न होय वीरसे कहने
लगा जो कुछ मेरा विचार था उससे मैंने अधिक पाया परंतु एक वस्तु रह गई है जिस
का वर्णन मैंने तुमसे नहीं किया था वह यह है कि एक बड़ा कालीन सुच्छ मखम
ल का लाकर बादशाह के महल से इस घर तक बिछे चौड़ान उसका लंबाई के समा
न हो कि बदर बदौरा बादशाह से बिदा हो तो समय उसी कालीन पर होके आवे उसने
कहा बहुत अच्छा क्षणमात्र में उसे भी लाता हूं अलादीन ने थोड़ी देर में एक कालीन उ
तना ही लंबा चौड़ा अपने घर से राजमंदिर तक ठीक बिछा हुवा देखा फिर उस बीरने उ
से नये महल से उसके घर पहुंचाय दिया और इस नवीन महल के दरवाजों को जो बा
दशाही महल के सामने थे खोल दिये द्वारपालकों ने प्रभात को जब द्वार खोले तो उ
स मैदान में एक बड़ा विशाल नवीन महल तय्यार देख आश्चर्य में हुये और अधिक त
र उनको इस बात का अचंभा हुआ कि एक बहुत बड़ा कालीन उस नवीन गृह से बादशा
ह के महल पर्यंत बिछा हुवा है सो उनके द्वारा संपूर्ण महल में यह वात विख्यात हुई ज

स
त्र
११९

119

जबमंत्रीबादशाहके महलमें आयातो उसनेभी अलादीनका शहदेख अचंभा किया
औरदौड़के यह समाचार बादशाहकोदियाकि आपके मंदिरके सामने बड़ा महल
भ्रमधामका दृष्टि पड़ताहै सुनिकहने लगास्वामि यहसबकाम जाहूका जानपड़ताहै बा
दशाहनेकहा ऐसाकदाचित नहीहोगाजैसा तुमकहतेहो यहमहल अलादीनका है
कलकेदिनउसनेमुझसे बदरबदौराके अर्थमंदिरबनानेकी आज्ञालीथी उसने अपने
व्ययवश्ययकर अति शीघ्रबनवाया है बय बहु धनके बलप्रतिदिन नवीनमहल बनवा
सक्ताहै परंतु तुईर्षासे उसके कामोंकोजाहूका संदेह करताहै यद्यपि दरबारकासमा
य आनंदपूर्वक था इस लिये उन्होंने इसविषयमें अधिकवार्त्तानकी औरअलादीनने आप
नेयुवयज्ञव बीरको विदाकिया और माताकोवस्त्रपहिनने देखसबका अबबादशा
हदरबारसे निश्चिंतहुआ होगा तुमइनबांदियोंकेसाथ जिनको वीरलायाथा बादशा
हके महलमेंलेजाओ औरउलादिन कोजाके दोनोंजोड़े और आभूषणदो फिरकहना
कि बादशाहभोउलाहनके साथ आकरमेरे भवनको पवित्रकरें यह सुन उसने बाद
शाहजादियोंके सदृश सबवस्त्र पहिरे औरदासियोंनेभी अच्छे अच्छे जोड़ेपहिने
औरखुरका मुखपर जाला बादशाहके महलकी सियारी और अलादीनभी उसी विधि अ

शरफियां लुटाता अपने नवीन मंदिरको और चला जब अलादीनकी माता बादशाहके दर
वाजेपर पहुंची तो चोबदारोंने आगमनका समाचार बादशाहको पहुंचाया बादशाहने सु
नतेही बाजोंके बजनेकी आज्ञादीसो चहुं ओरसे खुशी और उत्सवके बाजे बजने लगे जि
नसे नगर भरमें खुशी फैलगई व्यापारीयोंने अपनी अपनी दूकानें अलंकृतकर बंदनहार
बांधे और सुंदर कालीन बिछाये और रात्रिको बड़ी रोशनी कीकारीगर और नगरबासी
अपना अपनाकाम छोड़ दुलहिनकी सवारी देखनेको उसमैदानमें जोबादशाही महल
और अलादीनके महलके मध्यमें था एकत्र हुये और वह नवीन विचित्र भवनदेख आश्चर्य
में हुये खोजियोंकासिरदार अलादीनकीमाता की अगवानीकर शाहजादीके मकानमें ले
गया औरशाहजादीने भीउसकी अगवानीकर उससे मिलभेंटकी फिर अलादीनकी मा
ताने वस्त्र और आभूषण उसेदिये औरअनुचरियों नेशाहजादी कोपहिराये जबवह वस्त्र प
हिरचुकीतो बादशाह भीवंहीं आया और अलादीन कीमाताका सावखुला देख आश्चर्य
में हुवा औरमनमें कहनेलगा मैं जानताथाकिवह दृद्धाहोगी परन्तुवह तो अभीतरुणऔ
र सुंदर औरबुद्धिमानहै निदानसंध्यासमय दुलहिन बादशाहसे बिदाहुये औरपरस्परके
ठ लगरोये वह उसदिव्यमंदिरकोपधारी अलादीनकी माता सोबांदियां लेकरजोबहुमत्र

स
त्व
१२१

120

छे चीरपहिरेथी पीछे उसकेहोलीजब पादशाहीमहलके बाहरआईतो एकओरसे सौ स
रदार औरपहनेहो खोजीहजरी औरबड़ेऋमथाममेंशाहजादीके आगेहोलिये तत्पश्चात् बाद
शाहके चारसौदास स्वर्नहरी वर्त्तनकापटका औररत्न जटित वस्त्राभरण औरसुंदरयेपियोपहि
रेचले फिरशाहजादी औरउसके पीछे उनकी अनुचरियां औरउनसबके पीछे चारसौख सिपाहि
योंकेझुंडजिनकेहाथो मेंप्रकाशकेनिमित्त एक२ दीपकथा जिसकेप्रकाशसे दोनोंभवनोंके म
ध्यमें दिनप्रतीतहोताथा उससमूहके मध्यमेंशाहजादी चंद्रवदनी उसीसुच्छकालीनपर हंस
चालसे धीरे२ पैदल जातीथी औरउपरउसविचित्र मंदिरकीजेमनियां छतोंपरशाहजादीके
साम्हने मुबारकबादीके रागगातीजिनके तालऔर स्वरोंकाशब्द दूर२ पहुंचताथाजबदुल
हिन इससजधजसे उसीविचित्र भवनमें पहुंची तो अलादीन प्रसन्नहो उसको कुशल पूछ
ने चला अलादीनकीमाताने उसे पहिचनवाया क्योंकि मैंकहि बादिया अच्छे२ उत्तम२ व
स्त्र पहिनेथी निदानजबदूल्हा औरदुलहिनने परस्परभेंटकी तोशाहजादी अलादीनकी
सुंदरताकोदेखमहाप्रसन्नहुई और अलादीनने अति नम्रहोय उससेकहा अहोभेरे भाग्य।
तुमऐसी कोमलाङ्गीशाहजादीने मुझऐसे अभागेके ऊपर कृपाकी और ईश्वरने संसारभर
की सुंदरता तुमहीकोदीहै उसनेकहाहै शाहजादेमें अपने पिताके आधीन औरउनकीआज्ञा

ज्ञापालकथीजोहुआ उसने मेरेवास्ते विचारामें नेउसेस्वीकारकिया परंतु अबजोमेंने आपको
अपने नेत्रोंसेदेखातो मनसेप्रसन्नहुई अलादीन इस उत्तरसे बहुतप्रसन्नहुवा और उसका ख
ड़ारहना उचितनसमझाक्योंकि वह इतनीदूरके चलनेसेथक गईथी इसलिये उसकाहाथ
लेम बारहदरीमें जिसमें असंख्य मोमीबत्तियांकाफूरीजलतीं और असंख्यदासियांविद्यमा
नथींलेगया वहांभांति २ केभोजनोंकेपात्रविछेहुयेथे औरउनपर सुनहली रुपहली
रकाबियांस्थान २ परचुनीहुई और अन्नभाजन सम्पूर्णसुनहले औरसुंदरबनेहुये उचित २
स्थानोंपर रखेहुयेथे औरवहबारहदरी औरमकानोंसे बहुतअच्छीबनीहुई औरकरोड़ों
रुपयेकीवस्तुसे अलंकृत औरशोभायमानथी शाहजादी उसेदेख अपने पतिसेकहनेलगी
मैं यहजानतीथीकिमेरेपिताके महलकेसदृश संसारमें कोई महलनहोगा परंतु इनम
कानोंकेविशेषकर इसबारहदरीकेसामने वादशाहके महलतुच्छहें फिर अलादीनने
उसेभोजनपरबैठाया और आपदूसरी ओरउसके सन्मुखहो बैठा औरएक ओर उसकीमा
ता बैठगई शाहजादीके बैठतेही सुंदरगानेवालियां उत्तम २ साज बजानेलगीं और स्वरमि
लाय २ मीठेशब्दसेगानकरनेलगीं जबभोजनसे सुचितहुये शाहजादीकहनेलगी नतोमें
नेजन्मभरऐसे साजसुने औरनगाना वह यहनजानतीथी कियह गायनियां अप्सराहें जि

स
न्टे
१२१

121

न्हैं विचित्रदीपक कावीरयसे करकेलायाहै इतनेमें भोजनकेयात्रभटपट उठगये औरएकस॰
मूह नाचनेवालोंका जिनमें स्त्रीऔरपुरुषदोनोंथे आयाऔरभांति २ सेनृत्यकिया औरविह्
रनकेलिउस नगरकी रीतिके अनुसारकोजनइसीतरह आधीरात्रि वीतितोबद्दा कीरीतिके
अनुसार अलादीन औरशाहजादीदोनो नाचिकेतो कियइ एकचीनमें प्राचीन रीतिथी कि
दुल्हाउलहिन आपभी नाचते निदानजबयह सब होचुकीतो अलादीन अपनीस्त्री
का सोनेके मकानमेंलेगयावहांलौंडियोंनेउलहिनको रात्रिके वस्त्रपहिराये औरउसका
परबुटेमें लेगईं औरइसीभांति दासियोंने अलादीनकेवस्त्र उतार सोनेकेकपड़े पहिनाये
औरसबवहांसे निकलआईं अलादीनरात्रिभर आनंदपूर्वक सोतारहा दूसरेदिनप्रभा॰
तको अलादीन जागातो बांदियांसब वस्त्र उसकेलियेलाई यद्यपिवह कपड़ोंकाजोड़ा प
हिलेदिन सजके रंगतमें भिन्नथा परंतुमैयारी उसकीवैसीहीथी औरएकघोड़ाभी उसकी
सवारीकेलिये लायासो अलादीनकपड़े पहिन औरविजुलीकेसदृशगतिके अश्वपरस
वारहोबादशाहके महल की औरचलाएकबड़ासमूह दासोंका उसकेसाथ जबबादशा
हने पहिलेदिनके समानउससे भेंटकी और अपने तख्तपर अपनेपास उसेबैठाया और॰
भोजन मंगायाथा कि अलादीनको खिलावे अलादीननेबिनयकी आजकेदिनमुझेनाबि

लाइये आजआपमेरे घरमेंसिधारिये अबमैं आपकेलेनेको आयाहूंकि आपइस किंकरके मह
लमें मंत्री आदिसमेत चलके भोजन कीजिये बादशाहने स्वीकारकिया और संबंधके कारन
इसभांतिचलाकि दाहिनी ओरउसके अलादीन औरबाईं ओरराजमंत्री औरउनके पीछे समग्र
सभासद और सबके आगे खोजियों कासरदारनिदान जबउनवीनमहलमें गयेहरएकम
कानके देखनेसे उनको अधिक आश्चर्यहोता जाताथायहांतककिबारहदरीमें जहांअ
लादीनने उनकेबैठनेको तय्यारीकीथीयऊंचा बादशाहउसकीचित्रकारी और सुंदरताको
देख अधिकप्रसन्नहुआकि उसमेंहीरे औररत्नादिकभीतर बाहर जड़ेथे थोड़ीदेरपीछे बा
दशाहने मंत्रीसेकहायेसा मंदिरहमारेराज्यभरमें नहीं औरयेसास्वच्छ महलमैंने अब
तकनहीं देखाउसनेबिनयकी परसोंतकविवाहके पहिले इसमहलका कहींचिन्हभी
नहींथाकेवल एकरात्रिमेंयहयेसाविशाल औरसुंदर महलबनके तय्यारहोगयासोमैं
नेपहिलेही तय्यारहोनेको खबरदीथी बादशाहने कहासत्यहै यहबातमुझे भूलीन
हीं परंतुमैं यहनसमझाथा किऐसा उत्तमघरवनाहोगाजिसमेंसंगमरमरके बदलेसुन्ह
ली औररुपहलीईंटें लगीहैं औरसुंदरझांरोंमें लोहे औरपीतलकेबदले अनमोल रत्नादि
क जड़ेहैं इतनेमेंदरवाजोंकोदेखनेलगाऐसा उनमेंकेवलजेईस दरवाजे जड़ाऊथे औरचौ

स
न्हे
१२२

122

वीसवांसादाथा इससेअति आश्चर्यमेंहोकर मंत्रीसे कहनेलगा यद्यपिबारहदरी औरइसमं
दिरमेंरत्न जडेहैं परएकदरवाजा सादाकौंरहगया उसनेकहा मालूमहोताहै कि अलादी न
को इसकेबनवानेका अवकाशनंही मिलाहोगा आगेउसीनेय्यारकरावेगा सामानइसका उसके
पासहोगाजबचाहेगा बनवालेगा अलादीन उससमयकिसीकामकोगयाथा जबउसकामको
करकेबादशाहकेपास आयातोबादशाहने अलादीनसे कहातुम्हारीबारहदरी संसारमेंअ
नूठीहै परंतुइसकाक्याकारणहै कितुमने एकदरवाजासादारक्खा यातोकारीगर भूलगयावा
उसके बनवाबनेका सामान नंही निकलाअलादीनने कहायहकोईकारण उसकेसादारहने
कानंही किंतुमेरीही आज्ञासेउसनेदरवाजेकोसादारक्खाइसलिये दयाकरके आपबनवा
दीजियेबादशाहनेकहाजो तुम्हारीयही इच्छाहै तोइसीकोनय्यारहोजावेगो जितनेरत्नद
रकारहों मैंदूंगा इतनाकह उसने आज्ञादीजितने चतुररत्नपारखी इसनगरमेंहों सब आवेंज
बपादशाह बारहदरीसनीचे उतरातो अलादीनबादशाहकोमकानमें लेगयाजहां अपनी
प्रियाकोभोजनकरायाथा एकक्षण पीछे वह चंद्रमुखी भीआई बादशाहने उसबडेनख
रअलादीनबादशाह समेतबैठे औरदूसरीजगह मंत्रीआदिक सम्पूर्ण आयिथानाबैठकरके

विसर्वकभोजनकरनेलगेजबबादशाह भोजनसे निश्चिंतहुवातोसबभोजनोंकी प्रशंसाक
रकहनेलगाकिमैंनेकभी ऐसेस्वादिष्टभोजन नहींखायेफिरबारहदरीकेचहुँ ओरनाच
रंगहोनेलगाबादशाह इनके महाप्रसन्नहुवाजबसबकामहोचुके तोइतनेमेंमंत्रीने बा
दशाहसे बिनयकीकिरत्न पारखी आगयेहैं बादशाहने उनको बारहदरीमेंलेजाके दि
खाइदियाये औरकहनेलगाकिमैं चाहताहूं कियहदरवाजाभी औरोंकेसमानरत्नोंसेजड़ा
जावे तुमसबदरवाजोंकाकाम अच्छीतरह देखो औरयोंबी सर्वकोभोशी यबनाओ उन्होंने
उसे भलीभांतिदेखकहाहम आपकेप्रतापसे बनासक्तेहैं परंतु ऐसेरत्नहमारे पासनहीं
बादशाहने कहाजितनेरत्न तुमको आवश्यकहोंगेमैं दूंगाजबमैं अपने महलमेंजाऊंतब
ममेरेपास आनामैं तुमको बहुतसेरत्नदिखाऊंगा उनमेंसे अच्छे २ चुनलेनानिदानबा
दशाहमे अपने भवनमें आया उनरत्न पारखियोंको बुलाय अपनेजवाहिरातजो अलो
दीनकीमाताने भेंटदियेथे उनसबनेएक महीनेमें उनसबको उसदरवाजेपर जड़दियातो
भी आधादरवाजानबना जब अलादीनने देखाकिसबरत्न लगचुके औरबादशाहकेरत्नखर्चहो
गये औरवहदरवाजा औरोंकेसदृश नैय्यारनहोसका तबउनकारीगरों सेकहनेलगा य
ह सबरत्न बादशाहके जोतुमने लगायेहैं उखाड़के लेजाओ बादशाह औरमंत्रीकोदे

वह थोड़ेही कालमें उठ खड़े होकेले गये जब अलादीन एकांतमें हुवा तो उसी विचित्र दीपक को रगड़ा तो वीर प्रकट हुवा और वही आधीनता के वचन कहे अलादीन कहने लगा हे वीर मैंने तुझ से आगे कहा था कि चौबीसवें दरवाजे को तू सादा रखियो सो तूने वैसा ही किया था अब मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि तू उस द्वार को भी रत्नों से जड़ दे वीर यह सुनतेही गुप्त होगया और अलादीन भी वहां से कहीं चलागया फिर जो कोई लोग के पीछे आया तो क्या देखता है कि वह भी औरों की भांति सहशबन गया है फिर उन्हीं कारीगरों ने जाय बादशाह से यह संपूर्ण समाचार कह सुनाया और वह रत्न जो बादशाह और मंत्रीने दिये थे उसके सन्मुख लेगये बादशाह यह सुनते ही सवार हुवा और अलादीन के महल में पहुंचही पहुंचकर घोड़े से उतरा और अलादीन को खबर दिये बिना बारह दरी पर चढ़ गया अब जब अलादीन ने सुना कि बादशाह अकस्मात् आ पहुंचा तो चबराके चाहा कि उसकी अगवानी करे परंतु बादशाह ने उसे आने का अवसर न दिया और तुरंत ही उस स्थान पर जहां अलादीन था पहुंचगया और कहने लगा हे पुत्र मैं केवल यह हाल सबसे पूछने आया हूं कि तुम ने क्यों इस खिड़की को बनने न दिया और मेरे कारीगरों को रत्नों समेत क्यों लौटाया इसका क्या कारण है उसने कहा आपने पहिले उस दरवाज़े को सादा देखा था परंतु अब वह भी और दरवाजों के सहशबन

गया है बादशाह ने जाकर देखा कि वह दरवाजा औरों के समान बनाऊ वा है अंत को न प
हिचान सका कि साटा किवाड़ कौन सा था तब उसने अति हर्ष से अलादीन को पगड़ी से।
लगाया और उसके भाल को चूमा और आश्चर्यित हो यह कहने लगा हे पुत्र तुम अद्भु
त मनुष्य हो तुमने बराबर ऐसे काम किये जो मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर हैं तुम्हारे स
मान जगत में कोई मनुष्य न होगा अलादीन ने बादशाह की प्रशंसा करने से अपना सिर नी
चे झुका लिया और कहने लगा यह सब आप की बड़ी कृपा है जो आपने ऐसा कहा न
हीं तो मुझ ऐसे अयोग्य के बना लेने की क्या सामर्थ्य थी इतना सुनकर वह तो चला गया औ
र अपने भवने में पहुंच राजमंत्री से यह सब काम कहे मंत्री ने यह सब काम जादू के सम
झकर विनय की कि यह सब काम जादू के मालूम होते हैं सो ऐसा ही इस दास ने पहले
भी विनय किया था बादशाह ने कहा तू इसी से कहता है अभी तू मेरी पुत्री का विवाह अ
पने पुत्र के साथ होना चाहता है मंत्री समझा कि बादशाह महा मूर्ख और योग्य में है
कि इस विषय में किसी की बात नहीं मानता फिर कभी इस विषय में उसने बात न की
बादशाह बड़ा था प्रभात को जग के उस सुंदर मंदिर को देखता और प्रसन्न होता और
अलादीन ने यह नियम किया था कि सप्ताह में एक दिन बाजार में जाना और हर तरफ की

स
त्य
१२४

124

सैरकरता कभी २ मसजिद्में निमाज़पढ़नेजाता औरकभी २ मंत्रीकी भेंटको जाता औ
रकभी अपने विचित्र भवनमें दरबारकरता औरकदापि अमीरों और सरदारोंके घरमें
जाता औरवहभी उसकेमंदिरमें आकरभोजन करते और अलाउद्दीन नेदो दासोंको इस
कामकेलियेनियतकियाथा किजबमैं सवारहोकरबाहर जाऊं तोतुम मार्गमें दोनोंओ
रसे अशरफियां लुटाना इसलिये बड़ासमूह मनुष्योंका उसकी सवारीके चहुंओर इ
कट्ठाहो जाता औरबहुतसे लोग उसकी सवारी औरधूमधामके देखनेको आते औरजो
भिक्षुक औरनिर्धनाशिथिल औरनिर्बलथे औरउसके मंदिरतक पहुंचनेकी सामर्थ्य न
रखतेथे वहसब नगरमेंही रुपयेपातेइसके विशेष प्रतिसप्ताह मेंवह एकबेरशिका
रको जाता औरकभी नगरकेबाहरशिकारखेल शीघ्रही चला आता औरकभी नगरसे
बहुतदूरनिकलजाता औरनगरनिवासियोंको अपनी उदारतासे धनवान् बनादेता उसके
उदारता सेपुरवासी उसे आशीर्वाद दियाकरते औरयहसाधारण जानते कि उसके सिरकी
सौगंद खाते औरअलाउद्दीन बादशाहको भी अपनेसे प्रसन्नरखता इनलोगोंके विशेषम
हापुरुषार्थीथा औरचाहताथाकि इसयत्नसेभी बादशाहको जानकरे दैवयोगसेकथा
सुनाकि बादशाह किसी नगरके लेनेकेलिये सेना इकट्ठी करताहै यहसुनतेही अलादी

नेने बादशाहसेकहा इसयुद्धको मेरीमति पररखिये और मुझको उसका अधिकार दीजि
ये बादशाहने स्वीकारकिया अलादीन ऊरसेना साथले अकस्मात् नगरसेबाहर गया औ
रथोड़ेही कालमें अपनेउपाय औरयत्न औरथोड़े कटकसे अपनेवैरीकोपराजय कियाबा
दशाह महजयका शुभसमाचारसुनअतिप्रसन्नज्ञवा औरइस कामसे उसकानाम दूर२
केदेशोंमें प्रसिद्धज्ञवा और अलादीनफिर अपने शहरमें लौट आया बज्जत वर्षपर्य्यन्त इ
सीभांति उदारता औरसत्कर्म सर्वकउस्ननगरमें रहा वह अफरीकी जादूगरजो चीनदेस
से अफरीकामेंपज्ञचाथा समझाकरताथा कि अलादीन उसगढ़ेमें भूखातृषा और घ
बराहटसे निश्चयमरगया होगा इनदिनोंवह यहविचाराकि यद्यपि उसका जीतारहना
कठिनथा तथापि रमलसे उसकाहालमालूम करनाचाहिये सो उसने दालानमें बैठके य
कचौकोन संदूकचा जिसमेंरमलकी पुस्तक और उसके विधानकी वस्तुथी खोला औ
रएकवस्तुकोजिसमें रेतभरीज्ञईथी उठाकर उससे अलादीनके ग्रहदाखने लगाकि अ
लादीन अस्तकस्थान परमुवाहै वा नहीं बड़े विचारसे जानज्ञवाकि अलादीन जीताहै
औरबड़ा धनवानहै उसकाविवाह चीनकी बादशाह ज़ादीकेसाथ ज्ञवाहै इसबातके मा
लूम होतेही उसकामुख डाहके कारण लालहो गया औरमारेक्रोधके रुधिरटपकने

स
ट
१२५

125

लगा औरकहने लगाबड़ा खेदहै किवहउस स्तुतीकारका छोकरा दीपकके कारण
यह आनंदभोगे और मज़ेलूटे और मेरेजन्मभरका श्रमफल उसपामही अबजाके ऐसाउ
पाय करनाचाहिये कि उससेवह विचित्र दीपकले लूंवा वहां उसे मारडालूं दूसरेदिनशी
घ्रगामी घोड़ेपरचढ़ चीनको औरचला औरमार्गमें सिवाय दम लेनेघोड़ेके कहींनठहरा
नगर २ देश २ लांघता चीनमें पहुंचा औरकिसी सरायमें उतरएक घरकिरायेपर लिया वे
वलएकहीरात्रिमें विश्रामकर दूसरे दिन अलादीनके ढूंढने कोनिकला निदानढूंढते २
एकसमूहमेंपहुंचाजहां बहुतसेमनुष्य बैठेचाह पीतेथे उन्होंने एकपात्रभरके इसेपिला
या वहउसकी बातोंपरध्यानरखने लगा वहांसब परस्पर अलादीनका बखान करतेथे
अफरीकीने औसरपाय एकमनुष्यसे सवालतुमकिस समंदिरका वर्णन करतेहो उसने उ
त्तरदियातुमविदेशी जानपड़तेहो तुमनेक्या अलादीनका विचित्र मंदिरनहीं देखा औरन उ
सकाहाल सुना जबसेबदर बदौरशाहज़ादी काविवाह उसके साथ हुआ है सबकोई उ
से शाहज़ादा कहते हैं उसका विचित्र भवन संसारभरमें अद्भुतहै अर्थात जगतभरमें ऐसा
अपूर्व मंदिरन होगा तुमनेभी किदूर २ देशोंसे आनेहो निश्चयहै किऐसा मंदिर कहीं
न देखानसुना होगा जबतुम उसे देखोगे हमारी बातका विश्वास मानोगे उसनेकहा।

होमैं विदेशी हूं कलके दिन अफरीका खंडसे यहां आया हूं अबमैंभी उस विचित्र भवनको
देख अपने मनको प्रसन्न करूंगा आपदया करके उसका पता बता दीजिये साउन्होंनेब
ता दिया जबउस अफ्रीकीने उस अपूर्ण भवनको चहुंओरसे भलीभांति देखातो उसेनिश्चय
हुआ कियह भवन उसीविचित्र दीपके द्वारा अलादीनने बनवायाहै औरयह यनेपस्वर्ष्य
उसीके कारणप्राप्त हुआ क्योंकि वह वीरजो उसदीपके आधीनहैं प्रतिविषयको निस्संदेह
करदेतेहैं औरयही बादशाहसे संबंधका कारणहुआ इतना विचार उसी सरायमें ज
हां वह उतराथा लौट आया औरयहवृत्तांतनिवेदन करनेलगाकि अलादीन उसविचि
त्र दीपकको अपने साथरखताहै याकिसी औरस्थानपर इसको रमलकी पुस्तक निका
ल विचारनेलगासो उसे मालूमहुआकि वह दीपक उसीमंदिरमेंहै उसमहाहर्षहुआ
कि अब वहदीपक लेकर अलादीनको दुःखदूंगा और अलादीन अहेराखेलने को नग
रके बाहर आठदिनके लियेगयाथा केवलतीनही दिनउसको गये बीतेथेये संपूर्ण
वृत्तांत वह दुष्ट अफ्रीकी मालूमकर सरायके मालिकके पासगया और उससे उसविचि
त्रभवनका बखानकर कहने लगामैं चाहताहूंकि जैसेमैं इसमहलकेदेखनेसे प्रसन्नहु
आ उसीभांतिसे उसमंदिरके स्वामीकोभी देखूं जबतक उसनदेखूंगा तबतकयहांसेजा

स॰ टी॰
१२९

126

नेको दुकान करूंगा सराय वालेने कहा यह बात कुछ कठिन नहीं वह मनुष्य बहुधा अपने
घरमें रहता है अब तीन दिन बीते कि वह आठ दिनके लिये शहरको गया है निश्चय है कि
वह पांच दिनके पीछे लौट आवेगा उसने इस विषयमें अधिक बातें नकीं और उठकर अ
पने मकानमें आया और मनमें कहने लगा यही समय काम करनेका है इसको हाथसे खो
ना न चाहिये फिर वहांसे उठकर कसेरेकी दुकान पर जो नबीन २ दीपक बनाता था गया औ
र कहने लगा कितनावेके बारह दीपक शीघ्र मुझे बनादे सकता है उसने कहा आज तो मैं न
हीं दे सकता परंतु कलके दिन निस्संदेह जब तू चाहेगा बनादूंगा उसने कहा बहुत अच्छा कल
ही बनादेना परंतु उनको उज्वल कर रखना और जो मोल उनका मांगेगा सो मैं दूंगा यह कह
कर वह अपने घरको आया और दूसरे दिन बारह दीपक उसी दुकानसे मोल ले एक उज्व
ल टोकरीमें रख और उसको बगलमें दाब अलादीनके विचित्र भवनकी ओर चला जब स
मीप पहुंचा तो बड़े शब्दसे कहने लगा कि पुराने दीपकोंके बदले नये दिये बेचता हूं नग
रकी गलियोंके बालक उसका शब्द सुन दौड़े आये और उसको विक्षिप्त समझ उसके
चहुं ओर खड़े होके हंसने और कुलाहल करने लगे इसी भांति जो कोई आता जाता था उ
सके शब्दको सुन हंसता और कहता कि ये महामूर्ख और विक्षिप्त है कि नबीन दीपकों

को पुराने दियोंसे बदलताहै वहजादूगरनतो बालकोंके शहरमे विद्यमानता औरनपुर
वासियोंकेकहनेसेउसे विश्वासहोतो अनुमानए यही प्रकारताथा कि नये दियोंकोपुरानेसे
बदलताहै इतनेमें उसकाशाह बदरबदौरने जोबाहर दरोमें बैठी हुईथीसुना परंतुभ
लीभांति नसमझसकी किवहक्या कहताहै क्योंकि उसके पीछे लड़केभी यौरशहरम
चातेथे निदानशाहज़ादीने एकलौंडी सेकहाकि तजाके इस शहरऔरबहुलाहलकाहा
लमालूमकर किवहकेसाहै थोड़ेही कालमें वहदासी वहांसे वारम्वार कोहंसती
हुई लौट आईशाहजादीने उससेपूछाकिहेमूर्ख तू अपने आपको इतना हंसती
है उसने कहाकिहे स्वामिनी एकमूर्ख मनुष्य अच्छे २ नवीन औरउज्वलतांबेके दी
पकोंकाटोकरालियेहुये है वह उन्हेंबेचता नहीं किंतु उनकोपुरानों से बदलता
है और उसके चंहुओरबहुतसे बालक उसकी अज्ञानता औरनिर्बुद्धिता परहंसमा।
ते और उसकोमसखरा बनाकर छेड़तेहैं दूसरी लौंडीनेकहाकि एकबहुतपुरा
नादिया इसी भवनमेंकानसपररखाहै जोआप आज्ञा देवेंतो हम उसको बदललावें य
ह वही दीपकथा जिसके कारण अलादीनको यह आनंद औरसुख प्राप्तहुआथा य
द्यपि अलादीनने अपनेविचारसे उसकी रक्षाबहुत कीथीपरंतुउसे उचितथाकि ऐसी

सर्व और अद्वितीय वस्तुको अपनी देहके साथ यंत्रकेसदृश बांधके रखना औरकदा
पि उसको अपने पाससे अलग न करना परंतु मनुष्यजोभूलकाभयङ्क आहै औरउसे एक
बुरेदिन औरऐसे वैरीको आकाशानथी औरशाहजादीनतो उसकागुणजानतीथी और
नकभी अलादीनने इसकी रक्षाकेलिये उससेकुछ कहाथा उसदासीके कहनेसे उसनेहं
सकर एकसेवकसेकहावह पुरानादीपकलेजा नवीन उज्वलदीपसे बदललासेवकनेय
ह आज्ञापातेही वहदीपकलेजाय अफ्रीकीसेकहाकि इसपुराने दीपकके बदले मुझेन
यादिया बदलदेवह मायावी उसेदेखतेही समझगयाकि यह वहीविचित्रदीपकहै उ
सेलेकर अपनी जेबमेंरख टोकरेको बठाकर सेवकसे कहनेलगाकि जौनसा दीपक
चाहेछांट करलेले वह उनमेंसे एकउज्वलसादिया उठायशाहजादीके निकटले
आया जब यहव्योहारहो चुकातोफिर बालकउसीभांति शोरकरने लगे उसनेकुछ
उनके शाहपरध्याननकिया औरअलादीनके भवनसे हटनिकल करचुपहोरहा उसके
चुपरहनेसे बालकभीइधर उधरचलेगये जबवहमैदान कीजो महलोंके मध्यमेंथातो
यत्नका और अप्रकटगलियोंसेराहलीतो उसने उनशेषदीपकोंको टोकरी समेत
किसी ओरफेंक दिया औरजल्दी २ चलनेलगाकि नगरके द्वारसेबाहरनिकल जायज

ब वह नगरसे निकल अपने प्रयोजनके सिद्धकरने के लियेगहरातो अपनेघोड़े औरवस्त्रको
जो सरायमेंथी छूटनेका कुछ खेदनकिया क्योंकि वहजानताथा कि अबउसे येसी वस्तु
मिलीहै कि जिसके द्वाराअसम्भवयत्न प्राप्तहो यहांतककि आधीरात्रि बीतीतब उसने दी
पक को अपनीनिवसेनिकालकर गड़ारगड़नेहीं वहवीरप्रगटहुआ औरकहनेलगामें
आपको आज्ञापालनमेंदासवत हूं औरउसमनुष्यके आधीनहूं किजिसके पासयहदि
व्यदीपहै अबकौनकाममें चाहताहूं किवह अद्भुत भवनजो हने और इसदीपको
के अनआधीनोंदीरोंने इसनगरमेंबनायाहै उसको सम्पूर्णवस्तु औरमनुष्यों समेत अ
रबके अकीकामेंलेजाय रावदी उसनेतुरंत उसके विचारानुसारकिया अवअवश्यहैकि
चीनके बादशाहके खेदका भी वृत्तान्तवर्णनकरें दूसरेदिनप्रभातको जबबादशाहनिद्रा
सेजगा औरअलादीनके विचित्रभवनकेदेखनेकोगया तोउसने वयाहमैदानकेसिवाय म
हलका कोईचिन्ह नदेखा समझाकि मुझेकुछधोखाहुआहै फिरउसने अपने नेत्रों
को भलेप्रकार मलकर देखाफिरभी उसेनिर्जनमैदान दृष्टिपड़ातब उसने कहाकिवायुसा
फ और आकाशभीनिर्मलहै औरसूर्यउदयहुआचाहतेहैं इनसब बातोंके होनेपरभी
किसलियेमैंनवीन भवनका चिन्हनहींपाताहूं पुनिउसने भलीभांति चंहुओर देखापरंतु

स
१२८
128

कुछ उसे दिखाई न दिया बहुत काल पर्यंत आश्चर्य में खड़े हो उसी मैदान को देखता रहा और।
मन में शोचा कि बड़े अचंभे की बात है कि ऐसा बड़ा चमकता अद्भुत भवन जिसको मैं प्रति दि
न सूर्य के समान देखता था अकस्मात् गुम हो गया उसका तो कोई निशान दिखाई नहीं
देता यदि धरती में धस जाता तो भी कुछ न कुछ निशान दीखता और जो गिर पड़ता तो भी
पत्थर काष्ठादिक दिखाई देते जब उसे भली भांति निश्चय हुआ कि वह भवन यहां नहीं
तो भी भ्रम के संदेह से किसी से यह हाल न कहा और यह शोचा कि शायद मेरे देखने में कु
छ फर्क हो इससे बार बार उधर को देखता निदान निराश हो कहीं और चला गया और व
ज़ीर आज़म को बुलवाया वह शीघ्र ही सम्मुख आया और बादशाह से कहने लगा कि हे स्वा
मी आज आपने अपनी रीति के विपरीत मुझको इस समय को बुलाया जान पड़ता है कि को
ई नई बात हुई है और क्या आपको मालूम नहीं है कि आज का दिन कौंसल का है संपूर्ण।
मंत्री और सभासद विद्यमान हैं मुझे अवश्य है कि आपके सिधारने के पहले व्यवस्थाओं
को यथाक्रम लगा रक्खूं अब जो कुछ आपको आज्ञा देनी हो कीजिये बादशाह ने क
हा वास्तव में ऐसी ही बात हुई है जैसी तूने कही है मुझे बता कि अलादीन का भवन काज
आ उसने विनती की कि मैं तो आपके भय से दौड़ा आया किसी और बात का विचार न किया।

जानताथा किवह अपनी जगहपरहोगा बादशाहने मंत्रीसे कहा तुमरे कोठि परजाकर उस
महलको देखकि दिखाईदेताहै यानहीं मंत्रीने बादशाहकी आज्ञानुसार वहां जाकर दे
खातो उसेभीसिवाय निर्जन मैदानके कुछभीदिखाई नदिया जबउसको भलेप्रकार नि
श्चयहुआकि अलादीनका भवन कहीं गुमही गया औरउसका कुछभी चिन्हनहीं पा
या जाताथा बादशाहने उससे पूछाकि तूने अलादीनके भवनको देखा मंत्रीने विनयकी
किमहाराज वसदासने पहिलेहीसे विनतीकीथीकि वह सुंदर मंदिर जादूके बलसे
बनाहुआहै परंतु आपनेमेरी बातका कुछ विचारनकिया बादशाहने महा क्रोधितहो
करपूछाकि वह धूर्त औरछली कहांहै मैं उसका शीशकाटेबिना नरहूंगा मंत्रीने
विनयकीकिवह कईदिन बीते आपसे विदा होकरशिकारखेलने गयाहै मैंउसेढूंढ
ताहूं इतनासुन बादशाहने क्रोधितहो यह आज्ञाकीकिहमारे अरदलीके तीससवारों
को आज्ञादीजावे कि उसदुष्टको जंजीरमें बांधकर मेरे सन्मुखलावें उसनेतुरंत तीस स
वार चुन उनके अधिपतिको ताकीद कर कहाकि उसको अच्छी तरह ढूंढियो ऐसा न
हो किकिसी औरकोनिकल जावे वहलोग अलादीनके शिकारखेलनेकी खबरसुन
कर उधरचले औरउसको नगरसे पांचछकोस परकि अहेर खेलकर लौटा आताथा पाया

स
ट
१२९

129

प्रधानने उसे प्रणामकरकहा बादशाहने तुम्हें शीघ्र बुलवायाहै ओरहमको आज्ञादीहैकि
तुम्हारेसाथरहें अलादीन कोउचितहुआकि यह सवार बादशाह के अरदलीकेहैं औ
रमुझे कैदकरनेको आयेहैं सोवह उसीभांति शिकारखिलतेहुये अनुमान नगरके आधे
कोस परपहुंचा सवारोंने उसेचहुं ओरसेघेर लिया ओरप्रधानने आगि बढ़के उससेक
हाकिहमें बादशाहने अज्ञादीहैकि तुम्हें अपराधियों कीतरह जंजीरमें बांधकर बा
दशाहके निकटलेजावें इसमें हमारा कुछ अपराधनहींहै हमको अवश्यहै कि बाद
शाहको आज्ञामानें उसनेइस बातकोसुन अचंभाकियाकि बादशाहने मुझे निर्दोषकैद
करनेकोक्यों आज्ञादीहै फिरसवारोंसे पूछनेलगा मैंनेनतो कोई अपराध बादशाह।
काकिया ओरनप्रजाका उन्होंने उत्तरदिया यहतोहम कुछनहीं जानते हमें बादशा
हकी आज्ञाहै कितुम्हें बांधकरले जावेंफिर उन्होंने एकबड़ीजंजीर उसकेगलेमेंडा
ल उसे उसमेंऐसाजकड़ा किउसेहाथ हिलानेकी शक्तिनरही फिर उसकाप्रधान आ
गेहोलिया ओर उसके पीछे अलादीन पैदल जंजीरमें बंधाहुआ जिसकाएक सि
रा एकसवारके हाथथा ले चले जबशहरपनाहके भीतर पहुंचे तोजिस मनुष्यने उस
कोयहदशादेखी कि उसको अपराधियों के सदृश बांधेहुये लिये जातेहैं उसको इ

सके मारेजानेका विश्वास ऊआ और जो कि वह सबका प्यारा था और हर एक उसका गुण।
मानता था इसलिये सब नगरवासी शस्त्र धर२ और बऊधा शस्त्र उठा२ कर सवारोंके पी
छे चढ़ धाये वह इस धावेको देख भयभीत ऊये कि ऐसा न हो जो यह सब अलादीनको
हमसे छीन ले जावें इसलिये वह उसबड़ी रक्षासे बादशाही महलमें लेगये द्वारपा।
लोंने सवारोंके प्रवेश होतेही बादशाही महलको मूंद लिया कि कोई झगड़ा उठाने वालों
मेंसे भीतर न जाने पावे जब अलादीनको बादशाहके सन्मुख लेगये तो बादशाहने बधि
कको कि पहिलेहीसे खड़ा था आज्ञा दी कि इसका अभी शिर काटडाल बधिकने अलादी
नको कमरसे जंजीर खोल उसको एक ठौर पर बैठाया और उसके नेत्रोंमें पट्टी बांधी औ
र म्यानसे खड्ग हवा पर चलाके केवल बादशाहकी बाट देखने लगा कि एकही हाथमें
खड्गसे शिर जुदा कर डाले इतनेमें मंत्री पऊंचा और क्या देखा कि बऊतसे लोग बाहरको।
और मैदानमें शस्त्र समेत एकत्र हैं बऊतसे दीवारों पर चढ़े ऊये भीतर कूदना चाहते हैं
जब बादशाहने चाहा कि अलादीनके मारनेके लिये सैन करे इतनेमें मंत्रीने बादशाह
से विनय की कि आप क्या काम करते हैं इस मनुष्यके मारडालनेसे आपके बैरियोंको महा
दुःख होगा क्योंकि मंदिरके चऊं ओर हजारों और लाखों मनुष्य शस्त्रादिक लिये ऊये खड़े हैं

स
त
१२

130

बादशाहने कहा किसी की सामर्थ्य है कि इतना साहस करै उसने कहा आप उस दीवार को जो
उसमै दालान की है देखिये निदान बादशाह असंख्य मनुष्यों को दीवार पर चढ़े और कूदने को त
य्यार देख डर गया और तुरंत बधिक को आज्ञा दी कि तू अपनी तलवार हाथ से फेंक दे और
अलादीन के नेत्रों से पट्टी खोल उसे छोड़ दे और एक प्रधान को आज्ञा दी कि बड़े शब्द से अब
जकर कि बादशाह ने अलादीन का अपराध क्षमा किया और उसे छोड़ दिया सो बधिक ने अ
पने स्वामी की आज्ञानुसार तलवार फेंक दी और प्रधान ने भी ढंढोरा पिटाई यह समाचार सुन
हर मनुष्य जो दीवार पर चढ़े थे अलादीन को छूटा हुआ आ देख और बड़े ही प्रसन्न हुये और
घर उधर कूद पड़े इसी भांति से संपूर्ण नगर में यह हाल प्रसिद्ध हुआ और सब लोग अपने घ
र को लौट गये जब अलादीन छूट गया तो बादशाह के सन्मुख हुआ और सेंधर तो झुक बिनती करने
लगा है स्वामी जैसे आपने मुझे प्राणदान दिये आशा है कि मेरा अपराध भी मुझे बतलाइ
जिये बादशाह ने कहा ओ अभागे दुष्ट अभी तक तुझे तेरा अपराध मालूम नहीं हुआ मेरे
पास चला आ तो मैं तेरा अपराध तुझे बताऊं अलादीन जब ऊपर चढ़ गया तो बादशाह अपने
कोठे पर ले गया और कहा इस खिड़की को खोलकर देख कि तेरा बनवाया हुआ मंदिर कहां
है और चहुं ओर भली भांति देख मुझे बतला कि वह महल कहां चला गया अलादीन ने देखा

परंतु विर्जन मैदानके सिवाय उसेकुछभी सुझाई न दिया औरकुछन समझसका किउस।
विचित्र मंदिरको कौन उठालेगया यह तमाशादेखचुप चाप खड़ाहोके उसीस्थान परखड़ार
हगया बादशाहने कहा तूने देखा अबमुझे बताकि तेरामंदिर कहां है और मेरी पुत्री किधर
चलीगई अलादीनने कहा वास्तवमें मेरा मंदिर कि जिसस्थानपरथा नहीं है नजानिये क
हांचलागया परंतु इसमें मेराकुछ अपराध नहीं है औरन मेरे कारण यहबात हुई है बादशा
हने कहा मुझे तेरे मंदिरके खोजानेकी कुछ चिंता नंही मुझे अपनी पुत्रीका दुख है जोतू
अपनी कुशल चाहता है तोशीघ्र उसेलाय हो नसमझ कि अबतू छूटगया उसने कहा
मुझेचालीस दिनका सावकाश दीजिये यदि इस अवधिमें आपकी पुत्रीको ढूंढ करला
यातो उत्तम नहीतो ईश्वरकी सोगंद है कि मैं अपना आपही सिरकोठतालके नीचे डालदूं
गा बादशाहने कहा बहुत अच्छा मैंने तुझे चालीसदिनकी छुट्टी दी अबतू जाके जहांसे
पावे वहांसे ढूंढला नहींतो जहां कहीं तू होगा मैं तुझको पकड़वा सकता हूं अला।
दीन बादशाहसे विदाहोकर इसबुरी दशासे सिरनीचे कियेहुये रोताहुआ निकला
जिसप्रधान और सरदारके आगेसे होकर वह जाता वह अलादीन परदयाकरके अपना
मुख उससे छिपालेता कि उसे अधिक दुखन हो और जब वह बादशाहके महलसे रोता।

स
न्ट
१२

131

उस्से बाहर निकला आश्चर्य में था कि क्या करे और कहां जाऊं और किस जगह अपनी
स्त्री को ढूंढे निदान इसी चिंता में विदिशा कोनाई हर एक दरवाज़े पर जाकर घरके मालि
कसे पूछता कि तुमने कहीं मेरा विचित्र मंदिर देखा है वा उसका समाचार मुझसे कह
सक्ते हो इस प्रश्न से वह सब अलादीन को विदिशा समझते और कई मनुष्य उसकी बातों प
र हंसते और जो उसके साथ प्रीति रखते थे उसकी दुर्दशा देखकर रोते निदान तीन दिन
तक वह उस नगर में रहा और हर एक गली कूचे में फिरा करता जो कोई उसको कुछ भिक्षा दे
ता तो उससे वह भोजन करता और कोई उसे उपाय न सूझता जिससे उस महल का ठिका
ना लगे निदान विचारा अलादीन उसी दुर्दशा से उसी नगर में जहां ऐसी क्षम पाम से रह
ता था अधिक मठहर सका और उसी आपत्तिकाल में एक ओर वन की राह पर निकल
गया दिन भर चलता निदान एक नदी के कूल पर पहुंचा वहां विचारा कि अब मेरी प्रिया का
है को मिलेगी इससे उत्तम है कि इसी अथाह जल में डूब मरूं जो इस कष्ट और रात दिन की
चिंता से छूटूं यह बात मन में ठान नदी की ओर चला परंतु अति धर्मिष्ठ आशोचा कि ई
श्वर की कृपा से निराश होके अपने प्राण देना मनुष्य को उचित नहीं उत्तम यह है कि अ
पने अर्थ के सिद्धि के लिये मैं ईश्वर की वंदना और प्रार्थना करूं सो ज्यों ही स्नान करने न

दी मे गया मोंही उसका चरण फिसला और डुबने लगा परंतु उसने एक पहाड़ की शिला
को जो वहां अनुमान होता था गके थी पकड़कर अपने को थांभ लिया और उसमें लटकन
हाय हवान उसके वास्ते बहुत अच्छी हुई क्योंकि उस छल्ले को जिसे अफ्रीकी माया बो
ने उसी विचित्र दीपक के मंगवाने के समय उसको पहिनाया था शिला के पकड़ने से
उसमें रगड़ लगी रगड़ खोते ही वही वीर जो उसी गठे में आया था और अलादीन को न
ठे में से निकाला था प्रकट हुआ और कहने लगा तेरी क्या इच्छा है मैं उसके पूर्ण करने
के लिये उद्यत हूं तेरी आज्ञा का पालन मुझे अवश्य स्वीकार है किन्तु उस मनुष्य का भी
जिसके हाथ में यह छल्ला होगा मैं और दूसरे वीर उसी छल्ले के आधीन हैं अलादीन
यह हाल देख कुछ सावधान हुवा और उससे कहा पहिले तू डूबने से मुझे बचा और फि
र यह बतला जो मंदिर मैं ने बनवाया था वह कहां है और उसको कौन ले गया है और अ
बतू उस भवन को उसी स्थान पर लाकर जहां पहिले था स्थापित कर सक्ता है उस वीर ने क
हा उस महल का लाना मेरा काम नहीं है वह दीपक के वीरों का काम है फिर उसने अ
लादीन को वहां से उठाकर नदी के तट पर बैठाय दिया और हाथ बांध उसके सन्मुख
हुवा अलादीन ने कहा जो यह कार्य तुझसे नहीं हो सक्ता तो मुझे उस मंदिर में जहां कहीं

किह्मोलेजाकर बदरबदौरकेपासछोड़ आसक्ताहै उसनेकहा निस्संदेह यह काममें क
रसक्ताहूं इतनाकह उसने अलादीनको ह्मलपरसे उठाया ओर तुरंत आधीका खंडमें
लेगया ओर उसीमंदिरके समीपजोकिसी उज्वल नगरके मैदानके मध्यमेंथा पंहुचा
दिया यद्यपिबहुत रात्रिके बीतनेकेकारण अंधियाराथा परंतुअलादीनने अपने मंदि
रकोपहिचान लिया उससमय भवनमें संपूर्ण मनुष्य सोतेथे अलादीन वहांसे उठकर प
कवृक्षके नीचे जोबैठा ओर ईश्वरकी वंदना ओरप्रार्थना कर कहनेलगा उस ईश्वर स
र्वोपरि परनिछावरहूंकिजिसने मुझे निरास होनेपरभीफिरमुझे अपनीरस्त्रीतक पंहुचा
या ओरजोपांचछः दिनतक महाडुःखपाोमें अन्नजलाबिनाकिराकियाथा अबप्रसन्नहो
करनिद्राके वेगसेवंहीसो रहा दूसरेदिन प्रभातकोजबसूर्य उदयहुयेतो वहपक्षियों
कोप्रियवाणीसे जगा ओर उस वृक्षके नीचेसे उठसघन स्त्रवोंकेनीचे जाबैठा ओर व
हांसे अपने प्यारे मंदिरको भलीभांति देखने लगायहविचार करकि अबमैंफिर इसी
भवन ओरउसीसुंदरीसे मिलूंगा फिरवहांसेभी उठ अपनीस्त्रीकेमकानके पास गया ओ
रइस आशासे दरवाजेके भीतर टहलने लगाकि शाहजादी निस्संदेह जगकरमुझे देखे
गी टहलतीसमय उसनेविचाराकि इस महलके यहां आनेकाक्या कारणहै निदान।

भली विधि शोच उसने जाना कि वह दीपक अवश्य खो गया है पुनि अपने को धिक्कार दिया कि
मेरे ही ध्यान न रखने से वह दीपक खो गया मुझे उचित था कि उसे क्षणमात्र अपने से न्यारा
न करना और जो कल्ले के बीर से सुना था कि यह मंदिर अमी का मैं है इस से उसे मालूम हु
आ कि बैर उसी अमी की माया बीने मुझ से लिया है वह शाहज़ादी बहुत दिन चढ़े ज
गी क्योंकि रात्रि भर उस दुष्ट अमी की से बचने के लिये जगी और बिना और महा शोक में र
हती और उस जादूगर के साथ उसने ऐसा उपकार किया था कि उस महल में रहन सम्मा
निदान शाहज़ादी जागकर वस्त्र पहिरने लगी तो एक बांदी ने द्वार में से अलादीन को देख
और दौड़कर उसने उसी मंदिर में अलादीन के आने का समाचार दिया यह सुनते ही उसे
अलादीन के पहुंचने का निश्चय हुआ और आप जाकर उसे अपने नेत्रों से देखा और दर
वाज़े को खोला अलादीन ने किवाड़ खुलने का शब्द सुन शिर अपना ऊपर को उठाया
और अपनी प्रिया को पहिचान अति सन्तुष्ट भया शाहज़ादी ने उसी समय अपनी लौंडियों
को आज्ञा दी कि मेरे पति को तुरंत चोर दरवाज़े से मेरे पास लाओ और तुरंत ही उस द्वार
को जिसमें से अलादीन को देखा था मूंद लिया अलादीन उसी चोर दरवाज़े से जो बारहदरी
के पास था अपनी स्त्री के निकट गया जो प्रसन्नता और आनंद उनको भेंट से प्राप्त हुवा उसका

स
ट
१३३

133

वर्णन नहीं हो सका बहुत काल तक वह कण्ठसे लग रुदन करते रहे फिर हर एकने अपनी
अपनी दुर्दशा और परस्पर वियोगका वृत्तान्त जो कुछकि उनपर बीताथा वर्णन किया फि
र एक जगह पर बैठे अलादीनने अपनी स्त्रीसे पूछा तुम्हें ईश्वर और अपने पिताकी
सौगंद है कि तुमने उस प्राचीन दीपक को जिसे मैं बारह दरीके कानस पर रक्खा करता
था क्या किया उसने विनय की बड़ा खेद है कि यह सब उपद्रव और आपदा जो हमपर प
ड़ी उसका मैं ही कारण हुई वह दीपक यहां नहीं है अलादीनने कहा वह अपराध तु
अपनी तरफ़ मत कर वह मेराही अपराध है कि मैंने उसे ताकसे अपने साथ न रक्खा भ
ला जो कुछ हुआ सो हुआ अब उस दीपक के मिलने की युक्ति करनी चाहिये अब बता औ
कि वह दीपक अब किसके हाथ लगा है उसने अपने पतिसे संपूर्ण वृत्तान्त उस नवीन
दीपकसे इसी विचित्र दीपकके बदलने का वृत्तान्त सविस्तर वर्णन किया और कहने
लगी कि दूसरे दिन मैंने अपनेको इस मंदिर समेत इसी नगरमें जिसे मैं नहीं जानती दे
खा उस दुष्ट अन्यायी जादूगरके मुखसे मैंने इसका नाम अफ़्रीका सुना है और उसने
ऐसा जादू किया कि यह भवन चीनसे यहां आया यह सुन अलादीनने अपनी स्त्रीसे कहा
हमें मालूम हुआ कि हम अफ़्रीका खंडमें हैं परंतु सच कहो कि तुम उस धूर्तके हाथसे अ

बतकवचीहोवा नहीं उसने कहा अबतक ईश्वरने मुझे बचायाहै पुनि अलादीन कहनेल
गावह जाहगर महादुष्टहै समयपाकर उसका वृत्तांत तुझसे कहूंगा परंतु यह मुझे ब
तलाकि वह उसदीपक कोकहां रखताहै शाहजादीने कहा वहदीपक बड़ी होशिया
रीसे वस्त्रमें लपेटकर अपनी छातीमें रखताहै एकदिन उसने मेरेसाम्हने निकालाथा अ
लादीनने कहाहै चंद्रमुखी तुम इससमझने से अप्रसन्न नहोनावह दुष्ट हम दोनोंके प्राणका
वैरीहै और तुमसे वह कैसा करव्यवहार रखताहै और तुमको कर उससे बातें करतीहो उ
सने उत्तरदिया जबसे में यहां आई हूं एकबेर रात्रिको मेरे निकट आताहै उसने बहुत
चाहाकि तेरी प्रीतिसे मेरा मन फेरकर मेरापतिवहो बने और तुझको बुरीतरहसे याद
करताहै और हजारों गालियां देकोपित होकर ऐसीबातें कहताहै जिसकामें वर्णन नहीं
करसक्ती परंतु जो मुझे अपनेदेश और पिता और पतिके वियोगमें पाताहै इससे कुछ अ
प्रिय न कहके चला जाताहै और समझताहै कि अंतको धीरे २ सबको भूलमनबचसेउ
सकी प्रीतिमें फंसूंगी मैंनतो अपने मनमेंठान चुकीथीयदि मुझसे बलात्कारसे किसी।
दूसरी बातको इच्छा करेगा तो मैं तुरंत देहत्याग हूंगी इतने दिनों में उसीके डरसे भयभीत
रही परंतु अबतक देव मुझे धीर्य हुआ अलादीनने कहा मुझे भी विश्वास थाकि तुम

स
तृ
१२४

134

उसकि छलमें न आओगी अबमें उसके उपायमें जाताहूं मध्यान्ह पर्यंतनफिर आऊंगा जोतुम
मुझेहू सेवस्त्र औरअमममेंपथरेऊंये देखनातो आश्चर्यनकरना औरमैं चोरदरवाजेसे आ
ऊंगा एक मनुष्य उसपरनियतकरीकि जबमें आऊं तबतुं उसदरवाजेको खोलदे एकने
द्वारपर उसलौंडीको उसकार्यके लियेनियतकि अलादीन उसीचोर दरवाजेसेनिका
लकरबाहरगया औरचऊं औरदेखनेलगा अकस्मात् एककिसानकोदेखाकि वहभी
नगरमें गानेकी इच्छारखताहै अलादीनने दौड़कर उससे भेंटकी औरकुछ उसकोदेके
इसपरराजीकियाकि अपने वस्त्रोंको अलादीनके वस्त्रोंसे बदले अलादीनने एककोनेमें
जाके अपनेचीरउतार उसकिसानकोदिये और उसके आपपहिनलिये औरएकदूसरेसे
अलगहोकर अपनी २ राहलगे अलादीन उसनगरके बड़े बाज़ारमें जहां भांति २की सं
पूर्णवस्तुबिकतीथीगया औरएकपन्सारीकी दूकानपर जिसके पास सबप्रकारकी
औषधियेंथी जाकरखड़ाहुआ औरदूकानदारसे पूछा अमुकवस्तु तेरेपासहै दूकान
दारउसके मलिनवस्त्रदेख समझाकि इसकेपास इतनाधन कहां होगाजो उसका मो
लदेगा इसलिये उससे कहावस्तुतो मेरे पासहै परंतुतुमसे उसकामोल नदिया जावेगा
अलादीननेथैलीसे अशरफियां निकालदिखाई उसने अशरफियां देखतेही उसीवस्तु

की पुड़िया बांध अलादीनको दी और उसका मोल एक अशरफी ली फिर अलादीनने कुछ
भोजन मोल लेके खाया और चल दिया और चोर दरवाज़ा खुला पाके भीतर गया और
वहांसे सूथा अपनी स्त्रीके पास गया और उस्से कहने लगा मैंने उस दुष्टके दूर करनेका य
क अच्छा उपाय विचार रक्खा है परंतु अब तुम कुछ साहस करो जिस्से फिर तुम आप
ने पिता से जाके मिलो और मेरे भी प्राण बचा और फिर अलादीनने बदरबदौरसे कहा तु
म आज दिव्य वस्त्र और आभरण पहिन और सुगंध लगा और सुसकरा कर बैठो जिस
समय वह दुष्ट तुम्हारे पास आवे तो प्रसन्न होकर उस्से इस प्रकारकी बातें करना कि
अब मैंने तेरी प्रीतिमें सबको भुला दिया तेरे सिवाय और किसीको और मेरा ध्यान न
हीं आज की रात्रिमें चाहती हूं कि हम तुम बैठके एक जगह भोजन और तिरस्कार करें
और हम दोनों परस्पर बैठकर सुरापान करें निश्चय है कि वह इसबातको सुन आपही
मद्य लेनेको नगरमें जावेगा और जब वह मद्य लेने जावे तुम इस वस्तुको जिसमें तुम्हें
देता हूं एक गिलासमें डालकर और गिलासोंसे कुछ दूर रखना और मद्यपान करती सम
य एक बार दो तुम्हारी सैनके करनेही उसी गिलासमें मद्य भरके तुमको देवे और तुम
वह पात्र प्रथम अपने हाथमें ले उसके गिलाससे बदलके देना वह उसको तुम्हारे हाथ

म
न्ट
१३५
135

सेले प्रसन्नता पूर्वक सबकासबपीजावेगा सोपीतेही वह औंधाहोकरगिरपड़ैगा औरतु
मभी उसकेगिलासको उसकेहाथमेंसे लेकरदिखानेके वास्ते मुखसेलगालेना उसके पी
तेही उसेतनक चेतनरहैगाकि वहतुम्हारा पीनानपीना मालूम करै शाहज़ादीने अलादी
नकोयहबातें सुनकरकहा जैसाकि तुमनेमुझसे कहाहै वैसाही करूंगी यहकह अ
लादीन वहांसे छुपके एकमकानमेंबैठरहा जबरात्रि भईतोवह चोरदरवाज़ेसे बाहर
कोनिकलगया बदरबदौरजबसे अपने पिता औरप्रीय पतिमेंसे अलगहुईथीतबसे तो उ
सनेचिन्तामेंवस्त्र बदलेथे औरनकभी शृंगार कियाथा उन्हीं मलिन वस्त्रोंको जिन्हें चीन
सेपहिनेथी पहिनेरही केवलउसदिन उसने अपने पतिकी आज्ञानुसारबहुत भारीजो
ड़ा औररत्नपहिन भलीभांति अपना बनाव औरशृंगारकिया औरएक पटकाजिसमें
भांति २ के अति स्वच्छ हीरे जड़ेथेकमरसे बांधा औरएक बहुतभारी बड़े २ मोतियोंका
हारगलेकेमें पहिना औरमणि औरहीरे जड़ित सुंदरकड़े हाथों मेंपहिने जबबहुत
देखनेलगी इतनेमें अफ्रीकी भीअपने नियत समयपर आया शाहज़ादीने उससमय
तक उसका अकृपालतुप आखिठाकरनदेखाथा परंतु अपनीबांदीसे सुनाकियह व

ही मनुष्य है जो नवीन दीपक से पुराना दीपक बदल कर ले गया था जब जादूगर बारहद
री के दरवाज़े में पहुंचा तो शाहज़ादी उसकी अगवानी के लिये मुसकराती हुई उठी औ
र उसका हाथ पकड़ ले आई और अपने निकट उसे बैठाया वह भी जादूगर उसके दिव्य
रूप और सब वस्त्र भूषणों को देख मोहित हो गया उसको इतना साहस न था कि उस बद
लुवों के बराबर बैठे परंतु शाहज़ादी ने उसे बैठाय लिया फिर शाहज़ादी उससे कहने ल
गी आज तुमने मुझे प्रसन्न पाया है उसका कारण नहीं जानते वह यह है कि मैं अपने कुटु
ब के वियोग में विशेष अपने पति अलादीन और पिता के बिछुड़ने में अहर्निश चिन्ता में
डूबी रहती थी अब मुझे संतोष हुआ और समझी कि अलादीन को मेरे बाप ने अब तक मा
र डाला होगा अब उसके लिये चिन्ता करनी व्यर्थ है मैं अपने को क्यों मारूं इस निमित्त मैं ने
अपने चित्त से यह विचार निकाल डाला मन वचन से तुम पर मोहित हुई आज मेरा चित्त चा
हता है कि तुम हम मिल के भोजन करें परंतु जब तक भोजन निकाला जावे और चुना जा
वे तब तक थोड़ी सी उत्तम मदिरा मेरे वास्ते मंगवाओ वह इस बात को सुन अति आनंद में
हुआ और अपने भाग्य पर प्रसन्न हो कहने लगा बहुत अच्छी होगा इस नगर में नहीं मिलती
है परंतु मेरे घर में सात वर्ष की पुरानी मदिरा रक्खी है यदि आप मुझे आज्ञा दें तो मैं जा

सार
१३८

जाकर उसमेंसे एक ई शीशी भरलाऊं शाहज़ादीने कहा सुके तुम्हारा जाना असह्य है किसी
औरको भेजकर मंगवालो उसके कहाविना मैं रजाये वह नहीं आसको नतावह मंदिरकी
सी हूसरेको माल्सम हे औरनकिसीको उसकी ऊंजी मिलेगी शाहज़ादीने कहा यदि तुम
आपही जातेहोतो शीघ्र लौट आनातुम्हारे पीछे मैं भोजनकरूंगी अफ्रीको जाहूगर उ
समंदिरसे स्वालेनेको दौड़गया औरशाहज़ादीने उसकेजानेके पीछे उसवस्तुको
अलादीनमे उसको दीथी एकगिलासमें राव उसपक औरको थरदिया इतनेमें अफ्रीकी
स्वच्छमयलेके आपऊंचा औरवह परस्पर सम्मुखहोबैठे शाहज़ादी उत्तम २ और स्वा
दिष्ट भोजन अपनेहाथसे उठाकरजाहूगरके आगेरावतीजातीथी पुनि शाहज़ादीने उ
ससेकहाजो तुम्हें ललितगानसुननेकी इच्छाहोतो मंगाऊं परन्तु मैं अकेली हूं इससे म
स्वबातें करनीही अच्छीहै अफ्रीको इसबाक को सुन आपेके मोह गया औरमारे प्रस
नाके फूलगया फिरबदरबदौरेन एकमयकापात्र उस अफ्रीकोको यादमें पिया और
राको बहुतसी प्रशंसाकर कहनेलगी तुमने जितनी प्रशंसा इसमयकी कीथी यथार्थमें
यह वैसीहीहै फिर शाहज़ादीने एकपात्र मयका भरकर अफ्रीकोको दिया उसने वहपान
करकहा मैंने कभी इस आनंदसे मंदिरा नहीं पीथी जबवहदोनोभोजनकरतेहुये औ

रचीन गिलास परस्पर पियेतो वदरबदीरने एक लौंडीको सैनदीकि उसपात्रको जिसमें वहो वि
षरक्खाथा मद्यसे भरके ठुकेदे और दूसरा अफ्रीकीको उसने दोनों गिलास भर विषका गिला
स शाहज़ादीको और दूसरा अफ्रीकीको दिया तब शाहज़ादीने अफ्रीकी से कहा हमारे ची
न देशमें यह रीतिहै कि मद्यपान करती विरियां वह दोनों मनुष्य जिन्हें परस्पर अनंत प्रीति
हो अपना २ पात्र एक दूसरेके हाथसे बदल आपुसकी आरोग्यताके लिये पीते हैं यह कह
अपना गिलास अफ्रीकीको दिया और दूसरे हाथसे उसका गिलास लेलिया अफ्रीकीको
यह भाव अच्छा मालूम हुआ और इस बातसे अनंत प्रेम समझकर कहने लगा हे मृग न
यनी चंद्रमुखी जो सुंदरता और स्नेह और प्रीति तुम्हारे चीन देशमें है वह हमारे अफ्री
काखंडमें नहीं है आज इस भावको मैंने तुमसे सीखा और तुम्हारा मन वचसे गुणमाना अ
बमें कभी इसको न भूलूंगा शाहज़ादीने कहा अब तुम इसको पीजाओ इतना कह शाहज़ा
दीने अपने गिलासको मुखसे लगाया अभी उसके होंठतक गिलास न पहुंचाथा कि अफ्री
को एकही बेर वह गिलास विषका यों घुट २ कर पीगया और हूंद भर भी उसमें न छोड़ी उस
हलाहलके पीने ही वह पीठके बल गिर पड़ा जब शाहज़ादीने देखा कि उसकी आंखें फि
र गईं और बिना हिले भुले सन्नसा पड़ाहै तब उसने एक लौंडीसे कहा कि चोरदरवाज़े से तुरंत।

सत्र
१६०
137

अलादीन को बुलाला वह लौंडी दौड़ी गई और चोर दरवाज़े को खोल अलादीन को बुला लाई
अलादीन जब बारहदरी पर चढ़ गया तो अभी की कोमराजवापाया शाहज़ादी ने अपने प
तिको धन्यवाद दिया और अत्यन्त समत हुई अलादीन ने अपनी स्त्री से कहा एक क्षणमात्र के
लिये तुम अपने मकान में जाओ तो मैं तुम्हें इस भवन सहित चीन में लेजाने का उपाय करूं सो
शाहज़ादी उस मकान से अपनी लौंडियों समेत निकल के दूसरे मकान में गई अलादीन ने उस
र उसके चस्त्र को खोल वही दीपक निकाल लिया और उसको जैसा कि शाहज़ादी ने कहा
था वस्त्र के कई तहों में लपेटा हुआ पाया अलादीन ने उस दीपक को निकाल रगड़ा तुरन्त व
ह वीर प्रकट हुआ और उसी भांति उसने अपनी आधीनी प्रकट की अलादीन ने कहा मैंने तुम्हें
इसलिये बुलाया है कि इस अद्भुत मंदिर को इसी क्षण उठा लेजाकर चीन में जहां कि यहि
लेया स्थापन करदे उस वीर ने शिर हिलाया अर्थात् यह सैन की बहुत अच्छा फिर तुम गये
गया और एक क्षणमात्र में उसी भवन को अफ्रीका से उठा लेजाकर चीन में जहां से कि व
ह उठा लेगया था लेजाय रक्खा केवल वह भवन धीरे से दो बेर हिला एक तो उठाती समय
और दूसरे रखती समय अलादीन अति प्रसन्न होकर कहने लगा हमारी सरी खुशी कल

होगी औरअभीशाहजादीने संध्याकाभोजनन किया आया अलादीनभी दुःपितथा इसलि
ये शाहजादीने अपनेसेवकको आज्ञादीकि शीघ्रवह सबभोजन उसबारहदरीसे जोअ
भीतकवहांधरक्खेहुयेथे लाओफिरवह दोनों भोजनसे निश्चिंतहो औरउसी जादूगर
को मदिरालाईहुईबटे आनंदसे पीकर अपनीशय्या परसोरहे चीनका बादशाह उ
सदिनसेकि अलादीनका महलउसकी पुत्री समेतगुमहोगयाथा बहुत बेचैनरहता
नतोरात्रिकोसोता औरनदिनको प्रसन्नरहता औरसदैव अपने मकानमें जाके अकेले
अपनीप्रियपुत्रीकी सुधिकर रुदनकरता औरउसीकेविचारमें रहता जबभोरहुआ औ
रसूर्योदयके पश्चात् सर्ववत् बादशाह उसीकोठे परगया औरबड़े खेदसे उसओ
रको जहांअलादीनका विचित्र भवनथा अपनेधैर्यकेलिये देखातो उसेवह भवन देख
पड़ा और उसको भलीभांति देखपीछेवहां से उतरघोड़े परसवारहो अलादीनके मह
लको सिधारा और अलादीननेभी प्रभातकोजब वस्त्रादिक पहिनबारहदरीमें जानेकी इ
च्छाकीकि अकस्मात बादशाहको देखाकि अकेलाचला आताहै अलादीन नेदौड़के बा
दशाहकी अगुआयकर घोड़े परसे उतारा बादशाहने अलादीनसे कहामें अभीतकसे कु
छ बातनकहूंगाजबतक किमैं अपनीपुत्रीको नदेखलूं अलादीन उसेजहांकिउसकी पु

त्रीथी लेगया ओर उसे बादशाहके आनेका हालबताया वह जंरतनही वस्त्र पहिने बादशाहके
सम्मुख आई बादशाह उसे देख महा हर्षित भया ओर अपने कंठसे लगा केकहनेलगाकि अ
पना समाचार कहो कि तुम क्योंकर यहांसे इस विचित्र भवन समेत अस्तहोगईथी उसने संपूर्ण
हत्तांनकह सुनाया किमैंने दसकष्टसे अपने प्रिय अलादीनके कारणछूटी ओर मुके अपने
प्राणपतिके वियोगका बड़ा दुःख विशेष इस बातका कितुमने उसको पथमें मारडाला होगा ह
इसवातमें वह निर्दोषहै पुनि कहने लगीकि मैं उस प्राचीन दीपक केगुणकोन जानतीथी
हंसीके लिये उसे बदला थाफिर अलादीनने बारहदरी का दरवाजा खोल उसजादूगरकी
लोथ बादशाहको दिखाई ओर कहनेलगा मैंने अपनी प्रतिज्ञानुसार तुम्हारी पुत्रीको यहां
पहुंचादिया बादशाह यह संपूर्णहत्तांत सुनकर प्रसन्न विस्मित हुआ ओर उसदुष्टकी लोथ
देखीकि मुख उसकाकालाहोगयाहै ओरकाग उसके मुखसे निकलहुये हैं बादशाहने
अलादीनसे कहा उसक्रोधसे जोमैंने तुमपर विनाभेद कियाथा उसकाकुछभीविचार अपने
मनमें मति राखना ओर तुम मेरे पुत्रहो बहुधा मातापिता अपनी संतानपर क्रोध करते हैं फिर उ
से अत्यन्तप्रीतिसे हृदयमें लगालिया अलादीनने कहा मुके उसबातमें कुछ शिकायत ना
हींहै यह अभीकी जादूगर बड़ा दुष्टथा उसीके कारण यह उपाधिमची जबकभी आपको स

वकाश होगया तो मैं कुछ और भी उसके एक कपट और ईर्षा का वृत्तांत आपसे कहूंगा ईश्वर ने
अपने परिपूर्ण अनुग्रह से मुझे बचाया बादशाह ने कहा इस कथा को मैं फिर सुनूंगा अ
ब तुम इसकी लोथ यहां से फिकवा दो अलादीन ने एक अपने नौकर को आज्ञा दी कि उसकी
लोथ को दूर निर्जन बन में फेंक आओ कि पक्षी आदि इसका मांस नोंच कर भक्षण करैं इ
सके अनंतर बादशाह ने हर्षित हो आज्ञा दी कि नौबत बजें सो बजे और गाने बजाने का
शब्द हुवा और दस दिन तक संपूर्ण नगर में नाच गाना और अनेक प्रकार के आनंद और मं
गलाचार उनके आगमन के लिये हुये दो बेर परमेश्वर ने अलादीन को अफ्रीकी जादूग
र के हाथ से बचाया तीसरी बेर फिर आपदा में पड़ा सो कहते हैं उस अफ्रीकी जादूगर का ए
क छोटा भाई था वह भी जादू की विद्या में निपुण था वह दोनों भाई कभी एक नगर में नहीं
रहते थे यदि एक सर्व में होता तो दूसरा पश्चिम में परंतु प्रतिवर्ष में वह दोनों एक बेर अ
पनी रमल विद्या से एक दूसरे का हाल मालूम करते कि किस नगर में है और कौनसा का
म करते हैं निदान एक वर्ष के पश्चात जादूगर के भाई को अलादीन के हाथ से जादूगर के
जाने का हाल मालूम हुवा और उसने चाहा कि अपने बड़े भाई का वृत्तांत मालूम करे
सो उसने एक चौकोण संदूक चाहा कि वह अपने बड़े भ्राता के सदृश अपने निकट रक्खा

सन्द
१३९

139

करताथा खोलकर अपनेभाईका हालदेखाती उसेमालूमहुआकि एकमनुष्यने चीनकी राज
धानीमेंविषपिलाके उसेमारडाला औरवह मनुष्यप्रथममेंअत्यन्त निर्द्धनथा परन्तु अबवह उ
सदेशके बादशाहकी कन्याकेसाथ व्याहा गयाहै इसहालके मालूमहोतेही यहबहुतरो
या औरसाथही उसकेयह भीसोचाकि वहमेरे रोनेसे जीनउठेगा अबइससे उत्तमहैकि
उसकेमारनेवालेसे चलकेबदलालेयह मनमेंठान अपनेघोड़े परसवारहोचीन देशकोचि
याएबकुछ दिनोंमेंबड़े २ बनपहाड़नदी नदनालोंघनाउवाचीनकी सीमामें आनपहुंचा और
वहांसेचीनकी राजधानीमें पहुंचा औरएकघरकिराये परलेके वहां उत्तररात्रिको विश्रा
मकरप्रभातकोजगाऔर नगरकी सैरकरनेलगा निदान एकपुरवासियोंके समूहमें पहुंचा
औरवहांपरध्यान धरनगरनिवासियोंकी बातें सुननेलगा वहऐसास्थानथाकि जहां ए
कसमूहबड़ालंगाडोंका एकत्रहोरात्रिदिनबातों आदिनककरता औरवह लोग इकट्ठे
मिलकेभोजनकरनेको बैठथे औनगरभरकी कथा औरभांति २ कीबातें औरहर ए
ककावृत्तान्त परस्परकहते उसनेसबकुछसुना उससमय वह सबफातिमानामकस्त्री
कोप्रशंसा औरउसकी प्रकृति आचार औरमहिमाकावर्णन करतेथे यहसुन उसनेसो
चा कदाचित इसमें मेराभीअर्थसिद्धहोफिरउस जादूगरनि उससमूहमें सेएकमनुष्य

कोकिनारेपरलेजाके मक्काकिवह हद्दाकेसीहै औरउसकाकवा माहात्म्य औरगुणहै उस
नेकहा तुमनेनहींदेखा औरनहीं सुनाकिवह इससमयमें अद्वितीयहै जन्मभरउसने ईश्वर
कोवंदनाकी वह अपने घरसेसिवाय सोमवार औरशुक्रवारके बाहर नहीं निकलतो उ
सनेकई करामातेंकीहैं औरकरताहै उनमेंसे एकयहहै किजिसकिसीको कितनीहीबे
गसेशिरमें पीड़ाहोवह उसकेहाथके स्पर्शसे उसकी पीड़ा जातीहै उसजाहूगरने केवल
इतनीही बातसुनफिर उससेकुछनकहा औरउसेयताएकलिवाहूसरेदिन उसीहद्दाका
घरसब्तिन २ ढूंढनिकाला औरउसको भलीभांतिपहिचान वहांसे लौटआयाआधीरा
त्रिको उसीफातिमाके घरकी ओरगयाराजब उसकेघरपऊंचातो बाहरकेदरवाज़े
कोजोभीतरकी ओरसे मूंदाऊवाथा किसी यत्नसेखोला औरचुपचापभीतर गयातो।
क्यादेखाकिवही हद्दा चंद्रमाकी चांदनीमें धरतीपरयक पुराना बोरिया बिछाये कोठे
के आगे सोरहीहै यहदेख उसने एकहाथमें नंगीखड्गलेकर दूसरेहाथसे उसे जगा।
या उसविचारीने आंखें खोलकादेखाकि एकमनुष्य खड्गलिये उसकीछातीपरसवार
खड़ाहै परंतुजब उसजाहूगरनेदेखाकि वहजगीहै तोकहनेलगायदि तूचिल्लाईतोखंबरन
तुझको बधकरडालूंगा जो अपना भला चाहतीहै तोउठजोमेंकहूंसोकर फातिमाकि ग

सत्व
१४·

140

त्रिके वस्त्रोंसे सोतीथी उठकेभयभीतहोकांपने लगी उस डाइने उससे कहा डरमत केवलमैं ते
रेपहिनने के वस्त्र मांगताहूं उनको मुझेदे औरमेरे वस्त्र तूले उसने तुरंत अपने वस्त्र उसे दे
डाले उसमायावीने उसे पहिनकर कहा जोचिह्न तेरे मुखपर हैं उनसबको मेरे मुखपर बना
देमैं चाहताहूं कितुफसा बनजाऊं वह भयभीतथी कुछभी उत्तर नदेसकी जादूगरने कहा
तू डरनहीं मेरा अपनासा रूपबनादे मैं तुझे प्राणसे नमारूंगा फातिमा को इसबातसे कुछधै
र्य हुआ और उसे भीतरले जाके दीपक जलाया और एक प्रकार का तेल उसदुष्ट के मुखपर
लगाके अपनीसी सूरत उसकी बनादी और कहा अबमेरे और तेरे रंग और रूपमें कुछ भी अं
तरनहीं है फिर उसने अपने शिर का मुंडासा उस जादूगर के शीश पर बांधा और उसको बुरका
उढाके सब बातें उसे सिखाईं कि इस २ भांतिसे नगरवासियोंसे अपने मुख और बदनको
छिपाइयो फिर एक दिव्यमाला और एक तसबीह अपने पहिनने को उसके गले में पहिना
दी और एक दिव्य लकड़ी जिसे वह सदा अपने हाथमें पकड़ नगरमें फिराकरती थी दी औ
र उसके हाथमें एकशीशा देकर कहा कि अबतू देखकि मुझमें और तुझमें कुछ अंतर
है कि नहीं निदान जबउसडाइने अपनेको फातिमासा बनाहुआ पाया तो सौगंदके खोनेपरभी
उसका गलाघोंटकर मारडाला क्योंकि जो उसको कटारसे मारता तो उसके रुधिरसे इसभेद

के एकलनेका उसे संदेह था और उसकी लोथको पकड़ उसे में जो उसी कोठे में था उलटदी और आ
पभी रतक चढ़ी रहा दूसरे दिन प्रातःकालकी यद्यपि वहादिन फातिमाके निकलनेका नथाप
रविचारकर कि कदाचित् नगरनिवासी कोई उससे प्रश्न करेंगे तो मैं उनको वहाना कर सुगम
ता से उत्तर दूंगा सो वहांसे निकल अलादीनके भवनकी ओर चला मार्गमें मनुष्य उसे फा
तमा जान उसके चर्ण और आन २ कर खड़े हुये उस विचित्र भवनतक बहुतसे मनुष्य एक
टे होगये कोई उससे शुभ आशीर्वादकी प्रार्थना करता और कोउ उसके हाथ चूमता और
कोई उसके वस्त्रको चूमता और कोई उसके सन्मुख खड़ा होताकि उनके सिरपर हाथ र
खे के उनके शिरकी पीड़ाको दूर करे वह सुमिरनमाला हाथमें लिये कुछ बुड़ बुड़ा रहा था।
कि मनुष्य जानें कि यह बुढ्ढा कोई नियमित मंत्र जपता है यहांतक कि सबने उसदंभी
को फातिमा समझा और बहुत था वह जादूगर उन मनुष्योंकी प्रीतिसे जो उनके मेलजोलसे
कुछ प्रयोजन नहीं रखते थे मार्गमें खड़ा होजाता इसी भांति जब वह उसी भवनके समीप
पहुंचा फिरतो वहां इतनी भीड़ हुई कि उसतक पहुंचना कठिन होगया और लोग आप
समें झगड़ने लगे हरकोई यही चाहता था कि मैं ही फातिमाके पास खड़ा होऊं और उसके
वस्त्रके स्पर्शसे दोनों लोकका आनंद उठाऊं निदान इतना कोलाहल मचा कि यह शाह ब

सत्
१४१

141

रबदौरनकपहुंचा शाहजादीने सब्जायह शोरकैसा होताहै जबकोई पड़ोसियों में से ब
तानसकातो उसने एक लौंडीको आज्ञादीकि तुरंत जाके इस शहरकाहाल मालूम करमुझे
बता उसलौंडीने हाल मालूमकर शाहजादीसे कहाकि उसशहरकेचंद और जिसका ना
मफातिमाहै असंख्य मनुष्योंकी भीड़है वही शहर तुम्हारे कानौंतक पहुंचा शाहजादीतो
पहिलेसे उसकी प्रशंसासुन उसकेदर्शनकी लालसारखतीथी इसलिये एकखोजी कोभे
जउसफातिमाको बुलवाया जबखोजी उसकेनिकटगयातो सबपुरवासी खोजीकोदेख
अलग २ होगये वह जाहगर खोजीको देखप्रसन्नहुआ खोजीने झुकके दंडवतकी औ
रकहने लगाहैं बड़ा शाहजादीको तुम्हारे दर्शनकी बड़ी लालसाहै मेरे साथचलो उसने
उत्तरदिया शाहजादीने मुझपर बड़ीकृपाकीजोमुझे बुलायामैं चलतीहूं सोवह उसके
साथहोकेभीतरगया औरबहांबारहदरीमेंजाकर उसबकृतने आशीर्वाददिये और सब
रकी प्रसन्नता औरईश्वरके आराधनके विषयमें उसबकृतने उपदेशकिये शाहजादीने उ
सकी बातेंसुन औरउसको ईश्वरकी पहुंचीहुई समझउत्तरदियाहै मेरी मनोमें चाहती
हूं कि तुम यहांबैठके मुझे ईश्वरके पहुंचने कामार्गबताओ वह शाहजादीके निकट
बड़ीलज्जासे शिरनीचे कियेहुये बैठगई तबबादशाहने उससेकहाहै माता मुझे अन्तप्र

मिलायाहै कि तुम मेरे पास रहाकरो कि मैं तुमसे बहुधा बातें कियाकरूं और तुफिकी वि
षिसोर है फानिमाने कहा यहांके रहने से मेरा ईश्वरका आराधन न बन पड़ेगा इसलिये मेरा
यहां रहना नहीं होसक्ता शाहज़ादीने कहा जो तुम मेरे पास न रहोतो इस विचित्र भवनमें ब
हुत मकान खाली हैं उनमें से किसीको पसंद करके तुम उसमें रहो वह इसबातसे अतिप्र
सन्न हुआ क्योंकि वह यही चाहताथा कि किसी भांतिमें अलादीनके राह में घुसतो अव
सरपाय शाहज़ादी से छलकरके अपना कार्य्य सिद्धकरूं फिर वह शाहज़ादीसे कहने
लगाकि मुझे ऐसे स्वच्छ मंदिरमें ऐसी शाहज़ादीकी संगतिमें रहनाका उचित है मैंनेतो
संसारका माया मोह त्याग कियाहै परंतु लाचारीहै तुम्हारी आज्ञाभङ्ग नहीं कर सक्ता जि
समें आपकी प्रसन्नताहो मुझे अवश्य करना चाहिये शाहज़ादी उसका यह उत्तर सुन उठ
खड़ी हुई और कहा मेरे साथ चलके खाली मकानोंको देखो और उनमें से एकको पसंद
करो उसने उसके साथ मकानोंको देखा सो उनमें से एकको पसंद किया फिर शाहज़ा
दीने बारहदरीमें उसेलाके चाहाकि अपने साथ उसे भोजन करावे उस समय उस जादू
गरने विचाराकि ऐसा न होकि भोजन करती समय मेरा मुख शाहज़ादी देखपहिचा
नलेकि वह फानिमा नहीं है और भेद मेरा खुलजावे इसनिमित्त कहा मैंतो स्वादी रोटीके

सत्
१४२
142

इकठे अथवा शुष्कफलोंके सदेके विशेष औरकछभी भोजननहीं करतो अपनेमकानमें
आवलगने परवोलियाःकहुंगी शाहजादीने थोड़े से स्वविफल औररोटी केटुकड़े उ
सके मकानेमें भिजवादिये औरकहने लगी तुम अपने मकानेमें जाओ कछ थोड़े बहुताव
के मेरेपासचलो आनोमें तुम्हारे आगमनको वाटदेखती रहूंगी वहउठ उससे विदाहोकर
अपने मकानमें आया औरएक खोजीको जिसको उसकीसेवाकेलिये नियतकियाथाक
हाकिजबशाहजादी भोजनकर निश्चिंतहोतो तुरंतमुझे समाचारदीजियोसोजब शाह
जादी भोजनकर चुकोतो उसीसमय उसखोजीने खबरकी सोवह शाहजादीके सं
मुखगया शाहजादीने कहाकि अनंतअभिलाषाहै किपसी पवित्रहृदयाकी सेवामें जै
सीकि तुमहोरहूं और वार्तालापकरूं इसवार्तामें बदरबदीरने उसजाहगरसे कहा कछ
आंखे खोलइस बारहदरी कोइसकी तय्यारीको देखोकि केसीहै फिरशाहजादीने उस
बारहदरी कीसम्पूर्ण वस्तु औरउसके मकानोंको उसेदिखाया उसने देखके कहावास्त
वमेंयह बारहदरी प्रशंसाकेयोग्यहै और उसके सदृशसंसार भरमें कोई महल नहीं प
रंतुएक वस्तु इसमें नहींयदि वहभीहोतीतो हजारहिस्सेयह बारहदरी शोभादेती शा
हजादीनेकहा मुझेबताओ वहकौनसी वस्तुहै उसने कहायदि इसबारहदरीकेमध्यमेंरु

ए नामकपक्षीकाअंडा लटकायाजाताती अधिक शोभाहोती और चारों दिशामें अपनाहुसरान
रखती शाहज़ादीनेउसमे रुख्काहरवेकेसा पक्षीहोताहै और उसका अंडा कहाँहाथ लगेगा उ
सने कहा किरुखबड़ा पक्षीहै औरसिवाय पहाड़की चोटीके औरकहीं बासनहीं करता।
जिसने इस भवनको बनायाहै उसको यह सुगमतासे मिलसक्ताहै फिरउस जादूगरसे ब
हुकालपर्यंत बातें करतीरही परंतुरुखके अंडेकोनभूली औरअपने मनमें यह विचाराकि
जब अलादीन शिकारसे आवेगा तोमैं अवश्य उससेमाँगूंगी अलादीन को अहेरखेलने को ग
ये हुये छःदिनहुयेथे उसकेपीछे अफ्रीकी जादूगरकेभाईने अपनेसर्व कार्यकरलिये
अकस्मात् उसदिन संध्याको अलादीनभी घरपहुँचा उसके आनेसे वहदुष्ट शाहज़ादीसेवि
दाहोकर अपनेमकानमें गयाजिस समय अलादीन अपने भवनमें पहुँचा औरस्त्रीसे मिला
तो उसने उसे औरदिनोंके सदृश प्रसन्नपायातो रुख्काहुआपात नहीहै मेरपीछे तुमकेसीर
ही तुममलिन रूपकोदिखाई देतीहो ईश्वरके वास्ते मुझसे मतछिपाओ अपने मनकाहा
लकहो जहांतककिमेरी सामर्थ्य औरहोगी वहांतकमैं अवश्य करूंगा जब अलादीनने उ
सकी बहुतसी बिनती की तबशाहज़ादीने कहा मेरा भवनविशेषवारहद्वीके संसार भ
रमें अद्वितीयहै औरभांति २ केसबउत्तमवस्तुओंसे अलंकृतहै परंतुएकवस्तुमें चाहतीहूं।

सत्र
१४३

143

किवहभी इसीमेंहो वहयहहै किबारहदरीके मध्यमेंरुखपक्षीका अंडा लटकाया जावेतोइ
सकी अधिक शोभाहो अलादीनने उत्तरदिया यहतो कुछ बड़ी बातनहीहै मैं बारहदरीमेंउ
स अण्डेको लटकवा दूंगा सो अलादीन अपनी प्रियाको वहीं छोड़ बारहदरी के भीतर आया
और उसदीपकको छातीसेंसे निकाला क्योंकि जबसेकि उसने जादूगरसेउसे उठायाथा त
बसेदीपकको अपनी छातीसे अलगन करतानिदान उसको रगड़ातो वहो वीरजो उस्के
आधीनथा आया अलादीनने कहाहेवीर एकअंडा रुखपक्षीका बारहदरीमें लटका दे
जिससे इसकी अधिक शोभाहो मैंतुझे आज्ञा देताहूं कि इस दीपकके द्वारा जिस्के किवत
आधीनहै शीघ्र यहमेरामनोरथ सिद्धकर अभी अलादीन अपनी बातपूरी नकरने पायाथा कि
वहवीर ऐसाघोर नादकरबोला किवह सम्पूर्णमंदिर कांपनेलगा और अलादीन भीडर
के कांपा फिर वीरनेक्रोधितहोय अलादीनसेकहा हे भाग्यहीनेमें औरमेरे साथियों नेजो
कुछकितूने कहा तुरंतकिया कभी तेरी आज्ञा मंडनकी परंतुतूने हमारा गुणन माना
किंतु उसकेविपरीतहमको आज्ञादेताहै किहम अपनेस्वामीको तेरेपास लावें औरउसको
इसबारहदरीमें लटकावें अबतू औरतेरीस्त्री इसमंदिर समेत योग्यहैं किटुकटे २ होकर
विनाशको प्राप्तहोवें परंतुतेरा भाग्यअच्छाहै इसलियेकितूने यहइच्छा अपनी अभिला

य सेनहोकी ओर यह आज्ञातेरी कामनासे नहींहुई मालूमकर कियह सब उपाधि उस अ
फ्रीकीके भाईके कारणहुई जिसतूने प्राणसे मारा है ओर वह इसविचित्र भवनमें फातिमानाम
कहहोक भेषमें छिपा हुआ है उसने फातिमाको मारडाला ओरउसी डहमेनेतेरीस्त्रीकोयह उप
देश किया है इसबातसे उसकायह प्रयोजन है कितू ओरतेरी स्त्री इसीअद्भुत भवन समेत
नाशहोजावें जोतू अपनेकोनबचा वेगातो वहतुझकोमारडालेगा चेतन्यरह उसकेछलसे औ
रधूर्ततासेबचारहियो वहवीर यहसबबातें अलादीनको समझा बुझाकि चलागया अलादी
नतोफातिमा कामाहात्म्य पहिलेसे जानताथा ओरयहभीभलो भांति जानताथाकि उसहद्दा
केफूकनेसेशिरकी पीड़ा जातीरहतीहै इससे वहाना करअपनेशिरको लपेट शाहजादी
के मकानेमेंगया परन्तु जोबातेंकि वीरने उसकहीथी शाहजादीसेनकही ओरअपनी प्रि
याके निकट बैठ अपनाशिर पकड़लिया ओरकहने लगाकिमेरे शिरमें पीड़ा होतीहै शाह
जादीने इसदशाकोदेख अपनेसेवकोंको आज्ञा दीकि फातिमाको बुला लाओ जबसेवक
फातिमाको बुलाने गयेतो शाहजादीने उसके बुलाने ओरभवनमें रखनेका सम्पूर्णवृत्तांत
अलादीनसे कहदिया इतनेमें वहजाहुगरभी आया अलादीनने उसके आतेही कहाकिहेमा
तामें तुम्हारे दर्शनसे अतिप्रसन्नहुआ ओरतुम्हारा होना इसस्थानपर मेरेवास्ते अमन लाभ

सत्
१५५

१४४

कारीहुआ इस समयमेंशिरकी पीड़ा शांतकरो औरसंको मुझे विश्वासहै कितुम्हारे आशी
र्बाद औरफाड़ने सेमेरे शीश की पीड़ा जातीरहेगी औरमें अच्छा होजाऊंगा अलादीनने इ
तनीबात कहके अपनेशिरको उसके आगेकिया वह अत्युकर्ण फातिमाभी आगेको बढ़ी
और उसीसमय उसने अपनेहाथको तलवार परधरकवा जिसको अपने वस्त्रमें छुपायेथा
अलादीनने इस बातको मालूमकर चतुरतासे इससे पहिले कि वह उसे मियानसे निकाले
पकड़ लिया और उसीके खड्गको लेकर उसीकी छाती में ऐसा माराकि उसीक्षण वह दुष्ट
धरती परगिरके नर्कबासीहुवा शाहज़ादी यहदशादेख चिल्लाई और अलादीनसे कहने ल
गीहै मेरेप्रिय प्रीतम तुमने कैसीऐसी पवित्र स्त्रीको बध किया अलादीनने कहा हे सुंदरी
मैंनेफातिमाको नहीं मारा परंतुएक महादुष्टको किमेरे प्राणका बैरीथा मारायह मेरे बध
करनेको आयाथायदिमैं यह उपायनकरता तोवह मुझे कभीजीतानछोड़ता यहएक
दुष्टहैजिसे तुमफातिमा समझतीथी फिर उसके मुखको खोलकर दिखाया औरकहने
लगा इसीदुष्टने फातिमाकागला घोंटे मारडाला और छलसेफातिमा बनाकि अवसर पाय
मुझे मारे परंतुमैंने इसकेविचारको पहिले सेहीजान इसकोनर्क में भेजायह दुष्टउसी जा
दूगरका भाईथा जोतुमको इसी भवनसमेत आफ्रीकामेंलेगयाथा फिरअलादीनने बी

ऐसे सुनाऊवा संपूर्ण वृतांत अपनी प्रियाको कहसुनाया ओरउसकीलोथ वहांसेफिकवा
कर आपईश्वरको अनुग्रहसे उनदोनों जादूगरी के छल सेबचरहा कई वर्षपश्चात् चीनका
बादशाह बहुत वृद्धहोकर मरगया यद्यपि सिवाय बदर बदोरके ओरकोई उसकी संतान
नथी इसलिये वही तख्तपरबैठी ओरफिरवह राज अलादीनके हाथलगा निदान अला
दीन औरबदर बदोरने बहुत वर्षोतक चीनकेराज्यके सुखभोगे ॥ इतिश्रीसहस्र रज
नी चरित्रे पंडित चंद्रकोल ने लिखायाहै उल्याकृते तृतीय भागसम्पूर्ण समाप्तम्
शुभम् संवत् शुभम् १९ ४५ शुभम्

४
सच
१

ॐश्रीगणेशायनमः सहस्ररजनीचरित्र चतुर्थभागप्रारंभः दोहा द्विरदवदनसुखमासदन
विघनहरणविसेश उमानंदन मोदक अदनमंगल करनगणेश नायपदपद्ममनाय केप्यारे
लालसुजान करनसुभाग चतुर्थको उत्पाअति सुखदान खलीफ़ाहारूंरशीद औरबाबा
अबुहुसाकी कथा ॥ मलकाशहरज़ादने ईरानके बादशाहसे कहा किसीसमय मनुष्यका
चित्तऐसाप्रसन्नहोताहै किसब मनुष्योंको उसकाहर्ष विदितहोजाताहै औरइसी भांति दु
खसकामन अंतपन अप्रसन्नहो जाताहैजिसका कारणकिसीके विचारमेंनहीं आता किंतुय
दिवहो मनुष्यजो आपही चाहेकि अपनेचित्तकाहाल मालूम करेतोउसेभी एकहीबेर
मालूमनहीं होतासो एकदिन खलीफ़ाहारूंरशीद आपही उदासचिंतितहोकर अप
नेमहलमें बैठाथा किबादशाहका मंत्री वज़ीर जाफरआया औरखलीफाकोचिंतितपाके
चुपकाहाथ बांध खड़ाहोरहा थोड़ीदेर पीछे खलीफाने आंखे खोल उसकी ओरदेखा औ
रउदासवार्तानकीफिर उसी विषयचिंतामें चुपकाबैठ रहामंत्रीने अपने स्वामीको इसदशामें
देखविनय कीहैबादशाह आशारखताहूं कियहदासानुदास आपके इसचिंताकाहालमा
लूमकरे खलीफ़ा हारूंरशीदने उत्तरदियातूने सत्यकहा मुझे कभी २ चिंता आजातीहै परं
तुमैं चाहताहूं कितूकोई ऐसीबातबिचार जिसेयह चिंता मेरीनिवृत्तहो मंत्रीने विनय

कीमुझे मालूमहैकि आपकासदासेयह नियमहै कि बहुधा आप भेष बदल अमाइयों औरउ
न्हींके हालमालूम करने नगरकी सीमाओं औरगलियों मेंभ्रमा करनेथे और आजकेदिनको
आपने इसीकार्य्यके लिये नियत कियाहै उत्तमहै कि आपने नियमानुसारवही कार्य्यकीजिये
जिससेयह आपकेमनकासंपूर्ण शोचजातारहै औरप्रजाके हाल मालूमकरनेसे निश्चयहैकि
चित्त आपकासंतुष्टहोजावेगा खलीफ़ानेकहा सचहै मेंइसबातकोभूलगयाथा इस समय
तैने स्मर्णकराया तभी शीघ्रही अपनाभेष बदलकर औमैंभीभेष बदलताहूं फिरवहदोनों
भेषबदलकरबागकेचोरदरवाज़ेसे निकलकर प्रथमनगरके बंज़ओरक्षेम तदनंतरनावपरस
वारहोनदीके पारजाकरवहांकी वस्तीदेखनेलगे उसपारसे फिरती समयपुलकी ओरआ
ये वहांएक अंधेभिक्षुकने खलीफ़ासे भिक्षामांगी खलीफ़ानेएक अशरफ़ी जेबसे निकाल
उसकेहाथमें रखदी उस अंधेने खलीफ़ा का हाथपकड़ ठहराया औरआशीर्बाद देकर कह
ने लगाहै सत्पुरुष उदारचित्त तैने मुझेअशरफ़ी दानदी तमुझे एक धौलभीमारक्योंकि मैंइसी
दंडके योग्यहूं किन्तुइससे अधिकका यहकहके उसनेखलीफ़ाका हाथछोड़दिया औरफि
रकपड़ाखलीफ़ाकापकड़ाकियेसानहोकि विनामारे धौलकेचलाजावैखलीफ़ाउसकी इस इ
च्छासे आश्चर्य्यमेंहुवा औरकहाहै भलेमानस मुझसेइस बातकी आशामतरखमैं क्योंकरूं।

येने पुण्यका फल नहि कहै यह कहके खलीफाने चाहा कि वस्त्र अंधे से छुड़ाकर चलाजावे उसने र
सवानको मालूम करदामनको जोरसे पकड़ा और कहने लगा कि मेरी इस फिठाई को क्षमा क
र और जो मैं कहता हूं सो कर अर्थात् एक थोल मेरे शिरपर मार नहीं तो अपनी अशरफ़ी फेर ले
कि मुझ कि थोल मारे विना मैंरी अशरफ़ी लेना स्वीकार नहीं क्योंकि जो मैंने ईश्वर से प्रतिज्ञा की है उ
से उल्लंघन नहीं कर सक्ता जो तू इसका कारण को सुनेगा तो जाने कि मेरा बहुत बड़ा अपराध है ख
लीफ़ाने लाचार हो धीरे से एक थोल उसके शीशपर मारी वह भिक्षुक वस्त्र छोड़कर शुभ आ
शीर्वाद देने लगा निदान खलीफ़ा और वज़ीर दोनों आगे बढ़े और थोड़ी दूर जाय खलीफ़ा ने व
ज़ीर से कहा मैं चाहता हूं कि इस भिक्षुक से इसकी प्रतिज्ञा का कारण से बहुत जा और उससे क
वह तुकसे ऊछ एक बेगा सो मैं वज़ीने अंधे भिक्षुक के पास जाकर पहिले एक अशरफ़ी उसे दी
उसने उससे भी थोल मारने को कहा वज़ीरने धीरे से उसे थोल लगा खलीफ़ा की आज्ञा को
नाया और खलीफ़ा को जा मिला फिर वह दोनों नगर में गये तो क्या देखा कि मैदान में एक त
रुण मनुष्य दिव्य वस्त्र पहिने घोड़ी पर सवार है और अत्यन्त निर्दयता से घोड़ी को चाबुक
और पैडे मार उ खदेता है और उस घोड़ी के दौड़ने २ मुख में रुधिर और फाग भर गया है ख

फ़ा उसके कठोरचित्त औरनिर्दयताकोदेख आश्चर्यमेंहुवा औरइसबातके मालूमकरनेको
व्हांरपडाहोगया और तमाशाई जोवहां प्रथमसे खड़े होके देखरहेथे उनसे घोड़ीके इ
तनामारने औरदौड़ानेका कारण पूछा उन्होंने कहा हमहरदिन इसको इसी मैदानमें इसी
समयदेखतेहैं किअपनीघोड़ीको इसीविधिमार २कर सैकड़ोंचक्कारदेताहै परंतुहमेंइ
सकाहेतुकुछमालूमनहीं कियह मनुष्य कौनहै औरइस घोड़ीके मारने और दौड़ाने से
उसेका प्रयोजनहै खलीफ़ाने यहसुन जाफरसे कहामैं आगे जाताहूं तूइस सवारकोजा
के आज्ञादे किकल उसीसमयजो भिक्षुकके लियेनियत कियाहै मेरी सभामें आवे उसने।
वहीकियाफिर वजीर औरखलीफ़ा एकगलीमें गये जिसमें कईबेर पहिलेभीगयेथे वहां
बड़ा भारी अतिस्वच्छमहलबनाहुवा देखखलीफ़ाने उसे शोचाकि यह महलकिसीमेरे से
वकका बनायाहुवा होगातो वज़ीरसे पूछा यह गृहकिसकाहै उसने विनयकी मुझेकुछ
इसका वृत्तांत मालूम नहींजो आज्ञाहोतोमैं यहांके वासियोंसे पूछूं निदान वज़ीरने वे
हांकेरहने वालोंसे पूछाकि यहनवीन औरसुंदर महलकिसकाहै उन्होंनेकहा यहमह
लख्वाजह हसनहबालकाहै हबालरस्सी बटनेवाले को कहतेहैं यह मनुष्य सदैवरस्सी
बटाकरताथा औररस्सीबेचकरकठिनतासे अपनानिर्वाह करताथापरंतु यहनहीं जान।

सव
६

3

ने कि क्योंकर उसे वह धनसा द्रव्य प्राप्त हुआ जिससे उसने इतना विशाल महल बनवाया है अब वह
बड़े आनंद से अपना कालक्षेप करता है खलीफा ने यह बात सुनकर वज़ीर से कहा मैं चाहता हूं
कि ख्वाजह हसन हब्बाल को देखूं और यह समाचार सब पूछूं जाके उसे कह कि कल के दिन
उस काल में जो उन दोनों के लिये नियत किया है मेरी सभा में आवे उसने तुरंत अपने स्वामी
की आज्ञा प्रतिपालन की दूसरे दिन प्रभात को जब खलीफा नमाज़ भोर की पढ़ तख्त पर
शोभित हुआ वज़ीर तीनों मनुष्यों को उसके सन्मुख ले गया उन्होंने पहिले तख्त के पाये को चूमा
खलीफा ने पहिले उस अंधे भिक्षुक से पूछा तेरा क्या नाम है उसने उत्तर दिया मेरा नाम बाबा अ
ब्दुल्ला है खलीफा ने कहा मैंने कल तुझे एक अशरफी दी तूने उसे लेकर क्यों कहा कि मुझे ए
क धौल मारो या अपनी अशरफी लौटा लो और तूने यह क्यों प्रतिज्ञा की अब मैं चाहता हूं कि इ
स प्रतिज्ञा का कारण मालूम करूं अब्दुल्ला ने अपना शिर खलीफा के तख्त के सामने पृथ्वी से ल
गाया और उठकर कहने लगे शहनशाह प्रथम मेरी यह विनय है कि वह ढिठाई जो क
ल मैंने आपसे की थी क्षमा होय क्योंकि मैंने आपको न पहिचाना अब मैं विस्तार पूर्वक सप्र
तिज्ञा का वृत्तान्त आपके सन्मुख वर्णन करता हूं उससे आपको अवश्य विदित होगा कि मैं
निःसंदेह ऐसे दंड के योग्य हूं अंधे बाबा अब्दुल्ला का वृत्तान्त ॥ बाबा अब्दुल्ला ने खलीफा के स

मुख अपना वृत्तांत इसविधि वर्णन किया कि मेरा उत्पत्तिस्थल बुगदाद नगर है जब मेरे माता पि
ता मर गये तो उनका द्रव्य मेरे हाथ लगा यद्यपि उतना द्रव्य मेरे जन्म भरको बहुत था परन्तु मैंने उ
सको कुछ भी कदर न की थोड़े ही कालमें उसे लंपटताओंमें खर्च कर डाला जब थोड़ासा बच रहा तो
उस धनके बढ़नेके लिये रात दिन परिश्रम करना यहांतक किया कि २ मैंने अस्सी ऊंट इकट्ठे कि
ये और उन्हें सौदागारोंको दिया करता हरबेरमें उन ऊंटोंके किरायेसे जो मुझको लाभ होता तो
और ऊंटोंको लेकर राज्योंमें मैं लिये फिरता और आप उन ऊंटोंके साथ रहता थोड़े दिनोंके
लाभसे मैं समझा कि थोड़ेही कालमें मैं महाधनवान होजाऊंगा सो मैं एकबेर बासरा नगरसे
जहां व्योपारियोंने अपने बस्त्र को हिंदुस्तानके ले जानेके इरादे से लादाथा असबाबको प
हुंचाके खाली ऊंट लिये हुये बुगदादको लौटा आताथा कि मार्गान्तरमें मैंने अपने ऊंटोंको
एक बनमें जो वस्तीसे दूर था चरनेके लिये छोड़ दिया और स्वच्छ हरियाली घास देख उ
नके पांव रस्सीसे बांध दिये इतनेमें एक योगी जो पैदल बासरा नगरको जाताथा वहां आ
या और मेरे पास बैठा मैंने उससे कुशलक्षेम किया कि कहांसे आते हो और कहां जाओगे उस योगीने
भी मुझसे यही प्रश्न किया निदान हमने परस्पर अपने आगमनका हाल वर्णन किया
और भोजन निकालकर खाने लगे भोजनानंतर मैं उससे मेरी बहुत बातें हुई सो योगीने मुझसे।

सच
४

4

से कहा एकस्थानपरजो यहांसे बहुत दूरनंहो ऐसेद्रव्यका कोषहै जोतुम अपने अस्सी हुं
ठोंकोकेवल अशरफी और रत्नों सेही भरलोगे तथापि उसमें सेकुछ कमनहोगा औरवह
वे प्रमाण कोष वैसाही भराहुआ दीखेगा इसकेसुननेहीमें अति प्रसन्न हुवा औरउस योगी
काभेषदेखकर यह बिचारमें न आया किवह छलसे कहताहै इससे उठके उसके गले
मिला औरकहाहै महात्मा तुमको संसारी धनकी कुछ परवाहनंही औरजगतके सबको
र्थसे तुमकुछकामनंही रखते आश्चर्यनंही कि आपको उस द्रव्यका हालमालूमहोग
फे वहस्थानबता औनोंमें अस्सी हुंटोको वहांसेभरकर आपको प्रमफलमें एकहुंट है औ
रमें जानताहूं कि आपको उसकी कुसइच्छानंही कहनेको यह बातकहीपरंतुमनमें इ
सबातका बड़ाखेदहुवा कि अशरफी औररत्नोंका भराहुवा एकहुंठदेना उचित नंही
फिरशोचा कि ऊंआसो हुंठमेरेवास्ते बहुतहैं निदानकभीमें पश्चाताप करना औरकदापि
अपने मनको समझातासो उसयोगीने मुझेकमहिम्मत औरलोभी विचारके कहामें
मउसद्रव्यकोउनपर लादेंउसकेआधे मुझकोदो औरआधे तुमलो चालीस हुंटोंकोलेचलो औरहमतु
जारों हुंट पैदाकरसकेहो मैंनेकहा बहुतअच्छामें आपकी प्रसन्नतासे बाहरनंही जोआ

य आज्ञा दें मुझे स्वीकार है और मैं यह शोचा यदि चालीस ऊंट द्रव्य के मुझे मिलें तो वह कई।
पीढ़ियों को काफी होंगे जो अंगीकार नहीं करता तो जन्मभर पछताता रहूंगा निदान उस यो
गी की बात मान उसके साथ हुआ और थोड़ी दूर जाकर एक पहाड़ के देरे में पहुंचे जिसका
मार्ग अति सूक्ष्म था ऊंटों की पंक्ति बांध वहां से लेगये थोड़ी देर के पीछे मार्ग कुछ चौड़ा मि
ला जहां से सब आनंद पूर्वक निकल गये इसके अनंतर दो पहाड़ दृष्टि पड़े जिनका बहुद
रह था उस मार्ग में उथान निचान बहुत था कोई मनुष्य वहां न था जो हमको देखता इसलि
ये निशंक होकर वहां पहुंचे योगी ने कहा अब यहां पर ऊंटों को बैठाकर मेरे साथ आओ मैं
ऊंटों को बैठाकर वहां गया थोड़ी दूर पर जाके योगी ने पथरी और लोहा अपने पास से निका
ल आग झाड़ी और कुछ थोड़ासा काष्ठ एकत्र करके उनको जलाया और अग्नि प्रबल कर उ
सपर कोई सुगंधित वस्तु डाली और कोई मंत्र पढ़ा जिसको मैं न समझता था उसके पढ़ने
से एक बड़ा धुंधाकार खंबा उठा और ऊपर जाके फट गया और उस खुदे में जो दोनों पहाड़ों
के मध्य में था एक टीला दृष्टि पड़ा और हम भारी जगह से वहां तक एक रस्ता बन गया और रहा
रावुला जब दृष्टि पड़ा उसके भीतर एक बड़ी कंदरा दिखाई दी जिसमें एक विशाल महल
जिन्नों का बनाया हुआ दिखाई दिया मनुष्य ऐसा दृढ़ नहीं बना सके जब उस महल में जाकर

सच
५
5

देखातो उसमें असंख्य द्रव्य भराहुआथा मैं अशरफ़ियोंके ढेर को देखके ऐसा झपटा जैसे गिद्ध अ
पने शिकार पर झपटता है और जितना चाहा मैंने ऊंटों की खुरजियोंमें भरलिया वह योगी
भी इसी काममें लगा परंतु वह केवल रत्नोंको उठाकर भरता और मुझसेभी रत्न भरनेको
कहता सो मैंभी अशरफियों को छोड़ बहुमूल्य रत्न भरनेलगा निदान जब हम बहुतसा
धन खुरजियोंमें भर ऊंटोंपर लाद चुके और बाहर निकले की इच्छा की तो वह योगी फिर द्वार
खोलकर उसी कोशके भीतर जहां हजारों वस्तु अति सुंदर सुवर्ण की नवीन प्रकार की रक्खी
हुई थी गया और वहांसे एक लकड़ीकी डिबिया जिसमें मल्हम था एक संदूक के बीचमेंसे नि
कालकर लेली और मुझको दिखा कर उसने अपने जेबमें रखली फिर वह अग्निमें सुगं
धित वस्तु डालकर मंत्र पढ़ने लगा जिससे वह द्वार बंद गया और वह टीला जैसा कि पहि
ले दीखताथा वैसाही दिखनेलगा फिर हमने परस्पर उन ऊंटोंको आधे २ बांटलिये और
उसी सूक्ष्म मार्गमेंसे एक २ ऊंट करके निकाले जब उस पहाड़के दर्रेसे बाहर निकले और
खाना बनाके विदा हुये तब वह योगी बसराको सिधारा और मैं बुगदादको चला और वि
दा होती समय मैंने उस योगीका बहुतसा गुणानुवाद किया क्योंकि उसने कड़ोड़ोंका द्रव्य
दिलाया निदान जब बिदा भये तौ मैं ऊंट लेकर कई पग आगे गया था कि शैतान ने मेरे मन

में यहबातडाली ओरलोभसे यहविचारकियाकि यह योगी अकेलाहै अर्थात इसकोकु
टुंब आदिनहीं ओरसंसारकेकामोंसे भीकुछ प्रयोजननहीं रखताहै इतनेधनके भरेऊ
ये ऊंटकाकरेगा किंतुरखवारी करनेसे उसकोईश्वरकी बंदना मेंविघ्नपड़ेगा उत्तमहै कि
कुछऊंटइससे ओरलिया चाहिये इसबातको मनमेंठान अपने ऊंटोंको बेगाया ओरउन
के पांवबांधवहांसे उसीयोगीको पुकारताऊंवाचलावहमेरा शब्द सुनठहरगया जबमैं
निकट पहुंचाता मैंने उससे कहामैंने आपकोविदाकरके शोचा कितुमयोगीहो जगत
से विरक्त ओर ईश्वरकीबंदनामें अहर्निशिरत· तुम्हारे इसद्रव्यकेले जानेसे भजनस्मरण
में विघ्नपड़ेगा इसकीरक्षा करनीपड़ेगी इससे उत्तमहै किवह ऊंट मुझकोदेडालो उस
नेकहा तुसत्यकहताहै इतने ऊंटोंकेरखनेसे अवश्यविघ्नहोगाजितने तुचाहे इनमेंसे
लेलेमैंने प्रथमसेयहबातन विचारीथी वह ईश्वर परमात्माके आनंदरकवे तेन
मुझे बहुतअच्छीबातबनाई सोमैंदश ऊंट उसयोगीकेभागमें सेचाहताथा किलेक
र आगेको चलूं अकस्मात फिरमेरे मनमें यह आई कियोगी कोदश ऊंटकोदेने से
कुछ विदनहुवा दशऊंट ओर इससेलेने चाहियें फिर उसयोगीके समीपजाय मैंने
कहा तीस ऊंटोंकीरखवारी ओर सेवातुमसे बनन पड़ेगीउत्तमहै किदशऊंट मुझेको ओ

सच
९
6

रदो योगीनेकहा अच्छाबाबा जोतिभी यही इच्छाहै तोदशइनमेंसे औरलेबोस रुंटमेरे वास्तेबजे
नहैं सोमैं दशरुंट औरयोगीकेभागमेंसेलेगया जबउनबीसोंको मैंनेअपनी पंक्तिमें मिलाया
तोमुझेलोभ अधिकहुवा औरचाहा किदस रुंटऔरउस्सेलूं निदानफिर उसकेपासगया औ।
रकहउसनेके दसरुंट औरकिनशेषदश रुंटभी उस्सेलेदमदिलासादेके चलाआया योगी
नेसबकेसब रुंटहंसी खुशीसेमुझकोदे दिये औरबस्तफाड़कर उठखड़ाहुवा औरचलने।
को इच्छाकीपरन्तुमैंने मुझेनछोड़ा किमैंउन उंटोंकोजासबकेसब अशरफी औररत्नों
सेभरेहुयेथे संतोषकरके अपनेमहलमें आतासो यहशोच पैदाहुवाकिवह मल्हमकीडि
बियाभी योगीसेलेनी चाहिये निदानफिरमैंने ठहरकरउसयोगीसे कहाकिमरहमकीडिबिया।
को जिसमें मल्हमहै अपनेपास रखकरक्या करोगे उसभी मुझे कृपाकरो उसने उसके
देनेका इन्कारकिया इससेमुझेअधिक अभिलाषाहुई औरमैंने अपने मनमेंठाना किय
दह योगीप्रसन्नतासेडिबिया देवेतो भलानहीं जोरसेउस्सेले लूंगाउसयोगीने यहबात स
मझकरडिबियाको अपनीजेबसे निकाला औरकहने लगाभाईजी तुम्हारी प्रसन्नता इ
सीकेलेनेमें हैतोलेलोपरन्तु तुझे उचितहै किइसमल्हमकाउपयोगमुझसे समझलोमैंने उस
डिबियामें मल्हमभरा देख उसयोगीसेकहा जहांतुमने इतनी कृपा औरउपकार मुझ

से कियाहै तोइसकागुणभी मुझकेबतायदीजिये उसनेकहा इसकेगुण अद्भुत और विचित्रहैं
जोतुम इसमल्हममेंसे थोडासा अपने बांयें नेत्रमें लगाओ तो तुम्हें संसारभरके कोष दिखा
ई देवें औरजो इसीमल्हमको अपनीदाहिनी आंखमेंलगाओतो तुमदोनों आंखोंसे अंधेहो
जाओ मैंनेपरीक्षाकेलिये उसडिबियाको योगीके हाथमेंदे करकहातुम इसकेगुणको
भली भांतिजानतेहो अपने हाथसे मल्हममेरे बांयें नेत्रमेंलगादो उसयोगीने मेरी आंख
बंदकरकेथोडासामल्हमउसडिबियासेले मेरे पलक परलगादिया मल्हमकेलगातेही मैं
ने नेत्र खोलचक्षु औरदेखाकि हजारोंगडेहुये कोषजैसा किउसयोगीनेकहाथाटष्टिप
डनेलगे तबमैंने दाहिनी आंखको मूंदकरकहाकि अबतुममेरे इसनेत्रमें भीमल्हम
लगादो उसनेकहा मैंनेतुझे पहिलेही बतादिया किइसनेत्रमें लगानेसे तुम अंधेहोजा
ओगे यद्यपिवह योगीसत्यकहताथा परंतु तृष्णासेमैंने उसके वाक्यकोझूठसमझा और
विचारकिया किदाहिने नेत्रकेलगानेसे कुछ अधिकलाभहोगा यह योगीमुझसे वहका
कर चाहताहै किमुझसे वहलाभ उठान्नदें मैंने मुसकराकेउससे कहातुम मुझे धोखादेतेहो
उसने कहामुझे ईश्वरकी सौगंधहै किइस मल्हममेंयही गुणहै हे प्यारेभाई मेरे बचनको
सचजानमैंनेतुझसे झूठनहीं कहामैंने उसकी बातकोनमाना औयही जानाकिछलसमु

सप्त
८
7

फकी उसके असर्वगुणोंसे निराधार(आ)हे यह विचार मैंने फिर उससे मन्त्र मलगानेको कहा उ
सनेनमाना औरकहने लगाकिमैंने तेरेसाथभलाई कीहै अबबुराईको कहतेनिश्चयजा
नकि इसवातसे जन्मभरतू डरव औरकष्टकोभोगकरेगा इसवास्ते इसविचारकोछोड़दे औ
रमेरे कहनेको मानजितना २ वहयोगी यहबातें कहताथा उतनाही मेरीलालसा अधि
कहोतीजातीथी निदान मैंने उसपरमेश्वरकी सोगंददिला करकहाहेयोगी जिस २ व
स्तुकोमैंनेतुझसे मांगावह सबपाया यह मेरी अंतकी प्रार्थनाहै दयाकरइसइच्छाकोभी
पूर्णकर औरजोकुछमुझपरदुःखहोगा उससेतुम अलगहोतुम्हें दोषनलगैगा उसने
कुछनमाना परंतुमेरे पीछेपड़नेसेलाचार होकरथोड़ासा वहमल्हम मेरेदाहिनी आं
खके पलकपरलगादिया जब मैंने आंखखोलीतोदीनों आंखोंसे अपनेको अंधापाया
ओपथारेकेसिवायकुछभी प्रतीतनहुआ तबसे अबतकमैं अंधाहूं फिर उसयोगीसेमैंबो
लाहे योगीजोतूकहताथासोईहुवा औरउसे बहुतसीगालियांदेकरकहाकिजोतूमुझको
चालीस ऊंटअपनेभागकेलेजा औरमुझे अच्छाकरयोगीने उत्तरदिया मेरा इसमेंका अ
परायहै मैंने तेरे साथ ऐसी भलाई कीथीकि कभी किसीने किसीके साथनकीहो परंतु

तूने मेरा उपदेश न माना तेरा मलीन मन इतने द्रव्य के पाने से भी न भरा और तेरी इच्छा न गई और
मेरे बचन को न माना छल समझा अब इसका क्या उपाय है अब तू हज़ार वान हो हो सका फिर मैं
ने अत्यंत विनय करके कहा है योगी इन असी ऊंटों को जो अशरफी और रत्नों से लद रहे हैं ले
जा मैं ने प्रसन्नता से तुझको दिये जो तुझ से हो सके तो ईश्वर के वास्ते मेरे नेत्रों में ज्योति दे उस
योगी ने फिर मेरी बात का उत्तर न दिया और मुझे उसी ढंग से छोड़ कर और वह
असी ऊंट लेकर बासरा देश की ओर चल दिया मैं कितना ही चिल्लाया कि या कि मुझे भी इ
स बन से अपने साथ ले चल मार्ग में किसी दूसरे ब्योपारी के साथ हो लूंगा परन्तु उसने उ
स भी मेरी बात न सुनी निदान मैं उस योगी के चले जाने के पीछे अपने नेत्रों की ज्योति औ
र धन खोकर व्यथा और तृषा से मरने लगा संयोगवश दूसरे दिन बासरा देश के ब्योपारियों
का समूह जो बुगदाद को जाता था उधर निकला मुझको इस आपत्ति में देख दया से बुगदाद
में ले आये सो मैं इस नगर में सिवाय इसके कि भीख मांग कर अपना काल क्षेप करूं और कुछ
न बन पड़ा नियान भीख मांगनी आरंभ करके यह प्रतिज्ञा की कि इस तरह से का यह दंड है
कि जो कोई मुझ पर दया करके कुछ देतो उचित है कि एक थप्पड़ मेरे शिर पर मारे यही का
रण था कि मैं ने आप से कल इस बात में न कार की थी जब उस अन्धे ने अपना वृत्तान्त

सच
८

8

समाप्त भया तो खलीफ़ाने उससे कहा है भिक्षुक तेरा अपराध बड़ा है ईश्वर उसको क्षमा करे अब
तुमको उचित है कि अपनी जाति के फ़कीरों से अपने अपराध को कहो कि तुमको आशीर्बा
द दें अब तुम अपने निर्बाह की कुछ चिंता मत करो तुम्हारे वास्ते मैं पांच रुपये रोज़ अप
ने कोष से नियत किये देता हूं वह जन्म भर तुमको पहुंचे जावेंगे अब तुम नगर में भिक्षा
के लिये मत जाया करो यह सुन उसने खलीफ़ा को प्रणाम किया और कहने लगा जो आ
प अपने आज्ञा की मुझे स्वीकार है जब खलीफ़ा भिक्षुक की कथा सुन चुका उस मनुष्य से
जो हर दिन अपनी घोड़ी पर सवार हो के उसे दौड़ाता और मारता था उससे उसका नाम पूछा
उसने बिनय की मेरा नाम सीदीनेमान है खलीफ़ाने कहा हमने बहुत से सवारों को देखा
कि वह घोड़ी की सवारी सीखने के लिये बहुत श्रम करते हैं बहुधा हमने भी घोड़ों पर स
वार हो घोड़ों को फेरा है परन्तु मैंने किसी को नहीं देखा कि जैसे तुम अपनी घोड़ी को दौ
ड़ाया करते हो कल मैंने तुमको देखा कि तुम अपनी घोड़ी को चाबुक और पैर से अत्यन्त नि
र्दयता से मारते थे सब मनुष्यों को यह दशा देख अत्यन्त आश्चर्य था और उन सबसे अधि
क मैं आश्चर्यित था यहां तक कि मैंने उस समूह में खड़े होकर इसका कारण वहां के मनुष्यों
से पूछा पर कोई न बता सका इतना ही मालूम हुआ कि प्रतिदिन इसी भांति अपनी घोड़ी

कोकह देताहै अबमैं तुमसे इसकाकारणसंक्षताहूं उचितहै कितुम सत्य २ कहो सोदीने
मानने जानाकि खलीफा इसहालके सुननेके लिये बहुतहठ करताहै ओरकहै बिनाकि
सीभांतिमेरा कुछकारानहीहो सका पहिले इसप्रसनके सुनतेही उसकेमुखकावर्ण
बदलगया ओरखलीफाके भयसे चुपचापचित्रवत् खड़ारहगया खलीफाने कहा सो
दीनेमान इसमति मुझसेकारण उसका वर्णनकर ओरइससमय मुझे अपने मित्रों के
समान समझ ओर जिसतरह उसनेबातचीत ओर अपनाहाल कहताहै मुझसे भी क
ह यदि उसभेदके वर्णनमें किसीबातका भयतुझकोहोतो मैंनेउसे क्षमाकिया सोदीने
मानको खलीफाके धीर्यदेनेसे कुछ बोलने कासाहस हुवासोहाथबांधविनयकरने
लगामैंने इसविषयमें अपनीजातिधर्मके विपरीति कोईकामनहीं कियाइसलियेमैं आ
पकी आज्ञानुसारइसवृतांतको वर्णनकरताहूंजोकोई अपराधमुझसे हुवाहोनिसंदेह दंड
केयोग्यहूं यहतोनिसंदेहहै किमैं अपनी घोड़ीकोजैसाकि आपनेदेखा हरदिनचुमाया
करताहूं सोआपकोइस घोड़ी परबड़ीदयाहुई ओरमेरा इसभांतिसेचकरदेना आपकी बु
रामालूमहुवायदि आपइसकाहालसुनेंगेतो यह दंडइसकेलिये आपथोड़ासमझेंगे ॥
सोदीनेमान ओरउनकी घोड़ीकीकथा ॥ हेबादशाह मेरेमातापिता अपनेमरनेके पीछे

सच
५
१

इतनाधनछोड़गये थेकिवह मेरेजन्मभरकोकमनथा औरआनंदपूर्वक अपनानिर्वाह कर
नाकिसीभांतिकी चिंतानरखता एकदिनतरुणावस्थाके वेगमेंयह विचारउपजाकि एकसुंदर
स्त्रीसे विवाहकरूंपरंतु ईश्वरनेनचाहा कि कोई अच्छी स्त्रीमुझको मिलजोउसस्वभावकी सा
थीहोसंयोगवशमैंने एकस्त्रीके साथजो अतिरूपवान औरविद्यामयीथीविवाह किया औरहम
रेहीदिनसे उसको उहनाकाहालमुझपरखुलनेलगाहै स्वामीआपकोभली भांतिमालूमहै
किहमारीजातिमेंविवाह केपहिलेस्त्रीके देखनेकीरीतिनहींहै और विवाहकेपहिले पति
स्त्रीकेरूप औरअंतःकरणकी अच्छताको किसी तरहनहींकहसकताहरतरह उसीस्त्रीके सा
थ प्रसन्नता पूर्वकरहनाचाहिये चाहोवहसुशीलहोवा अशीलनिदानपहिले उसकेरूपछ
वि अनूपकोदेख अमंत प्रसन्नहुवा औरईश्वरका धन्यवाद किया औरप्रसन्नतासे रात्रिभरउसके
साथ सोयाविवाहकेदूसरेदिनजबउसके औरमेरे लियेभोजनलाया गयामैंने अपनी स्त्रीको
भीबुलवाभेजाबउतकालमें वहभोजनपरआवैठीसंयोगसे उससमययहमपुलावभोजनकरा
नेलगे औरमैं अपनेदेशकीरीतिके अनुसारखुभवेसे खानेलगा औरवह अपनेजेबसेकान
उरेदनी निकालउससेचावलकाएक २ दानाउठाकरखानेलगी यहदेख आश्चर्यमेंगया
औरउसकानामलेकरकहा हेसुंदरीकातुमनेभोजनकीयहीरीति अपने संबंधियोंसेसी

खोईहै यातुम अन्नकेदाने गिनतीहो दूसरे समयभोजनकरोगी मैंजानताहूं कितुमने समयमें
चावलकेदसबीस दानोंसे अधिकन खायेहोंगेगे जोतुम सरफेकीराहसेनहीं खातीहोतो
ईश्वरनेमुझे बहुतकुछदियाहै तुमउसका कुछविचारमतिकरोहे सुंदरीजोभोजनक
रनेकीरीतिहै औरजिसतरहसेमैं खाताहूं भोजनकरो परंतुउसने उत्तरनदिया औरउसी
प्रकारपात्रमें से एक २ दानाउठाकरखानेलगी किंतु मेरेरिझानेकेलियेएक २ दानाभीदे
रमें उठाकरखानेलगी जबखीरमालऔरखाकरखानी खाने लगेतोउसनेथोड़ासारोटीका
छिलकातोड़करबड़ेनखरेसे अपनेमुखमेंडालानिदानइतनाखायाकि उसनेभोजनसेछो
ड़ियाभोहमनहोमें उसकेहठसेअतिआश्चर्यमेंहुवा औरविचाराकिशायदइससे पुरुषके
साथभोजनकरतेलजा आतीहो आगे मेरेसाथ खायाकरेगी औरयहभीशोचा किकदाचि
तवहभोजनकरचुकीहोइसलिये इससमयउसे रुचिनहींहै अथवायहसमझाकि उसको
अकेलेखानेकाअभ्यासहै निदान इनसबबातोंको विचारमैंने उससेकुछनकहा औरभोजन
करकेमैदानमेंघूमनेकोगया उसकेनखानेकाशोचकुछमेरे मनमेंनरहा दूसरी समयज
बभोजनकरनेकासमय आयातो उसनेउसीतरहखायाकिजैसापहिलेभोजनकियाथाकिं
तुहरदिनउसीभांतिभोजनकरतीमुझे उसकोयहदशादेख अधिक अचंभाहुवाकियहस्त्री

सच
१
10

विनाभोजनकोंकरजीतीहै यहांतकएकरात्रिकोवह मुझे अपने विचारमें सोयाजानकरमेरेपा
ससेचुपकेउठीपरउस समयमैं जागताथाक्योंदेखाकि वह बड़ी सावधानीसे उठती हैकि मु
झेउसका उठनाजानपड़ेमैं आश्चर्यमेंहुआकि यह इससमयको अपना आरामछोड़
मेरेपाससेउठीमैंने चाहाकि इसकेहालकोमालूमकरूं फिर औरसोनाबनकेखुर्राटेले
नेलगाइतनेमेंवहवस्त्रपहिनचुपकेसेबाहरकोचलीमैंभीशीघ्र अपनी शय्यापरसे उठव
स्त्रोंकोकांधेपरडालउसकेपीछेचला औरयहस्त्रीकोखिड़कीसेदेखनेलगाकियह किधर।
कोजातीहैवह आगे घरकेदरवाजेकीजोगलीके औरथीखोलकरबाहरगईमैंभी उसी।
द्वारसेजोउसनेबंदनकियाथा बाहरनिकला औरभलीभांति चन्द्रमाकीचांदनीमें देखता
हुआउसके पीछेहोलिया चलती २ वहश्मशानमेंपहुंचीजोहमारे घरसेनिकटथा
मैंभीवहांदीवारसेलगइस भांति खड़ाहोगयाकि उसे भलेप्रकारदेखूं औरवह मुझेन
देखसकेनिदानक्यादेखताहूं किवहएकप्रेतकेसाथजाबैठीहै हेप्रजापालक आपजा
नतेहैंकिप्रेतयातो शैतानकी सृष्टिहैं वाभूतनके प्रकारमेंसेहैंजो अकेलेकेयात्रीकोपातेहैं
तोउनकोडराकरमारडालतेहैं औरजोवह किसीदिनविदेशी नहीं पातेतो रात्रिको कबरों
मेंसेमुर्देनिकालकरभक्षणकरतेहैं मैं अपनीस्त्रीकोप्रेतकेसाथ बैठेदेखभयभीतहुआ

और आश्चर्य में हुवा फिर उन्होंने मित्र का एक लोथ जो उसी दिन गाडी गई थी कबर में से खो
दकर निकाली और वह दोनों अर्थात् मेरी स्त्री और प्रेत उस मृतक का मांस काट २ कर खा
ने और अति प्रसन्नता से परस्पर बातें करते परन्तु मैं दूर खड़ा था इस निमित्त उनकी बातें भली
भांति न सुन पड़ती थीं और उनकी दशा देखके कांपने लगा जब वह सब मांस भक्षण कर चुके तो
उस मृतक की हड्डियां फिर उसी कबर में डाल फिर उसे मट्टी से तोप दिया मैं उन दोनों को वहीं छो
ड़ कर तुरंत अपने घर चला आया और उस द्वार को उसी प्रकार खुला छोड़ अपनी शय्या पर आ
कर वहाने से सो रहा थोड़ी देर के पीछे उस स्त्री ने भी आकर अपने वस्त्र उतारे और मेरे साथ।
सो रही उसके हाल से मुझे विदित हुआ कि उसने मुझे नहीं देखा और उसको मेरा आना जा
ना मालूम नहीं हुआ पर ऐसी मुर्दों के खाने वाली स्त्री के साथ सोना बहुत बुरा मालूम हुआ नींद
न उस समय तो मैं बलात् निस्स्वैक उस डाइन के साथ सो रहा इतने में भोर की बांग सुनने में आया पड़ा
और दिशा और स्नानादि से निश्चिंत हो निमाज पढ़ने को मसजिद में गया और निमाज पढ़ औ
र नियम निज तक रबागों में गया और टहलती समय यह विचार में आया कि किसी भांति
अपनी स्त्री को इस कुसंगति से हटाऊं और मुर्दों के खाने की शक्ति उससे छुड़ाऊं ऐसा इसी वि
चार में मैं अपने घर में भोजन के समय पहुंचा मेरी स्त्री ने मुझे देखते ही मेरे सेवकों से भोजन मं

सव
११
११

गवारकवाफिरजवहमरपानेलगेतोवहउसीभांतिपक २ दानाउठाकरखानेलगीमैंने उसे क
हाहेसुंदरी जोतुमैंकिसी भोजनकी रुचिनहोतो देखोईश्वरकीकृपासेनानाभांतिकेभोजन
उपास्थितहैं औरइसकेविशेषप्रतिदिनभोजनवदलाये जातेहैं जिसकीतुम्हें रुचिहो उ
सकोखाओ औरजोतुमकोयहपाक पसंदनहोंतो अपनीइछाके अनुसारभोजन पका
वालियाकरोइनवातोंकेसिवामें तुमसे पूछताहूं क्यासंसारमेंकोई भोजनमुर्देकेमाससे
उत्तमनहीं जिसेतुमरुचिपूर्वकभक्षण करतीहो अभीमैंने यहसारीवातप्रमाणकीथी
किवह समझगईकिरात्रिकोमैंने उसकाहालदेखाहै इससे मारेकोपके उसका मुख
लालहोगया और आंखें उसकी उभर आईं औरमुखमेंसेझागभरलाई उसकीयहदशा दे
खमैं भयभीतहुआ औरस्थिरबुधिविसरगई उसने उसकेपासरक्खाहुवाथा उठालिया औरउंगलियों जलमेंडुवोकर कुछ पाहजिनकोमैं न
होसमझताथा पढनेलगीफिर उन उंगलियों संजलमुझपरछिड़का औरकहाहे उपत
नेमेराभेद खोला इसअपराधकादंडतूभुगत औरकुत्ताबनजा उसके इतना कहतेही मैं
कुत्ताबनगयावहलकड़ी उठाकेमुझे मारनेलगी इतनामाराकिमैं मरजाता परंतुमैं अपने
बचावकेलियेघरभरमें फिराकिया औरवहलकड़ीलियेहुये मुझेखदेड़ती औरमारतीजा

तीथी जब वह मुझे मारते २ थक गई तो उसने दरवाजा खोल दिया मैं पीडा के मारे चिल्लाता
हुवा बाहर को भागा यद्यपि बाहर निकल करके मार खाने से बचा परंतु उस टोले के कुत्ते मु
झे डरवट देने लगे भूंकने और काटने लगे वहां से मैं एक बूटवा के बाजार की ओर भागा और एक
दुकानदार की दुकान में जो बकरी के सिरपाये और जीभ बेचता था घुस गया और एक कोने
में छिपके बैठ रहा उस दुकानदार को मुझ पर दया उपजी और उन कुत्तों से मुझे बचाया औ
र उनको अपनी दुकान के आगे से मारकर दूर भगा दिया मैं उन आपदाओं से छूटकर रा
त्रि भर उसकी दुकान में बैठ रहा जब प्रभात हुवा तो वह दुकानदार बहुत सबेरे सिरीपायें
बेलने गया और बहुत सा सौदा इस प्रकार का माल लेकर आया और अपनी दुकान पर उ
से क्रम से रक्खा मैं ने दूर से देखा कि बहुत से कुत्ते मांस की गंध पाके उसके दुकान के च
ऊ ओर हैं सो मैं भी उसके आगे जाके खड़ा हो गया वह मुझे देख समझा कि इसने कल से
कुछ भी नहीं खाया केवल मेरी दुकान में भूखा छिप रहा फिर उसने बड़ा लोथड़ा मांस
का मेरे सन्मुख डाल दिया मैं उस मांस को और न देखकर उसके निकट जाकर अपनी पू
छ हिलाने लगा कि वह यह जाने कि मेरी इच्छा इसी दुकान पर पड़े रहने की है उसने मु
झे तुम जाव तब लकड़ी से डराया और अपनी दुकान से निकाल दिया मैं ने भी उसकी दुकान

सव
१२
12

छोड़दी और फिरते २ एक नानवाई की दूकान पर जा खड़ा हुआ संयोगवश वह उस समय भोजन
करता था यद्यपि मैंने कुछ उससे मांगने की सैन न की थी परंतु उसने एक टुकड़ा रोटी का मेरे आगे
फेंक दिया मैंने उसे कुत्तों की भांति झपटा और पूछ हिलाई वह मेरे स्वरूप को देख प्रसन्न हुआ
और मुसकराया यद्यपि मुझे कुछ ध्यान न था परंतु थोड़ा सा टुकड़ा गेंड कर भोजन किया उसको मे
रा स्वरूप पसंद हुआ और चाहा कि मैं उसकी दूकान पर रहूं कहूं उसकी यह इच्छा पाके मैं उ
सकी दूकान के आगे खड़ा होकर के बैठ गया और संध्या को वह मुझे अपने घर में ले गया कि तुम
दा मुझ को ले जाता परंतु मैं उसकी आज्ञा बिना कभी अपना पांव उसके घर में न रखता था नि
दान अंत को उसने मेरी एक जगह नियत की जिसमें मैं मैं रात्रि को रहता और भोजन करते
समय मुझे भलीभांति खिलाता इसके विशेष वह मुझ पर अत्यन्त कृपा रखता और मैं भी ह
र समय उसको और देखा करता और उसके सैन करते ही उठता बैठता जब वह नानवाई अ
पने घर से दूकान को अथवा और किसी जगह को जाता तो पीछे उसके हो लेता जब वह मेरे
सोने के समय बाहर निकलता और मुझे अपने साथ न देखता तो मुझे गली में खड़े होके उ
स नाम से जो मेरा उसने रक्खा था पुकारता मैं तुरंत उसका शब्द सुन उसके पास जाता और उ
सके दरवाजे के आगे दौड़ा और खेला करता और बाहर को जाने के समय कभी उसके आगे

दौड़जाता और कभी उसके पीछेहोलेतानिदान एकसमय उसके मुखकी ओरदेखा करताथ

इकाल पर्यंतमें उसके घरमें अति आनंदसे रहाएकदिन कोई स्त्री रोटियां मोल लेनेउसको

हकान पर आई और रोटी मोल लेकर उसने एक खोटी मुद्रा अपनी मुद्राओंमेंमिलाकर उसनान

गईको दी नानवाईने उनको परखकर खोटी मुद्रा उसे लौटादी कि इसके बदले अच्छी मुद्रा मु।

फेदे उसस्त्रीने उसखोटी मुद्राके फेरलेनेमें बादकिया और कहनेलगी वहमुद्रा नवीनप्रचले

तेहे नानवाईनेकहा कि यह खोटी है अभी इसका हाल तुझे मालूम हो जावेगा यद्यपि मे

राज्ञताप्रमु है परंतु वह इस मुद्राको परख लेवेगा यह कह उसने मेरानाम लेके पुकारा कि

महात्माओंमें उसकाशब्द सुनतेही कूदकर उसके सन्मुख गया नानवाईने उनसब मुद्रा ओंकोम

रे आगे फेंकदिया और कहनेलगा इसमेंजो खोटी होसो देखकर अलगकरदे मैंने उनसबको

एक २ करके देखा और जो खोटी थी उसपर मैंने अपना चरण रखदिया और अच्छीको एक।

ओरधरउसनानवाईके मुखको देखनेलगा वह जानगई मेरी बुद्धिपर अत्यंत प्रसन्न हुवा और।

वहस्त्री यहदशा देखआश्चर्यमें हुई और खोटी मुद्राको बदलदिया जब वहस्त्री अपने घर।

चलीगई तो मेरे स्वामीने अपने पड़ोसियों को बुलाकर यह संपूर्ण वृत्तांत वर्णन किया उन्होंने

मेरी परीक्षाकेलिये अच्छे रुपयोंमें खोटे रुपये मिलाकर मेरे आगे डालदिये कि वहभी अप

ने नेत्रोंसे मेरीबुद्धिकोदेखिमैं पीछेअच्छोंमेसे खोटोंको अलगकरके उनपर अपने चरणरखा
तागया उन्होंनेयहदशादेख अचंभामानकर बहुतमनुष्योंसे जोमार्गमें चलतेथे यह हालक
हा थोड़ेही कालमेंयह समाचार नगरभरमें प्रसिद्धहुवा औरमें उसदिन संध्या पर्यंतमुद्रा
ओंको परखतारहाउसदिनसे वहनानबाई अधिक मुझपरदयाकरनेलगी और इहामित्रयही उसकहतेथे कित्तनेयह जनाका एकसरीफरहवाहै वह सब मे
पओंसी औरइहामित्रयही उसकहतेथे कितनेयह जनाका एकसरीफरकावाहै वह सब मे
रे नानबाईकेपासरहनेसे इर्षाकरनेलगे औरचाहतेथे किमुझेवहांसे निकालदें इसलियेनानबा
ईरुनाणभरभी मुझेअपनेसे अलगन करता कईदिनके पीछे एकस्त्री उसहूकानपररोटी मोलले
नेआई औरएक मुद्राजिसमें एकाखोटीथी नानबाईकोदी उसने परखने कोमुझेदिखाया मैं
नेतुरंतउनमेंसे खोटी मुद्रामारीकरके चरणकेनीचेदबाली औरउसको औरदेखने लगा।
वह मानगईकिमैं सचकहताहूं यही खोटी मुद्राथीजोतने परखी औरनानबाई सेकुप
के मुझेसेनकरकेबुलाया औरअपनेघरमें लेजानेकोइच्छा कीमैंईश्वरसे सदेवयह प्रार्थना
करताथाकि किसीभांति फिरअपनीयोनिकोप्राप्तहोऊं औरफिरमनुष्यबनूं निदान उसा
स्त्रीकेबेर २ देखनेसे मुझेनिश्चयहुवाकि शायदकुछमेरेहालकोजानगई होमें उसीके
औरदेखा कियायहांतक किवह कईपगजाके फिरलोटी औरमुझे सेनकी मैं उसकेअ

भिप्राय को समझ गया और अपने स्वामी की दृष्टि बचा कर उस स्त्री के साथ हो लिया वह मु
झे अपने साथ देख अत्यन्त प्रसन्न हुई और अपने घर में ले गई निदान जब मैं घर के भीतर ग
या तो उस स्त्री ने द्वार को मूंद लिया और मुझ को एक मकान में ले गई जिसमें एक सुंदरी कार
चोबी वस्त्र पहिने बैठी हुई थी मैंने बुद्धि से मालूम किया कि वह इस स्त्री की पुत्री है और वह स्त्री
जादू की विद्या में अति प्रवीण थी फिर उसी स्त्री ने जो मुझे बाजार से लाई थी उस सुंदरी से कहा य
ही कुमार खोटे मुद्राओं को अच्छों में से परखता है मैं यह खबर पहिले सुनकर समझती थी
कि यह कुमार मनुष्य था किसी अभागे निर्दयी ने उसे जादू से कुत्ता बनाया है आज मेरे मन
में आया कि मैं जाकर उस नानवाई की दूकान से रोटी मोल लूं और इस बात की परीक्षा लूं सो
मैंने इसे परीक्षा में परिपूर्ण पाया हे पुत्री तुम इसे भली भांति देखो कि कौन है वास्तव में पशु
है वा जादू से पशु बन गया वह सुंदरी मेरी ओर भली भांति देख बोली हे माता तुम सच कह
ती हो मैं इसका हाल जानती अभी तुमसे कहूंगी यह कहके वह सुंदरी अपने स्थान से उठी औ
र एक जल का पात्र लेकर उसमें अपना हाथ डुबोया और मेरे ऊपर उस जल को छिड़क के
कहा जो वास्तव में कुत्ता है तो तू कुत्ता ही बना रह यदि तू मनुष्य है तो इस जल के प्रभाव से अ
भी पुरुष तन को प्राप्त हो जा उसके कहने ही में तुरंत पशु का शरीर छोड़ निज योनि में आ

सव
१४

14

या और उस सुंदरी चंद्रमुखी के चरण पर गिर कर उसके वस्त्रों को चूमा और कहने लगा कि तु
मने मुझ पर इतनी कृपा की जिसका मैं गुणानुवाद नहीं कर सकता सो उत्तम है कि आज से मैं
तुम्हारी सेवकाई किया करूंगा फिर मैंने संपूर्ण वृत्तांत अपनी स्त्री का कह कर उस स्त्री का
जो मुझे अपने घर लाई थी गुणानुवाद किया उस सुंदरी से कहा हे सीदीनेमान इससे अधिक
हमारा गुणवर्णन मत कर किंतु हम आप ही तुम पै से अच्छे मनुष्य के साथ उपकार क
रके प्रसन्न हुई तेरी स्त्री का हाल विवाह होने के पहिले से जानती थी और मुझे उसके
जादू के सीखने और इस विद्या के ज्ञान का हाल मालूम है कि वह हम दोनों एक ही गुरुआ
यन की चेली हैं आगे बहुधा हम्माम में उससे भेंट हुआ करती थी परंतु उसको दुष्ट प्रकृति औ
र दुःस्वभाव से मैंने उससे मिलना छोड़ दिया और केवल तुम इतना ही न जानो कि मैंने तुम्हा
रा रूप बदल दिया किंतु मैं उस तुम्हारे उपकार के बदले कोई दंड तुमसे दिलवाऊंगी तुम
भी घर में जाकर उसका शरीर बदल दो अब तुम यहां मत ठहरो मैं अभी आती हूं यह कह
वह सुंदरी कोठरी में गई और वह उसकी माता के निकट बैठकर उसी सुंदरी का यशवर्ण
न करने लगा उसकी माता भी मुझसे विचित्र जादू की बातें कहने लगी इतने में उसकी पुत्री भी
नरेस एक बोतल लिये हुये आई और कहने लगी हे सीदीनेमान मैंने अपनी पुस्तक में देखा

कि इस समय तेरी स्त्री घर में नहीं है परंतु एक क्षण में आवेगी उसने तुम्हारे सेवकों से कि वह
तुम्हारे न होने के कारण अमंत विकल थी कहा कि मेरा पति भोजन करे न २ उठकर किसी अ
वश्य कार्य्य के लिये गया और एक जना दरवाजा खिताया के दालान के भीतर चला आया मैंने
उसे मारकर निकाल दिया फिर उस सुंदरी ने एक जल का पात्र उसे देके कहा है सोदीनेमानः
अब तुम अपने घर जाओ और यह बोतल अपने से अलग न करना और उसके आगमन की बा
ट देखना वह उसी घड़ी बाहर से आवेगी और तुम्हें देख अमंत व्याकुल होगी और चाहेगी
कि तुम्हारे आगे से भाग कर चली जावे तुम थोड़ा सा जल इस पात्र में से लेकर उस पर छिड़क
देना और यह शहूप पढ़ना इससे अधिक पढ़ने को कुछ आवश्यकता नहीं क्योंकि तुम इस
मंत्र का प्रभाव अपनी आंखों से देखलोगे मैं उस चंद्रबदनी के सिखाये हुये शहू याद कर उ
स से विदा हुआ और अपने घर में आया और जो जो बातें उस सुंदरी ने मुझसे कही सब देखने में
आई अर्थात् क्षण मात्र भी न बीता था कि मेरी स्त्री वहां आई और चाहती थी कि मेरे आगे से
भाग जावे मैंने शीघ्र ही उस पर वह अभिमंत्रित जल छिड़क दिया और वही शहूप पढ़े जिसके प्र
ताप से वह घोरी बन गई यह वही घोड़ी है जिसको आपने कल देखा था फिर जब मैंने उसको
उस योनि में देखा तो आश्चर्य में हुवा और उसके अयाल पकड़ अश्वशाला में ले गया और बा

सव
१५
15

गडेोरसेउसको बांधाऔरचाबुकसे इतनामाराकिथकगया सीदीनेमाननेयहांतक अपने ह
तोंतकोकहकेखलीफासेविनयकी किहेबादशाह मुझे विश्वासहै किआप मुझसे अप्र
सन्ननहोंगे किंतु आपऐसी कर्मसा स्त्रीकेलिये अधिकदंड विचारेंगेइतना कहकरचुप
होरहा खलीफाने जबदेखाकिसीदीनेमान अपनावृत्तांत संपूर्णकरचुकातोउससेकहा कि
वास्तवमेंतुम्हारावृत्तांत अत्यंत अद्भुतहै औरतुम्हारी स्त्रीकाबड़ा अपराधहै औरतुम्हारा
दंडदेनामेरेविचारमें बहुतठीकहै परंतुतुमसे पूछताहूं किकबतक उसकोतुमयह दं
डदियाकरोगे औरपशुबनाके रक्खोगेमेरे विचारमें यहउत्तमहै किअबतुम जाकेउसी हू
दरीसे जिसके मंत्रकेप्रभावसेतुमसे उसेघोड़ी बनादियाकहोकि उसकोफिरपूर्ववत् स्त्रीबनादे
परंतुमुझेयहभय औरशोचहै कियहदुष्टा अपनी योनिको प्राप्तहोकर ईश्वर जानेक्याअ
पकारतुमसेकरे जिसकाकोई उपायनहोइसलिये खलीफानेफिरकुछ इसबातमेंनतकरार
नकी औरतीसरेमनुष्यसे जिसे वजीरनेबुलगयाथा कहनेलगा कलजबमैं अमुकगलीमें
गयातोतुम्हाराविशाल औरविचित्रमहलदेखमुझे अत्यंत आश्चर्यहुवाजोउसगलीकेम
नुष्योंसे पूछाकियहबड़ा महलकिसकाहैतोउन्होंने तुम्हारानामलिया औरकहा यद्य
पि ख्वाजहहसनजोपहिले बड़ीकठिनतासे अपनानिर्वाहकरताथा अबपरमेश्वरनेउसे इ

तनीसामर्थ्यदीहै कि उसने ऐसाविशाल औरसुंदर महल बनगयाहै परंतुवह अपनी उ
सदशाकोनहींभूला औरद्रव्यको वर्थ खर्चनहीं करतासोपडोसी तुम्हारे तुमकोसब अ
च्छा औरभलाकहतेहैं कोईतुमसे अप्रसन्ननहीं अबमैं चाहताहूंकि अबतुम मुझसेव
र्णनकरो किक्योंकरतुमको इतनाधनप्राप्तहुवा इसी लियेतुमको मैंनेबुलायाहै मेराकुछ
भयमतकरो मुझे केवलतुम्हारेवृत्तांतसुननेके सिवाय औरकुछ प्रयोजननहीं हैतुम अ
पने ईश्वरके दियेहुये धनको भोगो और ईश्वर तुम्हारे ऊपरसदैव कृपाकरे खलीफ़ानेइस
भांतिके वचनकह उसेधीर्य्यदिया ख्वाजेहसनने तख़्तकेपायेकोचूमा औरकालीनजो त
ख़्तके नीचे बिछाथा हमकर विनतीकी किहेबादशाहमैंसत्य २ अपनावृत्तांत आपकेस
न्मुखविनयकरताहूं ईश्वरसाक्षीहै किमैंने कोईबात अपनीजाति धर्मकेप्रतिकूलनहीं
कीकेवल ईश्वरके अनुग्रहसे इसपदवीको पहुंचाफिरवह इसभांति अपना वृत्तांतकहने
लगा ख्वाजेहसनरस्सीबेचनेवालेकीकथाहै बादशाह आपकी आज्ञानुसार विनय क
रताहूं किक्योंकर मुझे इतनाद्रव्य मिला परंतुप्रथम आपमेरे मित्रोंकाहालजोबुगदादके
निवासीहैं सुनियेवह अबतकजीतेहैं औरमेरे वृत्तांतकेजोमें कहताहूंसाक्षीहैं एकका
नामसाद औरदूसरेकानाम सादीहै सादीकोयहनिश्चयथाकिसंसारमेंकोईमनुष्यबिना

सच
१९
16

इसके आनंदनहीं उठाता और वह धनउद्योगकिये विनाआमनहीं होता और सादकामन इसके विरुद्धथा सोवह यहकहताथाकि जबतकभाग्यउदयनहीं होतातबतकधननहीं मिलतासा दसादीसेगरीबथा और उनदोनोंमें अमेनस्नेहथा और कदापिपरस्परकिसीदातमें नकरारनहो तो सिवायइसविवादकि सादीउद्यमको श्रेष्ठ मानता और सादभाग्यको एकदिनउनदोनोंमें इ सीबातकेलिये बहुतवादहोगई सादीने कहायातो मनुष्यदरिद्रतामें उत्पन्नहोके सदैव दरिद्री रहताहै वाधनहोनेकी अवस्थामें जन्मलेकर तरुणावस्थामें अपनेद्रव्यकोव्यर्थ व्ययकर आ पतिउठाताहै फिरउसको इतनीसामर्थ्यनहीं होतीकि आनंदमें रहाकरे अथवाकिसी उपा वा उद्यमसेद्रव्यकमावे सादकहताकि उद्यम और पुरुषार्थ और उपाय कुछकामनहीं आ ताकेवल अपनेही भाग्यसे धनवानहोताहै धनवानता और दरिद्रता संयोगिकहैं मनुष्यको उद्यम और उपाय कुछकामनहीं आता सिवामाल और उपायके अमीरीके असबाब बनतेहैं जो भाग्यसे संबंध रखतेहैं सादीनेकहा तुमझूठकहतेहो आओ हमतुम दोनों इस बातकी परीक्षालें किसीपरदेशीगरीबकोजो श्रमसेकालक्षेप करताहो कुछ धन देवें वह नि संदेह अपनीवस्तुकोबढ़ावेगा तोवह अवश्यद्रव्यवानहो आनंदउठावेगा उससमयतु म्हें मेरे वाक्यकाविश्वासहोगा सोवह दोनोंमित्र सैर करते २ मेरे घरपर आये और जहांमैं र

सीबटताथा पहुँचे और यह काम अर्थात रस्सी बटनेका मेरी कईपीढियोंसे था मेरे पिता
और दादा यही काम करते थे मेरे घर और वस्त्रको देखउन्हें मेरी गरीबीका हाल मालूम हुआ
वा साधुने साधीसे मेरी ओर सेनकर कहा जो तुम्हें परीक्षाकी इच्छा हो तो कुछ अशर्फ़ि
यां इसे देकर इसकी परीक्षा करो यह मनुष्य बहुत कालसे यहां रहता है मैं भलीभांति
जानताहूं कि यह रस्सी बटके अपने कुटुंब समेत अतिकठिनतासे अपना निर्वाह करता
है साधीने उत्तर दिया बहुत अच्छा परंतु हम इस मनुष्यको भलीभांतिदेखलें फिर वह
दोनों टहलते हुए मेरी ओर आये मैंने अपना काम छोड़ उनको प्रणाम किया साधीने
मेरा नाम पूछा मैंने कहा मेरा नाम हसन है परंतु जो मैं रस्सी बटताहूं इस निमित्त मु
झे हसन हबाल कहते हैं फिर साधीने मुझसे कहा पेशावालेको पेशा बहुत होता है
मुझे निश्चय था कि तुम इस पेशे से सुखमें होगे और बहुतसी रस्सी बटनेके वास्ते तु
म्हारे पास इकट्ठी होगी किंतु तुम्हारे बाप दादा परदादा कि वह भी सदासे यही काम करते थे
तुम्हारे लिये बहुत कुछ सामग्री छोड़ गये होंगे और तुमने उनको यथा शक्ति बढ़ाया
होगा मैंने उत्तर दिया मेरे पास कुछ भी नहीं है जिससे मुझे सुख हो और पेटभर रोटी मि
ले मेरा हाल यह है कि भोरसे संध्यापर्यंत मैं रस्सी बटताहूं पक क्षणभी सांस नहीं लेता फ़

रभी बड़ीकठिनतासे रूखीरोटी मेरेकुटुंबकोप्राप्तहोतीहै मेरी एकस्त्री औरछोटेपांच बा
लकहैं उनसबकों मेंसे कोईइसयोग्य नहीं किमेरी सहायता करेमें यथा शक्तिउनके भो
जन आदिकी खबरलेताहूं जोरस्सीबनाताहूं उससेबेच करजोकुछतो खानेमें खर्चकरता
हूं जोकुछबचताहै उससे दिनरस्सी मोल लाकर यही कामकरताहूं इसदशापर फि
रभीईश्वरकाधन्यबादहै किउसने मुझे दूसरेके आधीननकिया जबमें अपनापरिपूर्ण
वृत्तांतसादीसे कहचुकातो उसने मुझसे कहासुकेतेरा वृत्तांतविस्तार पूर्वक विदित
हुवा यहबाततोमेरी समझके प्रतिकूलादिखाई दीजोमें तुझेदोसौ अशरफियोंकी
थेलीदूंतोतू आनंदपूर्वक अपना निर्वाहकरसकताहै औरइतनेद्रव्यकीप्राप्तिसेधनवानहो
जावेगावा नहीं मेंने सादीको उत्तरदिया इतनी अशरफीकि आपमुझेदेनेको कहते
हैं इनसेमेंने एकहो बेरद्रव्यवान नहींहो सकापरंतु उपाय सेमें निस्संदेह पेशावाले
केबराबरद्रव्यसंचयकरलूंगा सादीनेमुझेविश्वासित औरसमबादीदेख अपनीजेबसे
दोसौ अशरफियोंकी थेलीनिकालकरदी औरकहामेंतुझको यहथेली दानदेताहूंतु
मइसलो औरअपनाव्यवहारकरो ईश्वरतुम्हें इसमेंबरकतदे तुम इसबातसमझबू
झकेखर्चकरना येसानहोजो यहद्रव्यनष्टहोनेपावे तुम्हारे आनंदसे सादीजीमेरा यत्न

सेदीहै महाप्रसन्नहोगा आगेयदितमुझे आनंदमें देखेंगेतो हमको अतिहर्षहोगा मैंनेवह
अशरफियोंकी थैलीलेके अपने जेबमें रखली और महा हर्षसे फूलानसमाया औरसादी
कावऊनसाथुणाबुबाटकर उसके वस्त्रकोहमाफिरवह दोनोंमित्रएकसे बिदाहोकेचलेग
येहेसामीउनकेजानेके उपरांतमैं फिर अपना कार्य करनेलगा औरमनमें शोचनेलगा कि
इन अशरफियोंकीथैली कहांधरूं घरमें कोई स्थाननहीं औरनकोई संदूकचाहे जिसमें
में उसेरक्खूं फिर शोचाकि इसथैलीको अपनी पगड़ीमें बांधकर रक्खूं सो उसे घरमें लेग
या और अपने स्त्रीपुत्रोंसे छिपाकरदस अशरफियां खर्चकेलिये निकाललीं और बाकी।
अशरफियोंकी थैली मेंडोरेसेहढ़ बांधा और पगड़ीमें युक्तिसेथैली को रखलिया और वह
पगड़ीशिर परबांधी और सबकामके पहिलेबाज़ारसे सनमोल लिया और मार्गमें लौटती
समय थोड़ासामांसकि बहुतदिनोंसेनखाया था रात्रिके लिये मोललियासो उसेहाथमें
लिये घरचला आताथाकि अकस्मात् एकचीलनेझपट्टामारनाचाहा किमेरेहाथसेमांसले
लेवे मैंने उसेबचाया औरदूसरे हाथसे उसचीलकोहटाया उसने दूसरी ओरसेआकेफिरझ
पट्टामारासोफिरमैंने बचाया उसउछलकूदमें मेरी असावधानतासे शिरपरसे पगड़ी गिरपड़ी
औरवहचील तुरंत अपने पंजोंमें पगड़ीको पकड़केलेउड़ीमें बहुतही कूदा औरचिल्लाया

सच
१८
18

जिसकेसुननेसे मदहोके की स्त्रियां औरबालकरुकहे हुये औरउसबीलको उड़ानेंलगे परंतउ
सने पगड़ीनछोड़ी औरऐसीहलेके उड़ी किहमारी दृष्टिसेउगनहोगई निदानमैं इसकेजाने से
महाचिंतितहोके अपनेघरमें आया औरउनदश अशरफियोंकोजो आगेथेतीसे निकालीथी
सनमोलालिया औरउन्हें अपनेभोजनादिक गृहस्थीकार्य्यमें खर्चकोइस लजा औरशोक
सेमरनाउनमथा औरशोचाजबसादीमेराउपकारी आवेगाऔरउसहालको सुनेगातोउसेक
दाचित् चीलकेलेजानेका निश्चयनहोगाउसे मेरेमकरकरने परसंदेह होगाफिरजबतकवह
थोड़ी अशरफियां मेरेपासरही तबतकमैंचैनमेंरहा औरथोड़े दिनोंपेटभरअपने स्त्रीपुत्रोंस
हितभोजनकियाफिरमैंवैसाही दरिद्री होगयापरफिरभी संतोषराख ईश्वरका धन्यबादक
रयह विचारता किउसीईश्वरने मुझेयह अशरफियांदी औरफिरउसने लेलीजोकुछ उस
परमात्मासच्चिदा नंदनेमनुष्यकेलियेरचाहैसो उत्तमहै ऐसी चिंतामेंथा किमेरी स्त्रीने जिसे
मैंने अशरफियोंके पानेकाहालनकहाथा मुझेइसदशामेंदेखा औरकहैयहजोमेरीदशा
देख रुकहेहुए औरचिंताकाहाल पूछनेलगे परंतमैंनेउनसेकुछनकहा दोहा अपनोद्रव
गंवायकेकहियेनाहीरोयहंससे पड़ोसीबरातिनबधामें अचरजजोय परंत जब उन्होंनेबड़ा
नसंख्वा। तोमैंनेसबहालकहदिया वहसबमुझे झूठासमझकरहंसेयहांतक किबालक

भी मेरीबातपरठंठामारकहनेलगे किजिसने जन्मभर अशरफ़ीनदेखी उसनेइतनी अशरफ़ी
कहांसेपाईं किचौलपगड़ी समेतलेउड़ी परंतुमेरी स्त्री सचजानबहुतरोई जबरसबातकोछः
महीनेबीतेतोवहदोनोंमित्र अर्थात साद औरसादीमेरीगली की ओरआये सादनेसादीसेक
हायहतोवहीगलीहै जिसमें हसनरहताथा चलकेउसे देखनाचाहिये किउनदोसौ अ
शरफियोंसेकितना उसका व्योपारबढ़ानिश्चयहै किवह सर्वसेधनवानहोगा सादीनेका।
हा बहुत अच्छाउसेबहुतकाल सेहमने नहीदेखा मैंभीचाहताहूं किउसे अच्छेहालमें देख
प्रसन्नहोऊं यहकह वहदोनों स्नेहीमेरी घरकी ओरआये पहिलेसादनेसादीसेकहामें
तोउसेउसीदरिद्रतामें पाताहूंकिवह फटेपुराने वस्त्रपहिनेहै परंतुअबउसकोपगड़ी उ
जली दिखाई देतीहै औरकुछ अंतरनहीं तुमभीभलीभांतिदेखो किजो मैंकहताहूं स
त्यहैवा झूठसादीने आगेबढ़केजो मुझेदेखातो उसीदशामें पायाफिरवह दोनों मेरेपासआ
ये पहिले सादने सब्बाहै हसनतुम्हारीका दशाहै औरतुम्हारा व्योपारउन दोसौ अशरफ़ि
यों सेबढ़ावानहीं मैंने कहामें अपनीडर्भाग्यताका हृतांत तुमसेक्या वर्णनकरूंनतोलज्जा।
के मारेकहसक्ताहूं औरनछिपाकर रखनेको सामर्थ्य मुझपर अद्भुत हृतांतऊआउसेसुन
करविस्मितहोगेमें लाचारहोकरवर्णन करताहूंफिरमैंने संपूर्णहृतांत उनसेकहसुनाया

सच
१९
19

साढीकोविश्वासनऊवा औरकहाहै हमन तहमदेहंसीकरताहै औरवाहताहै किहमको।
छलेजोतने कहावह निश्चय माननेके योग्यनहीं चोलोंकाकामपगड़ीलेजाना नहींहै
वह वहीलेतेहैं जोउनकाभत्यहोताहै औरतुमनेवहकामकियाजो बऊथातुम्हारे समतु
ष्य करतेहैं अर्थात जबउनको ऊछकहीं मिलताहै औरबऊनसाद्रवपातेहैं सोवह अप
नेकामकोछोड़लम्पटतामें उसद्रव्यको खर्चकरदेतेहैं फिरवह निर्धनहोजातेहैं फिरअपने
कामकोकरतेहैं तुमनेभीऐसाही कियाहोगाक्योंकि तुमने इसीथोड़ेदिनोंमें सम्पूर्ण द्रव्यको।
व्यर्थखर्चकिया औरजैसथेवेसहीबने रहे मैंने कहाजितना आपमुफेबुराभलाकहिये सो य
थार्थहै औरमैं इसीयोग्यहूं परंतुइसअद्भुतकथाकोजोमैंने तुमसेवर्णनकोकाकोईमनुष
यहां नहींजोनजानताहोमैं तुमसे झूंठनहींकहता औरतुकेभी आश्चर्यहै किचोल पगड़ीन
हीलेती परंतुयहबातजोमुफपरबीती अपूर्वहै साढनेमेरापत्तकरकेसाढीसेकहाकिबऊया
देवाहताहै किचोल बऊनसोबस्त अपने भत्यके विषयभीले जातीहै इसमेंऊछ आश्चर्य
नहीं साढीनेयह सुनके अपनीजेबसेएक थेली अशरफियोंकी निकाली औरउनमेंसेदो
सौ अशरफी औरमुके गिनदी औरकहनेलगाहै हमन अबकोबेरदोसौ अशरफियां फिरतु
मकोदेताहूं इन्हें बड़ी सावधानीसे रखना औरपहिलेकीभांति मतिखोना तुमइसका अच्छा

ब्योपारकरोजिस्सेतुम्हें बहुतलाभहोवे औरब्योपारकोबढ़ाओजैसाकिसबलोगकरतेहैं मैंने
साधोका अधिकगुणानुवादकिया औरआशीर्बाददियाफिरजब वह दोनोंमित्रचलेगयेमैं
अपनेकारखानेमें आया औरवहांसे घरगयासंयोगवशा उससमय मेरीस्त्री औरपुत्र घरमें
नथेमैंनेएक औरहोकेदस अशरफियां निकालीयांकी एकसोनवे अशरफियां एकवस्त्रमें
बांधलीं औरचाहाकिइनको ऐसेस्थानपररक्खूंजहां मेरीस्त्री औरपुत्रोंकीपहुंचनहोइतने
में मैंनेएककोनेमें मट्टीकीमटोर रक्खीहुईदेखी जिसमेंगेहूंकीभूसीभरीहुईथी मैंनेउन।
अशरफियोंकोगेहूंकीभूसीमें रखदिया औरसमझा कियहां किसीकाहाथन पहुंचेगाइ
तनेमेंमेरीस्त्री घरमें आई मैंनेकुछ्छ उससेनकहा औरसस्तीमोललेनेको बाजारमेंगया मेरेजा
नेके उपरांतएकमनुष्यशिरपरयोनेकीमट्टीवेंचताहुवा वहां आयामेरी स्त्रीने मट्टीमोललेनी चा
ही परंतुघरमें कौडीभीनथी तोउसने विचाराकिभूसीकी मटोर घरमें रक्खीहै उसको देके
मट्टी लेलेनी चाहियेसो मट्टीवालाभीइसबातपर राजीहुवा औरमटोकोभूसीसे बदललिया
और मटोरसमेत भूसी उठालेगया इतनेमें मैभीसनमोललियेहुये औरएकबोझ अपनेशि
रपररक्खेआया औरपांचभार सनके मजदूरोंसे उठवालाया वहबोझा उठवाके एकओ
र रखदिये और मजदूरों कोमजदूरीदेकरविदाकरदियामैं विश्रामकरनेकेलिये एकज

गहजाकरलेटरहा औरजहांवहमठोरभुसीकीरक्कवीथी दृष्टिकीतो उसेवहांनपाया इसे
अत्यन्तव्याकुलहुआकि जिसकावर्णन नहींहोसक्ता औरउठकर अपनीस्त्रीसे पूछाकि वह
मठोरयहांसेकाहांगई उसनेसंपूर्णवृत्तान्त मठोरकेबदलनेकाकहसुनाया यहसुनमेंचिल्लाकर
बोलाहेदुष्टा अभागीयहक्यातूनेकिया कितूनेमुझे औरमेरेबच्चोंकोमारडाला औरमठोरबे
चनेवालेकोधनवानकरदियाफिर मैंनेसंपूर्णवृत्तान्त मठोरमेंएक सौनब्बे अशरफियांरखने
काउससेकहसुनायामेरीस्त्रीवहबातसुनतेही शिरऔरछातीपीटकररुदनकरनेलगी औ
रकहनेलगी किउसमठोरके बेचनेवालेकोकहां पाऊंगीवह अभागा आजही इसटोलेमें आ
याथासिवाय आजके मैंने उसेकभीनहींदेखाफिरमुझसेकहनेलगी तूनेबड़ा अनर्थ किया
किइसबातकोमुझसेनकहा जोमेरा विश्वासमानमुझसे कहतातो कदाचित् ऐसानहोता
निधानउसने बहुतरोया पीछेमैंने उसकोयहदशादेख उससेकहाकिइतनामतचिल्लाकि
पड़ोसी हमारीइसदुर्दशाकोसुनमेरी औरतेरीनिर्बुद्धिता परहंसेंगे अबउचितहैकि ईश्व
रकीइच्छापरअपनेकोछोड़ें औरउनदशअशरफियोंसेजो मैंनेनिकालीथीं थोड़ेदिन
अपनेबिताये औरअपनी चिंताकोजो मुझेदूसरीबेरकीहानिसेहुईथी आपकेसन्मुख
उसकाकहांतकवर्णनकरूंफिरशोवडठाकिसादीसे भेंटहोनेसमयमैंक्याकहूंगा वहतो

पहिलेही हालकानिश्चय नहीं करताथा अबकीबेरउसे निश्चय करकेमेरे छल औरलम्पट
ताकानिश्चय होगा निदान एकदिन साद औरसादीऊबे मेरेहीविषयमें तकरार करतेऊयेमे
रेघरको तरफ आये मैंनेउनको दूसरे देखकर अपनाकाम छोड़दिया औरचाहा किकहीं जा
कर छिपरहूं औरउनके सन्मुखनहूं क्योंकिमेरी आंखेंलज्जासे उनकेसन्मुखनहोंगी अभीमैं
बाहरनहीं निकलाथा किउनदोनोंनेपऊंच प्रणामकरमेरी ऊपालसकी मैंनेअत्यंत लज्जासेआ
खें अपनीनीचेकरके प्रणामकाउत्तरदिया मुझको वैसाही हटेहोते औरदरिद्रतामेंपाकर
अत्यंत आश्चर्यमेंऊये औरएकबा ऊपालतोदे अबतुमको इसडदेशामेंहोउन अशरफियों
सेकालाभने अपनाब्योपार नहीं बढाया मैंनेउनसे कहा अशरफियोंकायहहालऊआकि
तुम्हारेजानेके उपरांतमैं अपनेघरमेंगया औरमैंने एकमठोरेमें किबऊतबड़ी औरबऊ
तकालसेएकगेहूंकी भूसीसेभरीऊई एकओरकोरक्खी थी दसअशरफियां उसथैलीमेंसे
निकाल बाकी एकसौनब्बे अशरफीथैली समेत अपनीस्त्रीपुत्रोंसे छपाकररखदी संयोग
से उससमय कोईघरमेंनथा सबलोग कहींबाहरगयेथे फिरमैंउनदस अशरफियोंकोले
करसनमोललेनेकोबाजारमेंगया मेरेपीछेजबमेरीस्त्री घरमें आईतोएक मनुष्यमठोशि
रयोनेकोबेचताऊवा आयामेरीस्त्रीके पासउस समयकोड़ीपैसानथा औरमट्टीकी आवश्य।

सच
२१
21

कर्ताथी बाहर निकल उसने कहा जो तू असीसे मही बदल देतो मैं लेवहु इस बात पर राजी हुवा
और मेरी स्त्री को बहुतसी मही देकर मठोर को असी सहित उठ गये हुये लेगया यदि तुम कहो
कि तुमने अपनी स्त्री से अशरफियों के मठोर में रखने का हाल कों नहीं कहा तो उत्तर उसका
यह है कि तुमने मुझसे कहा था कि अब की बेर उनको सावधानी से रखना मैंने अपने वि
चार से वह अच्छी जगह जानी थी और इस बात कि लिये अपनी स्त्री से न कहा कि ऐसा न हो जो कि
विना पूछे उसमें से खर्च कर डाले तुम्हारी दीनपालकता और उपकार में संदेह नहीं परंतु मेरे
भाग्य में दरिद्रता लिखी है कोंकर मुझे धनवान हो अब मैं तुम्हारे उपकार को जन्मभर गुण मा
नता रहुंगा और तुम्हारा यश गाऊंगा साढी ने इस वृत्तांत को सुनकर कहा मुझे तुम्हारी इस बात
का परिसर्ण निश्चय हुवा मैंने मित्र व्यवहार से अशरफियां तुमको दीथी प्रयोजन यह था कि
तुम भी धनवान बन जाओ न यह कि तुम उसका उपकार मानने मे रात्रि दिन वाएगेन करो निदान वह दो
नों परम स्नेही मेरे दुर्भाग्य पर अत्यंत खेद करने लगे निदान साद सम्मुख भया और मुझसे उसको
पुरानी जान पहिचान थी सो उसने एक पैसा सीसे का जेब मे निकाल साढी को दिखाया और
मुझसे कहा कि इस सीसे के टुकड़े से देखनो ईश्वर तुझको कैसी बरकत देता है साढी उसे दे
खकर हंसा और ठट्ठा मारने लगा और हास्य से कहा कि यह शीसे का टुकड़ा हसन को वचाला

भदेसक्ता है और उसका कौनसा काम निकलेगा सादने उस पैसेको देके मुझसे कहा कि तु मसादीको यातोंका कुछ विचार मति करो और इसको अपने पास रक्खो और सादीको है स नेदो एक ही दिन में तुमको इसका हाल मालूम हो जावेगा और ईश्वर चाहेगा तो इसीके का रण तुम धनवान हो जाओगे मैंने वह पैसा लेकर अपनी जेब में रख लिया वह दोनों साखावान्तक से विदा हो चले गये और मैं रस्सी बटने लगा रात्रिको जब मैंने सोनेके लिये अपने वस्त्र उतारे तो वह वैसा जो सादने दिया था जेबसे गिर पड़ा मैंने उसको उठाके किसी ताख पर रख दिया अकस्मात् उसी रात्रिको एक धीमर जो मेरे पड़ोस में था अपने जालके बनाने के लिये उसे प कौपैसे की आवश्यकता हुई कि सुतली लाकर जालको बनाकर प्रभातको मछली धी पकड़े औ र उन्हें बेचकर अपने कुटुम्बके लिये जीविका प्राप्त करे उसका यह नियम था कि सूर्योदय के एक मुहूर्त पहिले नदी पर मछली लियां पकड़ने को जाता उसने अपनी स्त्रीसे कहा कि तू लाक र अपने पड़ोसी से एक पैसा मांगके लादि वह स्त्री सबके घर गई परन्तु उसको कहीं से पैसा न मि ला निराश होकर अपने घर आई धीमरने अपनी स्त्रीसे कहा जान पड़ता है तुमने रस्सी व टने वालेके घर नहीं गई क्योंकि उसका घर और लोगोंसे दूर है यदि मैं वहां जाती तो कुछ न कुछ वहांसे ले आती उसने कहा कि सत्य है मैं उसके घर नहीं गई उस धीमरने कहा तू अंतस्त्र आ

सच
२२
22

लसीहै शीघ्रउसकेघरजावहांमे अवश्यतुझकोमिलेगाउसकी स्त्रीवड़वउतीहुईमेरेघरमेंआई और
हाराखुलवाकरकहाहैहसनमेरे पतिकोइससमय एकपैसेकी आवश्यकताहै कि अपनेजाल
कोवनावस्तुके समर्णयाएक पैसाजोसादनेतुझकोदियाथा अमुकस्थानपररक्खाहै मैनेउसकोउ
कारकेकहाकिजरातटहरजामेरी स्त्री पैसालियेआतीहै मेरीस्त्री उसकेपासहसजगीमेरेबा
तानेयहपैसाले जाकर अपने पडोसिनकोदियावहस्त्रीपैसा पानेसेअत्यन्तप्रसन्नहुई औ
रीस्त्रीसेकहातेने औरतेरेपतिने मेरेपतिपरबड़ा उपकारकियामें प्रतिज्ञाकरतीहूं किजो
पहिलीबेरजालडालकेमछलियां पकडेगा यहसबतुझके हूंमी निश्चयहै किमेरापति भी
इसप्रतिज्ञाकोस्वीकारकरेजबउसस्त्रीने वहपैसाले जाकरअपने पतिकोदिया और अपनी
प्रतिज्ञाकोकह सुनायामोउसनेप्रसन्नकर उसप्रतिज्ञाको अङ्गीकारकरलिया औरअपनी
नीस्त्रीसेकहा तूनेबहुतअच्छा कियाजो यहप्रतिज्ञा उनसेकरकेआई यहअपने जालको
बनाकरदोसुहूर्तके तड़केमछली पकड़नेकोनदीपरगयाजब उसनेपहिले पहिलजाल
डालतोएकहीमछलीऊंचएकवालिश्तसेबड़ी उसकेजालमें आई उसने उसमछली
को अलगरख करकिकर कईबेर जालडाल औरबहुतसे मत्स्यपकड़े परन्तुसर्वकी सबा
सेबडोटीथी जबवहथीमर अपनेघर आयातोसबकार्य्योंके पहिलेउसने पहिली पकड़ी

ऊई मछली हाथमें लेकर मेरेपास आया और कहनेलगा हे मित्र रात्रिको मेरी स्त्रीने तुमसे प्र
तिज्ञाकीथी किजितनी मछलियां पहिलीबेर जालमें आवेंगी वह सब तुमको हूंगा सो एक
हीमछली पहिले पहिले आई सोवह यह है तुम इसे लेलो क्योंकि मेरी स्त्रीने जो तुमसे प्रति
ज्ञाकीथी मैंने उसको पूराकिया यदि पहिली बेरमें जालभरके आती तो उनसबको मैं तु
म्हें लादेता परंतु तुम्हारे भाग्यमें यही एक हीथी मैंने बहुत ऊछ उस मछलीके लेनेमें न
कारकी परंतु उसने मेरे हाथमें जोरसे रखदी मैंने अपनी स्त्रीको वह मछली दी और कहा
किजो हमने रात्रिको थोमरकी स्त्रीको एक पैसा दियाथा उसके बदले यह मछली पाईए
रतुसादेनेतो हमसे प्रतिज्ञाकीथी कि इसपैसेके द्वारा तुम धनवान होजावोगे फिर मैंने अ
पनी स्त्रीसे उनदोनोंमित्रोंके आने और पैसेके देनेका हाल वर्णनाकिया मेरी स्त्रीभी उसमछ
लीको देखकर आश्चर्यमें ऊई और कहनेलगी मैं उसको क्याकहूं फिर शोचविचार मनमें
कहनेलगी कि इसे बालकोंके लियेभून लूं क्योंकि मसाला नहीं है कि जो इसका शोरवा
पकाऊं निदान मेरी स्त्रीने उस मछलीको साफकरतीसमय उसके उदरसे एक बड़ा टुक
ड़ा हीरेका पाया उसनेजानाकि यह टुकड़ा शीशेका है यद्यपि उसने केवल हीरेका नाम ही
सुनाथा परंतु आंखोंसे कदापि न देखाथा तो उसे छोटे लड़कोंको खेलनेको दिया वह

सव
२३
23

उसे खिल रहे थे तो इतने में उसके और भाइयों ने देखकर उसे ले लिया और उसकी सुंदरता और च
मक देखकर सब उसके लेने की लालसा करने लगे और रहस्य कि उसे पारी २ से अपने पास रखते।
जब रात्रि हुई और दीपक जलाया गया तो बालक उस दीपक के प्रकाश में देखकर प्रसन्न होते
और चिल्लाते इतने में मेरी स्त्री ने भोजन तय्यार कर लिया और हम सब भोजन करने लगे बड़े पु
त्र ने उस हीरे को एक ओर थाली के रख दिया और चुप के होके भोजन करने लगे भोजन से नि
श्चिंत होने के उपरांत फिर वह बालक सर्ववत् हीरे के लिये झगड़ने लगे उनके शोर करने प
र हम ने कुछ ध्यान न किया निदान जब बहुत शोर किया तो मैं ने बड़े लड़के को बुलाकर पूछा
आज तुम किस लिये लड़ते हो उसने कहा है पिता हम एक शीशे के लिये कि वह अत्यंत प्रका
शमान है झगड़ते हैं मैं ने उसे मंगवाकर देखा तो उसकी चमक दमक देख आश्चर्य में हुआ
और अपनी स्त्री से पूछा कि यह शीशे का टुकड़ा तुमने कहां से पाया उसने कहा मैं ने उस मछ
ली के साफ करती समय उसके उदर में से पाया था मैं समझा कि यह केवल शीशे का टुकड़ा।
है फिर मैं ने अपनी स्त्री से कहा दीपक को कोठरी में बुखारी के भीतर रख दो जब दीपक ह।
मारे आगे से उठाया गया तो उस हीरे का प्रकाश इतना था कि हम सब कार्य दीपक बिना।
कर सकते थे फिर मैं ने उस हीरे को बुखारी के एक ओर को रख दिया जिससे उजियाला हो उस

समयमैंबिचारनेलगाकिसादके ऐसेकेकारणइतनालाभहुआकिरात्रिकोदीपककी आव
श्यकतानहुई तैलकी किफायतहुई जबहमारेबच्चोंनेदेखाकिहमनेदीपकोबुझाकर प्रकाशके
लियेउसशीशेकेटुकड़ेकोरक्खाहैतोवह औरभीउछलने कूदनेलगे औरशोरमचानेलगे इत
नाचिल्लायाकिपड़ोसियोंनेसुनलिया निदानमेरेबुड्ढेनेसबचुपहोकेसोरहे औरहमभी अप
नेशय्यापरसोरहेभोरको उठकर अपनाकामकरनेलगे औरउस शीशेकेटुकड़ेकाविचा
रमेरे मनसेजातारहा मेरे पड़ोसमें एकयहूदी बड़ाजौहारी रहताथा उसरात्रिकोजब वह
दोनोंस्त्रीपुरुष सोनेकीइच्छा करतेतोबालकोंके शब्दसेबेचैनहोजाते औरबहुतकाल प
र्यंत उनकोचिल्लाहटसे निद्रानआतीप्रभातके समयउसकीस्त्री अपनेपतिको औरसेशो
रकोशिकायतकरनेको मेरे पास आईमेरी स्त्रीउसे देखतेहीउसके अंतःकरणकीबात स
मझगई औरउसकानामलेकरकहातुमकोमेरे बच्चोंके शोरकेकारणरात्रिकोनिद्रामें वि
घ्नहुआहोगासोउनका अपराध क्षमाकरो औरतुमजानतीहोकिबालकथोड़ेमेंहंसदेते।
हैं औरथोड़ेमेंरोदेतेहैं भीतरआओमैं बालकोंकेलड़ने झगड़ने काहालकहूं जबवहभी
तरगईमेरीस्त्रीने वहशीशेकाटुकड़ाउसेदिखाया औरकहाइसी कारण आपसमेंबालक
शाहकरतेथे वहरत्नोंकोपहिचानतीथी उसेदेख आश्चर्यमेंहुईमेरीस्त्रीनेसंपूर्ण वृत्तान्तमझ

लीकेभेटमेंसेनिकालनेका उसनेकहदिया उसनेयहहालात सुनकहा यहटुकड़ाशीशेका और एका
रकेशीशेसेबढ़कर भरहै मेरेपासभीएकइसीभांतिका शीशेकाटुकड़ाहै जिसमें कमी२ पड़ैन
गीहूंजोतूइससेबेचेतोमैं इसेगोलहूंमेरेपुत्रवेचनेकानामसुन अपनीमातासेरोकरकहनेलगेकि
तूइससमानिबेच फिरहमशीरनकरेंगेउनबालकोंकीयहदशादेखवहदोनोंस्त्रियांचुपहोरहीं औ
रयहूदीकोस्त्रीविदाहोकरअपनेघरचली औरधीरेसे मेरीस्त्रीकोकहाकिचेतमरहकोईदूस
रामनुष्यइसकोदेखनेनपावे औरहमकोकहे विनाइसकोदूसरेकेहाथ मतवेचनाप्रभातकोव
हयहूदीचोकमें अपनीदूकान परगयाउसकी स्त्रीनेवहींजाकर उसशीशेकेटुकड़ेकाहालउ
सेकहा यहूदीनेयहसुनकरकहा अभीतूजाकेउसशीशेकेटुकड़े कोमोललेले पहिले उसका
थोड़ा मोलकहियोजबवहनमानेतोबढ़ादीजियो जितनेकोहोसकेलीजियो वह अपनीपतिकी
आज्ञानुसारमेरीस्त्रीकेनिकटआई औरकहनेलगीकिबीसअशरफीउसशीशेकेटुकड़ेकी
देतीहूंमेरीस्त्रीबीस अशरफियोंकानामसुनकरशोचीकियहउसका अधिकमोलदेतीहै
परंतु उसनेकुछउत्तरनदिया इतनेमेंमैं अपना कामछोड़कर भोजन करनेके लियेघरमें
आया औरउनदोनोंकोहारमेंबातेंकरतेदेखा मेरीस्त्रीने मुझेठहराकेकहा किबीस अ
शरफियां वहयहूदीसिनशीशेकेटुकड़ेकेदेतीहै मैंने अबतककुछउसकाउत्तर नहीं दिया

तुम्हारी क्या इच्छा है मैंने साहूके वाक्यको स्मर्ण किया कि उसने कहा था कि यह शीशेका ऐसा तुम
को बहुत अच्छे दिलवावेगा मेरे चुप रहनेसे पड़ोसिनने जाना कि इस मोलपर यह राज़ी नहीं है उसने
कहा है हम साथे जो तुम इतने पर प्रसन्न नहीं तो मैं पचास अशरफ़ी देती हूं मैंने देखा कि यह।
दिन इतनी शीघ्र बीस अशरफ़ीसे पचास अशरफ़ी तक आई है इसका बहुत बड़ा मोल होगा मैं
चुप हो रहा और उसका जबभी उत्तर न दिया उसने मुझे चुप देखके कहा एक सौ अशरफ़ी।
लो और यह बहुत है मैं नहीं जानती कि मेरा पति इस मोलके देनेपर राज़ी होता था नहीं मैंने क
हा तुम क्या कहती हो मैं इस टुकड़ेको लाख अशरफ़ीसे कम न बेचूंगा और इसी मोलपर तु
म्हें और तेरे पतिको दूंगा क्योंकि तुम पड़ोसी हो यह दिन बढ़ते २ पचास हज़ार अशरफ़ी त
क आई और मुझसे कहा कि तुम इससे संख्यातक मति बेचना कि मेरा पति इसको एक दृष्टि देख
ले मैंने कहा बहुत अच्छा रात्रिको उसका पति भी मेरे महलमें आया और मैंने उस हीरेको उस
दिखाया अभी दीपक नहीं जलाया गया था कि वह हीरा दीपकके सदृश मेरे हाथमें चमक
रहा था यहूदीको उस समय जो कुछ कि उसकी स्त्रीने कहा था विश्वास हुआ और इसी हीरे
को अपने हाथमें लेके बहुकाल पर्यन्त जांचता रहा और फेरफारके देखा किया और अमेत।
आश्चर्यमें हो कहने लगा कि मेरी स्त्री पचास हज़ार अशरफ़ी देती है मैं उसपर बीस हज़ार अ

शरफ़ी आधिक करता हूं मैंने कहा तुमको तुम्हारी स्त्री से मालूम हुवा होगा कि मैंने उससे जो मो
ल कहा है कि लाख अशरफ़ी से कम न बेचूंगा उसने कितना ही चाहा कि मैं लाख से कम लूं मैंने
कहा जो तुम न लोगे तो मैं दूसरे जौहरी के हाथ इसे बेचूंगा निदान वह यहूदी इतने पर राज़ी हुवा
और दो हज़ार अशरफ़ी बे आने की तौर पर देके मुझसे कहा कि मैं सब कल अशरफ़ियां तुझे
दूंगा और इस हीरे को ले जाऊंगा मैं भी इस बात पर राज़ी हुवा निदान दूसरे दिन उस यहूदी ने
अपने इष्ट मित्रों से कर्ज़ ले के एक लाख अशरफ़ियां मुझे गिन दीं तब मैंने वह हीरे का टुकड़ा उ
से दिया और उसी से मैं धनवान हो गया ईश्वर का धन्यवाद किया उसी ईश्वर के दिये हुये द्रव्य से
अपना गृहस्थी का असबाब धनवानों के सदृश बनाया और मेरी स्त्री ने भी बालकों के वस्त्र ब
नगये और मैंने एक बड़ा घर मोल लेकर उसको छत पर दे आदि सामग्री से दुरुस्त कर ली मैं
ने अपनी स्त्री से कहा अब हमें यह उचित है कि अपने पुराने पेशे को न छोड़ें और जाल बुन बुन उठा
रक्खें और थोड़े से द्रव्य से काम काज किया करें फिर मैंने नगर के संपूर्ण कारीगर नौकर रक्ख
वे और उनको कई से रुपये देकर एक ई कारखाने रस्सी के जमाये और कई मनुष्यों को विश्वासि
त जानकर एक २ कारखाना उनको सौंप दिया अब बगदाद नगर में ऐसी कोई गली नहीं जिसमें मे
रा गुमाश्ता अथवा रस्सी का कारबारी न हो और इसी भांति प्रति नगर और जिलों में एक २ कार

खानानियत करएक २ मुहर्रिरवहांनियतकिया अबमुझेइस अवस्थासेबड़ासाधन प्राप्त
होताहै और अपनेकारखानेकेलियेमैंने एकविशाल मंदिरकोमोललिया जिसमें जमी
नबड़ाथा परंतुवहघर छिन्नभिन्नथा अब उसेतोड़वाकरनयेसिरेसे उसविशालस्वच्छ
भवनबनवाया जिसकोकलआपनेदेखा उसमेंकेवलमेरेकारिंदे रहतेहैं औरदफतरका
हिसाबकिताबवहींहै और अपना और अपने कुटुम्बका असबाबवहीं रखताहूं फिरमैं
अपने प्राचीनघरको जिसमें सादऔरसादी आतेथे छोड़करनयेघरमेंजोकिवहां मैंनेरहने
केलियेबनवायाथा आरहा औरकुछदिनके पीछेमैंसाद और सादीकोस्मरणहो आया औ
र उन्होंने चाहाकिफिरमुझे आकरदेखें सो वहदोनोंउसीपुरानेघरमें आये मुझेऔरमेरे
कुटुम्बकोवहांन पाकरआश्चर्यमेंहुयेफिरवहांकेवासियोंसे पूछाकि अमुकरसोईवा
ला कहांहैजीताहैवा मरगयाउन्होंने कहाअबतोवहबड़ा वोपारीबानगयाहै अबउसका
नामकेवलहसनकोईनहीं लेताकिंतुउसेखाजेहसनहवाल कहतेहैं अबवह अमु
कस्थानपरएकविशाल महल बनवाकर उसमेंरहताहै सोवहदोनोंस्नेही मुझेपूछनेकु
येवहांआये परंतुसादीकोतनकविश्वासनथाकियह द्रव्यऔरएश्वर्य्य मुझेउस पैसेकेकार
णप्राप्तभया इसलिये उसनेसादसेकहायदिहसननेमुझसेदो झूठबोलेयहांतककिउसने

सव
२९
26

झूठबोलकरमुझसे चारसौ अशरफियां ली औरउन्हीं अशरफियों सेइननाथनबफायाप
रंतुमैं उसेइसदशामेंदेखकर महाप्रसन्नहूंगा औरवहसी सेकायेसा जोतुमनेदियाहै उ
सेकिसभांति इननाद्रव्य पानासादेनेकहायहजो ऊखतुमकहते होझूठहै इसनझूठा
औरझूतेनहींहैजोउसनेतुमसेकहावहसबसत्यहै औरमुझेपरिपूर्णविश्वासहै कि उसी
येसेकेकारणउसे वहयेश्वर्यप्राप्तहुवा अभीतुमकोइसनकेवर्णनसेमालूमहोगाइसी
भांतिवातोंकरतेहुये वहदोनोंमित्रउसीगलीमें जिसमेंमेराघरथा आयेऔरमेरेसुंदरभव
नकीसजावट औरबनावटदेखपहिचानगये यहनवीनरचित भवन अवश्यरबाजे इस
हनसेसचकोंकोदेखभयभीतहुवाकियेसानहोजोकिसी अमीरकायह भवनहोनिदान
साहसकरउसद्वारपालकसेपूछाकायहरबाजेहसन हवालका महलहै द्वारपालनेउ
तरदियाकियहयहउन्हींकाहैभीतरजाओइसन अपनेदीवानखाने मेंबडाहैवहां बडे
त्रवहां आयेजहांमैंबैठाथामैंनेदेखतेही पहिचानलिया औरतुरंत अपनेस्थानसेउठउ
नकी औरदौड़ा औरउनकेवस्त्र हमेवह बहुतेराचाहतेथेकिमैंगलेमिलूंपरमैंनमिल

ता निदान उनको भीतर लेजाकर एक दालान में बहुत अच्छे स्थान पर बैठाना चाहा परंतु उस स्था
न पर वह चाहते थे कि मैं बैठूं मैने कहा कि हे सज्जनों मैं अपने को नहीं भूला मैं वही हसन रस्सी
बटने वाला हूं मैं सदा आपको आशीर्वाद देता हूं निदान वह एक स्थान पर बैठ गये और मैं भोजन
के सन्मुख हो बैठा सादी ने कहा मैं तुम्हें इस दशा में देखकर महा प्रसन्न हुवा और ईश्वर ने जै
सा कि हमारा मन चाहता था तुम्हें उस पदवी को पहुंचाया और हमको निश्चय है कि उन्हीं चा
रसौ अशरफियों से जो मैने तुमको दी थी यह सब यन ऐश्वर्य प्राप्त हुवा परंतु सत्य कहो कि तु
मको सर्व में दो बेर सुक से रू ठपी ले थे साद यह बात सादी से सुनकर बहुत से पेचावा करा
चुपके २ सुना किया जब सादी कह चुका तो वह बोला कि इसका उत्तर मैं तुम्हें देता हूं कि
जो कुछ सर्व में हसन ने अशरफियों के खोजाने का हाल कहा था वह सब सच है उसमें कु
छ अंतर नहीं फिर उनमें परस्पर इसी बात पर तकरार होने लगी मैने कहा भाइयो इस बात को
जाने दो मेरे वास्ते क्यों परस्पर विवाद करते हो आगे जो कुछ मेरे ऊपर बीता था वह कह सुनाया
उसको सच जानो या झूठ और अब भी जो कुछ हुवा है तुमसे कहता हूं सो उसने संस्मरण हूंतो
त धीमर को पैसका देना और मछली के पेट में से हीरे का निकालना जैसा कि हे खलीफ़ा मै
ने आपके सन्मुख अभी वर्णन किया है उसने भी कहा सादी ने उसे सुनके कहा हे हसन इतने

सच
२०
27

बड़ेहीसेका मछलीकेउदरमें सेनिकलनावैसाहै जैसाकि चीलतुम्हारे सिरपरसे पगड़ीउड़ाले।
गई और मठोरभूसीकी देकेशिरधोनेकीमट्टीलीशायदसचहोपरंतुमुझे विश्वासनहीं आता य
ह इवातमेंहै उन्होंअशरफियोंसेआमऊवायह कह वह उठे और मुझसेविदाहोनेलगे मैंभीउठ
खड़ाहुवा और उनसे कहनेलगाभाइयो आपनेमुझपरवड़ा अनुग्रह कियाकिइतनाश्रमकर।
मेरेमहलमें आये और इसघरको पवित्रकियापरंतुमुझे इच्छाहै कि रात्रिको आपयहांभोजनक
रयहां निवासकीजिये प्रभातकोमैंतुम्हेंनदी और भवनकी सैरकेलियेजोमैंनेइसीशहरमेंह
बनवानेकेलियेलियाहैलेचलूंगा उन्होंनेनमानाजव मैंनेबहुतकहातो उन्होंने मानलिया।
मैंनेउनकेलिये नानाप्रकारकेव्यंजनपकवाये और उनको अपनेभवनके सब असबाबदि।
खाये और परस्परहास्य और हरएककभांतिकी प्रसन्नताकीवार्ताकरने रहे इतनेमें दासीनेक।
हाकि भोजनतय्यारहै अपनेउनदोनों मित्रोंको अपनेभोजन करनेकेकमरेमें लेगया जिस।
मैं अनेकभांतिकेस्वच्छपाकथे और अतिसुंदर और उज्वलदीपकउचित २ स्थानोंपरप्रज्व।
लितथे और एक औरको मधुरस्वरसेगानाहो रहाथा और एक तरफसेपुरुषनृत्यकरते।
थे इसके विशेष बहुतसे तमाशेउनकोदिखाये और भोजनसेनिश्चिन्तहोकरहम सोरहे प्र
भातको उठकरहमएककिश्तीपरसवारहुयेकेबाद उसको बहावमें खेतेहुयेलेचलेथोड़ेका

तेमेंहम अपनेघरमें जोगांवमेंथाआ पहुंचे फिर किश्तीसेउतरसैरकरतेहुये एकघरकेभी।
तर आयेमैंने अपनेरहनेकीजगह औरसकारखाने उनकोसबदिखाये वहघरऔर उसकीते
यारीकोदेखकरहर्षितहुये इसके अनंतरबागमेंगये जिसमेंसर्वभांतिके भवनहदलगेहुये
थे औरनदीसेपक्कीनहरोंकेद्वारा निर्मलजलसब जगह पहुंचाताथा औरपकेहुये फलदर
ख्तोंमेंलगेहुयेथे औरसुंदरपुष्पवाटिकामें अनेकभांति केसुगंधितफूललगेथे जिनकी
सुगंधसे सारेबागमें चहुंओरसुगंध फैलरहीथी औरस्थान२ परपानीकी चादरें औरफव्वारे
छूटरहे औरअनेकभांतिकेपक्षी उन्होंसबनहरोंपर अपनीललितवाणीबोलते इसके
विशेषवहांबहुतसीवस्तु उपस्थितथीजिनकेदेखनेसे मनकोअतिआनंदहोतावहदोनो
मित्रदेखकरअत्यन्तप्रसन्नहुयेकभी मेरागुणमानकर कहतेकितुमने हमकोबहुत सुंदरस
थान परलोकके सैरकराई औरकभीयह आशीर्वाददेते किईश्वरयह विचित्रभवन औरबाग
फलीभूतरहे निदानमैंउनकोएकबड़े भवनहदाकेनीचे किवह बागके किनारेपरलगाहुआ
थालेगया औरउसकोदिखाकर उनकोछोटेसेमकानमें भोजनकरनेकेलियेलेगया
औरखानेमें जहांमसनदतकियालगाहुआ था उनकोबिठलाया इस समयघरमेंमेरे।
दोपुत्रजिनकोमैंनेदोतीनदिन पहिलेसेउनके अध्यापक समेतउसबागमेंजलवायुबदल

सच
२८
28

नेकेलिये भेजाथापदियोंका चौसलाठूकफतेहुये पकडहदके नीचेगयेसो उनकोएक चौसला उन्होंने चाहाकि उसहदपरचौसला उतारनेकेलियेचढजावेंपरंतु अभ्यासकेनहोने औरकम ज़ोरीसे उसपरचढनेकी शक्ति अपनेमेंनपाई निदाने अपनेनोकरकोजोउनकीसेवा किया क रताथा उसपरचढनेकोकहावह सेवकउसपरचढ गया औरउसचौसलेकोदेखके आश्च र्यमेंहुवाकिवहपगड़ीसेबनाहुवाथा और चौसलेकोउसी तरह हतसेउतारलाया और मे रेगुणोंको वहपगड़ी दिखाय बड़ाबालक मेरदिखानेकोले आयामैंने उसहसदेखाकि अतिप्रसन्नतासे मेरी औरचला आताहै औरउसकोमेरे सम्मुखरखकेबोलाहै पितादेखो। यह चौसलावस्त्रकाबनाहुवाहै साद औरसादी उसेदेख मुफसे अधिक आश्चर्यमेंहुये जबमैंने अच्छीतरह उसचौसलेको देखातो अपनीपगड़ीकोपहिचानाकि यह वहीप गड़ीहै जिसकोपहिले चीलमेरे शिरपरसेझपटामारकेले उड़ीथी फिरमैंने उनदोनों मि योंसेकहा तुमभीध्यानकरकेदेखोकियहवहीपगड़ीहै किजोउसदिनमेरेशीशपरथी ज बआपपहिले पहिलमेरे कारखाने में आयेथे सादने कहामैंतो पहिचान नहीसका सा दीबोला यदियकसेनवे अशरफियां इसमेंहोंतो जानियेकियह वहीपगड़ीहै मैंनेकहा निस्संदेह यहवहीमेरी पगड़ीहैजोउस दिनमेरे शिरपर रक्खीहुईथी जबमैंने हाथमें

लेकरे अनुमान कियातो बहुत भारीपाया और उसे खोलातो एक वस्त्र भारी सी उसमें थी जब गिर
हर को खोलातो उसमें वही थैली अशरफियों की निकली मैंने उसथैली को दिखाकर साहीसे
कहा पहिचानो यह थैली तुम्हारी है उसने पहिचान कर कहा वास्तव में यह वहीथैली अशर
फियों की है जो मैंने तुमको पहिली बेर दीथी फिर मैंने उस थैली का मुख खोल साहीके सम्मु
ख अशरफियों का ढेर कर दिया और कहा इनको गिनो उसने गिनीं वह सब एक सौ नब्बे अश
रफियां थीं साथी देखतेही अति लज्जित हुआ और कहने लगा कि अब मुझको तुम्हारे बचन
का विश्वास हुआ परंतु वह अशरफियां जो तुमको दूसरी बेर मैंने दीहैं उससे सो तुमको आश्च
र्य ज्ञात हुआ है और आया उस पैसे से मैं उनके चुप होरहा परंतु साद और सादी में झगड़ा हो
ने लगा भोजन करनेके उपरांत हम नौनों बाग में हुए बादाम मकान पर सोरहे संध्याको जब सूर्य अ
स्त हुआ तो जगे और घोड़ों पर सवार हो कर बगदाद को चले मार्ग में सम्पूर्ण सेवक हमसे अलग
होके पीछे रहगये दानाचोड़ी ने नहीं खाया था और नगर की सब दुकानें बंद हो गई थीं दो नौ
न दास जो हमारे संग चले आये थे दाना ढूंढने गये सो किसी सेवक ने भूसी को मठोर भरी ऊ
ई किसी बनिये की दुकान पर देखी वह उस बनिये से मोल लेके मटकी समेत मेरे पास उठवा
लाया इस वास्ते पराकि कल हम मठोर ने री दुकान पर भिजवादेवेंगे फिर नौकर हर एक घोड़ेके

आगे उस भुसी को मठोर में से निकाल कर डालने लगा औ थियारों में एक वस्त्र उसके हाथ लगा और
वह उसे बड़ा भारी मालूम हुआ वह उसे उसी भांति मेरे पास ले आया और रख के देकर कहा कि दे
खिये यह वही वस्त्र तो नहीं है जिसका हाल कई बेर तुमने हमसे कहा मैंने उसे हाथ में लेकर
पहिचाना कि यह वही कपड़ा है जिसमें एक सौ नब्बे अशरफियां बांध के उसी की मठोर में र
क्खी थीं इससे अति प्रसन्न होके मैंने अपने मित्रों से कहा भाइयो ईश्वर ने गुरु के सच्चा किया और
सादी से कहा यह दूसरी एक सौ नब्बे अशरफियां हैं जो तुमसे मैंने पाई थीं और मैं इस पुराने
चिथड़े को जिसमें उनको मंगवाया था भली भांति पहिचानता हूं फिर मैंने उस मठोर को अप
ने साम्हने उठवा मंगवाया और उस मठोर को अपनी स्त्री के निकट भेजा उसने कहला भेजा
यह वही मठोर है जिसमें भुसी रक्खी जाती थी सादी ने यह दशा देख कहा कि मेरा विचार
अशुद्ध था और साद से कहा अब मैंने तुम्हारी बात को सच्चा जाना और उस पर विश्वास हुआ।
कि धन धन से नहीं बढ़ता किन्तु ईश्वर की अनुग्रह से दरिद्री धनाढ्य हो जाता है इतना कह
हम सब सो रहे दूसरे दिन प्रभात को विदा होकर वह दोनों मित्र अपने महल को पधारे जब बा
दशाह ने यह सम्पूर्ण कथा हसन से सुनी तो कहने लगा कि मुझे प्रथम से तुम्हारे पड़ोसियों
को द्वारा विदित है कि तुम व्यर्थ खर्च नहीं करते और कह हो रा जिसने तुमको धनवान करदि

या मेरेकोषमेंहै हसादीको यहांबुलालाकि उसहीरेको अपनेनेत्रसे अधिकदेखे औरइसे नि
श्चयहोकि रुपयेपैसेसेसब निर्धनधनवान नहींहो जाते औरतू इस कथाकोमेरेकोषप्रियसे
भीकह कि वहइसचरित्रकोलिखकरहीरेके साथमेरे कोषमें रखदे फिरबादशाहने सेनसेह
सनकोविदाकर दियातत्पश्चात सोदीनेमान औरबाबा अब्दुल्लाभीनरत्नकोहमविदाहुये मल
का शहरजादने चाहाकि दूसरीकथाआरंभकरे परंतुहिंदुस्तानकेबादशाह नेप्रातःकाल
होजानेसे कहाउसकथाकोमैंकलसुनूंगा ॥ अलीबाबाऔरचालीसठगोंकीकथाजोएकदा
सीकेउपायसेमारेगये दूसरेरातकी मलका कथाकोइसभांति वर्णनकरनेलगी किपारस
देशमेंदोभाईथे एककानामकासिम औरदूसरेका अलीबाबाथा उन्होंने अपनेपिताकेमृ
त्युकेपश्चात् थोड़े द्रव्यकोआपसमें बांटलिया औरथोड़ेही समयमेंदोनोंभाइयोंने उसव्य
येकरडालाकासिमने एकस्त्रीके साथ जिसकापिता बड़ाधनवानथा विवाह किया औ
रअपनेश्वशुरके कालकेउपरांत उसकोससुरकी एकदूकानमिली जिसमें व्यापारको
बहुमूल्यवस्तुभरीथीं औरबहुत साद्रव्यजोपृथ्वीमेंगड़ाथा पायाइससे वहउसनगर
मेंबड़ा व्योपारी विख्यातहुवा अलीबाबानेजिसलड़कीकेसाथविवाह कियाउसका
पितानिर्धन औरदरिद्रीथा वहदोनोंछोटेसेघरमेंरहतेथे अलीबाबाप्रतिदिनलावाकाष्ठ

गधोंपरलादकेनगरमेंलाता औरउनकोबेच अपनानिर्वाह करतायकदिन अलीबाबानेका
ष्ट अपनी आवश्यकताके अनुसारकाटा औरचाहताथा किगधोंपरलादे अकस्मात् उसने दा
हिनी औरसेधूर उड़ती अपनी ओरआतीहुईदेखी जबउसनेभलीभांतिदेखातो बहुतसे सवार
उसेदृष्टिपड़ेजोपांव उठाये उसीके औरचले आतेहैं वहउनको देखकरभयभीतहुवा किकहीं
लुटेरेनहों औरमेरेगधोंको छीनलेजावें औरमुझे मारडालें इससमय मानहोके भागनेलगा
परंतु सवारपासहीपहुंचगयेथे इससेवह बनसेनिकलकरनजासका इसलिये उसनेजल्दी
मेंगधोंकापक औरहंकदिया औरआपएक सघनहक्षपरअपनेको छिपानेके लिये चढ़
गया औरऐसेस्थानपरबैठाकि उसकोवहांसे सबकुछदीखे औरवहकिसीकोदृष्टिनपड़े
वहहक्षएकपहाड़सेलगाहुवाथा परंतुवह पर्वतबहुत ऊंचाथावह सवारकि अत्यंतबल
वान औरचलाकथे उसपर्वतके नीचे पहुंचकर अपने२ घोड़ोंसेउतरे अलीबाबानेउनको
भलीभांतिदेख मालूमकियाकिवहनिस्संदेह लुटेरेहैं किसीविदेशियों के समूहको अ
नचालीसोंठगोंने उसीहक्षके समीप पहुंचकर घोड़ोंकोलगामें उतारडालीं औरउनको बाग
डोरसेबांधाखुरजियां जिनमें सोनाभराथा उतारीफिरअलीबाबानेकादेखाकि सबके आगे

उनका सरदार अपने बोझको कांधे पर रक्खे हुये उसी वृक्ष के नीचे आया और कांटे और झाड़ि-
यों से होता हुवा एक स्थान पर खड़ा होकर कहने लगा खुल अय समसम इस बचन के कहते
ही वहां एक किवाड़ खुल गया जब सब उसके साथी उस किवाड़ के भीतर जा चुके तब वह आ-
प भी लाचारी से उसी वृक्ष पर छिपा बैठा रहा इस भय से कि वह ठग कहीं निकल न आवें और
मुझे मार डालें और एक भी यह विचारता कि चुपके से नीचे उतर उनके एक घोड़े पर सवार हो
और एक पर सब लगामों को लाद अपने आगे वायों को राव नगर में चला जाऊं इतने में वह द-
रवाज़ा खुल गया और वह चालीसों ठग वहां से निकले उनका सरदार पहिले आप निकला
और दरवाजे के पास खड़ा हो आप देखा किया फिर उसके साथी वहां से निकले अलीबा-
बा ने फिर सुना कि वह सरदार कहता है बंद हो समसम इस बात के कहते ही वह किवा-
ड़ मुंद गया सब अपने २ घोड़े को लगाम दे सवार हुये जब सरदार ने देखा कि सब चल-
ने को तय्यार हैं तब वह सब के आगे हो लिया और जिस ओर से वह आये थे उसी ओर चले
गये अलीबाबा उनके जाने के उपरांत कई क्षण उस वृक्ष पर से न उतरा और यह शोचा कि ए-
सा न हो कि वह फिर आवें और मुझको देख लेवें जब वह दूर निकल गये और वह [illegible] लोप हो गये
तब उसने वृक्ष से उतर परीक्षा की इच्छा की कि मैं भी यही शब्द पढ़कर देखूं कि वह किवा-

खुस
२१
31

ऊ खुलजाताहै वा नहीं अथवा बंदहोताहै वा नहींसो उसद्वारकेपासपहुंच उसनेकहा खुलअयसम।
सम इसवाकाकेकहतेहीवह खुलगया औरउसमें जाकरउसनेदेखाकिवहबड़ी विशाल औ
रखुलीकंदराहै इससेअनंत आश्चर्यमेंहुवाकिऐसामंदिरपहाड़कोखोदकरकोंकरबना।
यापरंतुछत उसकीएक मनुष्यकीऊंचाईके बराबरथी औरपर्वतकेशिखरसे रोशनदा
नोंकेद्वाराउसकेदरोमेंप्रकाशपहुंचताथा।तोउसनेउजियालेमें देखाकिबहुतसी वस्तुयें।
हैं औरहरएकभांतिकीमालकीगठड़ियांरक्खीहैं औरनीचेऊपरभारी २ कमखावचिक
न आदिकेथानठहरपड़े हैंइसकेविशेषअसंख्यद्रव्यहै जोढेरोंरक्खाहै औरकईबड़े २
चमड़ेकीबड़ी २ थैलियोंमेंसोनारक्खाहै इतनीवस्तुऔरद्रव्यदेख उसनेसोचाकियहकं
दराथोड़े बरसोंसेनहींभरीकिंतुसैंकड़ोंवर्षोंसेठगोंने इसवस्तुकोलूटकरयहांसंचयकि
याहै फिरदरवाजा आपही आपबंदहोगया अलीबाबा उसकेबंदहोनेसेनडराकोंकि
उसे उसकेखोलनेकाभीमंत्रयादथा फिरवह इतनी अशरफी उसकेदरोसे बाहरनिक
ललायाकि उसकेगदहेउठासकें औरखायोंकोएक ओरकर उनपरथैलियां अशरफियों
कीलादीं औरऊपरसेथोड़ासा काष्टरक्खउसे चहुं ओरसेढकपालियाजिसेलकड़ियों
कागट्ठाजानपड़ेजबवहलाद चुकातोकहनेलगा बंदहोअयसमसमसम यहकहतेहीव

हदरवाजाबंदहोगया औरउस दरवाजेकायह प्रभावथाकि जबकोई उसके भीतरजाताथो
वहआपसेबंदहोजाता औरजबतककोईखुल अपसम सम उच्चारणनकरताकभीभी वह
नखुलता अलीबाबागधोंको आगेकर नगरकोचलाजबवह भीतर पहुंचातोउनगधों
को अपनेघरके भीतरलेगया औरबाहरकाकिवाड़मूंदकरउपरकीलकड़ियां उतारीं और
अशरफियोंकी थैलियां उतार २ अपनी स्त्रीके सम्मुखलेगयाउसकीस्त्रीनेटटोलकेदेखा
कि उनमें अशरफियां भरीहैं समझी कि उसकापति कहींसेचुरा करलायाहै तोअपनेभर्ता
रकोदुर्वचनदे कहनेलगी तुझेयहकर्म उचितनथाउसने कहामैंने चोरीनहींकीमैं इस
वृत्तान्तकोतफ़से कहताहूं तुमेरे भाग्यकेउदयहोने काहालसुनकर हर्षितहोगी फि
रउसनेथैलियों मेंसे अशरफियां निकाल उसके आगेढेरकरदीं जिनकेदेखनेसेउसकी।
स्त्रीके नेत्रचौंधियानेलगे औरउसहालकोसुन अत्यंतप्रसन्नहुई औरउनकोगिननेलगी
अलीबाबाने कहातुमक्याबेसमझहोकहांतकगिनोगी अबमैं इनको गढ़ाखोदगाड़।
देताहूं उसकीस्त्रीनेकहाबहुत अच्छापरंतुमैं इनका अनुमानकरनाचाहतीहूंकियह स
बकितनीहैं अलीबाबाने कहाबहुत अच्छापरंतुचेतनरहाकियहभेदखुलनेनपावेसो उ
सकीस्त्रीतराजूलेनेकोकासिमके घरमेंगईपरंतुकासिमकोघरमेंनपाया उसने उस

कीस्त्रीसे कहाअपनीतराजू एकक्षणकेलिये मुझेदेउसने पूछावड़ीचाहिये अथवाछोटीउ
सनेकहामुझेछोटीहीतराजूचाहियेयद्दि उसकीजिठानीने कहातनकठहरजाओमेंढूंढकर
लातीहूं इसवहानेवहदेखिके ओटहोकरतराजूके पलड़ोंके ऊपरमोम और चरबीलपेटकर
लाईकिमालूमकरेंकिकौनसी वस्तु अलीबाबाकीस्त्री तौलेगी किचिकनाईसे उसमें निस्सं
देहकुछनकुछलगरहेगा निदान अलीबाबाकीस्त्रीने उसतराजूको अपनेघरलेजाकेसम्
ऐढेरअशरफ़ियोंकातोला औरअलीबाबागढ़ा खोदनेलगा निदानदोनों स्त्रीपुरुषोंनेमि
लके उनअशरफ़ियोंकोगढ़ेमेंगाड़ अलीबाबाकी स्त्रीकासिमकी स्त्रीकोतराजूदेने आईओ
रजल्दीमें कुछविचारन कियाएकअशरफ़ी चरबीकीलससे उसतराजूमेंलग गईथीकासि
मकीस्त्रीवह अशरफ़ीलगीहुईदेखकरउसकी अग्निसेजलनेलगी और समझीकिउस तरा
जूमें अशरफ़ियांतुलीहैं इससे अतिआश्चर्यमें हुईऔर शोचनेलगी अलीबाबानेजोअत्यन्त
निर्धन औरदरिद्रथा इतनी अशरफ़ियांकहांसे पाईजिनको उसनेतराजूपरतोली कासिम
अलीबाबाकाभाई सायंकालकोजब अपने घरमें आया उसकी स्त्रीने कहातूअपनेकोब
ड़ाभाग्यवान और धनवान समझताहै परंतुतेरेसेतेराभाईवड़ा धनवंतहै उसकी स्त्रीने अ
शरफ़ियोंको अधिकतासेतोलकररक्खाहै तौगिनकररक्खा करताहै कासिमने पूछा।

तुम क्योंकर जानती हो उसने संपूर्ण वृत्तांत वर्णन किया और वह अशरफ़ी जिस पर किसी प्राची
न बादशाह का सिक्का था उसे दिखाई कासिम को रात्रि भर ईर्षा से निद्रा न आई भोर को उठ कर अ
पने भाई के पास गया और उससे कहा भाई प्रकट में तुम अत्यंत धनहीन जान पड़ते हो परंतु तु
म्हारे पास बहुत सा धन है और इतनी अशरफ़ियां हैं कि तुम उनको तराज़ू में तोलते हो अली
बाबा ने कहा मैं तुम्हारे अभिप्राय को नहीं समझता उसे विस्तार पूर्वक वर्णन करो कासिम ने
कहा अब तुम मुझ के मत छिपाओ फिर उसने वह अशरफ़ी जो उसकी स्त्री ने दी थी अली बाबा
को दिखाई और कहने लगा इस प्रकार की लाखों अशरफ़ियां तुम्हारे पास हैं मेरी स्त्री ने इ
से तराज़ू में पाया था अली बाबा ने यह वृत्तांत सुन जाना कि यह दोनों स्त्री पुरुष मेरे भेद को
जान गये अब उनसे छिपाने से बैर होगा लाचारी से उन सब ठगों का वृत्तांत कह सुनाया उस
ने यह सुन अली बाबा से कहा यदि तुम वह स्थान न बताओगे तो मैं अभी तुम्हारी अशरफ़ि
यों का हाल कोतवाल से जाकर कहूंगा अर्थ में तुम्हारी अशरफ़ियां जावेंगी और तुम कै
द हो जाओगे अली बाबा ने भय मान होकर सब हाल उससे कह दिया और वह मंत्र भी उसे ब
ता दिये कासिम सब बातों को सीख कर दूसरे दिन प्रभात को दस खच्चर अपने साथ लिये
उसी और को जिधर अली बाबा ने बताया था सिधारा जब उस पर्वत और वृक्ष के पास जिस पर

सच
६६

33

ली बाबा छिपा था पहुंचा तो उसे दरवाजा दीखा उसने कहा खुल अय सम सम उसके कहने से व
ह दरवाजा खुल गया और कासिम उसके भीतर गया वहां उसने बहुत सी वस्तु देखीं कि चारों ओ
र पटी पड़ी हैं फिर वह दरवाजा उसके भीतर जाने के उपरांत बंद होगया वह उसके दर्रे में बहुत अ
र फिरा किया और भांति २ की वस्तु और खजाने देखता रहा निदान दस खच्चरों के बराबर अश
रफियों की थैलियां भर के द्वार के पास लाया और चाहा कि दरवाजे को खोल अशरफियों को
खच्चरों पर लादे परंतु सम सम अर्थात तिल्ली का शब्द भूलकर कहने लगा कि अय नबार लेता
मर्य खोल है जो वह दरवाजा न खुला इस बात से वह अत्यंत आश्चर्य में हुवा और एकी २ से हर गा
ल्ले का नाम सिवाय सम सम के पुकारा परंतु वह किवाड़ न खुला सम सम का शब्द उसे ऐसा भूला
मानो उसने कभी इस शब्द को न सुना था निदान वह उन अशरफियों को फेंक कर के अचंभे में उसके
दर्रे में कभी आगे बढ़ता था और कभी पीछे को हटता और यह हाल कि उसे उस असंख्य द्रव्य के
देखने से खुशी हुई थी अब वह डर के की हुतऊ ई किंतु वह अपने प्राण से निरास हुवा अकस्मात
मध्यान्ह के समय वह ठग वहां पर आये और दूर से उस स्थान पर खच्चरों को देख अचंभे में हुये कि
इनको कौन यहां लाया जब पास पहुंचे तो खच्चरों के पीछे दौड़े प्रयोजन उनका यह था कि माल
म करें कि इनको यहां कौन लाया फिर सरदार अपने साथियों समेत थोड़े से उतर द्वार की ओर चा

ता और खड़ा पेड़ंच उसने यह मंत्र पढ़ा कि वह किवाड़ खुल गया कासिम चोरों को देखते ही
ने देखते ही धरती पर गिर पड़ा और उसको निश्चय हुआ कि यह वही ठग हैं अब मैं निस्सन्देह मारा
जाऊंगा तो भी संभल बैठा कि द्वार के खुलते ही निकल कर भागे उसके दौड़ने से रंगों का स
रदार जो आगे था किसी सदमे से गिर पड़ा सो किसी सवार ने कासिम को देखते ही खड्ग से मा
रा कि वह दो टुकड़े हो गया फिर वह सवार सब भीतर गये और वह अशरफियां जो कासिम ने
ले जाने के लिये द्वार के पास रक्खी थीं भीतर ले जाकर कोष में रख दीं और थैलों की टटोल में उन थै
लियों के न होने से जो अलीबाबा ले गया था कुछ ध्यान न किया सबके सब इसी चिन्ता में पड़े
कि यह मनुष्य किधर से आया और शान दानों से तो कोई नहीं आ सकता क्योंकि इतने ऊंचे पहाड़
पर कौन चढ़ सकता यदि द्वार से आता तो अवश्य था कि उसे खोलने और बंद करने का मंत्र
मालूम होता फिर उन्होंने कासिम की लोथ के चार टुकड़े किये और कंदरा के बाहर उन्हों
ने गईं और दो उधर और दो इधर और दो खड़े कि औरों को वह लाश देखकर उपदेश हो
और इस गुफ़ा में जाने की इच्छा न करें फिर वह कंदरा का द्वार बंद घोड़ों पर सवार हो चले गये
जब कासिम की स्त्री ने देखा कि रात्रि हो गई और कासिम लौटकर घर में नहीं आया तो घबरा
कर अलीबाबा के निकट दौड़ी गई और रो कर कहने लगी भाई अब तक कासिम घर में न

है। आयातम को अवश्य मालूम होगा कि वह किस बन में गया है ऐसा नहीं जो उस पर कुछ
दुख पड़ा हो अलीबाबा समझा कि कुछ न कुछ विघ्न हुवा है जो कासिम वहां से नहीं आया
सो उसकी स्त्री को धीर्य देकर कहा कि कासिम अति चतुर है वह नगर में से होकर नहीं
आवेगा नगर के बाहर से होकर आवेगा इसी लिये उसे विलंब हुवा इस बात के सुनने ही उ
सकी स्त्री को कुछ धीर्य हुवा और अपने घर में आई जब आधी रात बीती तो अपने पति के
लिये अति कष्टाकुल हुई परंतु भय से चिल्ला कर से नहीं सकी थी कि उसके पड़ोसी उस
भेद को जान लेंगे अपने मन ही मन में रुदन करती और यह पुकार देती थी कि क्यों मैंने इस
भेद को कहा और अलीबाबा से ईर्षा गती निदान वह रात्रि उसने रोते कटी जब प्रभात हुवा
तो अलीबाबा के पास दौड़ी गई अलीबाबा अपनी भाभी को धीर्य देत रंत्र अपने वाथों
समेत उसी बन को सिधारा जब उस पर्वत के नीचे पहुंचा तो वहां रुधिर बहा देख आश्च
र्य में हुवा न तो उसने अपने भाई को देखा और न दस खच्चरों को इस से अति आश्चर्य में हो
सोचने लगा कि यह कुछ बुरा शकुन मालूम होता है फिर उसने उसी मंत्र का उच्चारण
किया तुरंत वह दरवाजा खुल गया तो यहां दरवाजे के दाहिने बांए अपने भाई को लो
थ को टुकड़े २ हुवा देख अत्यंत भयभीत हुवा उसने अपने भाई को लोथ को चादर में बां

एकगधेपरलादा औरउसकोकाहसे चकेऔरसेछिपालिया औरदोगधोंपरअशर्फियोंके
थैलियांलादउनपरभीछिपानेकेलिये लकड़ियांरक्खी जबनिश्चिंतभयातो उसने द्वारको
उसीमंत्रसेमूंदलिया औरनगरकोसिधारा औरबड़ीरक्षासे अपनेघरमें पहुंचा औरवहगध
ये अशर्फियोंके लदेहुये घरमेंले जाकर अपनीस्त्रीसेकहाकियहअशर्फियांउतार
ले परंतु उससेकुछभीकासिमके मारेजानेकावृत्तांतनकहा औरउसीबोझेके सहित जिसप
रकासिमकीलोथथीकासिमकेघरमें आया औरदरवाजे परहांकदी मरजीना नामकएक
लौंडीनेजोअमंत चतुरऔरसमझदारथी आकर किवाड़खोला अलीबाबा उसगधेको म
हके भीतरलेगया औरकासिमकी लोथकोउतार मरजीनासे कहाहै मरजीनाशीघ्रतू
इसलोथकेगाड़नेका उपायकरमैं अभीअपनीभावजको एकबात कहकेतेरा साथदेता
हूंकासिमकीस्त्रीने अलीबाबाको इससेदेखकहाहे अलीबाबा मेरेअर्थक्यासमाचार
लाये परंतुविदितहै किमैं तेरे स्वभावसेडावके चिन्हपातीहूं अलीबाबाने उससे उसके पति
कोठगोंके हाथसे मारेजाने औरउसकी लोथकेलानेकावृत्तांतवर्णनकिया औरकहाहे
सुंदरी अबजोकुछहोनाथा वहहुवा परंतुयहभेदछिपा रखनाउचितहै जिससेहमारे प्राण
बचें रुदनमतकरहाफिर अलीबाबाने अपनीभावजसे कहाकिईश्वरकी इच्छामेंकिसीका

उपाय नहींचलना अबसंतोपरक्करो अबतुमको उचितहै किमोगकेदिन पूर्णहोनेके उपरांत
मुझसे विवाहकरलो औरआनंदमें रहोगी मेरीस्त्री अति सुशीलहै तुमसे वहवैरनकरेगी
कासिमकी स्त्रीनेरोकरकहामें तुम्हारी इच्छासे बाहरनहीं फिरउसनेपतिके लिये महावि
लापकिया औरपछारकेबालनोचे अलीबाबाने उसेवहींछोड़ मरजीनासे आकर अपनेभा
ईकेकफनकेलिये बातचीतकीजोकुछसमयके अनुकूलथा उसबांदीसे कहकरबायों
समेत अपनेघरमें आया अलीबाबाकेजानेके उपरांतमरजीनाअपन्सारीकेदूकानपरगई
औरउसभेदके छिपानेकेलिये ऐसी औषधिमांगीजिसे मरणप्रायके समयबीमारकोदे
तेहैं पन्सारीने औषधिदेकर उससे पूछाकितेरेघरमें कौनऐसाबीमारहै उसनेरोकर कहा
मेरा स्वामीकासिम बहुतबीमारहोगयाहै न तोकुछ खाताहै औरनबात करताहै इ
सलिये सबउसके जीनेसे निरासहैं दूसरे दिनमरजीना फिरउसी दूकान परगई और
उसीवह औषधि औरखगयमांगी जोअंतसमयमें रोगीको देतेहैं किउस औषधीकेप्र
भावसेकुछबीमारको आरामहोताहै जबपन्सारीने उसेवह औषधिदीतो मरजीना उस
सेलेकर रोईऔरहाहाखायकहने लगीमैंनहीं जानतीकि औषधिकामलानेको भी अवस
रमिलेवानमिले अथवामेरे जातेही जानदेहांतहो जावे इसतरफतो अलीबाबाबाट

देखनाथाकिजिससमयरोने पीटनेकाशब्दकासिमके घरसेसुनेतोशीघ्रजाकेसोगकरे
दूसरेदिनप्रभातको मरजीनामुंह अंधेरेएकबुड्ढेमोचीकारकेनिकटजिसका नाममु
स्तफ़ाथागई वहदरजी बहुधा कफनसियाकरताथा सोउसीसमय उसनेदुकानखोली
थी मरजीनानेएकअशरफ़ी उसकोदी औरकहा अपनेनेत्रोंमें पट्टीबांधकर मेरेसाथ
चलो मुस्तफ़ाने कहाकि मैं इसतरहनहीं चलूंगा मरजीनानेएकऔर अशरफ़ी उसकेहा
थमेंरखके बहुतसीविनतीकी यहांतककिवह दरज़ी अशरफ़ियोंकेलोभसे चलनेकेलि
येराजीहुवा फिरमरजीनाउसकेनेत्रोंपररुमालबांध औरहाथउसकापकड़ उसीमकान
मेंजहां उसकेस्वामीकीलाश पड़ीहुईथीलेगई औरकासिमकीलोथको कमरेमेंरखके औ
रउसपरचादरडाल अंधेरीकोठरीमेंमुस्तफ़ाकी आंखेंखोलदीं औरकहा तुमइसलोथ
के बराबरकफनसीकरतय्यारकरदोतुमकोएक अशरफ़ी औरदूंगी जबमुस्तफ़ानेसी
करतय्यारकरदिया तबमरजीनानेतीसरी अशरफ़ीभीउसकोदेडाली औरफिरउसकी आं
खोंमेंपट्टीबांधकरउसकोठेसे हाथपकड़लेआईजहांपहिले उसनेउसकी आंखोंप
ररुमालबांधाथा औरउसकोविदाकर अपनेगृहमेंलौटआई और जलगरमकरउस
ने औरअलीबाबानेमिलकरकासिमकीलोथको स्नानकराया औरउसकोकफनाक

स्वच्छस्थानपरएकवा मरजीनाएक मसजिदकेइमामके पासगई औरउससे कहाएक अरथी न
यारहैचलके उसपरनिमाजपढ़ो औरउसकोफलानि कवरिस्थानपरलेजाकरगाड़दो असम
सजिदकेइमाम औरवहांकारहनि वाले जिनकायहीकामथा उसके साथआये औरचारम
नुष्यउसकेपड़ोसीउसकेजनाजे कोअपने कांधेपर उठाउसे निमाजपढ़नेकेस्थानपरलेगयेनि
माजपठनेके उपरांतऔरचारमनुष्य अरथीकोकवरिस्थानमें लेचलेमरजीना जिनाजेके आ
गेशिरनंगीरोती पीटती विलापकरतीचलीयहांतक कि अलीबाबा पड़ोसियोकेसाथ जिना
ज़ालेकर कवरिस्तानमें आया औरउसको गाड़ अपनेआनाकेसोगमें चालीसदिवनकबै
ठारहा औरनगरकीस्त्रीके साथरोई औरउसकोथोड़ीदेवलीगई और अलीबाबा औरउ
सकीस्त्री औरकासिमकी स्त्रीकेविशेष नगरकाकोई मनुष्य इसभेदको नजानताथाचाले
सदिनकेउपरांत अलीबाबानेकासिमकीस्त्रीकेसाथविवाह किया अलीबाबाकाएकपु
त्रथावहांकिसीबड़ेव्योपारीकेसाथरहाकरताथा औरव्यापारकेकार्यकोभलीभांतिजा
नताथा उसकोपितानि कासिमकीदुकान उसेसौंपीसोवहदुकानपरबैठनेलगा ॥ अब
यहांसेउन्हींचालीसोंठगोंकावृत्तांत वर्णन कियाजाताहै एकदिनवहठवा अपनीकंदरा
में आये औरवहांकासिमकी लोथकाकुछभी चिन्हनपाकर अत्यन्त आश्चर्यमें डूबेऔर

सके सिवाय देखो कि उस खजानेसे बहुतसी अशरफियांभी निकल गई हैं उनके सरदारने
कहा यदि इस बातका खोज नहीं करतेतो आगेको हमें अधिक डर है होगा और सिवाय इ
सके चोर २ यह संपूर्ण द्रव्य जो हमने और हमारे पुरुषोंने बड़े श्रमसे बहुत कालमें संच
य किया है नष्ट हो जावेगा फिर सभोंने सोचा कि इसमें कुछ संदेह नहीं कि वह मनुष्य
जिसे हमने बध किया दरवाज़ेके खोलने और बंद करनेके मंत्रको जानताथा इसके वि
शेष कोई और मनुष्यभी इस भेदको जानता है जो दरवाज़ा खोलकर बहुतसा धन और मु
र्दे को उठाकर ले गया अवश्य है कि हममें से एक मनुष्य अति चतुर और प्रवीण नगरमें
विदेशीके भेषसे जावे गली २ महल्ला २ फिरके मालूम करे कि कौन मनुष्य नगरमें इन
दिनों मरा है और वह कहां रहता है जब इतना मालूम हो गया तो उस समय कोई और य
त्न किया जावेगा उनमें से एक ठगने कहा मैं इस कार्यके निमित्त नगरमें जाता हूं यातो उस
मनुष्यका ठिका मालूम करतुमसे कहूंगा या अपने प्राण दे डालूंगा निदान वह ठग रात्रि
को नगरमें आया और भोरको चौकमें गयातो मुस्तफ़ाकी दुकानके सिवाय सब दुकानें
बंद पाईं वह हस्तवीकार अपनी दुकानमें अपना काम हाथमें लिये हुये मोढे पर बैठा हु
आ था इसने जाके उसे प्रणाम किया और कहा अभी अंधियारा है तुम इस समय अपना

सच
३०
37

कार्य्यकोंकर करसकेहो खुलफ़ानेकहाजान पड़ताहै कितुमविदेशीहो इसतुम्हारेपके बाप
नेपरभीमेरी दृष्टि अबतकऐसीभीहै कि अभीकलकेदिन अंधियारेघरमें एकलोथका क
फन सियायहबातसुनकरठग अपने मनमेंसमझा किइसवृद्धका उत्तरमेरी अभिलाषा।
के अनुकूलहै फिरइसभेदके अधिकखुलनेकेलियेकहा कि मालूमहोताहैकि तुम
कफनसियाकरतेहो खुलफ़ानेकहाजोऊछ किहो मुफसेऊछ औरअधिक मति स
ब्बो ठगने एकअशरफ़ी उसीसूचीकारकेहाथमें रखके कहामें कोईभेदतुमसे नहीं
रखताकेवल इतनाही चाहताहूं किमुफे पतेसेया अपनेसाथलेजाकरउस घरको ब
तादो जिसमेंतुम कफनसीनेकोगयेथे खुलफाने लालचकेवश कहा उसघरकोतोमैं
अपने आंखोंसेनहीं देखामुफे एकस्त्री एकमहल्लमें लेगईथी उसमें निस्संदेहजानताहूं
वहमेरे नेत्रोंमें पट्टीबांधएकबर मेंलेगई और एक अंधियारे मकानमें मेरी आंखें खोल
कर मुफे वहलोथदिखलाई औरउसकाकफनसिलगया फिरनरेनेत्रोंमें पट्टीबांधे उसी
स्थानमें जहांसे किलेगईलाकरछोड़गई और पट्टीखोलदी भलाभैंकोंकर तुफे उसम।
कामकोदिखाऊं ठगनेकहामुफेवहांलेचलजहांसेतेरी आंखेंबंदकीथी किमैं तेरी आं
खोंकोरुमालसे बांधूं औरतेरेसाथरहूंगा उसीविचारसे चलियो जैसाकि पहिले पट्टीबां

यकरचलाथा शायद इस उपायसेही मुझेवह घरमालूम होजावे यदि आपएकपरइतनीद
याकेरंगेतोमें एक अशरफ़ी औरतुम्हारी भेदकहूंगा इतनाकह एक अशरफ़ी औरमुस्लफ़ा
केहाथमेंधरदी मुस्लफ़ानेउनदोनों अशर्फ़ियोंको जेबमेंरखठगसे उसीप्रकारसे जानेकी प्र
तिज्ञाकी फिर उसने अपनी दूकान उसीभांति खुली छोड़ी औरउसको उसजगहपरलाकरक
हायहस्थान वहीहै जहांसेमुझे वहस्त्री आंखें बंदकरकेलेगईथी ठगनेरूमाल उसकी आं
खोंमें बांधा औरउसकेसाथसिधारा मुस्लफ़ा उसीभांति उसओरकोचला जिधरपहिले मर
जीनाके साथगयाथा औरइतनाहीचलकर खड़ाहो गयाकियहांतक पहिलेभी आयाथा
उसठगने शीघ्रएकचिन्ह खड़ियाका उसघरपरकरदिया औरमुस्लफ़ाकी आंखेंखोल पूछा
यहकिसकाघरहै उसनेकहामैं नहीं जानतामैं इसमहल्लेकेलोगोंको नहींजानता ठगने
जानाकि इससे अधिक मुस्लफ़ासेहाल मालूम नहीं होसक्तातो मुस्लफ़ाका अतिगुणमानक
रकहातुमने मेरेलिये अतिपरिश्रम कियाफिरवहठग उससेबिदाहोबनकोगया औरमुस्ल
फ़ाअपनी दूकानपर आयाउसी समय मरजीना अपने घरसे बाहर किसीकामकेलिये गईथी
जबवह अपनेघरपरपहुंची तोदरवाजेपरचिन्हदेख आश्चर्यमें खड़ीरहके सोचीकिमेरे स्वा
मीकोकिसी बैरीनेपहिचाननेके लियेयह निशानकिया नजानिये क्याउपायमचे सोउस

सच
३८
38

ने महल्ले भरके पड़ोसियों के दरवाज़ों पर वही निशान खड़िया के कर दिये और यह भेद किसी से
न कहा वह ठग्गा अपने सन्दूह में गया और संपूर्ण वृत्तान्त सरदार से वर्णन किया वह सब लोग ए
क २ होकर सरदार समेत उस नगर में आये और जब वह मनुष्य जो अली बाबा के घर पर नि
शान कर गया था अपने सरदार को पहिचनवाने के वास्ते लाया तो पहिले सरदार ने एक दरवा
ज़े पर खड़िया का निशान पाया इससे वह समझा कि यह घर उसी मनुष्य का है जिसको हम ढूं
ढते हैं फिर जब उसकी दृष्टि दूसरे और तीसरे किंबहुना महल्ले भर के दरवाजों पर पड़ी तो वही ठी
क चिन्ह सब द्वारों में पाकर आश्चर्य में हुवा कि हम कौ कर उस घर को मालूम करें वह यह हि
ला ठग इस हाल से अत्यन्त लज्जित हुवा और उसको उत्तर देते न बनि आया निदान सो ठग दावा के
अपने सरदार से कहा कि मैं ने उसी एक दरवाजे पर निशान किया था परंतु मैं नहीं जानता कि
कौंकर और दरवाजों पर एक २ चिन्ह बना हुवा है इससे उस दरवाज़े को भली भांति न पहि
चान सका फिर वह सरदार वहां से चौक में आया और अपने साथियों से जो वहां मिलते
गए कहने लगा हमारा परिश्रम व्यर्थ गया और वह हारान घास के इस वृत्तान्त को अपने स
ब साथियों से कह देना अब मैं बन में जाता हूं जो उससे मिले थे अपने सरदार के साथ उसी कन्द
रा को और लौट गये जब सब ठग वहां एकत्र हुए सरदार ने उस ठग को जो निशान कर आया

या और उसकी बात झूठ हुई थी सबके साम्हने दंड दिया और सबसे कहा जो तुम सबमें से नगर में
जाकर मेरे चोर का ठीक पता लगाकर लावे और मुझसे आकर कहेगा मैं उसके साथ बड़ा उपका
र करूंगा यह सुन उनमें से एक मनुष्य ने उस समूह में से निकलकर कहा मैं नगर को जाता हूं और
र उसका चरमात्मक कर उसका समाचार लाय तुमको देता हूं सरदार ने उसे परितोषक आदि दे
कर बिदा किया वह भी पहिले मुस्तफा दरजी के पास आया और पहिले ठग की सदृश दरजी
को अशरफियां दे उसे राजी किया और नेत्रों में पट्टी बांध अलीबाबा के घर तक ले गया और उ
सके द्वार पर लाल चिन्ह किया क्योंकि श्वेत चिन्हों में लाल चिन्ह वाला घर प्रतीत हो सकता है
उसके चले जाने के उपरान्त मरजीना लाल देख शोचित हुई और उसने वैसा ही चिन्ह और दर
वाजों पर भी कर दिया और चुपकी हो रही उस ठग ने अपने समूह में अपने सरदार से कहा
मैं द्वारे पर चिन्ह कर आया हूं अब वह दरवाजा औरों से सहज प्रतीत होता है वह सरदार क
ई ठगों सहित वहां आया तो उसने सर्वत्र सब द्वारों के एक से चिन्ह पाये इससे विदसियात्य
हुआ और अपने घर को लौटकर उस दूसरे ठग को भी यथोचित दण्ड दिया फिर शोचने लगा
कि दो मनुष्यों से कुछ न भई और दण्ड पाया या निश्चय है कि अब कोई मनुष्य इस काम में पग न जा ले
गा इससे उत्तम है कि आप नगर में अकेले जाके बैरी का चरमात्मक करूं फिर आप ही अकेला

नगरमें आके उसीहलवाईकारकेवलताने सिजिसको बहुतऊबक दियाथा अमीबाबाके चरनकपर्व
चाउसपरकोईचिन्हन कियाकिंतु दोविरभीतरवाहरसे उसहाथेको देख औरउसके निशानों
कोभलीभांति ध्यानमेंरखकरफिरवनमेंगया और अपने सन्तहूसे कहाकेमें उसकोमले प्रकारदे
खआयाहूं उसकेपहिचाननेमें अबथोरवानपड़ेगा परंतुतुमएककाम करोकिउनीस खच
रभोललो औरएककुप्पानेलका औरसंतोसकुप्पावोलो इकट्ठेकरोकिहरएककुप्पेमें एकम
नुष्यतुममेंसेमरे औरउनकेदो दोमनुष्योंकेसिवाय शाह्साहिबनबैठे औरदोकुप्पेएकखच्चर
परलादेजावें उन्नीसखच्चरपरएक मनुष्य औरदूसरी ओर उसकेकुप्पातेलकारक्कवाजावे
औरहमभठियारोंके भेषमें नगरकेभीतरखच्चरों समेत जावें औररात्रिको उसीदरवाजे प
ररात्रिकेरहनेके लियेकहैं फिरवहांरहकररात्रिको सबमनुष्य कु
प्पोंमेंसे निकलकरउसेमारडालें औरजितना किद्रव्यवह यहांसेउठाकरलेगयाहै उनखच्च
रोंपरलादकरलेआवें यहमतसबने माना औरगांवमें जाकरखच्चर औरकुप्पे मोललाये औ
रजिसभांति उसनेकहाथा एक एक ठगउसकुप्पेमें पैठा औरकुप्पोंके ऊपरतेलमलदिया
किसब कुप्पेतेलकेकुप्पे दिखलाई देवें फिर उससरदारने अपनाभेषतेलबेचनेवालेकाब
नाया औरउन्नीसखच्चरों परसंतीसकुप्पेजिनमें एक२ ठगकोबैठायाथा औरतेलकाकुप्पाला

दके नगर में ऐसे समय लाया कि अलीबाबा के घर संध्या को पहुंचा संयोग वश उस समय अ
लीबाबा भोजन कर अपने दरवाजे पर टहल रहा था सो ठगों के सरदार ने उसे दंडवत करके कहा
मैं अमुक गांव का रहने वाला हूं और तेल का बहुत व्योपार करता हूं परंतु आज संध्या हो ग
ई इस लिये सोचता हूं कि रात कहां बिताऊं जो आप कृपा कर मुझे खच्चरों सहित अपने घर में
जगह देते तो मैं कृपा मानता और औरयोंका दाना घास करूं अलीबाबा उस ठग का शब्द पहिचान कर
भी कि वह उसने वृक्ष पर से कंदरा के भीतर से सुना था उसे भठियारे के स्वरूप में देख पहिचान न स
का कि वह ठगों का सरदार है सुशीलता से उसकी बात को स्वीकार कर कहा बहुत अच्छा आ
ज की रात्रि मेरे घर में रहो फिर एक विशाल कोठा खाली करके उसे बतला दिया कि इसके भीतर
तुम उतरो और अपने खच्चरों को बांधो और एक सेवक को दाने घास के लिये नियत किया और
मरजीना से कहा एक मेहमान मेरे घर में आया है उसके लिये जल्दी भोजन बना और खूब शय्या
बिछा कर तय्यार रख जब ठगों का सरदार कुछ खा चुका तो अलीबाबा ने उसका बड़ा सन्मा
न किया और उसके सन्मुख मरजीना को बुलाके आज्ञा दी कि मेरे मेहमान की बड़ी सेवा कीजि
यो जिससे कि उसे किसी प्रकार का परिश्रम न पड़े और भोर को मैं हम्माम करूंगा गर्म जल तय्यार
रखियो और एक जोड़ा वस्त्र का निकाल अबदुल्ला नौकर को दे कि उस स्नान के उपरान्त मैं पहनूं।

गा और मेरे पीने के लिये भोरके वास्ते और खाना तही कोनष्यार राखियो मरजीनाने कहा बहुत
तम अच्छा जिस २ कामको आपने आज्ञा दीहै उसे मैं समय पर करूंगी अलीबाबा यह आज्ञा
मरजीनाको दे अपने सोनेकी जगह मैं जाय सो रहा और ठगोंका सरदार भोजन करनेके उपरा
न्त अश्वशाला मे गया और खच्चरों और साथियों को भोजन खिलाया फिर इर एक कुप्पेके
पास जिसमें मनुष्य थे गया और धीरे से अपने साथियों को समझा बुझा कर कहा आधी रात्रि
को जब मैं तुमको बुलाऊं तो तुम तुरंत कुप्पेकी मूहसे पैंदी तक छुरीसे काट कर निकल आ
ना फिर वह सरदार आज्ञा देकर रसोईके दरवाजेसे सोनेकी जगह मे आया मरजीनाने दीपक
लिये उसके साथ थी उसने उस सरदार से पूछा कोई वस्तु तुमको और आवश्यक हो तो मुझसे
कहो उसने कहा अब मुझे और कुछ नहीं चाहिये यह कह उस दीपको बुझा दिया और रात
या पर जाय लेटा और अपने मन में कहा एक नींद सोके उठूंगा और अपने साथियों को अपने
कार्य के लिये बुलाऊंगा मरजीनाने स्वामी की आज्ञानुसार एक जोड़ा सुपेद कपड़ेका निकाल
अबुदुल्ला नौकर को कि वह उस समय तक जागता था दिया फिर उसने शोरवा पकाने के लिये
भाजन हल्दे पर रक्खा और आंच कर दी थोड़ी देर के पश्चात् उसको शोरवा देखने के लिये दी
पक की आवश्यकता पड़ी अकस्मात् दीपक सब बुझ गये थे और तेल घरमें न था और कोई मोम

की बत्तीभी उस समयउसेन मिली वहदासी दीपकजलानेकेलिये अति शोचितथी अबुहासे
वकनेउसेचिंतितपाकेसबबातकोइस समयशोचमेंहै उस मकानमें बहुतसेकुप्पेतेलके रक्खे
हैं जितनातुझे तेलचाहियेले आवछ कहकेसेवकतोइस बातकोविचारकरसोरहा किप्रभात
कै अपने स्वामीके साथमुझेभीहम्माम जानाहोगाइस समय अवश्यहैकिसोरहूं ओरमर
जीना अकेलीतेलकालोटाउठाउसमकानमेंजहांतेलकेकुप्पेबराबर रक्खेथेगईजबवहएक
कुप्पेके समीपपहुंचीतो उसमें ठगजो अपनेसरदारके आगमनकीबाटदेखताथा अहटपाकेधी
रेसेपूछनेलगाक्या हमारेनिकलनेकासमयहै मरजीनाउसकाशब्दसुनयद्यपि उसमेंबहुत
धीरेसेपूछाप्याभयभीतहुई ओरउनकोप्रतीतताकोसमझगई ओरउसके प्रश्नकाउत्तरसरदा
रकीभांतियहदियाकि अभीनहीं अर्थात अभीतुम्हारेनिकलनेकासमयनहींपहुंचाफि
रवहदूसरेकुप्पेकेपासगई वहांसेभीयही शब्दसुना ओरउसनेवहीउत्तरदियानिदानइसीभा
तिसबकुप्पोंपरगई तोशोचीहै ईश्वरसबठगोंको मेरेस्वामीनेतेलबेचनेवालासमझकर उता
रा ओर यहसबचोरहैं किलूटने ओरउसकेबधकरनेलिये तेलबेचनेवालेकाभेषधर आ
येहैं निदान मरजीनानेतेल वालेकुप्पेसेकुल्हड़तेलकाभरलिया ओरसोईमेंजाकरदीपक
मैंतेलडालउसेजलाया ओरबड़ीएकदेगनिकालउसकुप्पेमेंसेतेललाकरभलीभांतिगर्मकी

सब
४१

41

याजबखबगर्महोगयातबमरजीनाउसमेंसेएकदेगचीभरएकसिरेकेकूप्पोंमेंडालनेलगीवह
सबठगउन्हींकूप्पोंमेंजलभुनकेरहगये औरउससबतरह और बुद्धिवंत बांदीकेउपायसे जवड़े
औरशोरकेविनावह सबकेसबमरगये फिरमरजीनाउसदेगसमेतरसोईमें दरवाज़ा मूंदके
बैठरही औरअलीबाबाकेलिये शोरबा पकानेलगीएकघड़ीनवीतीथीकिठगोंकासरदा
रजगा औरदरवाज़ेकोखोलकरदेखाकिचहुं ओर अंधियाराहै उसनेहांकदी परंतुवहां
से आवाज़नआई तबभरकेउपरांतउनसबकोफिरपुकारातथापिकोईउत्तरन आया तोस
रीबेरफिरबड़े ज़ोरसे आवाज़दीफिरभीकुछउत्तरनपायातबव्याकुलहो उसीमकानमेंगयाजहां
वह सबकूप्पेरक्खेहुयेथे यहविचाराकियहसब अचेतनसोगयेहैं वहांजायसबकोजगा
गाऊं जबएककूप्पेकेपासगयातो उसमेंसेजलेहुये मनुष्यकीदुर्गंध आई औरउससेबहुत
गर्मपाया इसीभांतिसबकूप्पोंकेनिकटगया औरयहीदशादेखीतबआपभीभयसेदी
वारपरचढ़ बागको औरकूदपड़ा औरवहांसेभागा जब बहुतदेरहुई औरवह सरदारव
हांसेनलौटातो मरजीनानेजानाकिवहउसपिछवाड़ेसेकूदभागाको किवाहरकेदरवा
ज़े परदोकुफललगेहुयेथे फिर मरजीना उनठगोंसेनिश्चिंतहोसोरही दोघड़ीकेतड़के
अलीबाबाउठहम्माममें गया अबतकउसे रात्रिकासमाचारमालूमनहुआ जबअलीबाबाने।

सूर्योदयके प्रथम हम्माम किया उनऊपोंको अपनेघरमें रखवादेख आश्चर्यमेंहुवा किका
अबतक वहव्योपारी अपनेखच्चरों परऊप्पेलादकरबाजार नहीं लेगया उसने मर्जीनासे इ
सकाहेतुपूछा उसने उत्तरदिया ईश्वरआपको ११ वर्षकी आयुकरे मैं इसव्योपारीकाहालतमाम
आपसेएकांतमेंकहूंगी अलीबाबा उसके साथएकांतमेंगया मर्जीनादरवाजेको मूंदके उससे य
कऊपेके निकटलेगई औरकहनेलगी किदेखिये इसमेंतेलहै जबउसनेऊपेमें देखातो
उसेमनुष्यदृष्टि पड़ावहचिल्ला औरभयखा भागा उसनेकहा तुमइसमनुष्यसे मतिडरो वह।
तुमकोकष्ट नहींदेसक्ता वहमरापड़ाहै अलीबाबाने पूछाकि यह मनुष्यकौंकरआ
या उसनेकहा इसहालको आपसेकहूंगी अबचुपकेहोरहिये कितुम्हारे पड़ोसी इस भे
दको जाननलैं अबतुम एकसिरेसे दूसरेसिरेतक देखतेजाओ उसने एकसिरेसे दूसरे सि
रेतकदेखा सबकोमराहुवा पायामहा आश्चर्यसे कभीमर्जीनाकोदेखता औरकदापिऊ
पों कीओरदृष्टिकरताफिर मर्जीनासे पूछा वहव्योपारीकाहुवा उसने कहा वहव्योपारी
नहींथा उसकाहालभी तुमसेकहूंगी किवह कौनथा औरक्याहुवा अबतुम हम्मामसे
आयहो ईश्वरनेकृपालकी शोरवा तय्यारहै उसकोपीजिये उसकेकहा इसहालकोमुझसे स
वर्णनकर जिससेमुझकोधीर्यहो उसकेसुननेकेलिये अत्यंतविकलहोरहाहूं सोवह इ

सच
५२
42

सप्रकारसे कहनेलगीहे स्वामी जबआपमुझे शोरखापकानकेलिये आज्ञादेकरसो गयेमैंनेप
कवरोंकाजोड़ा निकाल अब्दुल्लाकोदिया औरशोरवापकाने केलिये हल्दमें ओवकरनीरही
जबशोरवापकचुकातो उसकोसाफकरनेलिये मैंनेचाहा किदीपकजलाऊं घरमेंतेलनहीं था
काथा अब्दुल्लानेमुझे चिंतितपाके कहाकि उससमकानमेंबहुतसेकुप्पेतेलकेभरे रक्खेहैं जि
तनातेलचाहियेजाकरले औमैंतेलकापात्रले करएककुप्पेकेपासगई उसमेंसे एकशब्द सुना
कियह समयनिकलनेकाहै मैंवह शब्दसुनकरबहुतडरी औरतुरंतजान गईकि इस महाड
ह व्यापारीने तुम्हारेमारनेकेलिये यहउपायकियाहै मैंनेउत्तरदियाकि अभीनिकालनेका
समयनहींपहुंचा फिरदूसरेकुप्पेके निकटगईवहांभी यहीशब्दसुनाउसेभीयही उत्तर
दिया औरइसीभांतिचारी २ सेसबकुप्पोंकेनिकटगई औरसबोंको उत्तरदेतीरहीवह सब अ
पने सरदारकी आज्ञाकीबाटदेखतेथेजिसको अपने व्यापारीसमझकर अपने घरमेंउता
राथा औरउसकाभलीभांति सन्मानकियाथा वहडाकू अपनेलोगोंकोतुम्हारेमारने औरा
घरलूटनेकेलिये लायाथा औरचाहताथा कितुमकोमारे परंतुमैंने उसे औसरनदिया
पीछाड़ी अंतकेकुप्पेमेंसे तेलभरलाई औरदीपकजलायाफिरमैंनेरसोईमेंसे एकबड़ावर
तनतेलसेभरउसेचूल्हेपररक्खा औरउसकेनीचे प्रचंड अग्निजलाईजबवहतेल औटगया

तो इतनाकिहरएकमरजावेतेलडालती गई औरक्षणमात्रमें उनकोमाररसोईमेंआई औरदी
पककोबुझाके खिड़कीमेंसे देखनेलगीकिदेखें वह डाकूचोधरी अबक्याकरताहै कुछका
लकेउपरांतवहजागा औरकई बेरउसने अपने साथियोंको बुलाया जबउसने किसीकाशब्द
नसुनातोवहांसेनीचे आकेउनकुप्पोंकेपासगया औरवहदशादेखकेमुझे अंधियारेमें मालू
मऊआकिवह किसीओरको भागकरचलागया जबबहुकालबीता औरवहनाफिरा तबमैंसम
मझीकिवहबागसे फांदकरभागगया फिरमैंसोरही इतनाकह मरजीनाने अपनेस्वामीसेक
हाजोकुछसच २ थामैंनेकहसुनाया औरदोतीनदिनआगे मुझेइसबातकेचिन्हमालूम
होगयेथेपरंतुमैंने आपसेनहींकहा अबवहभीकहतीहूं उसकोमनलगा करसुनियेए
कदिन प्रभातकोजबमैंबाहरसे घरमेंआतीथीएकसफेदनिशानमैंने अपनेदरवाजेपरदे
खा और दूसरेदिनलालचिन्ह उससफेदचिन्हकेपासदेखा दोनोंबेरमालूमकरनेकेलियेमैंनेअ
पने सबपड़ोसियोंकेकिवाड़ोंपरभीवहीनिशानकरदिये जिसमेंहमारादरवाजा अनोखा न
होवे अबमैंनिश्चय समझीकि यहदुष्टताउसीबनकेठगोंकीथी पहिचाननेकेलियेतुम्हारे
घरपरनिशानकरगयेथे परंतुउनचालीसोंमेंसेनजानियेकिदोकोक्याहुआ अबउनदो औ
रसरदारसेजोबचकरगयाहै निश्चिंतनरहनावह अवश्यतुम्हारेपीछेलगेरहेंगे औरओसरा।

सच
४२

43

एकरनिसंदेहहमकोबधकरडालेंगे ऋौरजोकुछहमारेप्राणकी रक्षाकेलियेतुझसेबनपड़ा
सोमैंनेकिया ऋौरआगेभीयथोचितप्रबंधकरूंगी ऋलीबाबायहसुनतेहीऋपनीलौंडीसेहनके
रहस्थितहुवा ऋौरकहनेलगामैंतुझसेबहुतप्रसन्नहुवा ऋबजोकुछतू ऋपनेलियेकहेमैं
ऋपनेजीतेजीउसेकरूं मरजीनानेकहा ऋबपहिले ऋवश्यहैकिशीघ्रइनलोथोंकोऋपने
बागमेंगाड़दोजिससेकिसीकोयहभेदमालूमनहो ऋलीबाबाऋपनेनौकरकोआपनेसाथले
बागमेंजोबहुतबड़ाथागया ऋौरवृक्षोंकेनीचेबहुतबड़ा ऋौरगहरागढ़ाखोदउनसमग्र
मुर्दोंकेशस्त्रछीन ऋौरउनको बागमेंलेजाकरगाड़दिया ऋौरऊपरसेपृथ्वीकूट पीटबरा
बरकरदीकि जिससेकुछचिन्हजाननपड़े ऋौरसबकुप्पे ऋौरहथियारछुपाकरएक२ दो२
खच्चर ऋपनेसेवकके हाथ बाज़ारमेंभिजवाकर विकवादिये ऋौर ऋलीबाबाबड़ेहोशियारी
सेरहता किउसकेधनवानहोनेकाकोईहाल मालूमनहोनेपावे ऋौरवहडाकुओंकासरदा
रभागकर उसीबनमें ऋत्यन्त विकलतासेगया ऋौरविचारनेलगाकि ऋबकोईऐसा यत्नकर
नाकिउस मनुष्य ऋर्थात् ऋलीबाबाकोबधकरूंनहींतोयहसकोषकासमग्रधन निकाल
करलेजावेगा ऋबकिसीदूसरेको ऋपनासाथीनकरूंगा जिसप्रकारसेहोसके ऋलीबा
बाकोमारूं फिर ऋपने मतलबकेमित्रसेवहीकार्यजोपीढ़ियोंसे चला आयाहै कियाकरूं

यह मनमेंठानरात्रिकोवहींसोरहा प्रभातकोजगकरकोई अपनानवीनभेषकिया औरवहांसे
आकरएकसरायमें उतरा औरवहां यहशोचा कि इतनेमनुष्योंकेमरनेकाहाल निस्संदेह बाद।
शाहकोपहुंचाहोगा औरअलीबाबा पकड़ागया होगाऔरउसकेधन औरउसकेघरकोभीबा
दशाहनेहरलियाहोगायह वृत्तांतनिस्संदेह नगरभरमें विख्यातहो गयाहोगा सरायवालेसे
पूछायहांकेरहनेवालोंका कोई अद्भुत समाचारतुमने सुनाहोतोकहो उसनेजोबातेंदोतीन
दिनके समयान्तरमेंहुईथी औरउसनेदेखीं औरसुनींथीवर्णनकीं परंतुउस सरदारने अपने
प्रयोजनकी कोईबातनसुनी औरसमझाकिवह मनुष्य अर्थात् अलीबाबा अमेडुहिवंतहै इ
तने द्रव्यकेलेजाने औरमनुष्योंके मारनेपरभी अपनीहोशियारीसे अबतकबचाहै ऐसानहो
जोत्भीउसके हाथसे माराजावे इसचिंतापरभीउसने अलीबाबाकेधोखादेनेकेलियेउत्तम २
वस्तुव्योपारकी अपनेस्थानसेलाकर एकत्रकीं औरचौकमें एकदूकान किराये परमोललेक
रउस असबाबकोलेजाकर उसमेंरखदिया दियाऔरउसदूकानपर बैठबेचनेलगा संयो
गवश वहदूकानअलीबाबाकेपुत्रके सन्मुखथी उसदुष्टने अपना नामख्वाजेहसन वि
ख्यातकिया औरदूकानदारों औरव्योपारीयों सेउसने मित्रताकी औरहरएकसे अच्छा स्वभाव
वर्तनेलगाविशेष अलीबाबाकेपुत्रसेजोअति तरुण औरसुन्दरपवान् औरसुंदरवस्त्रपहिनता।

सच
धध
44

था बड़ी मित्रता की और बहुधा उसीके पास उठता बैठता तीन चार दिनके उपरांत अलीबाबा जो बहु-
धा अपने पुत्रके देखनेके लिये दूकान पर आया जाया करता था आया और ठगोंको देख पहिचा-
ना और पुत्रसे पूछा कि यह मनुष्य तुम्हारी दूकान पर कौन आया करता है उसने कहा वह मेरा
पिता है इस बातके सुनतेही वह महाधूर्त कासिमको खोखेसे बहुत प्यार करनेलगा और बहुत
सी सौगातें मित्रवत् देता और बहुधा उत्तम भोजन बनाकर उसे अपने साथ खिलाता अलीबाबा
के पुत्रने भी चाहा कि एक दिन उसको न्योते यदि उसका घर बहुत छोटा था इसलिये उसने
यह बात अपने पितासे कही उसके पिताने कहा बहुत अच्छा तुमभी अपने मित्रकी ज्यवना-
र करो जिस भांति उसने तुम्हारा आदर किया था करना कल शुक्रवार है तुम बड़े व्योपारियों
के सदृश अपनी दूकान मंद दोपहरके उपरांत टहलते हुये मेरे घरमें ले आयो मैं मरजी-
नाको आंज्ञा देता हूं कि वह भोजन तय्यार रक्खे निदान दूसरे दिन शुक्रवार को ठग औ-
र अलीबाबाका पुत्र टहलने को निकले लौटती समय अलीबाबाका पुत्र उसको उसी कूचेमें जि-
समें अलीबाबा रहता था ले आया जब घरके द्वार पर पहुंचे तो उसने ठगको वहां ठहराकर द्वा-
र खोल गया और ठगसे कहा ये मकान मेरे पिताका है जबसे उसने मेरे साथ तुम्हारे अधिक स्नेह
का वृत्तांत सुना तबसे तुम्हारे साथ भेंट किया चाहता है यदि भीतर चलके उनसे भेंट कीजिये

तोमुझे हर्ष होगा यद्यपि ठगकी यही इच्छाथी कि किसी भांति मेरा आवागमन अलीबाबाके
घरमें होतो अवसर पाकर अपना कार्य साधे परंतु उस समय वह न गया और अलीबाबाके पु
त्रसे चाहा कि कोई बहाना करके चलाजावे फिर अलीबाबाके नौकरने द्वार खोलातो वह उ
सको बहुतसी विनतीकर उसको भीतर लेगया जब वह घरमें गयातो वह अलीबाबासे
प्रसन्नता पूर्वक मिला जिससे जानपड़े कि वह अपनी प्रसन्नतासे आयाहै अलीबाबाने भेंट
कर आनेदिन होउससे कुशल पूछी और कहनेलगा तुम मेरे पुत्रसे अत्यंत स्नेह रखतेहो
और उसपर बहुत दया करतेहो इसलिये मैं तुम्हारा बहुत गुण मानताहूं और मुझे भली
भांति विदित है कि जितनी मैं उससे प्रीति रखताहूं उससे अधिक तुम उससे स्नेह रखने
होगे ठगने भी बहुतसी बातें प्रसन्न करनेकी कहके कहा तुम्हारे पुत्रसे मैं राजी हूं यद्यपि
अभी वह छोटाहै परंतु ईश्वरने उसको बुद्धिदीहै और बड़ा समझताहै फिर वह बड़ी प्रीतिसे वा
र्तालाप करनेलगा थोड़ीदेरके पीछे ठगने विदा मांगी कि अब मैं जाताहूं अलीबाबाने उ
से ठहराया कि तुम कहां जातेहो मैंने तुम्हें न्योताहै कृपाकरके भोजनकरके जाना यद्यपि
वह भोजन पैसे नहीं कि जिनको आप रुचिसे विकय ग्रहण करें परंतु मुझपर अनुग्रहकरथो
ड़ासा भोजन कीजिये उसने कहा मैं आपकी दयालुतासे मनबचसे कृतज्ञ हुवा औरतोकुछ

९३
४५

45

चिंतानहीं परंतुएककार्य्यऐसाहै जिसमें अधिकनहींठहरसक्ताहूं औरनभोजनकरसक्ता
हूं अलीबाबानेपूछावहकौनसीवातहै उसनेकहामुझेऐसारोगहोगयाहै किजिससेमैंन
मकदारभोजननहींकरसक्ता अलीबाबानेकहाजोयही कारणहैतो अभीसबभोजननहीं
बनामैंरसोइयेकोकहदेताहूं किकिसीभोजनमेंनोंननडालेठहरजाइयेमें अभी आताहूं
फिर अलीबाबानेरसोईमें जाकरमरजीनासेकहाकिथोड़ासाभोजनविनानमकपकाइयो
वह यहसुनकरआश्चर्य्यमेंहुई और अलीबाबासेपूछा किऐसाकौन मनुष्यहै किजोबिना
नमकके भोजनकरेगा अलीबाबानेकहाकोईमनुहो तुझे इससेक्याकामहै जोमैंकहताहूं
वहीकरमरजीनानेउनसेतोयहीकहाकिबहुत अच्छामैंवैसाही भोजन पकाऊंगी परंतु
अपने मनमेंसोचनेमेंशोचनेलगी वह मनुष्यकैसाहै जोलवणनहीं खातामैं भीचलकर
देखूं औरभोजनपकाकरअबुल्लादासके साथभोजनकोलिये भोजनकेपात्रविछानेगईयद्य
यपिवहठगव्योपारियोंकेवस्त्र पहिनेथा औरअपनो स्वरूपवदलाईथी तथापि उसकोदेख
नेहीउसनेपहिचानलिया फिरमरजीनाने ध्यानकरकेमालूमकियाकिवहयापकाखंजर अ
पनेकपड़ेमेंछिपायेहै औरयहशोचीकियह इसीलिये मेरेस्वामीकानमकनहींखा
ताकिउसेछलसेमारडाले यहउसकाबड़ाशत्रुहै फिरमरजीनाने अपने मनमेंकहाकिजोतू

संध्याकोमेरेस्वामीके मारनेका इरादा करेगामैंभीरहीकोनफेमारडालूंगी निदानवह पात्रवि
छा औरभोजन परसकरचलीगई फिरजब अलीबाबा औरठगभोजनकरचुकेतो अबुल्लानेम
रजीनासेकहाकि अबसावे मेवेलेचल मरजीनानेवहांकेपात्रउठालिये औरफलोंकोनश्तरि।
यों लेगईफिरउसने एकछोटी चौकीमयको अलीबाबाकेपास बिछाकर उसपरलोनगिला।
सरकावे औरआप अबुल्लासमेतरसोईजेवनेकेबहाने दूसरेमकानमेंगईइधरख्वाजेहसन अत्यन्त
ठगोंकासरदार अवसरपाकरप्रसन्नहुवा औरसोचाईसीसमय अलीबाबासे अपनाबैरलूं
औरएक खंजरमार उसेवधकरूं फिरबागमेंसेनिकलजाऊं उसकापुत्रमुझे इसकाममेंबाधा।
नहोकर सक्तायादितनकभी हाथपांवहिलावेगा तोउसेभी मारकेएकठिकानेलगाऊंगापरं
यहकार्यउस समयसिद्धकरनाचाहियेजिससमय अलीबाबाकादास औरउसकोरसोइनजा
करभोजनकरै मरजीनाउसकीनेकीदेख परखगई और समझगई किपेसानहोकियहदुष्ट
मेरेस्वामीकोदुखपहुंचावै उत्तमहै किचलके प्रथम उसीको किसीभांतिसे मारूंफिरउसीहि
नेधी लौंडीनेनृत्यनाचनेकेवस्त्रपहिने औरएकपगड़ी शिरपरधरली औरसुन्दररुपयेकेमु
लम्मकापटकाकमरमेंबांधा औरउसमेंएकखंजरख अपनेस्वामीकोछुपानेकेलिये अति
खूबसूरतपटाओढ़ाजबवहभेषबदलचुकीतो उसनेअबुल्लासे कहाकिअपनाबाजाउठालेकि

स०च०
४९

46

हमदोनों मिलकर अपने स्वामीके मेहमानकोनाचगाकरप्रसन्नकरें अब्दुल्लानवलावजाताहु
वामरजीनाके आगेचलाफिरवहदोनोंउसमकानमेंजिसमें अलीबाबा औरउसकामेहमान
था आये औरउन्होंनेनाचनेगानेको आज्ञाली अलीबाबानेआज्ञादेकरकहाकिऐसेनमा
शे औरनकलेंकरोजिससे ख्वाजेहसनदेखकरप्रसन्नहोजाय अब्दुल्लापासजाकरबाजाबजाने
लगातोमरजीनाउसकेआगेहोकरनाचनेलगी औरनानाप्रकारकेसुंदरनाचदिखाकरसब
सेउनकोएकभांतिकानाच अच्छामालूमहुवाकिनाचकरतेकभीमरजीनाखंजरकोबगल
मेंरखती औरकभीपेट परथोड़ीदेरकेउपरांतमरजीनाने तबलाअब्दुल्लासेलेकरअपनेबा
येंहाथमें पकड़ा औरखंजरकोदाहिनेहाथमेंरख पारितोषिकलेनेको अलीबाबाकेपासग
ईउसनेउसेएकअशरफ़ीदीफिरवह अलीबाबाकेपुत्रकेपासगई उसनेभीएकअशरफ़ी
दीख्वाजेहसनभीसमझाकिवह मेरेपासभी आवेगीतोवह एक अशरफ़ीनिकालनेलगा
मरजीनाने अवसरपाकेबड़ीहोशियारी औरसाहससेबड़े बेगकेसाथखंजर उसकेहृद
यमेंमाराकिख्वाजेहसन उसीसमयमरगया अलीबाबाइसदशाकोदेखभयभीतहुवा औ
रमरजीनापरक्रोधकरके कहनेलगाहे अभागिनीतूनेयहक्याकामकियाकिजिससेमेंमारा

जाऊं उसने कहा मैंने यह काम आपके मारे जाने का नहीं किया किंतु आपके प्राण की रक्षा की।
है इसके वस्त्रों को खोल कर देखो जब उसने उसके कपड़े खोले तो उसमें एक छोटी सी पैनी छुरी
पाई फिर उसने अलीबाबा से कहा कि यह तुम्हारे प्राण का वैरी था और भली भांति देखो और प
हिचानो कि यह वही तेल बेचने वाला टग है वा नहीं जो तुम्हारे मारने को आया था इसी लि
ये नहीं चाहता था कि तुम्हारा नोन खावे जिस समय आपने बेनमक भोजन पकाने की आज्ञा
दी थी उसी समय मैंने आकर उसको देखा और पहिचाना और समझी कि वह तुम्हें मारना।
चाहता है ईश्वर का धन्यवाद है कि वही मेरा शीघ्र समझा और आपके प्राण उसे परमात्मा
सच्चिदानंद ईश्वर ने बचाये अलीबाबा ने मरजीना का बड़ा गुण माना कि इसने दूसरी बेर उस
के हाथ से मुझे बचाया फिर उसके कंठ से लगा कर दासीत्व से छुड़ाया और कहने लगा कि इस
हित के बदले मेरा विवाह अपने पुत्र के साथ करता हूं सो उसने अपने पुत्र से कहा मैं जानता
हूं कि तुम सुपुत्र हो जो मैं कहूंगा वह तुम मानोगे मुझे अभिलाषा है कि मरजीना को तुम से।
ब्याहूं वह अत्यंत हितैषी है अब यह निश्चय मानो कि ख्वाजे हसन का तुम्हारे साथ मि
त्रता करने से यही प्रयोजन था कि वह मुझे मारे परंतु मरजीना ने अपनी बुद्धिमता और यत्न
से उसे मार कर सब को बचाया इतना सुन वह इस बात पर राजी हुआ फिर अलीबाबा और उ

सव
४७

47

सके पुत्रने इस होशियारी से उस बाग में ठग की लोथ को गाड़ा कि बहुत वर्षों तक यह वृत्तांत किसी
को विदित न हुवा फिर अलीबाबाने अपने पुत्र का विवाह मरजीना के साथ बड़ी धूमधाम से कि
या और अपने पड़ोसियों और इष्टमित्र को निमंत्रण करके यथोचित सत्कार किया और बड़े ना
च रंग दिखाये और अलीबाबाने ठगों के भय से उस दिन के सिवाय कि अपने भाई कासिम की
लोथ कंदरा से उठा लाया था उस खजाने में न गया परन्तु एक दिन वह अपने घोड़े पर सवा।
र होकर उस कोष के ओर गया मार्ग में मनुष्य और घोड़ों के चरणचिन्ह न देखकर अति प्र
सन्न होगया और दरवाजे के पास जाकर वही मंत्र पढ़ा तुरंत दरवाजा खुलगया और उसी।
के भीतर जाकर देखा कि वह सब धन और वस्तु उसी भांति रक्खा है इससे उसे विश्वास हुवा कि
अब कोई भी ठग जीता नहीं इसके सिवाय कोई दूसरा उस द्रव्य के भेद को न जानता था फिर
वह कई बार अशरफियां वहां से भरके घर में लाया और अपने पुत्र को वही कंदरा दिखा
ई और खुलने और मूंदने का भी मंत्र उसे सिखा दिया निदान वह दोनों उस असंख्य द्रव्य से
जन्मभर आनंद में रहे मलका शहरजादने इस कथा को भोर होने पूर्ण किया और दूस
री रात्रि को और एक कथा कहने लगी ॥ बुगदाद नगर के निवासी अली खाजह ब्योपारी
का चरित्र खलीफा हारूंरशीद की सल्तनत में एक ब्योपारी बुगदाद में रहता था और थोड़ी

सीवस्तुसेव्यापारकरता और अपने दादेपरदादेके बनायेहुये घरमेंरहताउसके कुटुंबमें से
कोईनथाउसब्योपारीने बराबरतीनरात्रिस्वप्नदेखाकिकोईसत्पुरुषकहताहै किमक्केकी
यात्राजोतुझपरउचितहै क्योंनहीकरता अलीरवाजाइसस्वप्नकोदेखकरबहुतडरा औरउस
सत्पुरुषकावाक्य उसकेमनमेंऐसा गड़ाकिअपनासब असबाब औरदूकानबेचकरमक्के
केजानेकी इच्छाकी औरअपनेघरमेंएक किरायेदारकोरखविदेशियोंके साथजोमक्के
कोजातेथेहोलिया औरअपनेजानेके पहिले एकहजारअशरफीजो राहखर्चसे अधि
कबचरहीथीएकठिलियामेंरख औरऊपरउसके जैतूनकातेल भरउसका खूबभलीभां
तिबंदकरलिया औरएकसौदागरजो उसकापुरानामित्रथा उसकेघरमेंलेगया औरकह
नेलगाकिआपने सुनाहोगाकिइनदिनों मैंमक्केकीयात्राकोजाताहूं सोएकठिलियाजै
तूनकेतेलकोतुम्हारे पासरखनेकोलायाहूं इसको मेरेलौटनेतक अपने पासरखियो उ
सब्योपारीने अपनेगोदामकीकुंजी अलीरवाजेकोदेकरकहाकितुम आपगोदामकोखोल
करजहांकितुमचाहोउसकोरखदो औरलौटकर आपहीजाकरलेलेना अलीरवाजेने
उसठिलियाकोएकमकानमें रख औरउसका तालाबंदकरउसकीकुंजी उसीब्योपारीको
सौंपदी औरअपनीब्योपारीकीवस्तुकोएक ऊंटपरलादकरसवारहुआ औरयात्रियोंके

सच
५८

48

साथचलाजबवह मक्केमेंऊपालसर्वकपऊंचा श्रोरजिलहिज्जके महीनेमें किहजारों मुस
ल्मानवहांपऊंचकरमक्केकीपरिक्रमाकरतेहैं उसनेभी परिक्रमाकीजबवह निश्चिंतहुश्रा
तो असबाबबेचनेकोनिकला अकस्मातदोव्योपारी सैरकरतेऊये अलीखाजाकी दूकान
परगये श्रोरउसकोवस्त्रकोदेखप्रसन्नऊए श्रोरपसंदकर परस्पर कहनेलगेकियदियह
व्योपारीइस असबाबकोकैरूमेंजोमिसरकी राजधानी हैलेजावेतो बड़े मोलसे बिकेगा
अलीखाजाकिपहिलेसेमिसरकीप्रशंसासुनमनमें देखनेकोलालसारखताथा इसबा
तकोसुन अधिकप्रसन्नऊवा श्रोरबुगदादका इरादाछोड़करमिसरकेजानेकीइच्छा
की श्रोरयात्रियोंकेसमूहकेसाथउधरको सिधाराजबवहांपऊंचातो उसविचित्रदेश
मेंसैरकर अतिहर्षितऊवा श्रोरअपने असबाबमोललेकर दमिस्कमें जानेकीउत्से इ
च्छाऊई श्रोरएकमासपर्यंतकेरूमें रहकर अहरामकी सैरकीजोनीलनदीकेतटपर
करोड़ मंजिलोंसेदीखतेहैं श्रोर २ भीनीलकेकूलकेबसे नगर देखदमिस्ककी श्रोरचला
मार्गमें रोदसलेम आदिकमसजिदोंकाजोमुसल्मानोंनेबनाईथीं दर्शनकियाफिरद
मिस्कनगरमेंगया उसनगरकोबऊतबसाऊवा श्रोरअनेकभांतिसे अलंकृतपाया श्रोरउ
समेंऊडबऊतदेखे श्रोरखेतों श्रोरबागकोविलाऊश्रा श्रोरफलसमेतदेखबुगदादको

चलगया फिरवहांसेहलब मवस्सल औरशीराजकोगया औरवहांसे आनंदपूर्वक सातवर्षके
उपरांतबुगदादमें पहुंचा अवश्यतेरा उसबुगदादीव्योपारीकोसुनियेकि इस सातवर्षके म
ध्यांतरमें उसने अलीखवाजा औरनउसकीवस्तुकी सुधिकी अकस्मात् एकदिनसंध्याको
अपनीस्त्रीकेसाथभोजनकरताथातोउससमयजैतूनके तेलकीवार्ताचलीउसकीस्त्रीनेक
हामेरामनउसकेखानेकोबहुत चाहताहै उसनेकहातुम्हारीइस वार्तासेमुझे अलीखवा
जास्मरणहुआ आयाकि सातवर्षवीतेहैं किमक्केकीयात्राकोगयाहै औरजातीसमय एक
ठिलियाजैतूनके तेलकीमेरी अमुककोठरीमेंछोड़गयाहै परंतुनजानिये अबवहक
हांहै पर्वमेंएकयात्रीसेसुनाथाकि अलीखवाजामिसरको औरमक्केसेगयाहै ईश्वरजा
ने मरगयाहैयाजीताहै यदिउसकातेल विगड़नगयाहोतोउसमेंसेथोड़ा सानिकाला
करलुकवे मुझे एकपात्र औरदीपकदोकि उसमेंसेतेलनिकालकरचक्खूं उसकीस्त्री
कि अत्यंत धर्मिष्ठाथीकहनेलगी ईश्वरकेवास्ते एसाबुराकर्ममतकर किकिसीकीथ
रोहरमें चोरीकरेभलातुमकोक्योंकरनिश्चयहुआकिवहमिसरसे जीतेजी लौटकरा
नहीं फिरगाका तुमनेकिसीसे उसकेमरनेका समाचार सुनाका आश्चर्यहै किवहक
य अथवा परसोंहुआ आलस्यपूर्वक लौटआवे उससमय तुमकोइसचोरीसे अत्यंतलज्जाहो

महोवेगीजोतम उसकीवस्तुउसे छीनदोगेतोहमारी अनंत निंदाहोगी में इसकामकी सा
थी नहीं और न उसतेलकोचखहोगी इसके विशेषतुम विचारोकि सातवर्ष का पुरानातै
ल कबभोजनकरनेके योग्यहोगा मैंतुके सौगंददेतीहूं कियहकाममतिकरउससमय मे
वतीने अपने पतिको बहुतसमझाया औरउसे निषेधकिया इतनासमझाया किउससम
यतो उसने वह इच्छाछोड़दी परंतुदूसरे समय फिर वहव्योपारी निकावीलेके कोठरी में च
लाउसकी स्त्रीनेकहामें इसकाममें तेरे साथ नहींहूं इससेतुझपर अवश्यकोईनकोईउपाधि
फैलेगी उसनेकुछ न माना और कोठरमें जाकर उसने उसठिलियाको खोला यद्यपि वह तै
लसड़के बहुतखराबहोगयाथा तथापिउसने ठिलियाको हिलाकर एक पात्र उसतैलसे
भरलियासंयोगसे एक अशरफ़ीतेलकेसाथ निकल आई व्योपारी अशरफ़ीको देखके
होलोभवश साराोतेल उंडेलके देखाकि अशरफियांभरी हैं उससमय उसने उसतेलको
फिरठिलियामेंडालदिया और मुखउसकाबंदकर कोठरीसेनिकल आया और अपनी
स्त्रीसेकहातुमसचकहतीहो मैंनेउसतेलको अंतकउंगिफेंकपाया औरउसीभांतिमें उ
सठिलियाके मुखकोबंदकर चलाआयापरंतु वह उसस्त्रीसोचमें रात्रिभरनसोयाकि
किसीभांति वह अशरफियां अलीख्वाजेकीलेलूंप्रातःनिभोरकोउसने अशरफियांनिका

लः और नवीन स्वच्छ तेल बाजारसे मोल लाकर उस ठिलियामें भर और उसका मुख बंद कर को
टरीमें रख दिया ईश्वरकी मायासे एक महीनेके उपरांत अलीखाजह बुगदादमें आकर अ
पने मित्र बुगदादी व्योपारीको भेंटको गया उसने उससे भेंट की और प्रगटमें अत्यंत प्रसन्न हुआ
निदान कुशल पूछनेके पश्चात अलीखाजहने अपनी वस्तु मांगी और कहा जैतूनके तेल
की ठिलिया दे दीजिये व्योपारीने उत्तर दिया भाई मैं नहीं जानता कि तुमने कोठड़ीमें कहां र
क्खी है तुही लो और अपनी वस्तु निकाल कर ले जाओ अलीखाजह कोठरीमें जा अपनी
ठिलियाको कोठरीमें जा अपनी ठिलियाको कोठरीमें से निकाल लाया और उस व्योपारीसे
बिदा होकर अपने घर गया जब उसने ठिलियामें अशरफियां न पाईं तो अत्यन्त चिंतित हुआ
और बहुत रोया और उस व्योपारीसे जाकर कहा हे मित्र मैं ईश्वरको साक्षी देता हूं कि मैं यात्रा
करती समय एक हजार अशरफियां ठिलियामें रखकर गया था अब उनको नहीं पाता
इसका क्या कारण है यदि तुमने किसी कामकी अवश्यकतासे उनको खर्च किया हो तो कु
छ हानि नहीं जब चाहना देना उसने अशरफियोंके लेनेसे इनकार किया और कहने ल
गा भाई जाती समय ठिलिया जैतूनके तेलकी अपने हाथसे मेरी कोठरीमें रख गये थे क्या मैं
जानता था कि उसमें अशरफियां थीं वा तेल सो तुम उस ठिलियाको उसी भांति उठाकर ले गा

सच
५०
५०

ये अब तुम मुझ पर झूठा कलंक किस वास्ते लगाते हो यह भले मनुष्य की बात नहीं भला राखतीस
मय तुमने अशरफियों के विषय में शुक सेक कहा था तुमने तो केवल तैल का वर्णन किया था देखो
वह तो रक्खा है यदि अशरफियां होतीं तो वह भी आ कर पाते उसने उसकी बहुत सी बिनती
की और बहुत रोकर कहा कि मेरी जन्मभर की कमाई वही हज़ार अशरफी थी आशा र
खता हूं कि मुझ पर दया कर उनको दे दीजिये उसने भुंझलाकर कहा तुम बड़े अधर्मी
हो भाई यहां से चले जाओ मेरे घर फिर न आना तुम्हारा हाल मालूम हुआ कि तुम महा अ
ने हो यह जो वार्ता अलीख़ाजा और व्यापारी से होती थी कि उस महल्ले के बहुत से मनुष्य
एकत्र हो गये और इनके झगड़े का वृत्तांत तुरन्त बगदाद भर में प्रसिद्ध हो गया और वह एक भले
मानस ने खजाना निदान ख़ाजह अंत व्याकुल होकर व्योपारी को मायाधीश के पास ले गया
और संपूर्ण वृत्तांत कहना या माया धीश ने अलीख़ाजे से पूछा तेरा कोई साक्षी है उसने कहा
मैंने भेद खुलने के भय से किसी को साक्षी नहीं किया और मेले इस व्यापारी को अपना मि
त्र और विश्वासी समझ के या तब मायाधीश ने उस व्योपारी से सौगंद खाने को कहा उसने
सौगंद खाकर कहा कि अलीख़ाजह की अशरफियों को मैं नहीं जानता मायाधीश ने व्यो
पारी को निर्दोष समझ छोड़ दिया अलीख़ाजा मायाधीश के माथ से निरास हुवा और वह

ऐसे दिन एक अर्जी लिखा कर खलीफा हारूँरशीद को जिस समय कि वह शुक्रवार की निमाज
पढ़ने के लिये मसजिद में जाता था निवेदन की खलीफा ने उसकी अर्जी को पढ़ और अभिप्रा
य समझ कर आज्ञा दी कि कल दोनों मनुष्य मेरी सभा में आवें और इस अव्यवस्था को मैं आप निर्णे
य करूंगा और संध्या समय अपने नियम के अनुकूल नगर का हाल मालूम करने को भे
ष बदल निकला और यह सरे देखा कि चंद्रमा की ललित चांदनी में दश अथवा बारह बा
लक परस्पर खेलते हैं खलीफा वहां जाकर खड़ा हो गया सो एक बालक ने जो उन बच्चों से
अमित स्वरूपवान था और बालकों से कहा आओ हम तुम सब मिलकर न्यायाधीश की न
कल करें मैं न्यायाधीश बनता हूं और तुम में से एक बालक अली खाजह और दूसरा बो
पारी बने जिसके पास वह हजार अशरफी रख कर यात्रा को गया फिर तुम में से कोई दोनों
को मेरे सन्मुख लावे खलीफा उन दोनों का नाम सुन आश्चर्य में हुआ कि कल इसी विषय
की अर्जी मार्ग में किसी ने दी है और मैंने उसे पढ़ा देखें तो यह बालक का निर्णय करता
है फिर खलीफा ध्यान धर देखने लगा और विचार कि या यह बात इतनी नगर में विख्यात
हुई कि हरकोई जानते हैं कि ये बालक परस्पर उसी की नकल करके खेलते हैं निदान उ
न लड़कों ने अपने में से एक को अली खाजह और दूसरे को बोपारी बुगदादी नियत कर

सच
५१
51

उसीबालककेपासलेगयेजोबड़ीश्रमथामसेमायाधीशबनकेबैठाथा उसबालकनेकालितस्र
लीखाजासेपूछाकितुमइसब्योपारीसेक्याचाहताहै उसनेअपनाहत्तांतविस्तारपूर्वकवर्णनकि
याकालितमायाधीशनेइतनासुनकर उसब्योपारीसे पूछातुमने अशरफियां उसकी नहीलीं
उसब्योपारीने वहीउत्तरदियाजो शहरकेमायाधीशकोदियाथाकितब सौगंधखाने लगामा
याधीशनेकहापहिलेमें वहठिलियादेखनाचाहताहूं जिसमेंकालिशोनेजितकातेलभर
करनेरेचरमेंरकवाथोकालित अलीखाजाउसेलायाऔरमायाधीशनेउनदोनोंसेपूछाकिय
हठिलियावहीहैजिसकोअलीखाजहब्योपारीकेघरमें रखकरगयाथा उनदोनोंनेकहाय
हीठिलियाहैफिरमायाधीशनेकहाउसेखोलकरथोड़ासातेलमेरेपासलाओकिइसका।
स्वाददेखूंकिकैसाहै निदानथोड़ासातेल चाखकरकहाइसकास्वादबहुतअच्छाहै मैंजा
नताथाकिसातवर्षके उपरांतइसकाबुरास्वादहोगयाहोगा औरसड़गयाहोगा फिरउसमा
याधीशनेआज्ञादीकिदोतेलकेबेचनेवालेबाजारसेबुलालाओवहबालक अपनेसमूहमें।
सेदोलड़कों कोतेलबेचनेवालेनियतकरमायाधीशकेनिकटलेगये उसने उसनेपूछा।
किहुमतेलबेचनेवालेहो उन्होंनेकहाहांहमारी यहीजीविकाहै उसने उनसेपूछाकि।
जेततेलकबतलकअच्छारहताहै औरबदमजानहींहोता उन्होंनेकहा साहब यदिकोई

कौननाहीउपायकरेतोतीनवर्षकेपश्चात् उसकेरङ्ग. औरगंधमें अंतरपड़जाताहै किंतुउसिफें
कदेतेहैं फिरउसबालकने उनसेकहाइसटिलियाकेतेलको देखकरमालूमकरोकियहतेल
कितनेवरसोंकाहै औरउसकास्वादकैसाहै उन्होंनेउसटिलियामेंसेकुछ तेलनिकालकरदे।
खा औरचाखकरकहा यहतेलबहुत अच्छा औरस्वादिष्टहै मायाधीशनेकहाकमकुछकह
नेहो अलोखाजहै सातवर्षहुयेकियहतेलरखकरयाचाकोगयाथा उन्होंनेकहा आपचाहि
येजोकाहिये परंतुयहतेलएकवर्षसे अधिककानहींहै इसीवरसकाबनाहुवाहै कोईव्योपा
रीबुगदादमेंनहोगा जोइसबातकोनजानताहो निदानउसबुगदादीव्योपारीने उसतेलकोरख
च औरचाखइसबातकोमानातबकलियतमायाधीशनेअनुकर्णबुगदादीसेकहातूचोरहै।
त्नेयहकर्मफांसीपानेकाकियाहै इतनासुनसबबालकहंसदने औरतालियांबजानेलग
औरउसकालितबुगदादीव्योपारीकोपकड़केदंडदेनेकेलिये लेगयेखलीफाहारूंरशीदउस
बालककोबुद्धिदेखअति प्रसन्नहुवा और अपनेमनमेंठहरायाकिकलइसीभांतिइसअवस
थाकोनिर्णयकरेगा फिरखबाजहनेजाफरसेजोवहींखड़ाथा आज्ञादीइसबालककोजिसने
इससमयमायाधीशबनकरअवस्थाकोनिर्णयकियाहैपहिचानकरकलइसकोमेरेपासला
इयोकिइसीभांतिमेरेसन्मुखइसीअवस्थाकानिर्णयकरे औरनगरकामायाधीशभीआकरक

सीबालकसे सीरवे श्रौरखलीरवाजहको कहलाभेजाकिकल इसाढिगियाको श्रपनेसाथलेता
ताश्रावे श्रौरदोतिलवचनेवालेभी श्रावें खलीफ़ा यह श्राज्ञा मंत्रीको मार्गमें देकर श्रपने
महलमेंगया प्रभातको मंत्री उसीमहाह मेंजहांबालकोंनेखिल खेलाथागया श्रौरउन
केगुरुसेसमझाउसने कहावह सबबालक श्रपने २ घरकोगयेहैं मंत्रीने उनकेमातापि
ताकोबुलाकर श्राज्ञादीकितुम तुरंत श्रपने २ पुत्रोंकोलाश्रोसोउन्होंने उनकोलाये मं
त्रीनेउनसे पूछातुममेंसे रात्रिकोकिसलड़केनेमायाधीशबनकोखिलखिलाया उनेमेंसे
यकबालकनेकहामैं मायाधीशबनाथा मंत्रीनेकहा मेरेसाथचल खलीफ़ानेतुझेबुला
याहै उसलड़केकीमाताडरगई श्रौररोनेलगी मंत्रीनेउसेधीर्यदेकरकहाकुछचिंतामत
करयकघड़ीकेउपरांततेरे पुत्रकोपहुंचा देंगाउसकीमाताप्रसन्नहुई श्रौरउसकोव
स्त्रपहिनाकरमंत्रीकेसाथकरदिया श्रौरमंत्रीउसेखलीफ़ाकेपासलेवाया खलीफ़ाने
सभाकेसमयउसबालककोश्रपनेपासबैठायाफिरजबनालिशी श्राये तो खलीफ़ाने उ
नसेकहातुमश्रपने २ हालकोइसबालकसे कहोवली इसव्यवस्थाको निर्णयकरेगा श्रले
रवाजह श्रौरव्योपारीनेश्रपना २ हालवर्णनकिया गौरवह व्योपारी इन्कारकरनेकेउ
परांतसौगंदखानेलगा उसबालकनेकहा श्रभीसौगंदखानेकीकुछश्रावश्यकतानहीं

पाहिले उस टिलिया को लाकर दिखाओ सो वही टिलिया बालक के सन्मुख रखवी गई खली
फ़ाने उसका मुख खुलवाकर उसमें तेल को चक्खा और तेल बेचने वालों को भी दिखाया और च
खाया उन्होंने कहा इस तेल का स्वाद अभी बिगड़ा नहीं यह तेल इसी वर्ष का बना हुआ है त
ब उस बालक ने व्योपारी से कहा तुम झूठ कहते हो क्योंकि सात वर्ष हुए कि अली ख्वाजा ने इ
स टिलिया में भर के रख छोड़ा रहे इस वर्ष का तेल इसमें कौन कर आ गया तेल बेचने वालों ने वही
उत्तर दिया जो बालकों ने खेल में समय दिया निदान बुगदादी व्योपारी ने हार मान अपने अ
पराध को मान लिया इतना कह उस बालक ने खलीफ़ा से कहा है स्वामी कल हमने यही
खेल खेला था हमको अपराधी के दंड देने की सामर्थ्य न थी अब यह व्यवस्था का निर्णय
आपके सन्मुख हुआ उसको दंड देकर हज़ार अशरफ़ी अली ख्वाजे को दिलवा दीजिये
खलीफ़ा ने आज्ञा दी कि इस व्योपारी को फांसी दो और उससे एक हज़ार अशरफ़ी अली
ख्वाजा की कहां हैं जहां बनावे वहां से लाकर अली ख्वाजा को देदो और उस बालक को अ
पने कंठ से लगाकर एक हज़ार अशरफ़ी पारितोषक दी और घर को पहुंचा दिया मलका
शहरजादे ने इस कथा को सुनाकर शाहरयार से कहा अभी बहुत सी उत्तम २ और ललित
कथा हैं कल की रात्रि को मैं वर्णन करूंगी ॥ कलके चोजे की कथा ॥ आपको भली भां

तिमालूमहोगाकिहजारोंवर्षसे पारसकेनिवासी नौरोज अर्थात् वर्षकाप्रथमदिन जानकर
खुशी करतेथे विशेष अग्निपूजक उसीदिनतूस और अनेक भांतिके तमाशे देखने और अति
उत्तम और विचित्रवस्तु बड़े॰ बादशाहऔरयवनोंको भेंटदेते औरहरसे नानाप्रकारकेगु
णवान महासुंदर और दिव्यवस्तु बादशाहके साम्हने लाते औरहजारों रुपयेपारितोषि।
कपाते सोकिसीकालमें नौरोज को कोईपारसकामहानेजवान बादशाहजो उदारतामें
अतिविख्यातथा तमाशादेखनेको नगरकेबाहरगया और संपूर्णसभासद औरनौकरों
ने आन२ कर अपनी२ भेंटदी औरबड़े२ गुणवानकारी गरोंनेनानाप्रकारकीवस्तुदीउ
नमेंहिंदुस्तानकानिवासीएकगुणवानहिंदूह आया और करजोड़ दंडवतकरक कलका
घोड़ाबादशाहकोभेंटदिया औरविनयकीकिस्सेवकनेइसको अमित श्रम औरयत्न
नसे बहुतदिनोंमें आपकेलियेबनायाहै निश्चयहै किऐसी अद्भुतवस्तु अबतक कि।
सीने आपकोनदीहोगीबादशाहनेकहायह घोड़ाकेवलकाष्ठकाबनाहै उसपरतूने
सुनहली रुपहली सामग्री लगाकर इसेसजायाहै इससे इसनगरमें उत्तमबनसका।
है इससामग्रीकेविशेष औरकोई अपूर्ववस्तुमें इसघोड़ेमेंनहींदेखताउसनेविनय
कीहै हजूरमें इसघोड़ेकेरूप औरसामग्रीकीप्रशंसानहींकरनाकिंतुमैंने इसमेंबड़ीका

रीगरीरकवी है कि मेरे सिवाय दूसरा कोई भी इसे नहीं बना सक्ता है स्वामी इस घोड़े में ऐसी।
कल है कि यदि मैं अथवा कोई दूसरा मनुष्य जिसे मैं उस कल को बताऊं चढ़कर उसको घु
मायेतो तत्काल ही यह घोड़ा पक्षी के समान वायुपर उड़ेगा और एक चर्खी में कल के बन्द
से सोटे सो को सजावे और फिर वहीं पर फिर आवे यदि आज्ञा होतो मैं इसपर चढ़ के
र इसका प्रभाव दिखाऊं बादशाह यह सुनकर अति प्रसन्न हुवा और इच्छा की कि कारीग
र के सच झूठ की परीक्षा लि तदनन्तर उसे चढ़ने की आज्ञा दी हिंदी अपना एक चरण घोड़े की
वांई रकाब पर दे उचककर जीन पर जा बैठा और दूसरे चरण को दूसरी रिकाब में रख लिया
और बादशाह से विनय की मुझे किधर जाने की आज्ञा होती है शीराज नामक राजधानी से
दिखाई देता था बादशाह ने कहा यद्यपि वह पर्वत दूर नहीं परन्तु तेरी परीक्षा की बहुत
है वहां तक जा और एक खजूर वृक्ष का पत्ता जो उस पर्वत के नीचे लगा है तोड़कर ले आ। अ
भी बादशाह कहने न चुका था कि उस हिंदी ने घोड़े के गर्दन के निकट का पेंच मरोड़ा तो तत्का
ल ही वह घोड़ा धरती से आकाश की ओर वायु में बिजली के समान उस पर्वत की ओर दूर।
होने के कारण दृष्टि से गुम होगया संपूर्ण सभासद इस विचित्र चरित्र को देख महा आश्चर्य
में हुये और वाह वाह का शब्द होने लगा पाव घड़ी के अनंतर में वह घोड़ा फिर उनको दिखा औ

स्नादेखा कि खंजर के हत्था की जाली उस हिन्दी के हाथ में है हिन्दी घोड़े को पृथ्वी पर लाया औ
र वहीं टहनी बादशाह को दी बादशाह इसको देख अत्यन्त प्रसन्न और विस्मित हुवा और उस
घोड़े का मोल पूछा उसने कहा हे स्वामी मैं इसको नहीं बेचता परन्तु एक प्रतिज्ञा से इसको मैं
आपके भेंट देता हूं कि जो इच्छा मैं आप से कहूं उसको स्वीकार कीजिये बादशाह ने कहा
तू जानता है कि ईरान देश अत्यन्त सुंदर और बसा हुवा है और इसके सर्व नगर एक २ देश
के तुल्य है वहां के अधिपति बादशाहों के सदृश रहते हैं जिस नगर को तू पसंद करे मैं तु
झे उसका बादशाह बनाऊं हिंदी ने कहा मुझे धन और नगर आदिक का लोभ नहीं मेरा अ
भिप्राय कुछ और है यदि मेरा अपराध क्षमा हो तो उसे विनय करूं बादशाह ने कहा मैंने तेरा
अपराध क्षमा किया उसने कहा जो आप मेरा विवाह अपनी पुत्री से करें तो मैं आपको यह
घोड़ा दूं अभी बादशाह ने कुछ उत्तर नहीं दिया था कि उसके सब सभासद यह बात सुन क
र उस पर अत्यन्त कोपित हुये परन्तु बादशाह के भय से उसे कुछ न कहा और चुप के हो रहे
इतने में बादशाह का बड़ा पुत्र फीरोजशाह जो युवराज था इस बात को सुन महा अप्रसन्न हु
आ और मन में सोचा कि इस दुष्ट हिंदी की क्या सामर्थ्य है कि शाहजादी से जो मेरी बहिन है
विवाह हो यह सोच कर बादशाह से विनय की यदि आप हिंदी की इस इच्छा को स्वीका

कीजियेगातोबड़ी जगहँसाईहोगीबादशाहनेकहा यद्यपियह बातबड़ेलज्जाकीहै परयेसाधो
उसेसासमरमेंनहींमिल सकाजबफीरोज शाह समझा किबादशाहतो इसबातपरप्रसन्नहै।
कि घोड़ेके बदलेअपनी कन्याकोदे औरउसीनीचहिंदीको अपनादामादबनावेतो उसहिंदीसे
कहाभलामैंइस घोड़ेपरसवारहोपरीक्षालूंयदियहमेरी परीक्षामेंउत्तमठहरातो खरीदने
की इच्छाबादशाहकोहै यहसुनहिंदीने कहाबहुत अच्छा आपइसपरसवारहो परीक्षालेले
इतनाकह घोड़ेको शाहजादेके पासलेगयाफीरोजशाह निश्शंकउसघोड़ेपरचढ़ा और
दोनोंपांव अपनीरिकाबोंपर जमाकरघोड़ेके गरदनकापेंचमरोड़ाजैसाकिहिंदीकोमरोड़
तेदेखाथाघुमाया घुमातेहीवहबाणकेसदृश आकाशकोउड़ाथोड़ेहीकालमेंवहघोड़ा
शाहजादे समेतबादशाहऔरउसकीसभाकीदृष्टिसे लुप्तहोगया तबउसहिंदीने असंत
चिंतितहोकरबादशाहसेबिनयकीकिहे स्वामीशाहजादेनेजल्दीकी औरइतनाअवका
शनदियाकिमैं उसेसबकलेंबताताहूं किकिसपेंचके घुमानेसे वहचलताहै और किसपेंचसे
ठहरजाताहै औरकिससे नीचेकोउतरताहै एकहीकलकेघुमानेसेकिवह चलताहै सु
केदेखकर समझाकि केवलएकही कलसेवहघोड़ा सबकामकरताहै औरइसनेवहएक
ताकिजिससेवहघोड़ा जहांसेकिचलाहैवहीं आताहै उसकोसेनहीं सच्छाजो ईश्वरनचाहे

कोईदुःखशाहजादेकोपहुंचेतो उसमेंमेरा अपराधनहीं बादशाहइसबातकोसुन अतिचिंता।
कोप्राप्तहुवा औरसमझाकिमेरे पुत्रको अवश्य कुछदुःखहोगा इसबातकोशोचरहिंदीसे
कहाकिनेकोंनहीं लोट आनेकोकलमेरे पुत्रकोबनाईउसने उत्तरदिया आपदेखनेथेकि
शाहजादेनेमेरा घोड़ा लातेही निशंकाक उसपरबैठकर उड़नेकीकल मड़ोड़ी जिससेघोड़ा
तुरंत आकाशपरवायुके समानबढ़गया मैंनेबातकहनेकीभी सावकाशनपाया किसब
कलोंकाहाल उसेबतादेतापरंतु एक आशाहै किकदाचित बहुतहरजाकर शाहजादेका
हाथसंयोगसेहसरे पेंचपरपड़जावे औरउसे मड़ोड़तेतोनिस्संदेह वह घोड़ाधरतीपर आ।
सकाहै बादशाहने कहामैंनेमानाजो शाहजादेको पेंचमिलजावे औरवह उसेघुमावेतो
ईश्वरजानेवह घोड़ाउसेलेकरपहाड़परउतरे अथवानदीमेंगिरेहिंदीने कहाइसबातका
आपभयनकीजियेजोवह नदीमेंउतरे औरउसनदीकापाटचाहो कितनाही चौड़ाहो वहपैर
केअर्पनेनदीमें उतरे औरउसनदीकापाटचाहोकितनाही चौड़ाहोवहपैरके अपनेसवार
सहितपृथ्वीपरनिकल आवेगा औरजिधरउसकासवार चाहेगा उधर उसकोले जावेगा
औरजिधरउसकासवार चाहेगाउधरउसकोले जावेगा औरयहनहींहोसकाकिशाहजादा
उसपेंचकोपाकर पर्वत वाबनमें उतरेकलोंके सिवायकहीं उतरेगा बादशाहने कहासुफीते

रेवचनकानिश्चयनहीमैंतीन महीनेका तर्फ साक्काशदेताहूंयदि इससमयांतरमें मेरापुत्रकु।
शलआयावामैंने उसकेकुशलका समाचारसुनातो अच्छानहीतोमैं तर्फेप्राणसेमरवाऊं
गा इतनाकह बादशाहने आज्ञादीकि इसहिंदीकोलेजाकर कैदकरोतदनंतर महाशो।
चितहोकर अपने मंदिरमेंगया और फीरोजकाउत्सवबंदकरदिया अबफीरोजशाहका वृ
त्तांतसुनोकिवह आकाशकी ओरवायुमेंऊंचे होताथा सोएकघड़ीमें वह इतनाऊंचाहुवा।
कि कुछभीधरतीदेखनपड़तीथी औरपर्वत उसकोमट्टीकेढेलेके सदृशदीखताथा त
बउसको इच्छाहुईकि जहांसेमैं चढ़ाहूंवहीं परउतरूं फिरउसने उसीपेंचको किजिसको
पहिलेघुमायाथा उलटा मरोड़ाकि वहघोड़ानीचेकोउतरे परंतुकुछफलनहुआ किंतु
उसपेंचकोथंभऔरघुमायाकिसी उपायसे घोड़ानीचेकोनउतरा ऊपरहीकोचढ़नेलगया।
फीरोजशाह इसदशाकोदेखकर बहुतघबराया और अपनीजल्दी औरपेंचोंके हालनसमझ
नेसेलज्जितहुआ औरकहनेलगा बड़ाखेदहै कितेरे प्राणार्थपाये तदनंतर निराशहोकर उ
सनेघोड़ेकेशिर औरगरदनकोभली भांतिटटोलानिदान बहुतढूंढनेकेउपरांत उसनेदाहि।
नेकानकेनीचे एकपेंच पायाजिसकेमरोड़नेसे वह घोड़ानीचेकोउतरनेलगाउससमयउसेथो
ड़ी दानवीनगईथी वहउसकेउतरनेसे प्रसन्नहुवा औरजाना किअबप्राण मेरेबचेंगे औरइसका

सच
५८
56

की किसीनगर अथवावलीमेंउतरहै निदानवहथोड़ा आधीरातको धरतीपरउतरा फीरोज़शा
हबडतख्तरखाथा घोड़ेसेबेरोत उतरपड़ाक्योंकि उसने दिनभर नौरोजके तमाशेदेखनेमेंऊ
छभोजन नकियाथासो उतरनेही उसकोइच्छाहुईकि इसजगहका हालमालूम करूं कि
कैसीहै फिरउसमालूमहुआकि वहकिसी विशालमहलकीछतहै जिसके चहुंओरको
मुंडेरे दिव्यसंगमरमरकीबनीहैं तोवह उसछतके चहुंओरखमकरमार्गउतरनेकाढूंढ
नेलगाएक ओरकोउसने एकसीढ़ी भीतरकोपाई जिसके किवाड़का एकपट खुलाहुवाथा
औरएकबंदथावहांवह शोचनेलगाकिईश्वरजाने अथियारेमें किसीबैरीसेभेटहोवाकिसीमित्र
सेफिरशोचाकिमैंयहांकिसीकोदुःखदेने नहींआयायदिकोईमुझे बिनाशस्त्रकेदेखेगामे
रेमारनेकी इच्छानकरेगाइतनाशोचकरवह धीरे २ किवाड़खोलकरदेखेपांवों नीचेउतरातो
एकबड़ेदालानमेंपहुंचापहिलेशाहज़ादा वहांकानराखकरसुननेलगाकि वहांके रहनेवा
लोंका हालमालूमकरेपरंतुसिवाय खुर्राटोंकेशब्दके उसकुछसुनाईनदियाफिरहालमा
लूमकरे परंतुसिवाय खुर्राटोंकेशब्दके उसकुछसुनाईनदियाफिर वहकईपग आगे बढ़ाउ
सने दीपकके प्रकाशमें देखाकिहबशी औरनौकरकमरोंमें सोरहेहैं उनकोदेखकरवह स
मझाकियह खोजी किसीमलकाके मंदिरकेरक्षकहैं औरवास्तवमेंवहां एकबादशाहकीपुत्री

रहतीथी औरउसके सोनिकास्थानउसदालानकेपासथा औरवहां उजियालेमेंक्यादेखाकि उस
केद्वारेपरएकमहीनरेशमकापरदालटकाहै वहउठके औरआगेबढ़के उसपरदेकेपासगया
येसादेखपड़ाकि खोजियोंको उसकेपावका आहट मालूमनहुवा औरउसीप्रकार सोतेर
है फिरउसपरदेको उठाकरभीतरगया तोवहांमहाबड़ादालान पायाजिसमेंबहुतसी स्त्रियां
औरलौंडियां अपनी अपनी शय्यापरपड़ीसो रहीहैं फिरजब आगेबढ़ातोक्यादेखाकि एकजा
ऊ महास्वच्छछपरखटपर शाहजादीसोतीहै शाहजादा उसकेरूपछबि अनूपकोदेख
करमोहितहोगया औरशोचनेलगा यदियह सुन्दरीमुझपर प्रसन्ननहो जायतो अपनेको यम
मानकरइसकेपाससेकहीन जाऊंगा यदिइससुन्दरीकी प्रीतिमें मेरेप्राणभीजावेंतोशोचन
हो फिरवहउसकेपासगया औरआंचल जोमृगनैनीके दिव्यचंद्रमुखपरपड़ीथी धीरेसे उठा
कर उसकोनैनभरदेखनेलगा इतनेमें वहजागपड़ी औरएक परपुरुषको अपनीशय्याकेपासजो
अत्यंतरूपवान औरशाहीवस्त्रपहिनेहुयेहै देखतेहीभयभीतहोगई औरअत्यंतविस्मितहोक
रचुपहोगई फीरोज़शाहने अतिनम्रतापूर्वक विनयकी आपमुझकोदेखकरभयनकीजिये मैं
ईरानदेशका शाहजादाहूं प्रभातकोमें अपनेपिताकेपास नौरोज़के तमाशेमेंथा औरइससम
येमें परदेशमेंहूं जिसमें प्राणकाभयहै जोतुम्हारीकृपामुझपरनहोतोनिश्चयहै किमैं माराजाऊं

सव
५०
57

गा आशा है कि कृपा करके मेरी दशा पर दया कर सब उपाधियों से मेरी रक्षा करो वह सुंदरी जिसे ।
फीरोज़ शाह ने अपना हाल कहा था बंगाल देश की शाहज़ादी थी और उसको कई बाहें ने उ
स्से छोटी थी और उस विशाल मंदिर को बादशाह ने सुखे उसी के लिये बनवाया था निदान उ
सने फीरोज़ शाह का वृत्तांत सुनकर कहा है शाहज़ादे तुम धीर्य रक्खो तुम्हें किसी प्रकार का
दुःख न होगा जिस तरह तुम अपने देश में रहते थे उसी तरह यहां भी रहोगे मैं तुम्हारी का स
हायता करूंगी तुमको इतनी सामर्थ्य होगा कि औरों के सहायक होगे तुमको केवल मेरे।
ही भवन में रहो अधिकार न होगा किंतु संपूर्ण विशाल देश में होगा फीरोज शाह ने उसकी बहु
त सी प्रशंसा की और उसका गुणानुवाद कर अपना मस्तक धरती पर रख देने लगा सो शाहज़ादी ने
ऐसा तो करने न दिया और तुम्हें राजधानी को छोड़े हुये कितना काल व्यतीत हुआ और किस उपा
य या मंत्र के बल से तुम मेरे मंदिर में पहुंचे और सकों आकर मेरे रत्नकों से बचकर यहां तक तुम
आये जान पड़ता है कि तुम सुखे हो अब रात्रि है और इस भवन के संपूर्ण नौकर और दासियां अ
चेत सो रहे हैं जो ईश्वर चाहे प्रभात होने ही दासियों को आज्ञा दूंगी कि तुम्हें अलग मकान में
जाकर रक्खें और वहां संपूर्ण वस्तु तुम्हारे लिये तय्यार करें जिससे तुम भोजन कर विश्राम करो
मैं इससे समय तुम्हारा वृत्तांत सुनूंगी अभी वह भली भांति वर्तान कर चुके थे कि इतने में मंदिर की

संसऐ दासियांजाग उठीं फीरोजशाहको शाहजादीके सम्मुख खड़ादेख अत्यंतआश्चर्यमेंहुईं
औरमनमें कहनेलगीं कि यह मनुष्य कौंकर रक्षकोंके पहिरेसे फांदकर यहां आया किसीकोख
बरनहुई औरफीरोजशाहको एकमकानमेंलेगईं औरउसके आरामकरनेकेलिये नानाप्रकारकी
बस्तुरक्खीं औरदिव्यशय्याबिछादी और रसोईमें जाकर शीघ्रभोजन पकाया अभीफीरोजशाह।
नेहाथ पांवन धोयेथे कि नाना प्रकारके भोजनवहां तय्यारहोगये उसनेरुचिपूर्वकभोजनकिया।
तदनंतर उसशय्यापरलेटा याबंगाल देशकी शाहजादीभी फीरोजशाहके रूप अनूपकोदेखक
रमोहितहोगई थोड़ीदेरमें वहसबदासियां फीरोजशाहके पाससेउठकरशाहजादीकेपास।
आई औरभोजनकरनेकाहाल उससेकहसुनाया उनमेंसे कोईदासीशाहजादीको बहुतमुंहल
गीथी उसने शाहजादीकेरूपकी बहुतसी प्रशंसाकर कहायदिऐसे सुंदर औरनवकिशोरसेतु।
म्हारा विवाहहोतातोक्या अच्छीबातहै शाहजादी इसबातकोसुनमनमें अतिप्रसन्नहुई प्रगटमें
कहनेलगीचुपरहो क्या मतलबको अपनीजगहपरजाकरसोरहो औरमुझेभी सोनेदोयहकह
करवहसोरही शाहजादी प्रभातको उठतेहीबहुकालपर्यंतदर्पनमें अपनामुखदेख सृंगार।
करतीरही उसनेअपने दिव्यभुजंगी लटोंमेंमोतीपिरोकर अतिशोभायमानहीरे औरमाणिक्योंकी
माला अपनेगलेमेंडाली औरबहुमूल्य बाजूबंद अपनीभुजामें पहिन औररत्नमईपटका क

सच
५८
58

मरमें बांधा और बहुत भारी रेशमी वस्त्र जो हिंदुस्तान में केवल शाहजादी के लिये बनता था पहि
नाकि दान दिव्य वस्त्र भूषणादि से उसका रूप महा सुंदर कामदेव की स्त्री के समान होगया। जब व
ह अपना शृंगार कर चुकी तो एक लौंडी के द्वारा शाहजादे को कहला भेजा कि तुम यदि अभि
को इच्छा न करते हो तो मैं आप ही तुम्हारे पास आती हूं उधर फीरोज शाह ने भी जगकर और वस्त्र
पहिनकर दासियों से पूछा कि शाहजादी अभी जगी है वा नहीं मुझे बतलाओ कि मैं उनके
पास जाना चाहता हूं दासियों ने कहा आप श्रम न कीजिये वह आप ही आती होंगी फिर शा
हजादी शाहजादे ने कहा मैंने रात्रि को आकर तुम्हारी निद्रा में विघ्न किया सो मेरा अपराध
क्षमा कीजिये उसने कहा मुझे इस बात से कुछ रंज नहीं किंतु तुम्हारा दर्शन करके मैं बहु
त प्रसन्न हुई अब कहो कि क्योंकर अपने देश से यहां आये और रात्रि को किस भांति मेरे म
हिर तक पहुंचे कि सी को सामर्थ्य नहीं कि मेरी आज्ञा बिना मुझ तक पहुंचे मुझे तुम्हारे हा
ल के सुनने की अति लालसा है फीरोज शाह इस भांति विस्तार पूर्वक अपना हाल कहने लगा
कि कल मैं नौरोज के उत्सव में था सब कारीगर और शिल्पी अनेक भांति की वस्तु लेकर मेरे
पिता की सभा में जो पारस का बादशाह है उपस्थित थे सो एक कारीगर हिंदुस्तान का वासी
एक कल का घोड़ा बनाकर लाया और मेरे पिता से कहने लगा कि यह घोड़ा केवल कल से उ

इतना है सो बादशाह ने उसका उतना देखकर इच्छा की कि जिस मोल का हो लेले इसलिये हिंदी।
से पूछा इस घोड़े का क्या मोल है उसने कहा कि इस घोड़े को एक बात पर देता हूं कि आप मेरा।
विवाह अपनी पुत्री से करें सभासद इस बात को सुनकर उसकी निर्बुद्धिता और ढिठाई पर ब
हुत हँसे और मुझे भी उसकी इस इच्छा से बहुत अचंभा हुआ और बादशाह को उस घोड़े की अधिक
लालसा पाकर समझा कि ऐसा न हो जो बादशाह हिंदी की इच्छा स्वीकार कर ले इसलिये इ
स विषय में मैंने बादशाह को बहुत समझाया कि इस घोड़े के कल और पुरजों को इस हिंदी के।
सिवाय कोई नहीं जानता जब तक और आदमी न जानें तब तक यह घोड़ा कुछ काम का नहीं।
हिंदी ने कहा ऐसा नहीं है किंतु जो मनुष्य चाहे उस पर सवार होकर सैर कर ले उस समय बा
दशाह ने मुझसे कहा तू ही चढ़कर इसका हाल मालूम कर सो बादशाह की आज्ञानुसार कल
मालूम करने के बिना उसी पेंच को घुमाया जिससे घोड़ा बहुत ऊँचे आकाश की ओर उड़ा वह
कल मैंने उसके कारीगर से सीखी थी बहु घोड़ा इतना ऊँचे उठा कि पृथ्वी मुझे दिखाई न देती।
थी जब आकाश से जाकर मिला तो उस समय मैं अत्यंत भयमान हुआ और इच्छा की किसी भां
ति घोड़ा नीचे को उतरे तो उस कील को उलटा फेरने लगा परंतु कुछ लाभ न हुआ ऊपर को हो च
ला जाता था निदान बहुत ढूंढकर दूसरी कील को मरोड़ा सो उसके मरोड़ने से बहुत घोड़ा नीचे उ

नरनेलगा इतनेमें रातहोगईमें बहुतभयभीतथाकिनजानिये यहचोरमुझेकहां उजोरे संयोगसेव
ह तुम्हारे भवनकोछतपरलेउतरावहां एकसीढ़ी देखी जिसकेकिवाड़का एकपटखुलाहुवा
था औरएककंदमें उससीढ़ीसेधीरे २ नीचेको आयावहांमैने फिलमिलाता प्रकाशदेखा औरस
बखोजियोंको सोतेहुयेपाया अपनेसामनेके मकानमें बहुतउजियालादेखाजिसकेदरवाजेप
रेरेशमीपरदालटकरहाथा यद्यपिमुझेवहांबहुतभयहुवाकिकोई खोजो जगकरमुझकोदेख
तोनिस्संदेहमुझकोमारडालेगा तथापि आगेबढ़ा औरसमझाकि उसस्थानपरअवश्यकोईशा।
हज़ादीसोतीहोगीफिरतोसब आपकोमालूमहै औरजो आपनेऐसेसमयमुझपरकृपाकी उसका
सहस्रजिह्वासेधन्यवादनहीं करसकता अबमैं मनवचसेतुम्हारासेवकहूं औरमनकेवि
शेष औरकोई वस्तुमेरेपासभेंटदेनेकोनहींहैपरन्तुकामनायहहै किवहभीमेरे अधिकार
मेंनहींउसभी तुम्हारीप्रीतिने आकर्षणकरलियाहै अबजोकुछमुझे आज्ञाहोउसेकरूंशा
हज़ादीयहप्रीतिकीवार्तासुनप्रसन्नहुई इकबारगीउत्तरदिया तुमने अपनाअति विचि
त्रवृत्तांत सुनाया औरमुझेप्रसन्नकिया अबतुमबताओकितुमबहुधाइसघोड़ेपरसैरक
रतेहोगे संयोगसे आजमेरे यहांभी आनिकले इससेतुम्हारेवचनपर विश्वासकरनाऔर अपने
मनकोतुमसेलगानाहुयाहै औरईरानदेशतुम्हारीजन्मभूमिहैतोमैं वहांजानेकीअवश्यता

लसा हो गो फीरोज़शाह ने हर एक प्रश्न का उत्तर यथार्थ देकर अपनी ओर से उसे थी खे दिया इतने में
एक दासी ने आकर कहा कि भोजन तय्यार है शाहज़ादी फीरोज़शाह का हाथ पकड़ कर ले गई और
रउसको ले गया और आप भी उसके सन्मुख बैठी यद्यपि शाहज़ादी के भोजन का समय न था परंतु
यह विचार कर कि रात्रि को फीरोज़शाह ने भली भांति भोजन नहीं किया होगा आप भी उसके मन
रखने को भोजन करने लगी दासियों ने अति स्वच्छ पात्रों में अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन परसे
जब वह खाने लगे तो उसी समय सब बांदियां जो महा रूपवान थी मिष्ट स्वरों से गान करने लगी
और नाना भांति के दिव्य बाजे बजाने लगी और शाहज़ादी अत्यंत प्रीति से फीरोज़शाह को भी
जन कराती और परस्पर के हाव भाव से दोनों का हृदय काम रूपी अग्नि से दहकता जब भोजन
से निश्चिन्त हुये तो शाहज़ादी उसे पकड़ के और कामरे में ले गई जिसमें अति शोभायमान स्व
नहली और रुपहली वस्त्र की थी और उस कमरे की छत अति विचित्र चित्रकारियों थी और उसकी संपूर्ण सामग्री सुनहली
और रत्नजटित थी वह दोनों एक दिव्य दालान में जाकर बैठे जिसके सन्मुख महा सुंदर
एक वाटिका थी जिसमें अनेक भांति के वृक्षों के फूलों की लपट से मनुष्यों का मन लोभता और उस
में अनेक भांति के पक्षी मीठी २ वाणी से बोला करते
२ परम मिष्ट फलों के बने हुये फल लगे हुये जिन पर भांति २ के पक्षी मीठी २ वाणी से बोला करते
थे फीरोजशाह उस वाटिका और दिव्य सामग्री को देख महा प्रसन्न हुआ और कहने लगा मैं जान

सच
८१
60

ताथाकिजो२ भवनऔरबागहमारेपारसदेशमेंहैवैसे पृथ्वीमंडलमेंनहोंगे परंतुअवस्तुचितहुवा।
किवहांके सबमंदिरइसके साम्हनेतुच्छहैं शाहजादीने कहायहभवन जिसकी तुमप्रशंसा।
करतेहोऐसाउत्तमनहीं यदिमेरे पिताकाभवन जोयहांकाबादशाहहै देखोगेतोनिसंदेह प्र
सन्नहोगेतुममेरे पितासे अवश्यभेंटकरोवह तुम्हाराभलीभांतिसत्कारकरेगा फीरोजशाह
कोइसबातकेसुननेसेराजमंदिरकेदेखने कीअभिलाषाहुई और शाहजादीकायहविचार
थाकिजबउसकापिताऐसेरूपवान औरसुशीलशाहजादेको देखेगातोअति प्रसन्नहोगा
औरमुझकोउसेविवाहदेगा औरफीरोजशाह कईदिन उसकेपासरहा उसकामनवहांऐसाल
गाकि औरजगह परजानेकाउद्योगनकरताथा इसहेतु वहांकेबादशाहकेनिकट नगया
एकदिनफिरशाहजादीने अपनेपिताके निकटजानेकोरुचिदिलाई परंतुफीरोजशाहने उच्च
सोचविचारउससे कहाकिहेसुंदरी जोउच्चतमकहतीहो मुझेस्वीकारहै परंतुबादशाहीसा
मग्रीविनाऐसेचक्रवर्तीबादशाहकेपासजानाउचितनहीं यद्यपिवहमेरेकुलकानामसुनप्रस
न्नहोगा परंतुइसदशामेंमैं उसकोदृष्टिसेतुच्छहोजाऊंगा शाहजादीनेकहायहांसबकुछ
उपस्थितहै इसजगह बहुतसेव्यापारीतुम्हारेदेश औरजातिकेहैंतुमउनसे सबसामग्रीजोउ
च्चतमको आवश्यकहो मोललो औरएक अलगमंदिरमेंरहकरअपनी पदवी समानसाम।

उसे मन लगा के तुम्हें जो कि तुम्हें अवश्य एक अभिलाषा यह है कि तुम्हारे

ग्री स्वीकार करो उसने कहा बहुत अच्छा अब एक अभिलाषा यह है कि मुझे अंदेशा यह है कि ऐसा न हो

पने पिता का हाल मालूम नहीं कि उसकी मेरे वियोग में क्या दशा हुई मुझे अंदेशा यह है कि ऐसा न हो

जो शोच के कारण उसका देहान्त न हो जावे इसलिये आपकी कृपा से आशा है यदि प्रसन्नता पूर्वक

मुझे आज्ञा दो तो मैं जाकर अपने पिता से भेंट करूं और उनको धीर्य दूं और विवाह का जो तुम्हें भी

स्वीकार है अपने पिता से वर्णन करके उनसे आज्ञा लेआऊं शाहजादी ने यह बचन सुन पसंद के

या परन्तु उसी समय यह विचार पैदा हुआ यदि यह शाहजादा फिर अपने देश से न आवे और अ

पने माता पिता की प्रीति में बंधा रह जावे और मुझे अपने विरह में तड़पता छोड़ दे तो मैं उसका का

रस क्या करूंगी इससे उत्तम है कि थोड़े दिन और यहां इसे रखना चाहिये कदाचित यहां रहने से मुझ से

प्रीति भाविक हो और अपने देश में जाने का उद्योग न करे निदान यह विचार मन में ठान फीरोजशा

ह से कहा कि थोड़े दिन और ठहर जाइये उसने स्वीकार किया फिर बहुत काल पर्यन्त फीरोजशाह

शाहजादी के साथ रह कर नाना भांति के तमाशे देखता और मन मानता आनंद उड़ाता रहा औ

र प्रति दिन बन में जाकर अहेर खेलता और शाहजादी उसके मन बहलाने को नक़ल दिखाती

और संध्या को उसी दिव्य मंदिर में जिसमें नाना भांति के अति सुंदर बिछौने और उत्तम २ तोक

ये रक्खे हुए थे आनंद भोगते और हर एक प्रकार की वार्ता करते बहुत था फीरोजशाह पारस देश

केकोयों और सेनाका वर्णन करता जब दो महीने बीते उसका मन शाहज़ादी के प्रेम और अनूनरूपी
बातों में ऐसा फँसा कि उसका वियोग क्षणमात्र उसको न सहा गया बहुत काल पश्चात् उसने अपने पि
ताको स्मरण कर शाहज़ादी से जाने के लिये आज्ञा मांगी और कहा यदि तुमको मेरे वचन पर।
निश्चय न होतो तुम भी मेरे साथ चलो वह इस बात से प्रसन्न हुई दूसरे दिन रात को जब सारे मंदि
र के नौकर और दासियां सोगई तब फीरोज़शाह शाहज़ादी को कन्धे पर ले गया और उसको अ
पने आगे घोड़े पर चढ़ा लिया और घोड़े का मुख फ़ारस देश की ओर कर चलने के पेंच को घुमाया
सो वह घड़ी भर में शीराज़ में जो फ़ारस की राजधानी है जा पहुंचा फीरोज़शाह ने तो अपने मंदिर
में उतरा और न अपने पिता से मिलने को गया किंतु एक ग्राम में जो शीराज़ के पास था घोड़े से नीचे
उतरा और शाहज़ादी को एक बादशाही महल में जो उस गांव में बना हुआ था उतारा और शाहज़ा
दी से कहा अब मैं जाकर अपने पिता से तुम्हारे आने का समाचार देकर तुम्हारे पास चला आता हूं फ़ि
र उस मंदिर के प्रबंधक को आज्ञा दी जो २ वस्तु शाहज़ादी के लिये अवश्य हो सब ग्रहण कर और एक
घोड़ा मेरे लिये ला और दिव्य पात्रों में स्वादिष्ट पाक लाकर शाहज़ादी को भोजन करा मैं अभी शी
राज़ से लौटकर आता हूं यह आज्ञा प्रबंधक को दे घोड़े पर सवार हुआ मार्ग में प्रजा से उसे देख
कर प्रसन्न होते क्योंकि वहां के रहने वाले उसके लिये ईश्वर से प्रार्थना करते कि ईश्वर से प्रार्थना

करते किईश्वरउसे कुशल सर्वकयहांपर पहुंचावे जबशाहज़ादा अपनेपिताकेपासगयातो बादशाहकोउसके देखनेसे अतिप्रसन्नताहुई औरमहाप्रीतिसेकंठमेंलगाया औरउसनेहर्षसे बहुतरोया औरहत्तांत पूछा उसनेसंपूर्णहत्तांत वर्णनकिया तदनंतर बंगालदेशकी शाहज़ादीकाहालवर्णनकरकहाकिमैं उसे अपने साथविवाह करनेकी प्रतिज्ञाकरकेउसके घोड़ेपरलायाहूं अमुकगांवके मंदिरमें उसकोछोड़कर पहिले आपआयाकि आपकी आज्ञापाकरउसेसन्मानपूर्वकले आऊं इतनाकहफीरोज़शाह अपनेपिताकेचरणोंपरगिरपड़ा औरउसकोलाने औरउसकेसाथविवाह करनेकी आज्ञामांगीबादशाहने उसको अपने चरणोंसे उठाकरफिरअपने हृदयसेलगाया औरकहाहे पुत्रमैं तुम्हें केवल विवाहकरनेकी आज्ञानहींदेताकिन्तुमुझे इच्छाहै किमैंहीजा करउसकासत्कारकरूं औरफिर उसकोसवारकरके अपने मंदिरमेंलाऊं औरआज सबरीतेंविवाहकी करूं फिरबादशाहने आज्ञादीकिमेरीसवारी शीघ्रतय्यारहो औ कैरं॥ रसब मनुष्यखुशी औरविवाहके बाजे बजें औरआज्ञादी उसहिंदीको जोकैदमेंहै मेरे साम्हने लाओ सोउसहिंदीकोतत्काल बादशाहके निकटलेगये बादशाहने उससेकहा यद्यपि तू मेरेपुत्रको मारडालनेके योग्यथा परंतु ईश्वरकाधन्यबादकरकिमेरा पुत्रकुशलसे सर्वकमिला इसलिये मैंने अबतकेछोड़दिया इसीसमय अपनाघोड़ालेकर यहांसेचलाजा फिरकभी मेरे

सव
६२
62

पासनआइयो उसहिंदिदीने बंदीखाने सेनिकलनेकी रचनाथा कि फीरोजशाह उसघोड़े परएक।
शाहज़ादी महारूपवान अपनेसाथलायाहै औरउसे अलकगावेंमें बादशाहके महलमें।
छोड़कर आप अकेलायहांआया बादशाहने वहांजानेकी तयारीकीहै किउसगावेंमें
जाकरशाहज़ादीकोले आयेसो हिंदीबादशाहके जानेके पहिलेउसगांवकोचला और।
उसभवनके प्रबंधकसेजाकरकहा कि बादशाह औरफीरोज़शाहने मुझे बंगालेकी शा
हज़ादीकेलेजानेकेलिये आज्ञादीहै किउसकलके घोड़ेपर उसकोसवारकरकेले जाऊं
अब वहदोनों शाहज़ादीकी बाटदेखतेहैं क्योंकि बादशाहको इच्छाहै कि इसघोड़ेके चरि
त्रकोसबशीराज़के वासीभीदेखें प्रबंधक उसके कैदकेछुटनेकाहाल तोसुनचुकाथा उस
कीबातकोनिश्चय समझा औरउसे शाहज़ादीकेपासले जाकरकहा कि बादशाहने तुम्हारे ले
जानेकेलिये इसमनुष्यकोभेजाहै वहप्रसन्नहोकरजानेकेलिये तयारहुई वहहिंदी पहिले आ
पकलकेघोड़े परसवारहुआफिर शाहज़ादीको अपने आगे बैठाकर कलको मरोड़ासो वह
घोड़ा आकाशकी ओरउड़ाओर उसीक्षणबादशाह भीबड़ी समथामसे उसगांवकी ओरचलाउ
स समय फ़ीरोज़शाहको यहइच्छाहुई कि बादशाहके पहुंचनेके पहिले शाहज़ादीकोबाद
शाहके पहुंचनेकासमाचारदे कि वहचलनेकी तयारीकरे जबवहां पहुंचातोप्रबंधकसे शा

महाउत्पन्नहुवा जिसकावर्णन नहींहोसक्का औरबादशाह।
हज़ादीकेलेजानेकाहालसुन महाउत्पन्नहुवा जिसकावर्णन नहींहोसक्का औरबादशाह
इज़ादीकेलेजानेकाहालसुनु अतिव्याकुलहोय अपनेमहलकोलौटगये परंतुफीरोज़शाह ब
औरसभासद् समाचार कोसुनुअतिव्याकुलहोय अपनेमहलकोलौटगये परंतुफीरोज़शाहके
अकालपर्यंतमूर्छितरहा जबआपसंभालीतो उसीसमय प्रबंधकने आकर फीरोजशाहके
चरणपरशिरधरहुवा औरकहा ईससेवकसे यहअपराधअज्ञानतामें हुवा अबजो चाहियेदं
उदीजिये फीरोजशाहने उससेकहा उठतुमसे मेरीहीगफ़लतमेंसे अपराधहुवा अबबिलाव
मतकरशीघ्र मेरेलिये योगियोंके वस्त्रलाउसमंदिरकेपास एकयोगीऔर उसकेकईचेलेर
हतेथे सोरक्षकने जाकरकहाकि बादशाह एकरईससे अतिप्रसन्नहुवाहै औरउसकी इच्छा
है किउसे पकड़ करमारडालेसो वहऐसी दशामें अप्रतिष्ठाके कारणभ्रष्टकरहनेलगाय
दिसुके योगियों केवस्त्रमिलें तोमैं भेषबदल इसनगरसे निकल जाऊंसो उसयोगीने अपनेआ
वस्त्रउसदिये वहलेकर फीरोजशाहकेपास लायाफीरोजशाह उनवस्त्रोंकोपहिन औरसत्र
पने भेषकोबदल औरउनमें २ रत्नोंकासंदूकचाराह खर्चकेलियेलेकररात्रिको अंधियारे।
में वहांसे बनकोचला औरमनमें यहठानाकि जबतकबंगालेकी शाहज़ादीसुफेनमिलेगी
तबतक इधर कोमुखनकरूंगा अबयहांसे उसहिंदीकाहाल वर्णनकरतेहैंकिउसकलके।
बोईनेदी अथवातीन घड़ीके समयमें उनकोकश्मीरकी राजधानीमें पहुंचादिया उससमयउ

स हिंदी को भूख लगी और सम झा कि शाहज़ादी भी भूखी होगी फिर वह सघन शीतल छायादा
र वृक्षों के नीचे जहां निर्मल जल का दिव्य सरोवर था उस घोड़े पर से उतरा और भोजन को को
ई वस्तु के ढूंढने के लिये एक ओर को गया उसके जाने के उपरांत शाहज़ादी महा कुरूप मनु
ष्य के आधिकार में अपने को देखकर अति चिंतित भई और उससे छुटकारा किसी भांति मेरा पति
व्रतधर्म बचे और कहां जाकर उससे छिपे परंतु बहुत देर से भोजन किया था और मार्ग के श्र
म से निर्बलता के कारण इतनी सामर्थ्य अपने देह में न पाई कि वहां से उठकर ईश्वर से प्रार्थना
करती थी कि मर जाऊं निदान वह इन्हीं विचारों में थी कि इतने में हिंदी ने आकर उसको भो
जन कराया भोजन के उपरांत उस दुष्ट ने उससे भोग की इच्छा की जब उस पतिव्रता ने इन्कार कि
या तब वह दुष्ट उसे सताने लगा और उसे मारने लगा वह बेचारी लाचार दुःख के विलाप से और रोने
लगी उसके रोने से उस बन में कोलाहल मच गया संयोगवश मनुष्यों को बड़े सवारों के समूह ने
आकर उन दोनों को घेर लिया वह सवार कश्मीर के बादशाह के साथ थे जो अहेर खेलकर लौ
टती समय शाहज़ादी के भाग्य से उधर को हो निकले और रोने का शब्द सुनकर वहां दौड़ आये
निदान कश्मीर के बादशाह ने हिंदी से पूछा तू कौन है और तेरा क्या नाम है और यह स्त्री तेरी
कौन है और इसके आंसू क्यों नहीं थमते हैं उस हिंदी ने कड़ा होके कहा यह मेरी जोरू है किसी

कोकासामर्थ्यहै किहमदोनोंमेंबोलसके शाहजादीनेकश्मीरकेबादशाहसेकहाईश्वरनेतु
मकोकेवल मेरेधर्मकेबचानेकेलियेलायाहै यहझूठाहै इसकीबातकोनिश्चयनकरना ई
श्वरतुझे इसकीस्त्रीनबनावे यहजादूगरतुझे पारसके शाहजादेके घरसे चुराकरलाइके
घोड़ेपरबैठाकरले भागाहै बादशाहको उसशाहजादीके रोनेपरदया आई औरउसके रू
प अनूपचेहरेको देख आश्चर्यमेंहुआ औरउसकेबचनपरविश्वासकरसवारोंको आ
ज्ञादीकि इसदुष्टको ऐसेकुकर्मकेफलदे बधकरडालो सोउसीसमय सवारोंने उसहिंदी
काशिरतनसे काटडाला अबवहशाहजादी एकसेछूटदूसरेकेफंदेमेंपड़ी फिरकश्मीर
काबादशाह उसकोएकघोड़ेपरसवारकर अपनेनगरमेंलेगया औरमहाविशालभवनउ
सकेरहनेकेलिये नियतकिया औरबहुतसीदासदासियां उसकीसेवाकोदीं औरउसको ब
हुतधैर्यदेकरकहाहे सुंदरी तुमथकी मालूमहोतीहो इसलिये विश्राम करो इतना कहबा
दशाहचलागया शाहजादीऐसे अयोग्य औरदुष्ट मनुष्यकी संगतिसे अतिचिंताकोप्राप्तहु
ईथी आरामपाकरसोरही जबजागीतो शोचनेलगी किकश्मीरकेबादशाहने प्रयोजनबिना
मुझे उसदुष्टसे छुड़ाया औरमेरा भलीभांति सत्कारकिया दोतीनदिनके उपरांतबादशाहनेउ
ससे बिवाहकी इच्छाकी औरतय्यारी करनेकीआज्ञादी औरचारों औरनौबतें बजनेलगीं औरस

सच
८५
64

त्वनत भरमें यह समाचार फैल गया कि हरमसरा में अपनी शक्ति भर तमाशा देखकर खुशी करे जब बा
दशाह को यह इच्छा हुई कि बंगाले की शाहज़ादी को जाकर यह कहे कि वह शृंगार करके मेरे
आगमन की बाट देखे इतने में शाहज़ादी की आंख बाजों के शब्द से खुल गई उसने दासियों से
सबब बाजे के बजने का पूछा उन्होंने कहा तुम्हारा बिबाह बादशाह के साथ होगा यह सब उस
की समझ है इतना सुनते ही शाहज़ादी मूर्छा खाकर गिर पड़ी बांदियों ने यह दशा देखकर बा
दशाह कश्मीर को यह हाल कह सुनाया यह सुनते ही वह उसका औषधि आदि यत्न करने ल
गा पर शाहज़ादी उसी दशा में बड़ी रही जब चैतन्य हुई तो उसने मरने की इच्छा की क्योंकि उसको
पारस के शाहज़ादे के सिवाय किसी से विवाह करने की इच्छा न थी तदनंतर उसने आप को
विक्षिप्त बनाया और बादशाह को हज़ारों गालियां देने लगी और खा खा कर मारने लगी बादशा
ह उसकी यह दशा देखकर अत्यन्त चिंतित हुवा और उसके पास से उठकर बाहर आया और
दासियों को आज्ञा दी इसका घड़ी २ का हाल सुनाया करो और यह समझा कि इस सुंदरी को को
ई भूत बाधा हुई है इसलिये आज्ञा दी कि वैद्य और फूंकने और झाड़ने वाले आवें और इस का
शाहज़ादी को हज़ार यत्न और मंत्र इत्यादि से चंगा करें पहिले नगर के वैद्यों ने उसको औषधि की पि
र सब सयानों ने यत्न आदिक किये और नाना प्रकार के अभिमंत्रित जल पिलाये और धूनी दीय

रवदहऊक्छ अच्छी न हुई किंतु संध्याको औरभी उसकी बुरीदशा होगई जिससे बादशाह रात्रिभ
रबेचैन रहा दूसरे दिन प्रभातकोभी वहीदशा उसकोरहीतो बादशाहनेयह इश्तिहारदिया
जोकोई शाहज़ादीको अच्छाकरेगातो उसेबहुतसा पारितोषिक देंगा फिर वैद्योंने परस्परस
मतकर बादशाहसे बिनय की यदियह रोग शाहज़ादीको नवीन उपजा होगा तो निस्संदेह
साध्यहै यदि प्राचीन है तो असाध्य होगा यहबात बिनादेखे रोगीके सम्भव विदित नहीं होसकी
बादशाहने ख़ोजियोंको आज्ञादीकि इनवैद्योंमेसे एक अथवा दोकोले जाकर शाहज़ादीको
नाड़ी दिखाओ वहलेजानेलगे शाहज़ादी यहबात सुनकर मनमें बिचारने लगी यदिवैद्य
मेरी नाड़ी देखेंगेतो उनको मालूम होगाकि मुझे कुछ रोग नहीं है मकरसे विक्षिप्तबनग
ई है तो मेरी बनावटका हाल खुलजावेगा अब ऐसाहाल अपना बनाना चाहिये कि कोई
मेरे पासन आसके जोकोई उसकिपासजातातो वहउसको काटने और मारने दौड़ती इसभ
यसे कोई उसके पासन जासका फिर उनसब वैद्योंने यहदशादेख नाड़ीके देखे बिना अने
क भांतिकी औषधि और क्वाथ विक्षिप्तताको हटानेवाले उसको पीनेको दये शाहज़ादी
उन्हें तत्काल फेंकजाती फिरवह मनुष्योंके दिखानेकेलिये विक्षिप्त बनजाती और एकांत मे
अच्छी होजाती निदान बादशाहने देश २ के वैद्य शाहज़ादीकेलिये बुलाये परंतु किसीसेब

सच
५५
65

अछीन हुई और फीरोज़शाह योगियों के वस्त्र पहिनः अपना भेष बदल बंगाल देश के नगर २ फि
रता फिरता और उसके सब अंग सुख गये इसी भांति घूमता २ एक नगर में पहुंचा जो हिंदुस्ता
न से संबंधित था उसने वहां के निवासियों से सुना कि कश्मीर में एक बंगाल देश की शाहज़ादी है
जिससे वहां का बादशाह विवाह करना चाहता है वह ऐसी विक्षिप्त हो गई है कि किसी भांति
अछी नहीं होती यह सुनते ही फीरोज़शाह समझ गया कि वही शाहज़ादी है जिसको मैं ढूंढ़
ता यहां तक पहुंचा तो वहां से सिधारा और बहुत सा मार्ग काट उगाकर कश्मीर में जा पहुंचा औ
र एक सराय में जा उतरा और दिन भर शाहज़ादी का हाल सुना किया और उसको यह भी इच्छा हुई कि
उस हिंदी दुष्ट का हाल जो शाहज़ादी को ले भागा था मालूम करे परन्तु उसका हाल तो न किसी ने उदना।
सुनाया फिर न हु समझ गया कि शाहज़ादी ने अपने बचाव के लिये यह उपाय किया होगा निदान
फीरोज़शाह ने योगियों के वस्त्र उतार संगोपांग वैद्यों के वस्त्र जैसा कि उस देश में प्रचार था पहिन
लिये और दूसरे दिन वह वैद्यों की भांति गलियों में फिरने लगा एक दिन बादशाह के दरवाज़े पर
जाकर उसके रक्षक से कहा कि मैं शाहज़ादी के अच्छा करने के लिये बहुत दूर से आया हूं उस
ने हंसके उत्तर दिया अपना मुख तो देख तुका शाहज़ादी को अच्छा करनेहारे हज़ारों बुद्धिमान वैद्यों
से तो कुछ बन न आया तुझसे क्या हो सकेगा उसने कहा मैं कुछ बादशाह से नहीं मांगता केवल

भाग्यकीपरीक्षाके लिये यहांआयाहूं औरबहुतसीलाभकारी औषधियोंमें जानताहूं रत्नकको।
उसपरदया आई औरउसकोठहराकरबादशाह सेजोशाहज़ादीके अच्छेहोनेसेनिराशहोचुका
थाजाकरविनतीकी कि एकवैद्य बहुतदूरसेआयाहै औरउसकेपास बहुतअच्छीदवाइयाँहैं इ
तनासुनतेही बादशाहने आज्ञादीउसको मेरेपासलाओ सोवहबादशाहकेपासगया बा
दशाहनेसबवृत्तान्तउससेवर्णन करकेकहावह अपनेपासकिसीको आननहींदेतीपरन्तुतु
मउसेदूरसेदेखकरके औषधिऐसीदोजिससे वह अच्छीहोइतनाकह उसएकमकानमेंजो
शाहज़ादीकेभवनमेंलगाहुवाथालेगया फीरोज़शाहने उसमकानमेंजाकरदेखाकिशाहज़ा
दीअपनी अभाग्यताकेगीतगारहीहै जिसकेसुननेसेमनुष्यकामनफटजाताहै फीरोज़शाह
नेउसेदेखकरपहिचाना औरध्यानधरकरदेखाकि उसनेअपनेकोविक्षिप्तबनायाहुवाहैवास्त
वमेंउसे कोईभीरोगनहींनदंनतर शाहज़ादेने उसमकानसे आकेकहाकि मैंनेउसेभलीभांति
देखाउसकारोग साध्यहै यदि आज्ञाहोतोमैं उसेअच्छाकरसकूं औरहालमालूमकरनेके उ
परान्त यत्नउसका अतिसुगमहोजावेगाक्योंकि फीरोज़शाहभलीभांति जानताथाकिमेरा
शाहसुनतेही अपनीबनाईहुई विक्षिप्तताकोछोड़देगी औरजोमैं करूंगा वहीकरेगी बाद
शाहने आज्ञादीकि उसमकानकाकिवाड़खोलदो औरउसेवैद्यकोउसकेपासजानेदोजब शा

ह्जादाउसमकानमेंगयातोशाहज़ादी उसीवैद्यकेभेषमेंदेखक्रोधकरने औरगालियांदेनेलगी
पंरंतुवह्नहटा औरउसकेपासचलागया निदाननम्रतापूर्वककथीऐसे उससे कहामैं वैद्यनहीं
हूंमैं फीरोज़शाह पारसदेशका शाहज़ादाहूंतेरेलियेमैंने अपनीयहदशाबनाई यद्यपि
शाहज़ादेने अपनाभेषबदला औरलबीदाकी रक्षाकीऊईथी परवहशाह औरउसरूपसेपहिचान
करसावधानहोगई औरअतिप्रसन्नहोकरउसकामुखदेखनेलगी जैसेकिकोई मनुष्यकि।
सीवस्तुकी इच्छाकरेऔरउसे बहुकालकेउपरांत अतिपरिश्रमकर पावेफिरफीरोजशाहनेउ
ससेसबहालसच्चा औरअपनाहत्तांतभी संक्षेपमें वर्णनकिया किनगर २ देशोंदेशफिरनेका य
होठिकानालगा अबप्रसन्नहोमैंतुझे यहांसेनिकाललेजाऊंगा शाहज़ादीनेयहवृत्तांतसु
नकहाकिमैंने अपनेधर्मकेबचानेकेलिये यहउपायकिया उसकासबहालसुनफीरोज़
शाहनेकहातुझेमालूमहै किउसकलकेघोड़ेको बादशाहने कहांरक्खाहै उसनेकहामैं
नहीं जानतीफीरोज़शाहनेविचाराकि बादशाहने उसघोड़ेकोरत्ना पूर्वक रक्खाहोगा फिर
उसेधीर्य्यदेकर कहा अबतुझे यहउचितहै कितूअच्छीबनजाकि बादशाह जानेकितू मे
रीदवासेअच्छीऊई इसकारणजोकुछकहूंगावहमानेगा उसनेकहाअच्छा दूसरेदिनशाहज़ा
दी वस्त्रबदल अपनीसुधिमें आई औरसबसेभलीभांति यथोचितव्यवहारकरनेलगी बादशा

अनंतप्रसन्नहुआ और वैद्यकी बहुतसी प्रशंसा की फीरोजशाहने जो
ह उसकोभलीचंगी देख आईप्रयोजन उस
कारकहा शाहजादीको कारकहा यह बंगालदेशकी शाहजादीको कारकहा आईप्रयोजन उस
हुउचितथा कहकरकहा यह बंगालदेशकी शाहजादीको कारकहा
काइसके सुननेसे यहथाकिबादशाह कलके घोड़ेका वर्णनकरे परंतुबादशाह उसके
अभ्यंतरकोकुछनसमझा निदानउसने शाहज़ादीके आगमनका हालजैसा फीरोजशा
हने शाहज़ादीसेसुनाथाकहा औरयहभीकहा घोड़ाकाएककाजोडनकेपासरक्खा हु
वाथामैने उसे रक्षापूर्वकरख दियाहै शाहजादेने यहसबसुनकरकहा इससमालूम
होताहैकियह शाहज़ादी उसजाहकेघोड़ेपरचढ़केआईथी उतरतीसमयउसकोइस
गयऔरसुनीनहींदोगई इसीकारणउसेप्रेतबाधाहुई यद्यपिमैं उसजाहके बलस्वरूप
मैंलायापरंतुअभी वहभलीभांति अच्छीनहींहुई यदितुम्हारी यहइच्छाहैकिवह आ
च्छीहोजाय औरफिरकभी उसेप्रेतबाधानहोतो आपसबनगरनिवासियोंकोबड़े मैदा
नमें इकट्ठाकीजिये औरउस जाहकेघोड़ेकोभी वहां मंगवाइयेकिमैंशाहज़ादीको उ
सपरचढ़ाकर उसेभूतीहूंकिकदापि बीमारनहोपरंतु उसदिन शाहज़ादीकोउत्तम२ व
स्त्रपहिनने उचितहैं बादशाहने अपनेसंपूर्णसभासदोंको आज्ञादीकिजिसबातको य
हवैद्य आज्ञाकरे उसेतुरंतप्रतिपालनकरो निदानदूसरेदिन कलकेघोड़ेकोउठालाके

पकबड़े मैदानेमेंजोराजभवनके आगेथारक्वा औरडौंडीपिटवाई किनगरकेसबलोगअमुक
मैदानमें एकट्ठेहों औरसेनाभीघेराबान्धकरखड़ीहो जबनगरवासीएकट्ठेहुये औरबादशा
हका कटकभी वहां आयातोंवेपने आज्ञादीकिकिसीको उसघोड़ेकेपासनजानेदेना औ
रबादशाहभी अपनेडेरेमेंविराजमानहो औरउसके बहुऔरअपने सम्पूर्णसभासदखड़े
हों औरबंगालदेशकीशाहज़ादी अपनीलौंडियोंसमेत उसघोड़ेपरसवारहोजबउसके क
हनेके अनुसारसबहोचुकाऔरदासियोंने शाहज़ादीको घोड़ेपरसवारकरघोड़ेकी बाग
पकड़केखड़ीहुईतो उसवेपने घोड़के औरपासबहुतसी अंगीठियां अग्निकी औरकुछधो।
खादेनेकोपढनेलगातब अंगीठियोंसेऐसाधुवांनिकलाकि वहशाहज़ादी घोड़ेसमेत छि
पगईतो वहऔसरपाकरउसकेपीछे चलाऔर चलनेके पेचकोसोचुमाया सोवहघोड़ा त
त्काल आकाशकीओरउड़गतबफीरोजशाहने बेड़शाहसेकहाहे कशमीरकेबादशाह त
ने शाहज़ादीसेबिवाहकी इच्छाकीथी अबतूजानकि यहशाहज़ादी पारसकेशाहज़ादे
कामालहै जोअपनेसाथलिये जाताहै बादशाह कशमीरऔरउसके सभासद यहबातसुन
अति आश्चर्यमेंहुयेसोउसदिन फीरोज़शाहकई घड़ीके उपरान्त बंगालेकीशाहज़ादीको।
लेकर पारसदेशमें पहुंचाऔरबादशाहके पासगया बादशाह अपनेपुत्रको देखकर अ

न्ति प्रसन्न हुवा और कई दिन के पश्चात् उनका बिवाह बड़ी धूमधाम से करदिया विवाह के उपा
रांत बादशाह ने बंगाल के बादशाह को यह संदेशा भेजा कि तुम्हारी बेटी के साथ मैं ने अपने ब
ड़े बेटे का बिवाह करदिया और तुम्हारी बेटी यहां अतिप्रसन्न है बंगाल के बादशाह को इस
बात से अतिहर्ष प्राप्त हुवा और उस का उत्तर यथोचित लिख अनेक द्रव्य और रत्नादिक भेजे ॥
शाहरजादी यह कथा सुनाकर दूसरी रात्रि को अहमद और परीबानू की कथा कहने लगी ॥
अहमद शाहज़ादा और बानू परी का वृत्तांत स्वामी सर्वकाल में एक तेजवान हिंदुस्तान के बा
दशाह के तीन पुत्र थे बड़े का नाम हुसेन दूसरे का नाम अली तीसरे का नाम अहमद और नूरु
न्निहार उसके भाई की पुत्री थी सो बादशाह ने अपने भाई के मरने के उपरांत अपनी भतीजी को
अपने मंदिर में लाकर रक्खा था और बड़े २ विद्वानों और गुणवानों से उसे पढ़ाया था वह अ
पनी हमजोलियों और निज कुटुंब और बादशाह के परिवार से अधिक रूपवान और बुद्धिमान
थी और बाल्यावस्था से उन सबों के शाहज़ादों के साथ खेलती बादशाह ने बिचारा कि नरु
न्निहार जब उसको मात्रमदु अवस्था में इसका विवाह किसी दूसरे शाहज़ादे के साथ करूंगा परंतु जब उसको मालूम हुआ
कि तीनों मेरे पुत्र उस पर मोहित हैं और प्रत्येक को यह लालसा है कि बिवाह उसका मेरे
साथ होतो वह अतिचिंता करने लगा और सोचा कि यदि इसका विवाह उन तीनों में से जिस

केसाथ करूंगा तो दूसरे अप्रसन्न होंगे और मैं किसी की अप्रसन्नता नहीं चाहता यदि किसी दू
सरे शाहज़ादे को ब्याह दें तो सबके सब अप्रसन्न होंगे न जानिये कि उसके मोह में मग्न होकर
अपने प्राण त्याग दें अथवा किसी दूसरे देश में चले जावें यह बात उपाय उठाये बिना न रहेगी
ऐसा कोई उपाय करना चाहिये जिसके साथ उसका विवाह हो दूसरे दो भाई अप्रसन्न न हों।
वे इसी भांति वह बादशाह बहुकाल पर्यंत सोचता रहा अंत को उसने एक उपाय विचार।
लिया और तीनों अपने पुत्रों को बुलाकर कहा कि मेरे विचार में तुम तीनों बराबर हो मैं एक
को तुम में से बड़ा समझकर नूरुलनिहार का विवाह नहीं कर सकता और यह मौन होता हूं स
का कि उसका विवाह तुम तीनों के साथ करूं परंतु एक बात मैंने विचारी है उसका कारण।
किसी ना किसी कि साथ उसका विवाह हो जावेगा और कोई तुम में से अप्रसन्न न होगा औ
र तुम तीनों की प्रीति स्थिर रहेगी और न तुम में से कोई आपस में डाह और बैर न करेगा वह य
ह है तुम तीनों पृथक् २ यात्रा करो और एक २ विचित्र वस्तु मेरे लिये लाओ जिसकी वस्तु अ
द्भुत होगी उसके साथ नूरुलनिहार का विवाह करूंगा और जो कुछ तुम को उस वस्तु के ला
ने के लिये द्रव्य आवश्यक हो मेरे कोष से ले जाओ इतना सुन तीनों ने इस बात को स्वीकार कि
या और हर एक अपने मन में प्रसन्न हुआ कि सब भाइयों में मैं ही अच्छी वस्तु लाकर नूरुल नि

हारकेसाथविवाह करेगा तदनंतरबादशाहने सबकोउनकीइच्छानुसारद्रव्यदेकर आज्ञादी
कि अवशीघ्रयात्राकीतय्यारीकरकेसिधारोसोवह ब्योपारीयोंकाभेषधरकरवस्त्र औरदासों
को साथलेकरसाथही अपनेपिताकीराजधानीसेचले औरकई मंजिलोंतकइकट्ठेगये फिर
वहएकऐसेस्थानपरपहुंचेजहांदेशोंकेमार्गभिन्न २ थेवहांएकसरायमें उतरेउन्होंनेपरस्प
रमिलभोजनकिया औरयहप्रतिज्ञाकीकि अवनकहमतीनोंभाइयोंकोएकहीराहथीकल
हमभिन्न २ होकरभिन्न २ देशोंमेंजावेंगेउचितहै किहमतीनोंभाईएकवर्षसे अधिकयात्रा
नकरें औरइतनीअवधिकेउपरांत इससरायमें आवें औरयहांपरस्परभेंटकरपिताकेनिकट
जावें औरजोएकभाईपहुंचे वहयहांबैठकरदोनोंभाइयोंके आगमनकीबाटदेखेनिदानदू
सरेदिनयहतीनोंभाई परस्परकंठलगाविदाहो घोड़ोंपर सवारहोभिन्न २ देशोंमेंगयेहुसेन
शाहज़ादाजो सबसेबड़ाथासदाविस्नगढ़की प्रशंसासुनता और उसकेदेखनेकीअभिला
षारखतासोवह उसनगरकीओरयात्रियोंकेसमूहकेसाथ जहाज़परचढ़ातीनमास प
र्य्यंतजलकीयात्राकेउपरांतपृथ्वीपरबहुतसेनगर औरदेशलांघकरविस्नगढ़में जाप
हुंचा औरएकसरायमें उतराजहांविशेषकरब्योपारीउतराकरतेथेवहांकेनिवासियोंसेमा
लूमहुआकिवहांएकबाज़ारहै जहांअतिविचित्रऔरउत्तमवस्तुबिकतीहैं दूसरेदिन शाहज़ादा

उसीबाजारमेंगया उसकीलंबान चौड़ान औरपरिपाटीकोदेख आश्चर्यमेंहुवा उससेंहजारों दुकानें
अतिस्वच्छतासेंएकबनींथीं औरप्रत्येकदुकानकेसाम्हने सायबानगरमीके बचावकेलिये इ
स शोभा औरउपायसेंलगाहुवाथा किदुकानोंपरतनकभीअंधियारानहोता अतिवस्त्रकी दु
कानें भिन्न २ थीं औरभांतिके दिव्यवस्त्रथानवस्त्राहुटेदारदुकानोंपरक्रमसे रक्खेहुयेथे द
त औरसुंदरवृक्षोंके विचित्रचित्रइसउत्तमतासे उनकपड़ोंपरकटेहुयेथे किउनके देखने
से यहज्ञातहोताथाकिवास्तवमेंहो यहहैं औरवृक्षहैं इसकेविशेषरेशमीऔर कम
रवाब चिकनसाटन औरअतलस आदिईरान औरचीनकेबनेहुये असंख्यथानथे कहींतो
शीशे औरचीनी आदिकेदिव्यपात्रदुकानोंपर भरेहुये औरहजारों प्रकारके सुंदर काली
नआदिक बिकतेथे जिनकेदेखनेसे वह अचम्भेमेंहुवाफिरवहांसे उन दुकानोंपर आयाजि
नमें स्वर्नरूपेकेपात्रभाजन औररत्न हीरे आदिकयेजिनकीचमकदमकसेदुकानें प्र
काशितहोरहीथीं हुसैनएकहीबाजारमें इतना असबाब औररत्नदेखमनमें समझाईश्व
रजानेनगरभरमें कितनामाल औरअसबाबहोगा औरवहांके वालोंगोकोदेखअधिक आ
श्चर्यमेंहुवाकिसबकेसबद्रव्यकीअधिकतासे दिव्य आभूषणोंसे अलंकृतहोकर फिरतेहैं
औरउनके दासभीस्वर्णकेकड़े औरकंठे और अनेकभूषण पहिनेरहतेथे औरप्रत्येकबाज़ा

रमेंहरएकभांतिके फूलोंकेढेरकेढेर औरवहांकेवासीदिव्यपुष्पोंकीमाला कोईतोहाथोंमें।
लिये औरकोईबद्धियांकंठोंसेंबांधे नगरमेंघूमरहेहैं औरहाटबाटपरदूकानदारफूलोंकेगुलद।
स्तेचुनरखते इससुगंधसेबाजारभरसुगंधितहोरहाथाइसेनबड़ेकालपर्यंतफिराफिरथकक
रकहीं बैठनेकीइच्छाकीसोएकदूकानदारने अपनीबुद्धिसेजानकर प्रीतिपूर्वक उसकोअपनी
दूकानपरबैठायाएकघटीके उपरांतएकदहालकोदेखाकिएकगालीचा चारगजकाचौकोण
लियेहुये कहताफिरताहै कियहगलीचा तीसहजार अशरफ़ीकोबिकताहै जिसकामनचा
हेमोललेशाहज़ादेने यहबातसुनआश्चर्यकिया औरउसदहालकोबुलाया औरगलीचेको
देखकरकहाऐसागलीचाएकरुपयेकोबिकताहै इसमेंकौनऐसागुणहै जिसकोतीसह।
जारअशरफ़ीमांगताहै उसनेशाहज़ादेको ब्योपारीसमझकरकहाभाईक्यातुमइसगलीचेका
बहुतमोलजानतेहो इसकेस्वामीनेमुझसेकहाहै किमैंचालीसहजारअशरफ़ीसेकमनबेचूंगा
शाहज़ादेनेकहाइसमें कोईबड़ा गुणहोगा जिसका इतनाबड़ामोलहै उसनेकहाइसमें ब
ड़ागुणहै जिससमयतुम इसपरबैठकरकिसीस्थानपरदूरहो अथवानिकटजानेकीइच्छाक।
रोतोतत्कालहीतुम उसीस्थानपरपहुंचजाओगे शाहज़ादायहसुनसमझाकिइससे संसारमें
कोईभीविचित्रवस्तुनहोगी ईश्वरकाधनबादहै किइसयात्राकाजोमुझेप्रयोजनथावह मास

सच
८.
७८

हुवानिश्चयहैकि इसकोबादशाहदेखे अत्यंतप्रसन्नहोगा और पसंदकारिगानदनंतर शाहजादे
नेमोललेनेकी इच्छासे दलालसेकहा यदिइसकायही गुणहैतो इतनेमोलपरमैंहीलेलेताहूं
दलालनेकहाजोतुम्है मेरेवाक्यपरसंदेहहोतो इसकोपरीक्षाकरलीजिये औरइसीपरबैठ
करसरायमेंचलिये वहींपरमोलइसकादेदीजियेगा निदानदलालनेउसदूकानके पीछे।
गालीचेकोबिछा शाहजादेकोउस परबैठाआपभीउसपरबैठजानेकी इच्छाकीवह गली
चातत्कालही देवताकेविमानके सदृशवायुमें उड़ा औरशीघ्रही सरायमें पहुंचगये शाहजा
देनेचालीसहजारअशरफियां उसगलीचेकामोल औरबीस अशरफियां उसदलालको इ
नाममेंदी और महाप्रसन्नहुवा औरनिश्चयहुवाकि अपनेपिताकेनिकटयहगलीचाले।
जानेसे अवश्यमुझे नूरुलनिहारव्याही जावेगी औरऐसी अद्भुत औरअसद्वस्तु मेरेभा
इयोंको चाहेवहसंसारभरमें फिरेंप्राप्तनहोगीतदनंतरयह सोचाकि उसगलीचे परबै।
ठकरउसीसरायमेंजहांसेवहतीनोंभाई अलगहुयेथे जाकरउतरे औरसबभाइयोंके आने
कीबाटदेखे परंतुसाथही यह भीसोचाकिमुझे उसजगह बहुतठहरनाहोगा औरअकेलाय
बराऊंगाइससे उत्तमहैकि यहांकेनिवासियों औरबादशाहकोभलीभांति देखलूं औरइसन
गरकोभलीभांतिसैरकरूंइसलियेकईमहीनेतक वहांरहा वहांकेबादशाहकायह नियमथा

किप्रतिसप्ताहमेंएकदिनपरदेसीब्योपारियोंकीव्यवस्था सुननेऔरन्यायचुकानेकेलियेबिरा
जताऊसैनउसकोइसकारणभलीभांति देखतापरंतुऊसैनको अपने प्रगटकरनेकी इच्छान
थी औरशाहजादाकिअत्यंतरूपवान अति चतुरथाअतितीव्रबुद्धिथाइसकारणविस्तुगहका
बादशाह औरब्योपारियोंसे उससे अधिकप्रीतिकरता औरसबऊथा उससेहिंदुस्तानकेराज्यके
हजांत सकुता फिरशाहजादा अतिविख्यातमंदिरोंकेदेखनेकोगया सोगयासोएकदेवा
लयकोअतिसुंदर औरपीतल कावनाऊवाथा देखाजोभीतरसे ९ गजचौकोणथा और
उसके मध्यमेंएकदेवता मनुष्यकेडीलके समानइसभांतिरखवाऊवाथा किचऊंओरकेदे
खनेवालेउसे अपनी औरदेखताऊवासमझते औरउसके नेत्रबहुमूल्यरत्नोंसेजड़ेथे त
दनंतरदूसरेगांवमेंदेवालदेखाकि वहभी अतिविचित्रपहिलेके समानबनाऊवाथा उस
जगह एकमैदान अनुमान आधेबीघेके चौड़ाथाजिसमें अतिसुगंधितपुष्पआदिके हृद
अतिसुंदरतासे लगेथे औरउसपुष्पवाटिकाकेचऊंओरदीवारें अनुमान तीनगजके ऊंची
थी जिससे कोईपशुउसके भीतरनजासके औरउसमैदानके मध्यमें एकचबूतरा एकमनुष्य
को ऊंचाईके अनुमान पत्थरकाबनाऊवाथा औरउसके पत्थरोंको इसकारीगरीसेजमायाथा
किवह एकही पत्थरकामालूमहोताथा औरउसचबूतरेपरएकदेवालयपचासगजकाऊंचा

थाकिचारोंओरकोसोंसे दीखतालेबानउसकानीसगजकाथा चौड़ाई उसकीबीस गजकीथी
वह निपट संगमरमरकाबनाहुवाथा ओरउसका पत्थरऐसासाफ ओरचिकनाथा किशीशेकेस
दृश था उसमेंमुखदेखीखताथा मंडपउसका अतिविचित्रबनाहुवाथा उसमेंदवताओंके सैकडों।
चित्रखचेहुयेथे प्रति दिनभोरओरसंध्याकोब्राह्मणोंकोस्त्री पुरुष ओरबालकआते ओर।
नानाभांतिसे पूजाकरकुतूहल करतेकोईतो मगनहोकरनाचता ओरकोई प्रसन्नतासेगा।
तावजाता ओरस्थान २ परइंद्रकेतुल्यसभालगाकरनाचतमाशे दोखते ओरदूर २ सेलाखों
मनुष्यभेंटदेनेकोएकत्रहोते ओरनानाभांतिको अमोलखवस्त्र ओरबहुतसाद्रव्य उसदेवालय
में चढ़ाते शाहजादेने वहांकावार्षिक मेलाभलीभांति देखामेलेकेदिन सब नगरोंके प्रधान
ओरमुख्य २ नगरनिवासी उसदेवालयमें पूजनकरपरिक्रमा करतेविशेष एकमहाविशाल
देवालयमेंबड़े २ पंडितषट्शास्त्री चारपांच महीनोंको राहसेवहांआकर यथाविधवंदना
करतेनिदान हिंदुस्तान भरकेवासी पूजनके निमित्त इतनेइकट्ठेहोते जिसकोदेख शाहजा
दा आश्चर्यमेंहुवाउस मैदानके एकओरचालीसखम्भोंपरनोखिराउ एकबड़ाविशालखंद
रमवनथाजिसमें बादशाह ओरउसके मंत्री ओरप्रधान परदेशियों केन्यायकेलियेबेठाकर
तेवह मंदिरभीतरसे बहुतसीदिव्यसामग्रीसे अलंकृततथा ओरबाहरसेनाना प्रकारके देशोंओ

र विशेषकरपशुपक्षीके महासुंदरचित्रोंसेविचित्रथा वहचित्र औरचित्रकारियां इससुंद
रता औरकारीगरीसेखिचीथींकिसचमुचकी मालूमहोतीदूसरे देखानेवावार महाविकराल
पशुपक्षी जैसेकिसिंह आदिककाचित्रदेखकरडरजाते औरइसमेदानकेतीन औरकाष्ठके अ
तिविचित्रमंदिरउसीभांति भीतर बाहरसेसजेहुये इसकारीगरोंसे बनेहुयेथे किजिसओरको
चाहो घुमानेसे मनुष्योंसमेतफिरते सोमनुष्य तमाशादेखनेकेलिये काष्ठकेमंदिरोंको घुमाते
मोर प्रतिस्थानपर अनुमान एकहज़ारके मस्तहाथी जोसुनहली झूलों औररुपहलीहो
दोंसे सुशोभितथे छहियड़ेउनगर गवयेगाते औरनकालनकलेंकरते औरहाथियोंके पा
टेंनानाभांतिकेरंगोंमेंचित्रितथेहुसेन शाहजादाहाथियोंकातमाशादेख अधिकआश्चर्य
मेंहुवा अर्थातएकबहुत बड़ाहाथी चारतिपाइयोंपर जिनकेनीचे पहियेलगेथेउनपर चा
रों चरणायेखड़ाहुवा सूंडसेसंबोसुरीबजाता जिसकेसुननेसेसबलोगवाह२ करते औरउ
सहाथीको जिधरचाहतेखींचकरलेजाते औरदूसराहाथी पहिलेसेकुछछोटा एकबड़े
काष्ठके शहतीरपरकेएकसिरे परखड़ाथा औरवहशहतीरएक ऊंचीतिपाई परजो अनुमा
न आठगजकेथीरक्खाथा औरउसशहतीरके दूसरेसिरेपरलोहाहाथीके बोझकेसमान।
या कभीवहहाथीजोरकरनेकेसबबधरतीपरआलगता औरकदापिवह उठकरऊपरकोआ

सव
७२
72

जाता वह गज उस अवस्था में हावभाव कर अपना नाच दिखाता और संग उसे तानके साथ गाता
और हाथी भी उसके साथ गान करते और मस्त उसको इसी दशामें इधर उधर लिये फिरते यह
हाथियोंका तमाशा बादशाहके सन्मुख होता अज़सेन शाहज़ादा ऐसे अनूठे तमाशोंके देख
नेकेलिये एक वर्ष पर्यंत बिसनगढ़में रहा तदनंतर एक दिन सरायके पिछवाड़े जिसमें
वह रहता था जाकर उस गालीचेको बिछाया और उसपर अपने सेवक समेत जिसको व
ह अपने साथ लाया था बैठा और मनमें उसी सरायमें पहुंचनेकी इच्छा की जिसमें उसके भा
इयोंने पहुंचनेको अंगीकार किया था इतना विचारते ही वह तत्काल वहां पहुंच गया और व्यो
पारीयोंके भेषमें वहां ठहर अपने भाइयोंके आनेकी बाट देखने लगा और शाहज़ादा अली
जो अज़सेन से छोटा था एक यात्रियोंके समूहके साथ ईरान देशको सिधारा चार महीनेके
उपरांत शीराज़में जो फ़ारस की राजधानी थी पहुंचा और उन व्योपारीयोंके साथ जिनसे प्रीत
प्रीति हो गई थी एक सरायमें उतरा और अपनेको रत्न पारखी प्रसिद्ध कर उनके साथ प्रीति से
वे कर रहने लगा जब व्योपारीयोंने लेन देनका उद्योग किया तब शाहज़ादा भी अपने वस्त्र ब
दल वहांके बड़े बज़ाज़ेमें गया वह बाज़ार सब एका था दूकानें सब मंडपाकार गोल स्तम्भों
पर बनी हुई थीं अज़सेन उस बाज़ारकी सैर कर अचंभा करने लगा कि एक बाज़ारमें तो कड़ोड़ो रु

पयोंकी वस्तु है सो नगर भरके इसकी का गिनती की जाँचे दल्लाल प्रतिवस्तुके न मूल्य ने दिखोताफि
रते थे उनमें से एक दल्लाल आध गज को लंबी और पौन गज की चौड़ी दिव्य हाथीदांत की हरबी
न हाथों में लिये हुए एक कहता फिरता है कि इस हरबीन का मोल तीस हज़ार अशरफ़ी हैं शाह
ज़ादा अली यह सुन विचारा कि यह दल्लाल विक्षिप्त होगा तदनंतर शाहज़ादे ने एक दूकान
दार के समीप जाकर सब ब्योरा यह दल्लाल विक्षिप्त है कि तीस हज़ार अशरफ़ी एक हाथीदांत की
हरबीन का मोल कहता फिरता है भला कोई भी दीवाना होगा जो इस छोटी वस्तु को इतनी अशर्फ़ी पर मोल
लेगा उस दूकानदार ने कहा भाई यह दल्लाल और दल्लालों से अधिक चतुर और विश्वासित
है इसके द्वारा हज़ारों रुपयों का व्यवहार होता है कल तक चंगा भला था आज का हाल मालूम
नहीं कि विक्षिप्त हो गया हो यदि वह इस हरबीन को तीस हज़ार अशरफ़ी कहता है तो वह
अवश्य इसी मोल की होगी अभी इसका हाल मालूम हुआ जाता है तनक यहाँ आने दो तब
नक आप मेरी दूकान पर ठहरिये सो वह वहां ठहर गया इतने में वह दल्लाल वहां पहुंचा उसको
पास ने उसे निकट बुलाकर कहा इस हरबीन का गुण कह कि बजय या मत्तुष्य इसका मोल सुनक
र आश्चर्य करते हैं विशेष इसने तुके विक्षिप्त बनाया है उसने उत्तर दिया आप इसका मोल सुन
कर मुझे विक्षिप्त बनाते हैं जब मैं इसका गुण वर्णन करूंगा तो उसी समय इसको मोल ले लीजि

सच
७३
73

येगा आप ही नहीं कि इन नगर के और आदमी भी इसकी कीमत सुनकर हंसते हैं फिर उसने व
ह दूरबीन अली शाहज़ादे को दिखाकर कहा इसके देखने का प्रकार मैं तुमको बताता हूं
इसके दोनों सिरेः पर शीशे के दो टुकड़े लगे हुये हैं तुम अपनी दृष्टि को उन दोनों शीशों के सा
म्हने करो यद्यपि वह वस्तु हज़ार कोस पर क्यों न हो पर वह इस भांति तुमको दिखाई देगी जै
से तुम्हारे निकट रक्खी हुई है शाहज़ादे ने कहा मुझे तेरे कहने का विश्वास नहीं जब तक।
कि मैं इस दूरबीन की परीक्षा न ले लूं दलाल ने दूरबीन शाहज़ादे के हाथ में दी और देखने
की विधि उसको बताकर कहा जिसको तुम देखना चाहो अपने मन में उसका संकल्प कर देखो
अली ने अपने पिता के देखने के विचार से दूरबीन को अपनी दृष्टि के साम्हने किया तो उस।
ने अपने पिता को कुशलपूर्वक तख्त पर बैठे देखा फिर अपनी प्रिया नूरुन्निहार को भी देखा
कि यह भी अपनी शय्या पर कुशलपूर्वक बैठी है और उसकी दासियां उसको शय्या के चहुं ओ
र हाथ बांधे खड़ी हैं इस अपूर्व दूरबीन को देख बहुत अचंभे में हुवा और मन में कहने लगा य
दि दश वर्ष पर्यंत देशों देश घूमता और ढूंढता तो इस विचित्र दूरबीन सी कोई वस्तु प्राप्त न हो
ती तदनंतर उस दलाल से कहा बालक मैं जैसा इसका गुण कहा था वैसा हमने उसे पाया चालीस
हजार अशरफी मुझसे लो दलाल ने कहा भाई इसके स्वामी ने प्रण किया है कि चालीस हज़ार

अशरफि मैं कम न लूंगा शाहजादेने दलालको महाजान सरायमें लेजाकर चालीस हजार अ
शरफीयां उसको गिनादीं और दूरबीनको जो वास्तवमें संसार दर्शाता था मोल लेकर अतिप्रस
न हुआ और समझा कि इस दूरबीनके कारणसे के अवश्य सूरत निहार मिलेगी तदनंतर व
ह पारस देशकी सैर करने लगा एक वर्षके अनुमान वहां रह कर यात्रियोंके साथ हिंदुस्ता।
नको सिधारा और कुशलसे सर्वक उसी सरायमें पहुंचा जहां हुसैन बेग ठहरा था और हुसैनके सा
थ रहने लगा तो एक शाहजादा जिसका नाम अहमद था अपने भाइयोंसे बिदा होकर स
मरकंदको और गया और वहां पहुंच कर एक सरायमें उतरा दूसरे दिन उस नगरके चौकमें
गया वहां उसने एक दलालको देखा वह सेब हाथमें लिये हुये कहता फिरता है यह सेब
मैं तीस सहस्र अशरफीको बिकता है अहमदने उसको निकट बुलाकर सच्चा सुफको यह
सेब दिखाकर इसका गुण कह दलालने वह सेब अहमदको देकर कहा आप इसको देखिये औ
र इसका इतना मोल सुनकर अचंभा न कीजिये इसके गुण सुनिये मनुष्य कितना ही रोगी हो
गया हो अथवा मृत्यु निकट पहुंचे इसके सूंघनेही तत्काल आरोग्य हो जावेगा मानो कदाचि।
उससे रोग न व्यापा था और सुंदर देहमें बल आजाता है फिर जन्मभर रोगी न होगा अहमदने कहा।
जो यह सत्य है तो मैं इसे इसी दाम पर मोल लेता हूं दलालने कहा भाई इस बातको यहांके सब।

सच
७५
74

वोपारीजानतेहैं एकबड़े वैद्यनेकईहटियां और औषधि संयुक्तकरबहुतनबोयोयदि श्रमकर।
केबनायाथा और औषधियोंकी प्राप्तिकेलिये बहुतसाधनव्ययकिया औरऐसेंकड़ेरोगियों
कोकेवलसूंघनेसेही अच्छाकियापरंतुवह अकस्मात कालवशहुवा औरइस सेबको।
आपसूंघनेनपाया मरनेके उपरांतकुछभी धनछोड़ा उसकेपरिवारमें बहुतसे असम
र्थ बालकहैं अबउसकीस्त्रीनेलाचारहोकरइससेबकोबेचनेके लिये निकालाहै दहाल।
कीबातेंसुनकरबहुतसेमनुष्यएकत्रहोगयेसंयोगवश उससमूह मेंसे एकमनुष्यने आ।
गेबढ़करकहा किमेरामित्र बहुकालसेरोगीहोगयाहै औरअबवह अपनेजीवनसेनि
राससेहैतुम चलकेतनकयहसेब उसेसुंघादोतोमैं तुम्हाराबड़ाउपकारमानूंगा औरजन्मभर
तुम्हारा यशगाऊंगा अहमदने यहवचनसुनकरदहालसेकहाजो वह रोगी इससेब।
केसूंघनेसे नीरोगहोजायगातो अभी चालीसहजारअशरफीदेताहूं उसनेकहा बहुत अ
च्छा आपइसकीपरीक्षालेलीजिये मैंनेतोइसकेद्वारा अनेकरोगियोंको नीरोगकिया।ते
दानवह रोगीउससेबके सुंघातेही नीरोगहोगया तदनंतर अहमदने चालीसहजार अशर
फियां उसकोगिनदीं औरवह सेबमोललिया औरइच्छाकीजो कोईयात्रीहिंदुस्तानके जा
नेवालेमिलें उनकेसाथ यहांसेचलूं औरजबतकनमिलें तबतक औरपास कीसैरकरूं

कितनीदिनोंके उपरांत अहमद यात्रियोंकेसाथ हिंदुस्तानकोचला औरकुछकालमें कुशल पूर्वक
उसीसरायमें जहांदोनोंभाईउतरतेथे जापहुंचा निदान तीनोंभाईपरस्परमेंटकर आनंद प्रसन्नहुये
औरईश्वरकाधन्यवाद कियाहुसेन शाहजादेनेजोसबसेबड़ाथा कहा अबहम अपनी २ यात्रा
काहाल औरअपनीवस्तुकाहालकहतेहैं औरउसका गुणभीवर्णनकरतेहैं मैंनेएकगालीचा
जिसपरबैठाहूं मोललियायद्यपि यहप्रकटमें कुछवस्तुनहीं परंतुइसमें बहुतबड़ागुणहैजब
कोईमनुष्य इसपरबैठकरकिसीदूरवानिकटदेशकेजानेकी इच्छाकरेतोउसीसमयवहांपहुं
चजावे मैंनेइसेचालीसहजार अशरफ़ीकोमोललियाथामैं इसपरबैठयहांचला आया अब
पांचमहीनेसेतुम्हारे आगमनकीबाटदेखताहूं जिसकामन चाहेपरीक्षालेलेतबहुसेनब
ड़ाशाहज़ादाकहचुकातो अलीकहनेलगाकिभाई सचहैतुम्हारीवस्तु अतिअपूर्वहै तदनंतर
उसनेहाथीदांतकीदूरबीनकोनिकालकरदिखाया औरकहामैंनेभी इसे इसीसरायमेंमोल
लिया इसकागुणयहहै किसैकड़ोंकोसोंकीवस्तुइसकेद्वारदिखाईदेतीहैं जैसाकिसाम्हनेर
क्खीहै जिसकामन चाहेपरीक्षालेलेमैं तुमको इसकीविधि बताताहूं हुसेनने उसदूरबीन
कोउससेलेकरजिसविधानसे उसनेउसे बतायाथा नूरुन्निहारकेदेखनेकीइच्छाकीइससे दोनों
भाईउसकी औरदेखरहेथेकिदेखेंवहक्याकहताहै अकस्मात उन्होंने उसकेमुखकावर्ण ब

सव
७५
75

दला पाया उसे चिंतायुक्त देखकर आश्चर्य में आये हुसेनने कहा कि हमतें निं ने जो इतना परिश्रम नू
रुलनिहार के लिये किया था सब हथा गया अब मैंने इसको देखा अमन रोगी मृत्यु के निकट पा
या उसके चर्ज और दासियां और रवाजे खड़े रो रहे हैं यदि तुम भी चाहो तो उसका अंतका दर्शन क
र लो शाहज़ादा अलीने भी देखा वह ही दशा पाई तदनन्तर वह हरबीन अहमद को दी तो उसने भी
उसे उसी दशा में देखा तब अपने भाइयों से कहा यद्यपि नूरुलनिहार पर हम सब मोहित हैं प
रंतु मैं उसे इसी समय नीरोग कर सक्ता हूं इतना कह उसने उसी सबको जेबसे निकाल कर उन
दोनों को दिखाया और कहा यह भी गलीचे और हरबीन के मोल से कम मोल का नहीं है अब
इसकी परीक्षा का यही समय है इसमें बड़ा यह गुण है जो मनुष्य चाहे कैसा ही रोगी हो इसके
सूंघने ही नीरोग हो जाता है अब तुम उसका गुण नूरुलनिहार के सूंघाने समय देख लेना प
रन्तु इसी समय वहां पहुंच जावें हुसेनने अहमद से कहा यह कुछ कठिन नहीं हम गलीचे पर
बैठकर तत्कालही नूरुलनिहार के समीप पहुंच सक्ते हैं अब विलंब मन करो मेरे साथ तुम दो
नों बैठ जाओ कि बात की बात में वहां पहुंच जावें और सेवकों को यहीं छोड़ो पीछे से वहां पहुं
च रहेंगे निदान वह तीनों उसी गलीचे पर बैठे और सबने पहुंचने की इच्छा की सो तत्कालही
वह नूरुलनिहार के समीप पहुंचगये सेवक उनको देखकर डरगये और कहने लगे कि यह तो

न मनुष्यकोंकरयहां खुस आयेपहिलेउन्होंने चाहाकिउनको मारकरानकालदें फिरयहिचा
नकर आश्चर्यमेंभये सबसेपहिले शाहजादा अहमदने आगे बढ़करवह औषधिमईसेवनू
रुल्निहारको सुंघाया थोड़ेकालके उपरांत उसने अपनेनेत्रखोलदिये और अपनामुखदेखकरउ
परफेरकरउनसबकोदेखा तदनंतर अपनीशय्यासे उठवस्त्रमांगे औरयहसमझो किसोकर अभी
उठीहूं इतनेमेंदासियोंने उससेकहायह तीनोंतेरेचचेरेभाई अभी आयेहैं औरअहमदने तुम्हेंको
ई वस्तुसुंघाकरअच्छाकियाहै वहउनकोदेखकरअति प्रसन्नभई औरअहमदकागुणमाना
औरतीनोंशाहजादेभीउसके आरोग्यहोनेसेप्रसन्नभये तदनंतरवहनूरुल्निहारसे विदाहो
करबादशाहके समीपगये उनकेपहुंचनेकेप्रथमसेवकसबवृत्तांतकहचुकेथेबादशा
हनेउनकेसबको प्रीतिपूर्वकेअपनेकंठसेलगाया औरनूरुल्निहारकोइन शाहजादोंके
द्वारानीरोगहोनेसे अतिआश्चर्यकियातदनंतर उन्होंने अपनी २ वस्तुकोबादशाहकोदिया
औरउनकेगुणवर्णनाकिये औरकहाइनतीनोंवस्तुओंकोदेखकरजोसबसेउत्तम औरविचि
त्रहो अपनेप्राणकेअनुसारउसकेलानेवालेको नूरुल्निहारसे विवाहकरदीजिये यहसु
नबादशाह अतिचिंताकरनेलगा औरमनमेंशोचायदिमैं नूरुल्निहारको अहमदको विवा
हदूंतो औरोंपर अन्यायहोगाजो अलीकेनिकटहरबीननहोतीतोनाकौंकरउसकेबीमारहोनेका

हालविदितहोता ऐसोप्रकार जोजैसेनकागाली चानहोता तोकिसप्रकारसे नूरुलनिहारकेसमी।
प पहुंचते औरउसको आरोग्यकरतेमेरेविचारमें तीनोंकोवसलतहै यदिएकवस्तनहोतीतोउ
सका अच्छाहोना असंभवितथा फिरभी इसकानिर्वाचन जवाभीवहो काठिनताहै परंतु अ
बचाहताहूंकि आजकोईहस्मायत्नविचारकर उसमेंजिसकोअधिपाऊं उसेनूरुल निहार
व्याहदूंइतनाशोचकर उनसे कहनेलगातुमतीनोंभाई घोड़ेपरसवारहो औरअपने साथय
नुषबाणलेकर अस्तुकमेदानमें घुड़दौड़केलियेजाओ औरमैंभी अपने सभासदोंसहित आ
ताहूं तुमतीनोंभाईमेरे साम्हनेएक २ तीरफेंको जिसकापारहूरजावेगा उसीकोनूरुलनिहार मि।
लेगीवहसबअपनेपिताकी आज्ञानुकूलउसीमैदानमेंगये औरबादशाहभीउन्हीं विचित्रवस्तु
ओंकोकोषमेंभिजवाकरवहांपहुंचा पहिलेहुसैनने जोसबसेबड़ाथा शरछोड़ा फिरअलीनेसोइ
सतीरउनकेदूरआगेगया इसकेउपरांत अहमदनेशरचलाया परंतुउसकातीरकिसीकोदृष्टनपड़ा
किवहकहांगिरानिदानसबने यहीविचाराकिवहशरयातो इतनादूरगयाकिकिसीकोदिखा
ईनहींदेता अथवाअहमदकेहाथमेंहीरहगया सोबादशाहनेइस बातकाअधिक विचार
नकरकेअलीकेसाथनूरुलनिहारका बिवाह ठहराया औरकुछदिनके उपरांतबड़ीधमधा
मसे विवाहकरदियापरंतुहुसैनशाहजादाउसदिनसे उससमाजमें संयुक्तनहुवाक्योंकिवह औ

र भाइयोंकी अपेक्षा तूफलनिहारको बहुतप्रीति रखताथा सोलज्जासे उसनेयोगियोंके सदृशगे
रुवे वस्त्रपहिने औरसंसारकामायामोहजो सदास्थिरनहीं रहतापरित्याग किया अहमदकोभीब
ड़ीडाह उपजी औरअत्यंतलज्जासे विवाहमें नगयापरंतुयोगीकाभेष धारणकिया औरसदैव अ
पने शरकोढूंढतारहताएकदिनवह अकेलाउसशरकेढूंढनेके लियेचला औरवहांसेदूथा
दाहिनेबांयेंदेखताहुवा आगेबढ़ा औरकई बड़े २ पर्वतोंकेशिखरढूंढनेलगातोउसेएकबड़े
टीलेपरपड़ाहुवापाया आश्चर्यमेंहोकर मनमेंविचारनेलगाकि इतनीदूरशरका आनाअसं
भवितहै औरउसशरकोदेखकर औरअचंभेमेंहुवा किपत्थर परचिपकाहुवाहै विचाराकि इ
समेंकोईभेद अवश्यहै फिरआगे बढ़करएककंदरामें जोउसीशिखर परथीगया औरथो।
ड़ी दूरजाकरएकलोहेका दरवाज़ा उसेदृष्टिपड़ा उसकेभीतरजाकर उसनेकुछबललगाया।
याजिसमें वहशरसहितचला औरसमझाकिवहां अधिकअंधियाराहोगा परंतु वहांदेखाउ
जियालाथा औरवहांसेपचास वासाठपगंपरमहासुंदर बिशालभवनथा जिसमेंउसनेका
देखाकिएकस्त्री अतिरूपवती शाहीसब्ज़बस्त्र आभूषणोंसे अलंकृत अपनी अनुचरि।
योंके मध्यमेंधीरे २ द्वारकी औरचली आतीहै शाहज़ादा उसेप्रणामकरनेलगा उसने आप
ही निकट आकरअत्यंत प्रीति औरमीठीवाणीसे आगतस्वागत औरशिष्टाचारकर कहाहै

सव ७८

७७

हमदऊशलसेतोहो शाहज़ादा अपनानामसुनआश्चर्यमेंआयाकि यहमृगनयनीजिससेमेरी
कभीभीभेंटनहीं मेरानामक्योंकरजानतीहै फिरउसके चरणकोछूकर कहाहे मृगनयनी मैं
तुम्हारेसत्कारकरनेसे गुणमानताहूं परंतु आश्चर्यमेंहूं कितुमने मेरानामक्योंकरजाना उ
सने कहा अबहम औरतुम चलके बारहदरीमें आनंदभोगें वहां पहुंचकरतुम्हारे प्रश्नका उ
त्तरदूंगी इतनाकहकर वहचंद्रमुखी शाहज़ादेको अपनेसाथलेकरबारहदरीमें गई शाहज़ा
दा वहां पहुंचकरउसको देखनेलगाजिसकेसुनहलेगोलमंडपाकारपरलाजवर्दसे चित्रका
रियांथीं औरनानाभांतिकीदिव्य सामग्रीसे अलंकृतदेख आश्चर्यमेंहो करकहा यहमकान
औरमकानोंसे किवासलवमेंतुम्हारेहैं तुच्छहैं जबउनकोदेखोगेतो अतिप्रसन्नहोगे फिरअहम
दकी अपने निकटबैठाकर कहनेलगीतुममुझकोनहीं जाननेपरंतुमैंतुमकोभलीभांति जा
नतीहूं अबमैं अपनेकुलकाहालकहतीहूं तुमनेपुस्तकोंमें पढ़ाहोगाकिधरती परकहींजि
न्नभीरहतेहैं मैं एकबड़े प्रतिष्ठितजिन्नकीपुत्रीहूं औरमेरानामपरीबानूहै अबतुम अपनेपि
ताकावृत्तांतजो बादशाहहैं मुझसेसुनो नूरुलनिहारतुम्हारीचचेरीबहिनहैं औरतुममनोनभा
ईहो औरप्रत्येककोयह इच्छाथीकि नूरुलनिहारसबकोमिले तुमतीनोंने अपनेपिताके विचा
रके अनुकूलबहुतदूरकीयात्राकी औरतुमसबोंकाप्रयोजनके निमित्तसमरकंदमेंजाकर आ

षपियोंको सेवजिसकाकारणमैंहुईलाये औरइसीभांतितुम्हारा बड़ाभाई विस्तुगच्छमेंजाकर
गालीवालाया और असलीहाथीदांतकी हूरवीनवस इतनावर्णन बहुतहै कितुमजानोकिमें
तुम्हारे हालकोपरिपूर्ण जानतीहूं अबतुमसत्यकहोमें अच्छीहूंयानूरुल निहारके साथ
तुम्हारामनविवाहकोचाहताहै जबतुमनेशरफेंकनेकाइरादाकियाथा उससमय मैंने
बिचाराकितुम्हाराशरकुसेनसे आगेनजावेगातोतुम्हारेछोड़नेही मैंनेउसेवायुमेंपकड़ाऔ
रहाथिवेदकरइसशिखरपरडालदिया इसलिये कितुमउसे अवश्यपहुंचनेआओगेऔरइसी
बहानेमेरीतुमसेभेंटहोगी जबइतनाहालकहचुकीतोप्रीतिकीदृष्टिसे उसनेअहमदको
देखा औरलज्जितहोकरनेत्र नीचेकरलिये औरशाहजादा यहसबबातें सुनकरअति प्रसन्न
हुवा यहतोजानताहीथा किअबकिसीभांतिनूरुलनिहार नहींमिलसकती औरपरीवात् भी
अतिसुंदरीहै उसकेरूप अनूप मनहरणकोदेखतेही मोहितहोगयाकिनूरुलनिहारकोभी
भूलगया निदान उससुंदरी कोअति संतुष्टकरकहनेलगा अबतुमकोयही इच्छाहैकि
जन्मभरतुम्हारीसेवामेंरहूं मैंमनुष्यहूं औरतुमजिनकी पुत्रीहोतुम्हारेकुटुम्बीजनइस संबंध
कोक्योंकरस्वीकारकरेंगे उसने कहामें इसविषयमेंस्वाधीनहूं जिसकेसाथचाहूंअपना वि
वाह करलूंपरंतुजो तुमनेकहाकिमें तुम्हारीसेवामेंरहूं यह अनुचितहैतुममेरेपति और

इनसबवस्तु औरभवनादिककेस्वामीहो तुमकेही अपनी दासीसमझो औरमुझेतुम्हारे साथ
विवाहकी अतिलालसाहै औरमुझेतुम्हारीबुद्धि औरप्रवीणतासे परिपूर्ण आशाहै कितु
मइसबातसे इन्कारनकरोगे औरमैं तोकहतीहूंकी किमैं स्वाधीनहूं इसकेविशेषहमारे कुल
मेंयहरीतिहै कितरुणअवस्थापर प्रतिअप्सराजिन अथवा मनुष्यपर जिससे उसकामन
लोभायमानहोउसके साथअपनाविवाह करलेइससे आपुमरस्त्री पुरुषमें परस्परप्रीति र
हतीहै जबबानू अप्सरानेयहसबबातें कहीं शाहजादाउसके उत्तरमेंअत्यंतव्याकुलहोकरउ
सकेवस्त्रको फुककरहमनेलगा परंतुबानूअप्सरानेइसे फुकनेनदिया औरउसकेपलटे
अपनाहाथदियाजिसे शाहजादेने अतिप्रीतिसे वहांकीरीतिके अनुकूल चूमाऔर अपने
नेत्र और हृदयमेंलगायाबानूने मुसकराके कहाअबइसहाथपकड़नेकोलाजरखकर ब
चनपालनकरना औरइसीबातपरमैंभी स्थिरहूं अहमदनेकहा उस मनुष्यकोजोतुमपर मो
हितहोकोंकरप्रीतिभंगहोसकीहै मैंनेअपनेकोतुम्हें सौंपाजैसा तुम्हारा मनचाहे करोउस
नेकहातुममेरेपतिहो औरमैंतुम्हारीभार्याहूं यहीप्रणजोपरस्परहुवाहै विवाहहै औरजो
ऊपरकीरीतें विवाहकीहोतीहैं सबव्यर्थहैं अबहमतुम संध्याकोपरमदिव्यभवनमें आनं
दभोगेंगे जिसकोतुमदेखकर अतिप्रसन्नहोगे तदनंतरदासियोंने नानाप्रकारके दिव्यव

जनलाये औरउनदोनोंने भोजन किये इसकेउपरांत मध्यरात्री जबनिश्चिंतहुये तोबानूअपसरा
शाहजादा अपनेसुखभवनमेंलेगई जोसुखभवनउसके सोनेकाघरथा वहांशाहजादा इसज
गहरत्नोंके ढेरदेखविस्मितहुवा औरबानूसेकहनेलगाकियेसा सुखभवनऔरयहअ
लभ्यसामग्री ऐसासंसारभरमेंनहोगी उसनेकहा तुममेरावासस्थानदेखकर उसकी इतनी
प्रशंसा करतेहो यदिजिन्नोंके घरदेखोगे तोक्या कहोगेमेरे बागकोभीदेखकरतुम अ
निहर्षितहोगे परंतुअब उसकेदेखनेकासमयनहीं रहापुनि वहउसे औरमकानमेंले
गई जहांरात्रिमें भोजन करतीथी उसकीसजावटभी औरोंसेन्यूननथी उसमेंसैंकडोंसु
गंधितदीपकउचित २ स्थानोंपरप्रकाशितथे औरविल्लौरके बरतन जिनमें बहुरत्नज
डितथे औरअति शोभायमान गुलदस्ते औरअनेकभांतिकेदिव्यपात्रधरेहुयेथे औरकई
गानेवालीस्त्रियां अतिरूपवान जो अतिउत्तम वस्त्रपहिने हुयेथीं वह सब आन २ करमधु
रवाणीसेगान करनेलगीं फिरवहदोनों भोजनकरने लगेबानू अपसरा दिव्यऔरस्वादि
ष्टभोजन अपने हाथसे उठाकर अहमदके आगेरखती और उनपाकोंका नाम बतला
कर शाहजादेको चखाती औरजो २ पाक अहमदने कदापिभोजननहीं कियेथे उनके
बनानेकी विधिबतलाती इसके उपरांत उन्होंनेसरबतपानको और मिठाई औरफलादि

सच
७५
79

करवायेजव इससेभी निश्चिंत भये तोवह दोनों एक विशाल दालानमें जिसमें दिव्य मसनद
और रत्नजड़ित तकिये रक्खे भये थे जाकर बैठे उनके विराजमान होतेही अनेक अप्सराव
हां आईं और विचित्र नृत्य और मीठे स्वरोंसे गानेलगीं सो वह दोनों उनके अद्भुतगानसे
अति प्रसन्न भये और वहांसे उठकर और मकानमें गये जहां रत्नजड़ित छपरखट था
और सब वराती वहांसे छिन्नभिन्न होकर इधर उधर चलेगये ताकि दूल्ह दुलहिन आरा
म करें कईदिन इसीभांति आनंद मंगल रहा यदि अहमद शाहजादा हजारों वर्ष मंत्र छो
में रहता तौभी ऐसा आनंद न देखता निदान छः महीनेतक उस अप्सराके साथ अनेक भां
तिके सुखोंको भोगता रहा और उसका मोह उसके मनमें ऐसा समाया कि उसके देखने बि
ना उसे क्षणमात्र न चैन पड़ता और इसीभांति वह अप्सराभी उसको प्रीतिसागरमें मग्न थी
दाण उसीके शिष्टाचार और आदरमें रहती सो अहमद उस प्रीतिमें अपने कुटुंबको भूल
गया परंतु कभी उसे पिताके दर्शनकी लालसा होती और इच्छा उपजती किसी प्रकार अ
पने पिताका कुशल मालूम करे और यह संभव न था कि अपनी प्रियाकी आज्ञा बिना जा
वे निदान एक दिन उसने बात मेद सब बातके लिये आज्ञा मांगी कि यदि तुम्हारी इच्छा होतो
मैं अपने पिताकि दर्शन कर आऊं बाद अप्सराको इस बिचारसे कि शाहजादा यहांसे ब

हाना करके जानाचाहताहै अतिचिंताहुई औरउससेकहनेलगी तुमनेमुझसेपहिलेका प्रतिज्ञा
कीथी अबउसके विपरीत किया चाहतेहो जान पड़ताहै कितुम्हारे हृदयसेमेरीप्रीति उठग
ई अहमदने उत्तरदियामेरा प्रयोजन यहनहीं कियहांसे उदासहो करचलाजाऊं औरफिर
न आऊंमेरे बूढ़ेपिताकोमेरे वियोगसे अतिदुःखहुआहोगा यदितुम्हारी आज्ञाहोतोदर्शन
करकेशीघ्र तुम्हारी सेवामें आऊंकदापि औरकोईबात तुम्हारीइच्छाकेविरुद्ध नहोगी किं
तुमेरी ईश्वरसेयह प्रार्थनाहै कि जन्मभरतुम्हारी सेवामेंरहूं निदान इस प्रकारकी वार्ता
से उसेप्रसन्न किया औरउसे विदितहुआकि शाहजादाभीमुझे बहुतहीचाहताहै फिरउ
से आज्ञादीजाओ अपनेपिताकेदर्शनकरकेशीघ्रलौटआना अधिकनठहरना अबय
हांसे हिंदुस्तानके बादशाहकाहाल वर्णनकिया जाताहै जबहुसेन अहमद और अली
शाहजादेको नूरुलनिहारसे विवाहकरदिया उसदिनसेहुसेन और अहमदकोनदेखक
रअति शोकवानरहा करताथा एकदिन उसनेदोनोंकाहाल सबसभासदोंसे विनयकी
कि हुसेनतोयोगीभेषधारणकरतपस्याकरताहै और अहमद शाहजादाकिसीओरकोनि
कलगया सोबादशाहने यहबातसुनकर अहमदके ढूंढनेकेलिये पत्र अपनेअमात्यों
कोलिखे कि जहांकहीं उसकोपाओसन्मानपूर्वक मेरेनिकटलाओ बहुतढूंढनेपरभी उस

कोनपाया निदान जब संपूर्ण सभासदों ने बादशाह को अहमद के खोजाने से बहुत बिकल पाया
तो इस विषय में अति चिंता करने लगे एक को स्मर्ण हुवा कि इस नगर में एक जाहूगरनी अति च
तुर रहती है तो बादशाह के पास लाकर उसकी प्रशंसा की और बिनय की कि आप उसको बु
लवाकर शाहजादे का हाल सब लें बादशाह ने कहा अच्छा तब उसे अपने साथ लेते आना नि
दान वह जाहूगरनी आई बादशाह ने उससे कहा जब से मैंने अली अपने कुबरकादूल्ह नि
हार से बिबाह कर दिया तबसे अहमद का कुछ पता नहीं लगता तू अपने जाहू के बल से
उसका हाल मालूम करके मुझसे कह कि जीता है वा नहीं यदि जीता है तो कहां है और कि
स दशा में है उससे मेरी भेंट होगी वा नहीं उसने उत्तर दिया मैं आपके प्रश्न का उत्तर इसी समय न
हीं दे सक्ती यदि आज सावकाश मिले तो कल मैं ठीक २ इसका उत्तर दूंगी बादशाह ने कहा य
दि तू मेरे प्रश्नों का उत्तर देगी तो मैं तुझे बहुत कुछ दूंगा दूसरे दिन प्रात को वह जाहूगरनी बा
दशाह के निकट आई और विनय की मैंने अपनी जाहू की विद्या से मालूम किया कि अहमद
जीता है इस समय इस बात के सिवाय और कुछ नहीं बतला सक्ती कि वह कहां है बादशा
ह यह बात सुन अति प्रसन्न हुवा और उसके मिलने की उसे आस भई अब अहमद का वृत्ता
न्त फिर वर्णन करते हैं जब वह परीबानू से आज्ञा ले चुका तो परीबानू ने उससे कहा मेरे इस उ

पदेशकोनभूलना वहयहहै कि अपने पिता औरनिवासियोंसे अपनेविवाहके सिवाय किसी
विचित्रवस्तुका वर्णननकरनाकेवल अपनेपिताके धीर्थकेलिये यहीकहनाकि वहां अतिप्र
सन्नतासे रहताहूं आपकेदर्शनके निमित्त आया इतनाकहबाद् अफसराने यात्राकी तयारीके
आज्ञादीजबसामग्री तयारहोचुकीतोबीस सवारउसके साथकिये औरदिव्यघोड़ा जोअते
उत्तम रत्नोंकीसामग्रीसे सजाथा शाहजादेको चढ़नेकोदिया औरउसकेकंठसेलगाकरविदा
किया औरशाहजादा सिधारतीसमय उसीप्रतिज्ञाकोदृढ़ाकरघोड़े परसवारहुवा औरबी
ससवारोंसहितजो जिनथेबड़ीधूमधामसेनगरकी औरचला शाहीमहलपासहीथा क्षणमा
त्रमेंपहुंचगयेबादशाहकेसेवकगणसभासद औरनगरनिवासी अहमदकोदेखकर अत्यंतप्र
सन्नहुये औरनिजकाज तजकुक २ करप्रणामकरे और आशीर्वाद देनेलगे औरबड़ी भी
ड़दोनों औरसे उसकेसाथ बादशाही महलतककगई शाहजादासभामें उतरअपने पिताकेच
रणोंपरजायगिरा बादशाहनेखड़ेहोकर अपनेहृदयसेलगाया औरबहुतप्यार किया औरक
हनेलगाहै पुत्रतुम नूरुलनिहारसे निरासहोकर ऐसेगुमहोगये किबहुत ढूंढनेपरभी
तुम्हाराठिकाना नलगा औरमैंतुम्हारे वियोगमेंइसदशाकोप्राप्तहुआ आइतने कालतक क
हांथे औरकिसभांतिकालक्षेपकिया अहमदनेविनतीकीजबसे नूरुलनिहारविवाहीगई

मुझे अतिविदग्धजानकर आपको भलीभांति स्मर्णहोगा जिसदिन हमतीनों भाइयोंने आपकी आज्ञानु।
सार तीरचलाये बड़े मैदानहोने परभी मेरातीरकहीं निसल्न होगया सोमैं असी चिंतामें अपनातीर
ढूंढ़ते २ अकेला गया औरदाहिनेबायें औरपास ढूंढ़नेलगा परंतु वशरकहीं नदीखासो उ
सको ढूंढ़ते २ दूरनिकल गया औरनिरासहोकर मनमें बिचारनेलगा इतनी दूर मेराशरका
हेको आया होगा किंतु शरचलाने वालेका भी तीरयहां नहीं आसक्ता निदान इसी चिंतामें मैं
ने अपनेशरको एक ऊंचे पर्वतके शिखरपर जोयहांसे अनुमानचारकोसके है पाया फिर म
नमें शोचा इतनीदूर आनातेरा बिना कोई भेदके नहीं है यहशोच वहांसे ऐसेस्थानपर पहुं।
चा जहांमैं अबतक अति आनंदमें रहा इसके विशेष औरवृत्तांत नहीं कहसक्ता केवल आ।
पकेथीर्घदेनेकेलिये यहां आया अब मुझे फिर आज्ञाहोतो फिरमैं वहांजाऊं कभी २ आपके
दर्शनको आयाकरूंगा बादशाहने कहा मैंने प्रसन्नतासे आज्ञादी और मुझे भरोसाक्या कि
तुम आनंदपूर्वक मेरे नगरकेपासरहतेहो यदि तुम्हारे आनेमें कुछदेरहुई तो मैं किसभांतिते
रे कुशलका समाचार पायाकरूंगा अहमदने विनयकी आपक्याकहते हैं कि मेरे भेदको मालू
म करें मैं तो पहिलेही विनयकरचुका हूं जो कुछ मैंनेकहा इससे अधिक वर्णन आपके सा।
ण मैं नहीं करसक्ता आपथीर्घरखिये मैं बहुतबेर आयाकरूंगा बादशाहने कहा बेटा मेराश्रेयो।

जनतोकेवलयहीहै कितुम्हारासमाचारमालूमहुवाकरे मुझेतुम्हारेभेदकेसबनेकीकुछ
आवश्यकतानहीं अबमैंनेतुमकोविदाकियाकियहांशीघ्र आकरमुझसेमिलजानासो अ।
हमदतीनदिनतकवहांरहा चौथेदिनभोरकोवहांसेसिधारा औरअपनीप्रियाकेनिकट प
हुंचावह उसकेजल्दीलौटआनेसे अतिप्रसन्नहुईफिरदोनोंप्रियाप्रीतम आनंदसेरीति औरस
न्मानपूर्वक अनेकभांतिकेभोगऔरविलासभोगनेलगेजबएकमहीनाबीता औरशाहज़ादा
अपनेपिताकेदर्शनकोनगयाथा तोउसकोप्रियानेकहाकि तुमनेपूर्वमें कहाथा किमासके
आरंभमें अपनेपिताकेनिकटजाऊंगासो अबक्योंनहींजातेहो तुम्हारापितातुम्हारीबाटदे
खताहोगा शाहज़ादेनेकहा सचहै परंतु आपकीआज्ञाबिनामैंनेवहांकाउद्योगनहीं।
कियाउसनेकहा औरतुममेरीआज्ञापरमतरहो महीनेके आदिमेंतुममेरेसबनेकेबिना।
भेंटकर आयाकरोसोशाहज़ादादूसरेदिनप्रभातकोबड़ीसमथामसे अपनेपिताकेपासग
याफिरतो उसनेएकनियमबांधलियाकिप्रतिमासकेआरंभमें अपनेपिताकेपासजाकर
औरवहांतीनदिनरहकर चौथेदिन चला आतादिनपरदिनउसकेसाथसमथाम आधिक
होतेजाती अंतकोएकदिनएकप्रधानसेजो बादशाहकामुंहलगाथा शाहज़ादेकीसवा
रीकीसम आधिकदेखविस्मितहुवा औरसोचनेलगाकि शाहज़ादेकाहालकुछजानानहीं।

जानाकि कहां रहतादै और यह ऐश्वर्य इसको कहांसे प्राप्त ऊवा सो। उसने ईर्षासे बादशाहको।
वहकाकर कहा तुम अपने पुत्रसे अचेत हो। और यह नहीं देखते कि उसका ऐश्वर्य दिन २
बढताजाता है ऐसा न हो जो तुमको औसर पाकर डबावे और तुमको कैदखानेमें डालकर
आपका तख्त छीन ले और जबसे तुमने तलनिहाको अलीसे व्याह दिया तबसे इसमेन
और यह अर्थात् अहमद अपने अप्रसन्न हैं इतना कि एकने संसारको ही परित्याग किया औ
र अहमद जो अति तेजवान है ऐसा न हो कि आपसे अपना पलटा ले बादशाह अमेन निर्बुद्धि थे
उस प्रधानके छलमें आगया और अहमदके रहनेका हाल खोजकरने लगा एक दिन बज़ी
रके सखुने विना जो अहमदका हितैपी था उसी जादूगरनीको चोरदरवाज़ेसे निज शयन स्था
नमें ले गया था और उससे कहा जैसे तूने अपनी विद्यासे कहा था कि अहमद जीता है उसबात
को यथार्थ पाकर मुझे तेरा विश्वास ऊवा सो अब यह इच्छा है कि ऊछ और भी उसका हत्तान्त
वर्णन कर यद्यपि प्रकट होकर प्रतिमासमें मेरी भेटको आता है परंतु अबनकमें उसके र
हनेकी जगह कोन हीं जानता मैं उस बातको उससे अपिक सखुन हीं सका अब तू मेरे सबको।
संक्षेप कर उसके रहनेकी जगह मालूम कर अब यह नियमसे अनुकूल आया ऊवा है और
मेरे सखुनेके बिना थोजोहूर आगे जाकर तुम होजावेगा आजन्त भागमें ऐसे स्थान पर संक्षेप क

रवैठ जिस्से उसकोजानेकाहाल मालूमहोजावे औरफिरआकर मुझसे कहियो वहबादशा
हसेविदाहोकर वहांगई जंहा अहमदने अपनाशरणपायाथा औरकिसी कंदरामेंछिपकर अह
मदके आगमनकी बाटदेखतीरही अहमदभोरको उठकरनगरसे सिधाराजब उसगुफाके स
मीप पहुंचातो जादूगरनीनेक्यादेखाकि वह औरउसकेसेवक बड़े२ टीलों औरशिखरोंपरच
ढ़करदूसरीदिशाकोजातेहैं औरवहऐसाभयानकस्थानहै किकोई मनुष्यसवार अथवापैद
लवहांनहींजासक्ता निदानवहसोचीकि उनशिखरोंकेदूसरी औरकोई विचारमेंथी अक
स्मात् शाहजादानिज सेवकोंसहितवहांसेगुमहोगया फिरवह जादूगरनी उसीगुफासेबा
हर निकली औरवहुंओर हर२ अपनीसामर्थ्यभरफिरीपरंतुठिकानानलगा औरवहलो
हेका द्वारभी उसेनमिलाक्योंकि वहद्वारा औरभवन उसमनुष्यके सिवायजिसकोवाद आ
सणचाहतीथी दूसरेकोनमिलताथा उसजादूगरनीने मनमेंकहामैंने इतनाव्यर्थ परिश्रमकि
याजिसकामकेलिये आईथी मालूमनहुआ फिरबादशाहकेपास गई औरवहांकासंपूर्णवृ
त्तांतकह सुनाया औरकहामैंनेबहुतसा श्रमउसके निवासके ढूंढनेकेलिये कियापर
न्तुकुछलाभनहुवा यदिहुजूर आपसावकाशदीजियेतोफिरजाकर जिसभांतिहोसकेमालू
मकरूं बादशाहने उसेआज्ञादेकरकहाजिसप्रकारचाहे उसेप्रकटकरमैं तेरेआनेकीबाट

सब
८६
83

देखता रहूंगा इतना वह बादशाह ने एक हीरे का बहुत कड़ा बहुमूल्य उसे देकर बिदा किया
और कहने लगा जिस दिन उस उस बात को मुझे सुनावेगी मैं तुझको अतिप्रसन्न करूंगा फिर
वह जादूगरनी अपने घर में बैठकर अहमद के आगमन की बाट देखने लगी क्योंकि उसे मा
लूम था कि उक्त शाहज़ादा प्रतिमास के प्रारम्भ में एक बेर अपने पिता की भेंट को आया करता
है निदान जब महीने के बीतने में एक दिन शेष रहा तो यह उसी शिखर पर मोठी के समीप बैठ रही।
दूसरे दिन जब शाहज़ादा अपने सेवकों समेत जो उसके साथ सदा रहा करते थे उसी लो
हे के टीले से उसी जादूगरनी के निकट होकर निकला तो उसे उठड़ी ओर्फे ऊपर देखकर समझे
कि यह कोई शिला स्फटक की गिरी है परंतु जब वह उस जादूगरनी ने अहमद को अपने नि
कट चलते देखा तब वह महा रुदन करने लगी जैसे कोई दुखिया किसी से सहायता की इ
च्छा करे अहमद को उसके रोग पर अति दया उपजी और खड़े होकर सेन से सब वृत्तान्त का कहने
है वह जादूगरनी जो अंतनधूर्त्ती और चातुरा थी आधेक बिलाप करने लगी शाहज़ादे को
उस पर अधिक दया आई जब उसने शाहज़ादे की अपने ऊपर अधिक कृपा पाई तब ठंढी सां
स भर धीरे धाह से अपना वृत्तांत इस भांति वर्णन करने लगी कि मैं अपने घर से किसी अवश्यक
कार्य्य के उद्योग से अमुक ग्राम को जाती थी अकस्मात् मुझे ज्वर और शीत बड़े बेग से आया।

जिसमें मेरी शक्ति जाती रही और बेवश होकर गिर पड़ी शाहज़ादेने कहा कोई ऐसा स्थान नहीं
जहां पर तुझको भिजवा दूं परन्तु एक मकान अति समीप है जो तू कहे तो तुझे वहां भिजवा दूं व
हां तू शीघ्र नीरोग हो जावेगी तू उठकर मेरे पास आ उसने एक ओर सांस भरकर कहा कि मैं
ऐसी निर्बल हो गई हूं कि उठ नहीं सकती तब शाहज़ादेने एक सवारसे कहा इस स्त्री को अप
ने साथ घोड़े पर चढ़ाले उसने तुरन्त उसको अपने घोड़े पर बैठा लिया और अहमद वहां से लौ
टकर खोले के द्वारे को गया और भवन में प्रवेश कर अपनी प्यारी को बुलाया वह उसके पास
आई और उससे सब कुशल तो है तुमको मार्ग से लौट आये और इसके को बुलवाया उसने स
ारा वृत्तान्त वर्णन किया कि मार्ग में इसे मैंने बीमार पाया और दया से उसको अपने साथ ले आ
या अब तुम इसको यहीं रक्खो और इसकी ओषधि करो बानू अफ़राने अपनी अनुचरियों से क
हा इसे लेकर किसी अच्छे स्थान में रक्खो और इसको ओषधि करो जब उसे लग गई तो बानू अ
फ़राने उसे उपदेश की भांति कहा हे प्राणप्यारे मैं तुम्हारी दयालु प्रकृति से अति प्रसन्न हुई औ
र तुम्हारे कहने के अनुसार उसकी सुधि लेती रहूंगी परन्तु भय मानती हूं कि ऐसा न हो कि तुम
को भलाई के पलटे बुराई मिले क्योंकि मैं इस स्त्री को ऐसा रोगग्रस्त नहीं पाती जिससे वह इस द
शा को प्राप्त हो मुझे मालूम होता है कि किसी तुम्हारे बैरी ने तुमसे छल किया है अच्छा अब तु

सव
८४
84

सिधारी अहदेमेने यहस्वनवहा है मेरी प्यारी ईस्वरजमको सौतारकवे तुम्हारीकृपासे मुझेको
ईढ़ावनदेगा और मुझेको भलीभांति मालूम है किमेरा कोई वेरीनहीं मैंसबके साथ भलाई क
रताहूं इसलिये किसीसे बुराईको आशानहीं इतनाकहकर विदाहुआ और अपने पिताके मंदिर
मेंपहुंचा बादशाह जो अबुहसनपक प्रधानके वहकानेसे भयमानथा जाकर भेंटकी वह लो
ड़ियांजो उसमहात्माकी सेवाके निमित नियतथीं उसेपक दिव्यभवनमें लेगई जो अतिउत्तमसा
मग्रीसे अलंकृतथा और एक सुन्दर खाटपर उसेलिटादिया एकदासी उसकेपाससे बैठी औ
र दूसरीशीघ्रही उठकर चीनीके पात्रमें एक अर्क लाई जो विशेषकरके ज्वरका हटाने
वाला था फिर उनदोनोंने उसे पकड़कर बैठादिया और कहा इसको पीजा इसके पीनेसे कि
सीभांतिका रोगशरीरमें नहीं रहताजाहूगरनी वह औषधि लेकर पानकर गई और फिर
लेटगई उन्होंने उसेलिहाफ उढ़ाकर कहा अबसो रहथोड़े हीकालमें तुम्हारीरोग हो जा
वेगा उसने यह छल केवल इसीलिये कियाथा कि अहमदका वासस्थान मालूम पड़े जब
उसे भलीभांति विदित होगया तो वह उठके बैठी और उनदासियोंसे उसने कहा मुझे उस
औषधिके पानकरनेसे शरीरभरमें पसीना छूटा अब मैं निपटनीरोग होगई और मेरीदेह
में बलभी आगया अब यही समाचार अपनी स्वामिनीसे जायकहो कि मैं उसके पास जाऊं

औरउनसे विदाहोकर अपनेघरकोसियाहूं फिरवह जाहूगरनी कोइस एकमकान दिखानीऊ
ई उसबारहदरीमेंले गईजो अतिसुंदर दिव्यवस्त्रोंसे सजीथी वहां उसने उसी अप्सराकोद
वतख्तपरविराजमानदेखाजोजो उत्तम २ हीरों औरमणियोंसेजड़ितथा और उसतख्तके च
ऊयोर बहुतसीदासियां अतिरूपवती सुंदरवसन पहिने हाथजोड़े खड़ीथीं जाहूगरनीउ
समवनकोविशेष अद्भुतरत्नमयीस्वच्छतख्तकोदेखअति विस्मित ऊई औरबानूकेभयसेको
ईवचन मुखसेननिकला तबवहउसकेचरणोंपरगिर पड़ीबानू अप्सराने उसेभरोसादेकर।
कहाहेहहातेरियहां आनेसेमैं अतिप्रसन्नऊई तुममेरे महलको भलीभांति देखोमेरीदा
सियां संपूर्णमहल और सामग्रीतुमेदिखावेंगी जाहूगरनी उसकेनीचेकीथप्पीको हम
विदाऊई फिरउसने भवनकीप्रतिमकानकोदेखभाल औरउसको यथोचितचिंताकरवहांसे
चलीदासियोंने उसेलोहेकेद्वारसेबाहरले जाकरजहांसे अहमदउसेलायाथा छोड़दिया
औरकहा अबतूअपनेघरजा वहआगेवढ़ी तदनंतरथोड़ीदूरजाकरउसनेलोहेके डोरके
देखनेकी इच्छाकीकि उसेपहिचानरक्खे वहद्वार उसकीदृष्टिसेगुप्तहोगयावह यहांचऊओ
राफिरी परंतुकुछभी उसका ठिकानानलगानिदानलाचारहोकरनगरमेंआई औरउसमा।
गोंसे बादशाहकेमहलकेचोरदरवाजेसेभीतरगई औराकिसीबादशाहकेसेवकसे बाद

सच
८५
85

शाहको अपने आगमनका संदेशा कहला भेजा बादशाहने उसको भीतर बुलवाया वह उसके मन
मुख चिंतित होकर गई बादशाह समझ गया कि आज भी प्रयोजन सिद्ध नहुआ होगा निदान उ
सने उससे सब भाव ह का म्कर आई वा नहीं उसने उत्तर दिया उस बातको भलीभांति मालूम कर आ
ई हूं सो मैं वर्णन करती हूं परंतु चिंता के चिन्ह जो मेरे मुखपर हैं उसका दूसरा कारण है फिर
उसने संपूर्ण वृत्तांत कह सुनाया और कहा उस अप्सरा और अहमदमें पुरुष स्त्रीका व्यवहार है
शायद आप उस अप्सराके ऐश्वर्यको सुन प्रसन्न हुये होंगे को यह समझा होगा कि अहमद
को उसके साथ सांसारिक सुख प्राप्त आ परंतु मेरे विचारमें यह सब बातें आपके लिये दुः
खदाई जान पड़ती हैं कि ऐसा न हो जो आपका पुत्र आपसे उच्छेद बैर ठाने जो यह समझें कि अ
हमद मस्त है कि ऐसा काम उससे बन न पड़ेगा यह सच है परंतु इस समय वह अप्सराकी प्री
तिमें फंसा है का आश्चर्य है कि उसको उपदेशके अनुसार किसी अनुचित कर्मका उ
द्योग करें तो आश्चर्य यह: शंकाका स्थान है उसका उपाय आप अवश्य कीजिये इतना कह वह
बादशाहसे विदा होने लगी बादशाहने चलती बिरियां उससे कहा मैं तुझपर दो प्रकार
से प्रसन्न हुवा एक जो जो तूने इतना परिश्रम उस वृत्तांतके मालूम करने के लिये उठाया और
दूसरे तेरे अति हितकारक उपदेशसे जब बादशाहने समझा कि वह मंदिरमें भेजा चुकी त

मनमेंशंकाउत्पन्नहोतीथीबुलवाकरसंसर्गाहनोनकहंसुना
वउसने अपने प्रधानकोजिसने उसके मनमेंशंकाउत्पन्नकीथी बुलवाकर कहा इसका उपाय
या औरउससे सम्मतपूछाकि इसबातकाक्याउपायकिया जावेउसनेकहा इसका उचितन
अति सुगमहै अहमद अभीयहींहै उसेकैदमेंडालदीजिये मारडालना उसका उचितन
हीं इससम्मतको उसनेपसंदकिया उससमयतोयह चुपहोरहा दूसरेदिनफिर उसनेजा
दूगरनीको बुलाकर अहमदकेकैद करनेकेलिये सम्मतपूछा उसनेकहामेरेविचारसे
यहउपाय अनुचितहै क्योंकि जबआप उसेकैदकरेंगेतोयहभी अवश्यहैकि उसकेसाथि
योंकोभीकैदकरें वहसबकेसबजिनहैं उनकोसबकुछसामर्थ्यहै ऐसानहोजोवह वे
दोखानेसेनिकलकर उस अपराधको जायपुकारेंतो वहअपनेपतिकी दशासुनकरए
कउपाधिमचावे जिसका निवारण आपकोकठिनहो यदिआपकोमेराविश्वासहोतोमैंप
कपसायन्नबनाऊं जिसे आपकोबहुतलाभहो औरकिसीभांतिकोहानिनहो बहुधा आ
पकोअहेरआदिकमें खेमकी आवश्यकतापड़तीहै औरउसकेबननेमें बहुतसाद्रव्य
यहोताहै अबआप अहमदसेकहेंकिएक बड़ाडेराकहींसे मुझेलादे जिसमेंमेरीसंसरगीस
भा औरसेनासमावे औरवहऐसाहलकाहोकिएक मनुष्य उसेजहां चाहे उठाले चलेजब
वह आपकीयहमांगलादेवेतो बहुतसीवस्तुमंगानेकेयोग्य आपकोबनाऊंगी निदान।

सच
८९
86

यह आपकीमांगोंसे बहुततंगहोजावेगा औरइसी उपायसे जिन्नोंको अद्भुत बनाई वस्तु आपको
प्राप्तहोगी औरअहमद दिक्कहोकर मारेलज्जाके कदापि आपकीदेहली परपगन धरेगा औ
रआपउसकेछल औरवैरसे बचेंगे औरऐसेउसनके मारने अथवाकैदकरनेकी आपको आ
वश्यकतानपड़ेगी फिरबादशाहनेयही बातअपनीसंपूर्णसभासे कहसंमत पूछावह सबचुप
केहोरहे बादशाह इससम्मतको अच्छासमझ चुपहोरहा दूसरे दिनजब अहमदबादशा
हके निकटगया औरबहुतकालपर्यंतपरस्परबातें रहीं तबबादशाहने औसर पाकरकहा
सबमें मैंबहुतदिनतकतुम्हारे वियोगसे चिंतामेंरहा जबतुम मेरेपास आयेतो मुझेतुम्हारे
देखनेसे अतिप्रसन्नताहुई यद्यपि मुझेतुम्हारी रहनेकी जगहमालूम नथी तथापि मैंने उ
सके खोजनेमें तुमसे हठनकिया परंतु अबमुझे यहभेदमालूमहुवा कितुमने महाऐश्व
र्यऔर अतिरूपवान अप्सराके साथ अपनाविवाह कियाइससेमैं अधिक प्रसन्नहुवा प
रंतुयहकहोजोमैं तुमसेकोईवस्तुमांगूंतोतुम अप्सरासे वहलासकतेहो और उसको तुम्हा
राइतना पक्षहै किजोवस्तुमैं तुमसे मांगूं उसकोनिश्शंकदेदेगी तुम्हें खूब मालूमहै किब
हुधामैं अहेरको जायाकरताहूं मुझे डेरोंकी आवश्यकताहुवाकरतीहै जिसकेउठानेकेलि
येबहुतसेऊंटदरकारहोतेहैं मैंचाहताहूं किऐसाडेरा मुझकोमिले जिसमें मेरासंपूर्ण क

टकसमाजावे औरवहइतनाहलकाहो जिसको तुम अथवा कोई औरएकमनुष्य उठालावे
तुमउस अप्सरासे मुझेलादो अहमदनेकहा बहुत अच्छामैं अपनीभार्यासे जाकरकहताहूं
परंतुमैं नहीं जानताकि इसगुणकाडेराउसकेपासहै वानहीं यदिहै तोवह देगीनहीं तो न
हीं इसहेतु उसकेलानेकीप्रतिज्ञा आपसेनहीं करताबादशाहनेकहाजो तूंवैसाडेरानले
वेगातोमैं तेरामुखनदेखूंगा औरतुमकैसे उसकेपति औरवह कैसीतुम्हारी पत्नीहै किये
सीतुच्छवस्तुभी तुम्हारे कहनेसेनदेगी जानपड़ताहै कितुमको वहतुच्छ औरदासवत सम
झतीहै जोतुम उससेडेरा मांगोगे उसनेदियातो जानताकिवहतुमसे अतिहितरखतीहै नहीं
तो नहीं मुझे निश्चयहै किवह तुमसेबहुत प्रीतिरखतीहै जोकुछउससे मांगोगे वह प्र
सन्नतासेतुमको देवेगी शाहज़ादा इसनियमके विपरीत कितीनदिनरहकर चौथे दिन जा
ताथा केवलदोही दिनरहकर तीसरेदिन उधरको चलाजबभवनमें पहुंच करपरीबानूके
पासगया तो उसने उसेचिंतित देख सबकुशल तोहै आजक्योंतुमउदासहोकर अपनेपि
ताके पाससे आयेहो शाहज़ादेने संपूर्णवृत्तांतकहदिया बानूने इतना सुनकर उत्तरदि
यातुम धीरजरक्खोमैं तुमको अवश्यडेरा दूंगी परंतुमुझेमालूम हुवा उसकाकालनिकट पहुं
चा अहमदने कहा ईश्वरमेरेपिताको बहुकाल पर्यंत जीतारक्खे हेसुंदरी वहकुछरोगीनहीं

सब
८०

87

अभी उनको कुशल सर्वक छोड़ आया हूं परंतु आश्चर्य में हूं कि मैंने कुछ हाल यह हो का उससे न
हीं कहा उसको सब हाल को कर मालूम कुवा बान् अपसराने उत्तर दिया है ओ तम तुमको स्मर्ण
होगा कि मैंने उस बुड्ढा को जिसे तुम रोगी समझ कर यह हो उठा लाये थे देख कर का कहा था व
हवो मारनथी उसने केवल तुम्हारा हाल मालूम करने को बहाना किया था उसी ने जाकर ब
हाय हसब हाल कहा जब तुम उसको यहां छोड़ गये थे मैंने उसको ओषधि पिलाई बहाना
करके वह अच्छी हो गई और मेरे पास बिदा होने को आई मैंने उसके साथ दासियां करके उसे स
ब सामिग्री इस भवन की दिखाई फिर वह देख भाल कर बिदा हुई इसके विशेष किसी को सा
मर्थ्य नहीं जो यहां तक पहुंचे का आश्चर्य है कि यह हो का सब भेद जान गई हो शाहजादे ने
उसको बहुत सी प्रशंसा कर कहा अब मेरी इच्छा है कि तुम्हारी कृपा से बेसा डेरा अपने पि
ता के पास ले जाऊं उसने कहा इस तुच्छ वस्तु के लिये इतनी चिंता को करते हो उसी में अभी मं
गवाती हूं इतना कह उसने एक दासी को जो खजान चोथी बुलवा कर कहा कि फलाना डेरा
शीघ्र ले आव वह दौड़ी गई और उसी डेरे को लाई और खान् की सेन के अतकुल उसे अहमद
शाहजादे को दिया अहमद उसे मुट्ठी में दबा कर समझा कि हमारी प्यारी ने उससे हांसी कि
या है बात इस बात को जान कर ठट्ठा मार के हंसी और कहने लगी हे प्यारे तुमने अपने मन में स

मफाहोगाकिमें तुमसेहंसतीहूं फिरनूरजहांने अपनीदासी सेकहा किइसडेरे कोलेकरएक
वड़े वनमें खड़ाकरजिससे अहमदको इसकारण मालूमहो तदनंतरवहदासी उसडेरे कोलेक
रभवनसे बहुत दूरचली गई औरवहां उसने वहांडेरा खड़ा कियाशाहजादेने उसेऐसाबड़ापा
याकि दोबादशाह भीसेनासमेत वहांभलीभांति बैठसकें औरकिसीको एकदूसरे सेकहन
हो उसदासीने फिरउसे तहकरशाहजादे अहमदकोदिया यह उसीसमय उसेलेकर सिधारा
औरअपने नियमित सवारी सहित अपने पिताकेसन्मुखगया औरउसडेरे कोदियाबादशा
हभी उसेदेख समझा यहतो बहुतछोटाहै जबवहखड़ाहुआ उसकोबहुतबड़ादेख आश्च
र्य्यकिया औरऐसी अद्भुतवस्तुलादेनेसे अहमदकाअतिगुणमानाफिरउसने अपने सेवकों
को आज्ञादी इसेरक्षापूर्वकरक्खो औरइस अपूर्ववस्तुकी प्राप्तिसे उसेभयऔरखेका अधिक
हुई औरविचारावह अपराधावस्थामें अहमदको बहुत चाहतीहै अपनेरूप औरऐश्वर्य्य
सेबड़े२ कामकरसक्तीहै मेरा राज्यलेनाकौनबड़ीबातहै फिरउसने जादूगरनीको बुलवाक
र इसविषयमेंसम्मत पूछा उसने कहा शाहजादीसेपानीचश्मे शेरों कामांगो जब बादशा
ह संध्यासमय अपने सभाके समूहके मध्यमें बैठायाकि अहमदआया औरचरणछूए बाद
शाहकेपास बैठगया बादशाहने उससे कहामैं तुम्हारेडेरेके लानेसे अतिप्रसन्नहुवा निसंदेह

सच
८८

88

कोई ऐसी विचित्र वस्तु हमारे खजाने में नहीं परंतु एक वस्तु मुझे और चाहिये यदि उसभी ला
ओगे तो मैं अति प्रसन्न हूंगा तुम्हारी प्रिया के पास पानी चश्मे शीरों का है जिसके पीने ही सर्व भा
ति के ज्वरादिक रोग नाश होजाते हैं और मुझे निश्चय है कि मेरी आरोग्यता तुमको स्वीकार होगे
थोड़ासा जल मेरे लिये लाओ कि आवश्यता पर उसको पिया करें शाहजादा इसबात को सुनक
र चुप होरहा और शोचने लगा कि देरा को जिसने यह मैंने जाना उसने यह लादिया ऐसा न हो जो
उस जल के मांगने से अप्रसन्न होजावे और अहमद को यह भली भांति विदित था कि जो वस्तु मैं
उससे मांगूंगा नाहीं न करेगी इस चिंतना के उपरांत उसने उत्तर दिया मेरे अधिकार में कोई व
स्तु नहीं परंतु मैं उस जल को भी मांगूंगा यदि उसने दिया तो लाऊंगा आपसे प्रतिज्ञा नहीं करस
का आपकी मांगी हुई वस्तु लाने में अपनी सफली समझता हूं परंतु इसके मांगने में कष्ट अवश्य
है निदान दूसरे दिन वह बादशाह से विदा होकर अपनी प्रिया के निकट आया और कुशल ए
छने के उपरांत कहा मेरा पिता आपकी कृपा से बड़ा गुण मानता है परंतु उसने सिंहवाहिन स
रोवर जल मांगा है यदि तुमको उसके देने में कष्ट न हो तो मुझे मंगवादो मैं उसको जाकर देआ
ऊं बानू परीबानू ने कहा जान पड़ता है कि तेरा पिता तुम्हारी और मेरी परीक्षा लेता है जो कुछ
जादूगरनी उसको सिखाती है वही वस्तु वह मांगता है अच्छा वह भी तुमको मैं दूंगी इसमें भी तु

कोऊकछुहानिनहीं परंतुऊकछुभयहै अबमैंउसे वर्णनकरतीहूं चित्तधरसुनो अमुकमैदान
मेंएकदिव्यसरोवरहै जिसकी रक्षाकेलिये अतिबलवान चारसिंहहैं उनको उसपरचौकी
रहतीहै बारी २ सेदोसिंह जागतेहैं औरदोसोतेहैं औरकिसी मनुष्यको जलकेपासजाने न
होदेते मगरमें ऐसीतदबीरतुमकोबताऊंगीकि जिसकेसबबसेतुम्हें ऊकछुनुकसान और
आसेव उनपेरोसेनपऊंचेगा इतनाकह उसनेहर्ई औरथामानिकालकर काईगेंद अपनेहा
थबनाई एकगेंद शाहजादेको देकरकहा पहिले तुमइसगेंदको रक्षापूर्वक रकवी दूसरे
यहकितुमदोघोड़े अतितीव्रगामीलेनाएक परतुम चढ़ना औरदूसरे परएकभेड़के चारद
कड़े करके लादनावहभेड़मैं आजकहू रकाहूंगी तीसरे यहकितुमकोमैं एकपात्रदेतीहूंतु
मइसमें जलभरना अबभोरकोसवारहो औरदूसरे घोड़ेकीबागपकड़ उसीमैदानकी औ
रजानाजब उसमैदानकेनिकटवर्ति भवनकेलोहेके द्वारेपरपऊंचो तोइसगेंदको आगे डा
लदेनायह गेंद आपहीलुढ़कताऊवा उस भवनके द्वारतक पऊंचेगा तुमउसगेंदके पीछे
चलेजाना जहांकहीं यहगेंदठहरे वहीं परतुमउन चारों सिंहोंकोदेखोगे औरद्वारखुलजावे
गा वहदोसिंहजो जगेहोंगेतोसोतेऊओंकोभी जगादेवेंगेफिर वहचारों तुमकोदेखकर ना
दकोरेंगे परंतुम उनसे भयनकरनाभेड़केचारोंहकतुम उनकेसन्मुखडालदेनाघोड़े परसेनउतर

ना श्रौरपेड़मारकरभवनके भीतरपैठकर सरोवरपरपऊँच जाना श्रौरवहांसे नीरभरलौट श्राना
वह सिंहतो भोजनकरतेहोंगे तबसे ऊब्बनकहेंगे शाहज़ादाभीरको उठउधरकोचला श्रौर
उसीभवनके निकटपऊँच पात्रजलसेभरा जबऊब्बहरनिकल श्रायातोदोसिंह उसके पीछेदौ
ड़ेउसने उनकाभयनकिया श्रौर श्रपने बचावके लियेतलवार गिलाफसे निकालली सोपकोसि
हउसे जातेऊये देखलौटगया श्रौरहसमे सेशाहज़ादेकोशिर श्रौरसंब्बसे सेनको कितु श्रभय
चला जायपरंतु दूसरा सिंहउसके साथलगाहुवा जाताथा इतनेमेंशाहजादानगरमे पऊँच बाद
शाहके महलमेंचलागया श्रौरवहसिंहजोपीछेचला श्राताथा श्रहमदकोमंदिरमे प्रवेश
करतेदेखलौटगया उसेऊब्बडरनदियाफिर बऊतसे मनुष्य श्रहमदको श्रकेलेदेख उसकेसा
थहोगये श्रौरवहांपऊंच उसेघोड़ेसे उतारा उससमय बादशाह सभामें बैठ श्रपनेदेशकेप्र
बंधकीवार्ताकरताथा शाहजादेने उसेप्रणामकरवहीजलकापात्र उसेभेंट दिया श्रौरविन
यकी यह वही जलहै जो श्रापने मांगाथायह जल श्रलभ्यहै ऐसी श्रपूर्ववस्तु श्रापके नि
कट कदाचितनहोगी जो ईश्वरन चाहे श्रापकी देहमेंकिसी भांतिकीबाधा होतो थोड़ासा
इसको पीलीजियेगा तत्कालतनदुरुस्तहोजावेगा बादशाहने श्रतिहर्षसेउसका हाथ पकड़
उसे श्रपने दाहिनी श्रौरबैठा लिया श्रौरकहनेलगातुमइसजलको श्रतिभयानकस्थानसेला

येहो इससे मैं तुमसे अतिप्रसन्न हुआ इस भयानक स्थानका हाल जादूगरनीने बादशाहसे क
हाथा फिर बादशाहने अहमदसे सब हाल तुम वहां कोंकर गये ओर शेरोंसे बचकर जल लाये शा
हज़ादेने कहा आपके प्रतापसे कुशल पूर्वक वहां पहुंचा फिर उसने संपूर्ण वृत्तान्त वर्णन कि
या जब बादशाहने अपने पुत्रका इतना साहस देखा तो प्रथमसे अधिक डरा ओर दस गुणा
बैर ओर भय उसके मनमें समाया तब उसे शोच विचार कर मंदिरमें गया ओर उस जादूगरनीको
बुलाभेजा ओर संपूर्ण समाचार उससे कहा वह तो पहिले यह सब हाल सुन चुकी थी अब
बादशाहसे सब वृत्तान्त सुन अत्यन्त विस्मित हुई फिर विनय की अबकी बेर अहमदसे इस
भांतिकी वस्तु मांगिये विश्वास है कि वह वस्तु न ला सकेगा बादशाहने उसको विदा किया
जब अहमद दूसरे दिन बादशाहके निकट आया तो उसने कहा हे प्रिय पुत्र मैं तुम्हारी सेवासे
अतिप्रसन्न हुआ अब तीसरी बात भी तुमको अवश्य है यदि तुम उसे भी करो तो जन्मभर तु
मसे प्रसन्न रहूंगा शाहज़ादेने विनय की वह कोनसी बात है आप कृपा कर कहिये बादशा
हने कहा मेरे पास एक मनुष्य लाओ जिसका डील एक गजसे अधिक न हो ओर उसकी बी
स गज़की दाढ़ी हो साढ़े ५० मनकी जरीब कांधेमें लेकर चले ओर वह उसे इस भांति फिराय
जैसे कोई काठके सोंटेको घुमाता है अहमदने विनय की इस भांतिका मनुष्य संसार भरमें उस

सव
९.
90

त्रनऊवाहोगा निदानजबवहवान् अफसराकेनिकटगयातब उससे यह हालवर्णनकिया औ
रवान्‌की ओरदेखकरकहा ऐसा मनुष्य जगतभरमेंनहोगा बादशाह समझेहुये विना यह
आज्ञा सफकोदेखुका यदिऐसा मनुष्यभीमिलातोइतनी भारी जरीब अपने कंधेपरकोंदेख
कायदिऐसामनुष्यभी मिलातोइतनी भारी जरीब अपनेकंधे परकोंकर उठासकेगा इत
ना कहाफिरकहनेलगा मेरेबिचारमेंतो कोई ऐसा मनुष्यनहीं जोतुम जानतीहोतोबता।
औउसने कहाइसबातमेंतुमकुछचिंता मतकरो तुमनेतो बड़ेभयानकस्थानसे अपनेपिता
को जललादिया यहबात उससेकठिननहींहै इसगुणवालामेराभाई शब्बरहै यदिवह
औरमैंएकहीमातापिताकी संतानहैं परंतु ईश्वरने उसकास्वरूपऐसाही रचाहै और व
हबड़ाथोर औरसाहसीहै औरअमृतकस्थानकाबादशाह है औरएकलोहेकी जरीबके
सिवाय औरशस्त्र अपनेपासनहीं रखता अबमैं उसकोबुलातीहूं तुम उससेकदाचित् नडरने
शाहज़ादे अहमदने कहाजो शब्बरतुम्हाराभाईहै औरउसकास्वरूपअद्भुतहै मैं उसको दे
खकर अतिप्रसन्नहूंगा जैसाकि कोई शख्स अपने मित्रऔरभाई बंधुके देखनेसे प्रसन्नहो
ताहै उसे देखकरक्यों डरूंगाफिरपरीबानूने स्वर्णकी अंगीठी मंगवाकरउसमें अग्निजला
ई औरएकसुवर्णकासंदूकचा मंगवाकर उसनेखोला औरउसमेंसे कोई सुगंधनिकाल उ

समेंडाली जबउसकापुत्रबांधवाउठातोकईदिनोंके उपरांत उसनेकहा मेराभाई शबर आयातुम
उसकोदेखनेहोवानहीं शाहज़ादेनेशिर ऊपरउठाके शबरको देखा किवास्तवमें उसका डील
गज़भरकाथा औरबड़ी नमकफमकसे आताथा उसके कंधेपरलोहेकी साठहः मनकीजरी
ब रक्खीऊईथी औरउसकी दाढ़ीबऊतघनी बीस गज़कीलंबीथी परंतु उसकोइस उपा
यसेरखनाथा किपृथ्वीसे नहींलगतीथी औरमस्तकके उसकीकानोंतक पऊंचते जिस्से उसका
शरीरछिपाऊआथा औरनेत्रउसके शिरमेंघुसऊयेथे औरशिरउसका जिसपर अति उत्तमम
णीजड़ितमुकुटथा आगे औरपीछेकोबड़ाथा अहमदशाहउसको देख नडरा औरउसी भांति
अपनीप्रियाके निकटबैठारहा शबरने आगेबढ़करउसकोएकदृष्टिसेदेखपूछा कि तु
म्हारे निकटयहकौन बैठाहै बानूअपसराने कहायह अहमदनाममेरापतिहिंदुस्तानके
बादशाहकापुत्रहै भाई मैंने अपने विवाह मेंतुमकोइसलिये नहींबुलाया कि तुमउन
दिनोंबड़े युद्धमें प्रवृत्तथे अबतुमने ईश्वरकी कृपासे अपने वैरियोंको परास्त किया इ
सलिये मैंने तुमको बुलाया इतना सुननेही उसने अहमदको प्रीतिसे देखा और अप
नी बहिनसेकहा कोई ऐसा काम इसशाहज़ादेकाअटकाहै किमैं उसे करूं उसने उत्तर
दिया हिंदुस्तानकाबादशाह अर्थात्इस शाहज़ादेकापिता तुम्हारे दर्शनों की इच्छाराख

सच
९।
91

ताहै कृपाकरके साथवहां जाओ उसनेकहामैं इसी समय जानेकोतय्यारहूं बानूनेकहाभा
ई आजतुमदिनभरके थकेहोकलभोरकोजाना और संध्याकोमैं संपूर्ण वृत्तांत अहमदका
तुमसे वर्णनकरूंगी तदनंतरबानूपरीने बादशाह औरउसके मंत्री आदिक संपूर्णसभास
दोंकाविशेष जादूगरनीका वृत्तांत वर्णनकिया दूसरेदिन प्रभातको शाह अहमदकेसा
थचला मार्गमें मनुष्य शाहके विकराल स्वरूपको देखकरभयसे दुकानों औरघरोंमेंछि
पकरबैठरहे और अपने २ किवाडों कोबंदकरलिया औरकोईघबराहटसे पगड़ियों औ
रजूतियों को छोड़करभाग गये फिरवह शाहोदर्बारमें गया जहां बादशाह अपने स
र्णसभासदों औरमंत्रियों सहित बैठाथा वहांभी मनुष्यशाहको देख छिपगये शाह
ने अतिग्लानि और अहंकारसेबादशाहके तख्तके निकटजाकरकहाकितूने मेरेदर्शन
की अभिलाषाकीथी सोमैं आया कहमुझसेक्याकाररखताहै बादशाहने उसकोविक
टरूपके देखतेही उत्तरदेनेकेबदले अपनेदोनों हाथ आंखों पररक्खे औरवहांसेभागने।
की इच्छाकी शाहरबादशाहकी अशीलतासे अति अप्रसन्नहुवा किमैंतो इतना परिश्रम
कर उसके बुलानेके अनुकूल यहांआया औरवह मुझेदेखकरभागताहै निदानलोहे।
की जरीबको उठाउसके शिरपरमारा किशिर उसका खंड खंड होकरचूर्ण होगया उस स

मयतक अहमद वहां नहीं पहुंचा था उसके पीछे यह उपद्रव हुआ इतनेमें अहमदभी पहुं
चा फिर शाबरने राजमंत्रीको मारना चाहा परंतु शाहजादे अहमदने उसको बचाया कि यह
मेरा अति हितैषी मित्र है इसने कोई अनुचित बात मेरे लिये नहीं की और सब मेरे बैरी हैं इ
तना सुनतेही सब प्रधान और मंत्री जो दोनों ओर पंक्ति बांधकर खड़े थे उन लोगोंके सिवाय
जो भाग गये थे कोई जीता न बचा सबके सब मारे गये फिर शाबरने सभासे राजभवनमें आ
कर राजमंत्रीसे जिसके प्राण शाहजादेके कहनेसे बच गये थे कहा उस जाहूगरनीको जो मे
रे बहनोईकी बैरिन है और उन बादशाहके सभासदोंको बुलाला कि उनको इस दुष्क
र्मका दंड दूं इतना सुनतेही मंत्री पहिले उस जाहूगरनीको और तिसके उपरांत सबस
भासदोंको जो शाहजादेके बैरी थे बुलालाया शाबरने उनकोभी लोहेकी जरीबसे मारा औ
र उस जाहूगरनीसे कहा कि तेरे बुरे उपदेशका फल यही है जो तुझको अब मिला तदनंतर
शाबरने नगरके मनुष्योंके मारनेका इरादा किया परंतु शाहजादेने सबको बचा दिया फ़ि
र शाबरने अहमदको शाही बस्त्र पहिनाकर तख्तपर बैठाया और उसके नामकी नगर भ
र में डौंडी पिटवादी नगरके संपूर्ण मनुष्य अहमदसे प्रसन्न थे उसके तख्तपर बैठनेसे अति
संतुष्ट हुये और अपनी सामर्थ्यभर भेंट देकर बड़े नादसे उसको आशीर्वाद देने लगे जब श

सच
९२
92

बरयहांपहुंचके प्रबंध करचुका तो अपनी बहिन को भी वहां ले आया तिसके उपरांत शाबर विदा
होकर अपने भवन को सिधारा अहमद ने अली और नूरुलनिहार को बड़ा उत्सव देकर एक न
गर का अधिपति करके बिदा किया और एक प्रधान को हुसेन शाहज़ादे के पास भेजकर क
हला भेजा जिस देश को तुम चाहो उसका बादशाह तुमको बना दें परंतु हुसेन उस दशा में
अति प्रसन्न था उसने राज्यपाट स्वीकार न किया और उसी प्रधान के द्वारा अहमद को कृतज्ञ
ता कहला भेजी और अपना जन्म ईश्वर के आराधन और तपस्या में बिताया शहरज़ाद इस
कथा को स्मरण करके दूसरे दिन तीन बहिनों के परस्पर ईर्षा की दूसरी कथा कहने लगी ऐ
से ही विचित्र चरित्र कहकर अपने प्राण को बादशाह से बचाती तीन बहिनों की कथा ॥
सर्वकाल में फारस देश का शाहज़ादा खुसरोशाह नाम बहुधा रातों को भेष बदल एक सेव
क को अपने साथ ले नगर की सैर किया करता और संसार के अद्भुत विषय जिनका वर्णन वि
स्तार से है देखता निदान जब शाहज़ादे के पिता का वृद्धावस्था के प्राप्त होने से देहांत होगा
या तो शाहज़ादा तख्त पर बैठा तो उसने अपना नाम खुसरो जारी किया और उसी भांति से
एक से वज़ीर को साथ ले और भेष बदल नगर के बाज़ारों और गलियों में फिरने लगा अकस्मा
त् एक गली में जा पड़ा वहां उसने एक घर में दो तीन स्त्रियों को बातें करते हुये सुना बादशाह ने

पासजाकर दरवाजेकीदरारसे फांककरदेखाकि तीनबहनें एकदालानमें बैठीहुई आपुस
में बातें करतीहैं वहकानलगाकर उसकीबातें सुननेलगा तथाच बड़ीबहिनने अपनाइसभां
ति मनोरथप्रकटकिया किमैंचाहतीहूं किमेराविवाह बादशाहकेरोटी पकानेवाले से
होकि अति उत्तम और स्वादिष्टरोटियां खाकरतुम दोनोंकोतरसाया करूं मझलीबहि
नने कहाकिमेरी इच्छायहहै किमेराविवाह बादशाहकेबावर्चीसेहो कि उत्तम उत्तम
भोजनकि जिनके आगे बादशाहकोरोटियां तुच्छहैं मेरेखानेमें आयाकरें तीसरी बहि
नने जोसबसेछोटी औरचतुर औरवाचालथी अपनी पारीमें कहाकिमेरी तुमदोनोंकी
सी छोटी इच्छानहीहै किंतुमेरीबड़ी इच्छाहै मैंचाहतीहूं कि इसदेशकेबादशाहसे मे
राव्याहहो और उसबादशाहसे एक पुत्रउत्पन्नहो जिसके एक ओरकेबाल सोनेके हों
और दूसरेतरफके रूपेके और जबवह बालकरोवेतो उसकी आंखोंसे मोती झडें और
हंसतीसमय उसकेलाल ओठकलीके सदृशखिलेहुए मालूमहोवें बादशाहउनतीनों
नींबहिनोंकेविशेष उसछोटी बहिनकामनोरथ सुन अति आश्चर्यमें हुवा और इच्छा
कीकि उनतीनों बहिनोंकी इच्छा पूर्णकरे इसबातको अपने मनमेंठान मंत्रीसेकहाकि
तू इसघरको खूब पहिचानरख औरसुबहको इनतीनों बहिनोंको मेरेपास लाइयो।

दान दूसरेदिन भोरको मंत्री उनतीनों बहिनोंको उनके घरमेंसे जाके बादशाहके सन्मुखलेग
या बादशाहने उनसे कहा किकलरात्रिको तुमक्या कहतीथी उनसबबातोंको मुझसे व
र्णन करोपरचेतनमरहो उसबातमें अंतरन पड़ेक्योंकि वह बातेंमुझको मालूमहैं और अ
पनेकानों सुनचुकाहूं इसबातको सुनकर वहतीनोंबहनेंमारे लज्जाके कुछ उत्तरन देसीं
कीं और अपने अपने शिरनीचे करके चुपहो रहीं बादशाह छोटी बहिनकोजो महा सुं
दर औरनखशिखसे बहुतअच्छी थी देखकर मोहितहोगया जबबहुतपूछा तोउन्होंने इ
न्कारकिया बादशाहने उनको दिलासादेकर कहाकितुम कुछभय मतिकरो और लाज
छोड़ जैसाकि रात्रिको बातेंकरतीथीं मुझसेवर्णनकरोकिमैं तुम्हारे मनोरथोंकोसिद्ध
करूं निदान उन्होंने अपने अपने मनोरथोंको प्रगट किया बादशाहने सुनकरबड़ी बहिन
का विवाह अपनेरोटीपकानेवालेके साथ और मझलीकाविवाह बावर्चीकेसाथ उसी
दिनकरदिया और अपने विवाहकी तय्यारीकी आज्ञादी तैय्यारीहोनेके उपरांत बादशा
होंके समानबड़े समथामसेविवाह किया औरबादशाहने उसको मलकाबनाया औरब
ड़ी दोनोंबहिनों काविवाह उनरसोई दारोंके प्रतिष्ठाके अनुसार अर्थात्बिनासमथामके
कियाथा उनसबको उचितथाकि अपनी अपनी अभिलाषाको पाकर प्रसन्नहोतीं परअप

ती छोटीबहिनके विवाहकीधूमधाम औरअनाप देखकर ईर्षाहुई और रात्रिदिन जला
करती एकदिन बड़ी औरमझली बहिन हम्माममेंनहानेकेलिये आईतहां बड़ीनेमझली
सेकहा छोटीबहिन हमसे ऐसीसुंदर नथी किमलकाहोती मुझको यहबातबुरीमालूम
हुई मझलीबहिनने उत्तरदिया बहिनमैंभी इसबातसेबहुत अप्रसन्नहूंमैं नहीं जानती
किबादशाहने उसेक्यादेखकरपसंदकिया वहतोमलकाहोनेकेयोग्य नथी मेरे विचार
से वहिनतूहीबादशाहके विवाहके योग्यथी बादशाहको उचितथा कितुझेही म
लका बनाताबड़ीबहिनने उत्तरदिया किमैं अति आश्चर्यमेंहूंजिसका वर्णननहीं करस
कीयदि बादशाह तेरासौंदर्य्य पसंदकर तुझसे विवाह करतातो उसछोकरीसे हजारहे
स्से अच्छाथा निदान बादशाहको अपनीजिसे हमबड़े खेदमें रहतीहैं अबकोई ऐसीयत्न
कियाचाहियेकि जिस्से वहछोकरी बादशाहकीदृष्टिसे गिरजावेसो वह दोनों बहिनें इ
सी चिंतामें रहकर भेंटहोनेपर यही बातेंकियाकरती औरउसके मारडालने औरकष्टका उ
पाय सोचतीं परकुछ्बन बनपड़ता औरछोटीवहिन उनदोनोंका अति सत्कारकरती और
जिस भांतिउसको उनदोनोंसे पहिले प्रीतिथी अबभीवही प्याररखती संयोगसे कितने म
हीनोंके उपरांत उसकेगर्भरहा औरबादशाह इसखबरको सुनकर अतिप्रसन्नहुआ और

सच
४४
94

र अपनेसंबंधित संपूर्णनगरोंमें घोषणाकरनेके वास्ते आज्ञादी वह दोनोंवहिनें अवसर या
र अपनेसंबंधित संपूर्णनगरोंमें घोषणाकरनेके वास्ते आज्ञादीवह दोनोंवहिनें अवसर या। ह
केबादशाहके महलमेंगई औरमलकासेकहाकिहमको ईश्वरने यहदिन दिखाया ह
मचाहतीहैं किजबप्रसूतिकासमयहोतो हमही जनगयें औरचालीसदिनतक कामकी
जकेलिये उपस्थितरहें मलकानेकहाबीबियो बहुत अच्छा तमसे औरकौन अधिकवि
प्रसिन्नहोगाकि जिनका हमयेसेकाममें विश्वासकरें परमें बादशाहकी आज्ञापालक।
हूं उनकी आज्ञाके बिनाकोईकाम नहीकरसक्ती इससेउत्तमहै कि तुम्हारेपति बादशा
हसे इसआज्ञाकोलेलें निश्चयहै कि बादशाह रिश्तेदारी केसबबसे रहनेकी आज्ञा
देदेंगे फिरउनदोनोंके पतियोंने अपनी स्त्रियोंकाकहनामानकरबादशाहसे अपनेस्त्रि
योंके रहनेकी प्रार्थनाकी बादशाहने कहाकि मैंस्वच्छकर उत्तरदूंगा फिरबादशाहने
अपनीस्त्रीसे पूछा तुम्हारी इच्छाहोतो तुम्हारीबहनें प्रसूतिके समयतुम्हारेपास उ
पस्थितरहें मेरेविचारसे बेगानोंसे उनकारहना ऐसे समयपर उत्तमहोगामलकाने क
हाकियहबात मेरेबिचारसेभी बहुत अच्छीहै तथाच मलकाकी दोनों बहनोंकेरहने
की आज्ञादी औरवहदोनों उसीसमयसे बादशाहके महलमेंरहनेलगीं अबउनको
अपने मनोरथके अनुसार अवसरमिलगया जबमलकाको प्रसूतिका समयपहुंचा।

तो उसे अतिसुंदर पुत्र उत्पन्न हुवा जिसके देखनेसे उनदोनोंके मनमें ईर्षा बढ़गई और म
लकाकी दृष्टि बचाकर उसपुत्रको एक कमलके टुकड़ेमें सावधानीसे लपेट और एक पि
टारीमें बंदकर नहरके बहावमें जो मलकाके महलमें जारीथी डाल दिया और उसकी
जगह एक कुत्तेका मुआ पिल्ला लेकर लोगोंको दिखाया कि मलका यह जनी है यह खब
र बादशाहको पहुंची इससे अति क्रोधित हुवा और मलकाके मारडालनेका इरादा किया
परंतु मंत्रीने जो संयोगसे उपस्थित था बादशाहकी कहरसख्त कर रोका और मलकाकी।
निर्दोषिता बहुतसे प्रमाण देकर प्रतीत कराई अकस्मात् वह पिटारी बहते बहते बागों।
की नहरमें गई और बागके दारोगाकी दृष्टि जो नहरके किनारेपर टहल रहाथा उस।
पिटारीपर पड़ी उसने तुरंतही एक बागबानको पुकारा और उस पिटारीको दिखाकर
कहा कि शीघ्रजाकि उसपिटारीको मेरेपास ला कि मैं देखूं उसमें क्या है बागवान दौड़कर न
हर किनारे गया और किसी लकड़ीसे खींचकर पिटारीको बाहर निकालकर दारोगाके
पास लाया दारोगा उसीसमयका पैदा हुवा अतिसुंदर लड़का कमलमें लिपटा हुवा उ
स पिटारीमें देखकर अति आश्चर्यमें हुवा वह दारोगा निपुत्रा था और संतानके लिये स
दैव ईश्वरसे प्रार्थना करताथा उसबालकको देखतेही पिटारी समेत घरको ले गया औ

सच
९५
95

र अपनी स्त्रीसे कहा कि ईश्वरने मुझको यह लड़का दिया है अभी एक दाई बुलवाकर दूध पिलवा और इसको अपने उदर का पुत्र जान बड़ी सावधानीसे पालन पोषण कर उसकी पत्नी अति प्रसन्न होकर उसका पालन करने लगी दारोगा ने इस बातकी ऊछ भी तलाशन की कि वह बालक कहां से आया और मनमें समझा कि वह लड़का निश्चय करके मलका के महल से आया है दूसरे वर्ष मलका के एक और पुत्र उत्पन्न हुवा और उसको दुष्ट बहिनोंने ईर्षासे उस बच्चे के साथ वही बर्ताव किया अर्थात् उसको भी कपड़े में लपेट और पिटारी में बंद कर उसी नहरमें डाल दिया और यह बात प्रसिद्ध की कि अबकी बेर मलका के बिल्ली का बच्चा पैदा हुवा संयोग से वह लड़का भी दारोगा के हाथ लगा उसने वह बच्चा भी ले जाकर अपनी भार्या को दिया और कहा इसको पाल: बादशाह इस हाल को सुनकर क्रोध से अधिक अप्रसन्न हुवा और मलका के मार डालने की इच्छा की परन्तु मंत्री ने कह सुनके इस बेर भी मलका को बचाया और बादशाह के क्रोध को समझा बुझा के निहत किया तीसरी बेर मलका के लड़की पैदा हुई और वह भी अपने भाइयों के सदृश पिटारी में बंद करके नहर में डाली गई और वह लड़की भी उसी दारोगा को मिली और उसने उसको भी अपनी स्त्री को देकर कहा उन दोनों लड़कों के साथ पाल उन दोनों बहिनों ने प्रकट किया कि अबकी बेर मलका के कुछ दुरूपै दा हुई बा।

दशाहकोइसखिरका क्रोधनथमा श्रोरइसके सुनतेही कहाकिऐसीस्त्रीकोजो जीताछोडूंगा
तोमेरे महल कोयेसे २ जंतुपैदाकरकेभरदेवेगी श्रवउचितहै कि उसकोमैं मारडालूं राजमंत्री
श्रोरसभासद् जोउपस्थितथे बादशाहके चरणकमलों परगिरपड़े श्रोरक्षमामांगी श्रोरमंत्री
नेहाथ बांधके विनयकी कि हेशाहनशाहऐसे मनुष्यकामारडालना जोनिर्दोषहो उचित
नहीं विधाताकी रचनामें कोईउपायनहीं चलताजो श्राप उससेऐसेहो श्रप्रसन्नहैं तोउसके
शासन जायाकीजिये श्रोरकुछदान पुण्यकीजिये पारसका बादशाह ऐसी ऐसी बातें सु
नकरसमझाकिवास्तवमें मलकाकामारना श्रनुचितहै तबमंत्रीसेकहाकिमैं उसकोन मा
रूंगा परएकदंड उसकेलियेमैंने बिचाराहै बहमारडालनेसेभीबुराहै एककेदखाना जामा
मसजिदकेदरवाज़ेकेपासबनवाया जावे श्रोरमलकाकोकाटकेपिंजडेमें कैदकरके उसमें
रक्खाजावे जोमुसल्मान निमाज़ पढ़नेकोश्रावेतो पहिलेमलकाके मुखपरथूककर श्रपना
पगमसजिदके भीतररक्खा करेकदाचित् कोईमनुष्यऐसानकरेतो वहभीऐसा दंडपावे बादशा
हसेयहबातमंत्री सुनकरचुपहोरहा श्रोरयह श्राज्ञामानी कदाचित् यहदंडजो बादशाहने
निर्दोषमलकाकेलिये बिचाराथा उनदोउहवहिनोंको दियाजाता तोउचितथा निदान कैदखा
ना तय्यारहोगया श्रोरवह बेचारी मलका उसमें कैदकीगई श्रोरनगरवासीजो मसजिदमेंनिमा

सव
१८
९६

ज पढ़नेको जातेतो पहिले उसमलका केसंह पर स्यकते बहुबेचारी संतोष करके इसदुःखको
सहतो औरजोकोई उसके अपराधको जिसके सबबसे बादशाहने यहदंडनियतकियाथा।
सुनता तोउसको निर्दोष समझदयाकरता औरउसके इसदुःखसे छूटनेके लिये ईश्वरसे प्रा
र्थनाकरता दारोगा औरउसकी स्त्री उनदोनों शाहजादों औरशाहज़ादीको बड़े प्यारसेपाल
ते औरज्यों २ वहबढ़तेसों २ उनदोनों प्राणियोंकी हर्षहोता जब वहतीनों मयानेहुये तो
दारोगाने बड़ेकानामबहमन औरछोटेका नामपरवेज़ औरलड़कीकानामपरीज़ादरक्खा
जबशाहज़ादे पढ़नेके योग्यहुयेतो दारोगाने उनकेलिखने पढ़ानेकेलिये बड़े बड़े वि
द्वान नियतकिये औरशाहज़ादी कोभी जबलिखने पढ़नेकोइच्छा पाईतो उसकोभी उन्हींवि
द्वानोंकोसौंपा कईदिनोंमें परीज़ादभी अपने भाइयोंकी भांति लिखपढ़केनिपुणहोगई
औरविद्वानोंसे कविता इतिहास औरबहुतसी विद्या उनतीनोंने सीखी थोड़ेदिनोंमे बहुये
से पढ़लिखकर प्रवीणहुये कि उनके अध्यापकोंको आश्चर्यहुवा औरकहनेलगे कियह
तो हमसेभी निपुणहैं फिरउनतीनों नेघोड़ेकीसवारी तीरंदाज़ी औरसिपाहगरी औरनेज़ह
चलानेकी प्रक्रिया आदिसीखी इनगुणोंके विशेषपरीज़ादने गानाबजानाहरएकसाज़
काभीसीखा दारोगा इनतीनों सन्तानकी सबविद्या औरगुणोंमें समपन्नपण करअति प्रसन्नहु

वा और जो कि उसका घर उनके रहने के योग्य न था इसलिये नगर से बाहर जाकर उसने थोड़ी दूर

पर जंगल और हरियाली के निकट जगह मोल लेकर वहां बड़ा बड़ा महल बनवाना प्रारंभ कि

या और आठ दिन रात उसके बनवाने में प्रवृत्त रहता जब वह मकान बन गया तो उसने बड़े २

चित्रकारों से भीतर बाहर बड़ी सुंदरता से चित्रकारियां बनवाईं और अच्छी अच्छी वस्तुओं से

उसे सजाया और उसके पास एक अति सुंदर पुष्प वाटिका बनाई जिसमें सब प्रकार के फूल

और मेवों के वृक्ष लगाये और सिवाय इसके एक बड़ा रमना तय्यार किया जिसके चौगिर्द

चौदीवारें खिंचवाकर उसमें सब प्रकार के शिकारी जानवर पशु पक्षी पाले कि वह दोनों

शाहजादे और शाहजादी उसमें अहेर खेला करें जब वह मकान सब तरह से तय्यार हुवा

तो दारोगा ने बादशाह से जाकर उसी महल में रहने की आज्ञा मांगी बादशाह कि उससे अति

प्रसन्न रहता था उसे प्रसन्नता से आज्ञा दी सो दारोगा बादशाह से बिदा होकर उन तीनों स

मेत उस महल में रहने लगा उसकी स्त्री को कई वर्ष पहिले नष्ट हुई थी और वह महल में आने

के पांच छः महीने के उपरांत अकस्मात् बीमार होकर मर गया और इतना सावकाश न पा

या कि उन तीनों संतानों को उत्पन्न होने का हाल बतलाये पर केवल इतना ही कहने पाया कि

बाबा तुम प्रतिष्ठा पूर्वक बहिन भाई मिले रहना उसके देहांत के उपरांत बहमन और परवेज़

सच
९०

औरपरीज़ादने यथोचितभोग किया औरपरस्परप्रीति पूर्वक रहनेलगे शाहज़ादे कि बड़े उद्योगी और रहीमलेवरषो इससेबड़े दरजेको पहुंचेएकदिन दोनों शाहज़ादेशिकार खिलनेको गये और परीज़ाद शाहज़ादी अपने घरमें अकेलीरही संयोगसे एक धर्म्मिष्ठ हदा उसके दरवाजे परआई औरउसने शाहज़ादीसे इच्छाकीकिजो आज्ञाहोतोमें मकानके भीतर आकर नि माज़पढ़ं क्योंकि मेरानिमाज़का समय जाताहै शाहज़ादीने उसेभीतर आनेकी आज्ञादी जबवह हदा अपने नियमित बंदना औरआराधनसे निश्चिंतहुई तो दासियां शाहज़ादी की सैनके अनुकूल उसेसारे महल औरबागमें फिरालाई औरउसने सबकी तरहवह म हल औरबाग असबाब सामानकोदेखा औरअति प्रसन्नहुई औरमनमें शोचीकि जिसम नुष्यनेइस मकानकोबनायाहै वहमकानोंके बनानेमें अतिनिपुणथा फिर लौंडियों उस हदाकोपरीज़ादके पासकि वह बारहदरीमें बैठीथीलाई शाहज़ादीने उसकोदेखकर कहाकिहेमाता आओ औरमेरेपास बैठोऐसीधर्म्मिष्ठ औरआचारवानसे जैसोकितुमहो संगति करके अपनेको कृतार्थसमझतीहूं तुमने ईश्वरके आराधनका ऐसा आचारसी कारकियाहै किसबकोई उसीमार्गकी इच्छाकरतेहैं हदाने चाहाकि उसमकानके नीचे बैठे परंतु शाहज़ादीने सुशीलतासे उठकर उसकाहाथ पकड़ अपनेसाथबैठा लियाउस।

सुहानि कहा बीबी तुम सौशीलवान मैंने किसी स्त्री को नहीं पाया यद्यपि मेरी ऐसी पदवी नहीं कि
मैं तुम्हारे पास बैठूं पर आपकी आज्ञा प्रतिपालन को फिर वह सुहा परीज़ाद से बात चीत करने ल
गी इतने में लौंडियों ने बरतन बिछाकर उनमें नाना भांति के भोजन उजले रोटियां और रत्त खिचड़े
मीठे मेवे न शर्बतियां मेरकवे और कई प्रकार की मिठाई लाकर चुनी शाहज़ादी ने एक रोटी उठा
कर उस बुढ़िया को दी और कहा है माता इसको भोजन कर और जो मेवे तुमको अच्छे लगें उ
नको खाओ क्योंकि तुम बड़ी दूर की यात्रा से निकली राह में भोजन करने का संयोग न जवा होगा
उस तपस्विनी सुहानि कहा मुझे ऐसे स्वादिष्ट भोजनों के भोजन करने का अभ्यास नहीं है पर जो
अब खाऊं तो हानि नहीं क्योंकि ईश्वर ऐसी उदार स्त्री के हाथ से भोजन खिलवाता है जब उस सुहा
और शाहज़ादी ने थोड़ासा भोजन खाया तो शाहज़ादी ने ईश्वर की वंदना का प्रकार उससे सुना
उसने अपनी बुद्धि के अनुसार उसे बताया फिर उस बुढ़िया से सुना कि यह महल कैसा बना है
सब मकान और असबाब रीति के अनुसार रक्खा है कोई वस्तु इस मकान और बाग में दरकार
है या नहीं सुहानि कहा है सुंदरी इस बात को मुझसे मत पूछ यद्यपि यह बाग और मकान ख
ब बना है और रूपरतन रहसे अलंकृत न है परंतु मेरे विचार से तीन वस्तुओं की इसमें जरूरत है अ
गर वह भी इस बाग में हो तो सब तरह से यह उत्तम होगी परीज़ाद ने सौगंद देकर उससे सुना कि

वहतीन चीजेंकौन कौनहैं में उनके एकट्ठेकरनेमें अतिपरिश्रमकरूंगी निदानशाहजादीकेब
हुतकेनेरार करनेसे इन्होंनलाचारहोके कहाहै सुंदरी पहिले एकपक्षीहै जिसको बुलबु
लहजारदास्ता बोलतेहैं और वह नायाबहै कहीं नहींमिलता जबवहत्रियवालोंसे बो
लताहै तोहज़ारों जानवर उसकी सुंदरवाणी सुननेके वास्ते आतेहैं औरउसकी आवा
जके साथ अपनी आवाज मिलातेहैं दूसरे एक वृक्षहै जिसके पत्तेबजनविकनेहैं औ
रपवनकेलगनेसे जबएकपत्ता दूसरे पत्तेकेसाथ रगड़ैतो अच्छी आवाज़ औरभांति भां
तिकेगान सुनाईदें जिसके सुननेसेमनुष्य बिकलहोजाय तीसरे सुनहरे रंगका पानी
कि जोएकबूंद उसकी किसी ठिलियामें डालकरबागमें रखदेवतो थोड़ी देरमेंवह बरत
नभरजावेगा औरफिरफव्वारेकेसमान उछलता औरछूटतारहेगा कभीभीबंद नहोगा
औरपानी उठकरफिरउसीबरतनमेंपड़ताहै शाहज़ादीने कहानिश्चयहै कितुमको ऐसी
विचित्रवस्तुओंकाहालमालूमहोगाकिकहांहैं मुझकोउस जगहकापता बतला इन्होंने
कहायह तीनोंचीजें हिंदुस्तानसेपृथकदेशों अर्थात औरविलायतों मेंमिलेंगी औरइस
जगहसे अमुक ओरको बीसदिनकीराह परहैबीसवें दिनजाकेपूछना किगानेवाली
चिड़िया औरगानेवाला वृक्ष औरसोनेके रंगकापानी कहांहै वहमनुष्यजिससे तुमको

पहिले भेंट होगी इन तीनों चीज़ों का ठिकाना बताये गा यह कहकर ब्रह्मा ने शाहज़ादी से
विदा होकर अपनी राह ली परीज़ाद ने वह बातें जो उस ब्रह्मा से सुनी थीं ख़बयावर कावी ह
ा यह समझनी थी कि शाहज़ादी ने साधारण इन चीज़ों का पता सुना है न यह कि आप
ही वहां जाने का इरादा करेगी इसलिये उसने साफ़ पता बता दिया और परीज़ाद उसको
ख़बयाद राव इन चीज़ों की प्राप्ति का उपाय विचारने लगी इसी चिंता में थी कि उसके भाई
शिकार से लौट आये परीज़ाद को इस दशा में देखकर अति विस्मित हुये निदान बहमन ने उ
ससे पूछा कि बहिन आज तुमको शोचित हो ईश्वर न चाहे क्या तुम कुछ बीमार हो गई अ
थवा कोई बात तुम्हारी मरज़ी के प्रतिकूल हुई हो तो हमसे कहो कि हम उसका कोई उपाय
करें शाहज़ादी ने थोड़ी देर तक कुछ उत्तर न दिया फिर अपना शिर उठा दोनों भाईयों की ओर
देखा और फिर नीचे आंखें करके कहा कि कुछ नहीं बहमन ने कहा कोई बात अवश्य है जो
हमको नहीं बताती हो अब हम तब तक तुम्हारे पास से न जावेंगे जब तक तुम अपने रंज का
हाल प्रगट न करोगी जब परीज़ाद ने देखा कि दोनों भाई बड़े आग्रही हैं तो लाचार होकर कहा
यद्यपि इस चिंता का हाल प्रगट करना तुमको भी रंज देता है परंतु बे कहे नहीं बनता इसलि
ये वर्णन करती हूं कि यह घर हमारे पिता ने हमारे लिये निर्माण कराया बड़ा उत्तम हुवा है प

सच
५५
99

र आज मुझे मालूम हुआ कि जो तीन चीजें इस महल और बागोंमें होतीं तो यह अपूर्व था और स
सारमें इसके सदृश कोई मकान न पाया जाता वह तीन चीजें यह हैं एक चिड़िया बोलने वा
ली और दूसरा गानेवाला दरख्त तीसरे सोनेके रंगका पानी जबसे मैंने इन तीनों चीजोंका हाल
सुना तो मुझको इनकी अति लालसा हुई कि जिस तरह हो सके इन चीजोंको पैदा करके अप
ने घरमें रक्खूं जो तुमसे हो सके तो तुम इन चीज़ोंको ढूंढनेमें मेरी सहायता करो वहमनने क
हा तुम उस जगहका जहां यह तीनों चीजें पाई जाती हैं नाम और निशान मुझको बता दो कि मैं
कल सुबहको उठकर जाऊं परवेजने जवाब दिया कि बड़े भाई सफर करनेको तय्यार है तो कहा भाई
तुम हमसे बड़े हो तुम्हारा घरमें रहना उचित है मुझे आज्ञा दो तो मैं ही सफर करूं औ
र तीनों चीजोंको ढूंढकर अपनी प्यारी बहिनके लिये लाऊं वहमनने कहा भाई मुझे तुम्हा
रे साहस और हिम्मत पर निश्चय है कि जो काम मुझसे न हो सकेगा उसको तुम ही सिद्ध कर लो
गे पर जो मैं जाऊं तो अच्छी बात है तुम अपनी बहिनके पास रहो दूसरे दिन शाहज़ादा वहमन
ने उस जगहका नाम और निशान जहां यह तीनों वस्तु थीं परीज़ादसे पूछकर बिदा मांगी औ
र शस्त्र बांधकर घोड़े पर सवार हुआ उस वक्त परीजादको अपने भाईके वियोगसे बड़ा दुख हुआ
और रोकर कहने लगी भाई मुझे तुम्हारा वियोग असह्य है मैं नहीं चाहती कि तुम मुझसे औ

र अपने भाईपरवेजसे अलगहोचुके इनतीनों चीजोंकेन पानेसे इतनाडावनहोगयाजितना
तुम्हारे वियोगसेहै कदाचित् हमरोज़काहाल तुम्हारा मालूमहोतातोभी कुछ्नकुछ्ह
मदोनोंको धीर्यहोता शाहजादे बहमनने कहामैं इस सफरका पक्का इरादाकर चुकाहूं
औरबहुत जल्दीइसकामकोकरके आनमिलताहूं कुछ्चिंतामतिकरोकदाचित् मेरीजानि
के उपरांततुमको मेरेहालके मालूमकरनेकीइच्छाहोतोमैं तुमको अपना निशानदियेजा
ताहूं उससे मेराबुरायभलाहाल मालूमहो जावेगा यहकह करबहमनने अपनी कमरसेएक
ककरौली निकालकरपरीज़ादको दी औरकहातुमइसको अपने पास रक्खो जिसदिनवा
जिसवक्ततुमको मेरी कुशलकाहालका हालमालूमकरनाहोतो तुमइसकोनिकालक
रदेखना जोइसको साफ औरचमकता हुवा पातातोसमझनाकि मैं कुशल क्षेमसेहूं जोउ
समैल फटपकताहुवादेखनातो सुकेजीतानसमझनामेरोशाहज़ादाइसतरहसे परीज़ाद
कोधीर्यदेकर सिधारा औरसीधी गहली कहींरसतानभूला जवबीसदिनकी राहपारसेदे
शासेलांघचुकातो उसने एकहद्दकोजिसका स्वरूप अतिभयानक औरविकरालथा देखा
कि एकहद्दकेनीचे बैठाहै औरउससदरखकेपास एकफोपड़ा पड़ाहुवादेखाकि उसकेस
बबह उसागता और शीतसेबचारहता वहइतना बुड्ढापायाकि भौंवें मूछें औरदाढीकेबाल

सच
१००

बरफकेसमान सफेदथे औरइतनेलंबे और उंजानथे कि उसके सारे मुंहको छिपालिया था औरदाढ़ी उसकी पेटतक पऊंचीथी औरहाथपांवके नाखुन बऊत बढ़गयेथे वह बुड्ढा अपने सिरपर एकटोपी लंबीसी पहिने औरसारे शरीरमें एकचटाई लपेटेऊये था वहकोई सिद्धथा जो बऊत दिनोंसे संसारकामोह माया छोड़ ईश्वरकी बंदगीमें प्रवृत्त ऊवाथा इसलिये उसका ऐसास्वरूप बनगयाथा वहमन उसदिन अभानसे ऐ ऊफताथा कि ऐसी मनुष्यकोदेखाकि जिससे उन तीनों चीजोंका ठिकाना लगे उससिद्धको कि पहिले बहोइ सबीसदिनके पीछे मिलाथा देखकर उसके पास आखड़ा ऊवा औरसमझायह वही मनुष्य है जिसको असतुफियाने बताया था फिरशाहजादेने घोड़ेसे उतरके उससिद्धको दंडवत कर आशीर्वाद दिया कि हे पिता ईश्वर तेरी आयुअधिक करे औरसबतेरे मनोरथ सिद्धि करे सिद्धने उसशाहजादेको दंडवत का उत्तर दिया पर कुछ शाहजादेके समझ में न आया शाहजादेने मालूम किया कि मूछोंने इससिद्धका मुंह ऐसा बंद कर रखा है जिससे कुछ समझमें नहीं आता फिर शाहजादेने चोड़ दराज़से बोधकर मिकराज निकाली और कहा हे सिद्ध तुम्हारी मूछें इतनी बढ़गई हैं कि सारे मुंहको बंद कर रखा है जो मरज़ी होतो मैं तुम्हारी मूछें औरभवें कतरडालूं कि उनके बढ़नेसे तुम्हारा स्वरू

पक्षीके समान बनगया है मनुष्य नहीं मालूम होते उस सिंहने इशारेसे कहा बहुत अच्छा शाहजा
देनेके चोंचसे उसकी मूछें और भवें कतरडाली सो उसहदका चेहरा जवानोंके मुखके सदृश मा
लूम होने लगा शाहजादेने कहा यदि मेरे पास शीशा होता तो मैं तुमको तुम्हारा स्वरूप दिखा
ताकि तुम जवान मालूम होते हो और पहिलेसे अब तुम्हारा मनुष्यकासा स्वरूप मालूम होता है
ऐसे स्वार्थकी बातोंसे वह सिंह मुस्कराया और कहा मैं तुम्हारी सेवासे प्रसन्न हुवा जो सेवा मुझ
से हो सके मैं करूं तुम्हारा क्या अर्थ है मुझसे कहो तो मैं अपनी सामर्थ्य भर इसमें परिश्रम करूं
शाहजादेने कहा है सिंह मैं बहुत दूरसे बोलती चिड़िया और गानेवाले दरख्त और सुनहरे पा
नीके लिये यहां आया हूं और मुझे मालूम है कि यह तीनों चीजें निकट हैं परंतु उस स्थानको
नहीं जानता जो तुम जानते हो तो दया करके मुझे बताओ शाहजादेकी यह बात सुन सिंहके
मुखका रंग उड़गया और नीचे आंखें करली और कुछभी उत्तर न दिया शाहजादेने फिर सि
हसे कहा हे पिता मैंने जो कुछ तुमसे कहा तुमने समझाया नहीं जो तुम इस हालको नहीं
जानते तो वैसाही मुझसे कहो कि मैं किसी और मनुष्यसे जाकर पूछूं सिंहने बहुत देरके पी
छे उत्तर दिया उस जगहको जिसे तुम पूछते हो जानता हूं परन्तु तुमने मेरी बहुत सेवा की है
इसवास्ते तुमसे प्रीति होगई है इसलिये नहीं चाहता कि इस राह और स्थानको तुम्हें बताऊं।

सच
१०१
[101

शाहज़ादेनेकहाक्या कारणहै कितुममुझसे उसस्थानको छिपातेहो सिद्धनेकहा उससमा।
गमें बहुतसे भयहैं सिवाय तुम्हारे और बहुतसेमनुष्य इसजगह आये और मुझसे उस म
कानकोराह सेपूछी मैंने उसराहकेबताने मैंबहुतछोलकी परउन्होंने मेरी बात नमानी।
निदानमैंने लाचारहोके उसरस्तेको बताया सबतुम निश्चयमानो किवहसबके सबउसी
राहमेंमारेगयेकोई मनुष्यजीता बचकरइधरन आयाजोतुमको अपनीजानप्यारीहै तो
मेरा उपदेशमानो औरआगेमतजाओ यहींसे अपनेघरफिरजाओ शाहज़ादेने कि आप
ने इरादेपरदृढ़थाउस सिद्धसेकहातुमने अतिप्रीतिसेजो यह हितकारकउपदेशाकिय
मैंने उनकोसुना इसकामें अतिउत्तमानताक्याहो इसमार्गमेंकितनेनहो भयहो परमैं
अपनेइरादेसेहटनहींसकतायदिमुझपरकोई चपड़भी आवेगातो अपने शस्त्रोंसेजो मेरेपा
सहैं अपनीरक्षाकरूंगा औरमुझे निश्चयहै किकोई मुझसे अधिकसाहसी औरपुरुषार्
थीन होगासिद्धने कहा तुम्हारे साम्हनेहोके उसमकानमें जानेकेबाधकनहोंगे किंतु व
ह दिखाईनदेंगे फिरतुमकोकरउनसे बचसकोगेशाहज़ादेने कहामुझे इनकाकुछ
भयनहीं तुममुझेराहबताओ सिद्धने जबउसशाहज़ादेकोइस इरादेमें दृढ़पायातो उसने।
अपनीथैलीमेंहाथडालकरएक गेंदनिकाला औरकहाखेदहै कितुमने मेरे उपदेशको

इसगेंदकोलो औरजबतुमसवारहोतो इसगेंदको अपने आगे।
नमाना अबमैंलाचारहूं इसगेंदकोलो औरजबतुमसवारहोतो इसगेंदको अपने आगे।
नमाना अबमैंलाचारहूं इसगेंदकोलो ... जबगेंदएकपहाड़ के
उलटदो वह लुढकताजाया आगेकोजावेगा तुमभी उसके पीछे जानाजबगेंदएकपहाड़ के
नीचे ठहर जावेतोतुमघोड़ेसे उतरना औरघोड़ेकी गरदनपर बागडालकरछोड़देना वह
थोड़ा वहांसेजबतक कि तुमफिर न आओआगेकहीं नजावेगाफिरजबतुमउस पहाड़परच
ढोगेतो अपने दाहिने गयेबड़े बड़े काले पत्थरदेखोगे और अपनेचारों ओर बुरे बुरे श
ब्दसुनोगे जोतुमको कोप औरभ्रमदिखावेंगे औरतुमसे पहाड़केशिखरपर जाने नदेंगेप
रंचेतरहोतुम आवाजोंसे मतडरना औरमुंहफेरके पीछेनदेखनाजोतुम डरोगे अथवा
मुंहफेरके पीछे देखोगे तोउसीसमयकाले पत्थरबनजाओगे जोतुमको मार्गमेंपहाड़प
र दिखाई दिये वहसबतुम्हारी तरहउनहो तीनचीजोंकेलनेकेलियेगये औरउ
नके सब तुम्हारी तरह उनआवाजों सेडरके काले पत्थरहोगये जबतुमउसएकपहाड़केसिरपर पहुं
चोगेतोवहां परएकपिंजड़ा पाओगे जिसमें बोलती चिड़िया उसकेभीतर बैठीबोलती
होगी तुम उसचिड़ियासे पूछनाकिगानेवाला दरख्त औरसुनहरी रंगकापानीकहां है व
हचिड़िया दोनोंचीजें तुमकोबतावेगी फिरजब तुम उनतीनोंको पाओगेतोफिरकुछभय
नरहेगा फिरभीतुमसे कहताहूं कि अभीकुछ बिगड़नहींगयामेरा कहनामानकेतुम इसउद्योग

सव
१०२
102

कोछोड़दो और अपनेघरचलेजाओवह मनने सिद्धसेकहा अवतोमें अपने प्रयोजनकोसिद्ध
कियेविनावहीं फिरता अबमें उसतरफको सिधारताहूं यहकहके शाहजादेने चोड़े परसवा
रहो उसगेंदको अपने आगे फेंकदिया वहगेंदजल्दी २ लुढ़कताहुवा आगेकोचला शाहजा
दाउसके पीछे उसी गेंदकी तरफदेखताहुवा जाता जबवह गेंद उसपर्वतके नीचे जिसका उस
सिद्धनेवर्णन कियाथापहुंचातोवह रगयाशाहजादाभी उसी जगह परजाकर उतरा औरघो
ड़ेको लगाम गरदनपरडालकरवहीं छोड़दिया औरआपपहाड़ परचढ़नेलगाजहांतकउ
सकीदृष्टि उसपर्वतपर पड़तीथी कालेपत्थर पड़ेहुये उसको दिखाईदेतेथे अभीचारपांचक
दमहुयस्त चढ़ाथाकि वहांचहुं ओरसे शोरजैसाकि सिद्धने कहाथा सुनापरशाहजादेने कि
सीकोवहां नदेखा कभीसुनताथा किकौनये अहमकहैकिधरकोजाताहै इसकोनजाने
दो औरकभीवहां सेयह आवाज आतीथी किइसकोपकड़कर ठहराओ औरवधकरडा
लो औरतीसरी ऐसे जोरसे आवाज आईकिजैसे वादलगरजताहै औरउसमें कोईकहता
है हैचोर देखनी हैकातिल औरकभीयह आवाजधीरेसे उसकेकानों में पहुंचती इसको
छोनकहो इसमनुष्यकोकि अच्छाशिकारहै जानेदो यहवहीमनुष्यहै जोपिंजड़े और
चिड़ियाकोले आवेगा वहमन इनबातोंकोसुनकरकुछनडरा औरपर्ववत् बड़े साहससे

परंतुजबपास ओरखड़ेओरसे आवाजें उसको पहुंचने
रदिलावरीसेपहाड़परचढ़तागया कि उसकेपांवकांपने ओरथरथरानेलगे ओरठहरनसका सि
लगी तोवहऐसाभयभीतहुवा ओरमुखफेरकेदेखनेलगा उसके मुखफेरतेहीका
हकोसबवातेंमारेभयकेभूलगया जादासेवहमनशाहजादा बिदाहुवाथा तबसेवह उसछुरी
लापत्थरबनगया जबसेपरी ओरजबचाहतोउसको निकालकेशाहजादेका
कोगिलाफसमेतअपनीकमरमें रखती जिसमें कि शाहजादा पत्थरहोगयाथा करे
हालमालूम करलेती ओरउसदिनकेपहिले परउसदिनपरवेज शाहजादेने परीजादसे
बेरछुरीकोदेखातोउसेसाफ ओर उज्वलपाया परीजादनेछुरी निकालके
कहाबहिन मुझेछुरी दोतोमैं उसमें अपने भाईकाहालदेखूं तोउसछुरीसे रक्तकीबूं
रपरवेजकेहाथमेंदी जबपरवेजने उसकोमियानमेंखेंचकरदेखा जबपरीजादकोभी
देंटपकनेलगीं यहदेखतेही उसने छुरीहाथसेफेंकदी ओररोनेलगा अपनेप्रा
यहहाल मालूमहुवा तोरोके कहनेलगी बड़ाखेदहै किभय्यामेरेलिये तूने ओरखुनहरे रंगकेपानीकातमसेकोव
एादियेतुक अभागिने बोलतीचिड़ियागातदरख्त जिसके उत्तरमें उस
ऐंनाकिया ओरकौं मैंने उसहब्शीसे इसघरकेअच्छे होनेकाहालसुना ओरउसपापी मैंने
नेइनवस्तुओंकावर्णनकिया कदाचितवह बुढ़ियान आनीवह बड़ीमक्कार

सच
९३

103

उसका बड़ा सन्मान किया और उसने मेरे साथ यह अपकार किया और रत्न केओं उनवल्लओं का। रक्खा उससे रक्खाथा जो वह चीज़ अब मेरे हाथ भी लगे तो मेरे भाई के मरने के पीछे किसका मकी है और उन्हें लेकर रक्खा कहेगी निदान शाहज़ादी उसके गुण वर्णन करके बहुत रोई परवेज़ भी अपनी बहिन के सदृश अति खेद को प्राप्त हुआ फिर शाहज़ादी से कहा अब मुझे य वश्य है कि मैं ही सफर करूं कि मालूम हो कि मेरा भाई अपने काल से मुआ या किसी ने उसको मारा मैं उसके मारने वाले से जाकर बदला लूंगा परिज़ादने उसे बहुत समझाया कि तुम वहां का इरादा मत करो और समझो इस राह में बड़े भय हैं ऐसा न हो कि दूसरा भाई भी मेरे हाथ से जावे परंतु परवेज़ ने उसका कहना न सुना और दूसरे दिन तय्यार होके अपनी बहिन से विदा होकर चाहा कि सिधारे परीज़ादने कहा मुझे कुंवरों के देखने से वह मन का बुरा भला हा ल मालूम होता था तुम्हारा हाल कैसे कर मालूम होगा परवेज़ने एक मरवारीद की माला उ से देकर कहा तब इस माला के दाने अलग २ देखना और देखना कि चलते हैं तो जानना कि मैं जीता हूं और जब कि इसके दाने एक दूसरे से चिपट जावें तो मालूम करना कि मैं जीता न हो परीज़ादने उस माला को लेकर अपने गले में डाल लिया और हररोज़ उसे देखकर परवेज़ की कुशल का हाल मालूम कर लेती निदान दूसरे दिन शाहज़ादा परवेज़ उस तरफ को सि

पारा औरवीस मंजिलें लाचकर उसीसिंहसे उसीजगहपर जहांवहमनने भेंटकीथीमि।
ला और उसकोप्रणामकरकेपूछाजोतुम्हें मालूमहो किसजगहपरबोलतो चिड़िया और
गाता दरख्त और रहुवर्णकेरंगकाजलहै औरकौंकरमिलेंगे तोमुफकोवता ओ सिंहने व
हांकेसब खबरे उसबताकर कहाएक मनुष्य तुम्हारीहीशकल और आयुकाथोड़े दिन
ऊयेहैं कि उसनेमुफसे इसी बातकाप्रश्नकियाथा मैंन उसेबहुत समझायापरउसनेनमा
ना अंतकोमेरे बतानेसे वहउन्हीतीनोंचीजोंकेतलाशकरनेकोगया फिरवहांसेनलौटा
मालूमऊवाकिवहभी औरोंकेसदृशजो इन्हीचीजोंकेढूंढनेकेलिये गयेथेमरगयाप
रवेजनेकहामें उस मनुष्यको जिसको तुमने वर्णनकिया खूब जानताहूं वहमेराभाईथा
मुझे निश्चयऊवाकि वह मारागया परयह मालूमनहीं किकौंकरमारागया सिंहने कहा
इसहालकोमें तुमसे खूबवर्णनकरसकताहूं वह औरोंकेसदृशपत्थरबनगया जोतुमा
मेरा उपदेशनसुनोगेतो तुमभीवैसेहीबनजाओगे अब उत्तमहै कितुमइस इस इरादेकोछो
ड़ोपरवेजनेकहाजोकुछतुम मेरीभलाईकेवास्तेकहतेहो उसें मैंगुणमानताहूं परआ।
शारखताहूं कि मुझे उसकारस्ताबताओ मेराइस विषयमेंऐसा इरादानहीं किइससे हटजाऊं
सिंहने कहा जोतुम मेरीबातनहीं मानतेतो मैंलाचारहूं और वृद्धावस्थाकेबापने से मैं तु

सव
१५
104

मको एक गेंद देताहूं वहउसमकोरस्ताबतावेगा जबपरवेजसवारहुवातो सिद्धने अपनी झोली
सेगेंदनिकालकरउसको दिया औरउससे कहाकिमउनशब्दोंसेजो पहाड़परसुनोगे और
आवाजकरनेवालेनदेखोगेतोडरनानहीं औरपहाड़परचढ़ेचलेजानावालनेवालीचिड़ि
या औरगानेवालाहुवा औरसोनेकेरंगकाजलतेहैहाथलगेगाइतनाकह उससिद्धनेशा
हजादेकोबिदाकिया शाहजादेनेघोड़ेपरसवारहोगेंदको अपनेआगेडालदिया और
घोड़ेकोपेड़मारउसगेंदके पीछेचलाजबवह पहाड़केनीचेपहुंचा औरगेंदभीठहरगया
तोवहभीघोड़ेसेउतरकरठहरगया औरउनबातोंकोजोसिद्धसेसुनीथी एक एक अपने
दिलमें जमाई फिरबड़ेसाहससे पर्वतकेशिखरपरजानेकाइरादाकिया औरउसपरचढ़ने
लगापांचकदमऊपरगयाहोगाकि अकस्मातमनुष्यकाशब्दपाससेसुनाजो उसकोडराता
औरडांटदेताहै किहे भाग्यहीन आपत्तिकेमारे खड़ाहोजा किमैंतुझे इसढिठाईका
दंडदूं जब परवेजनेबुरीगालीसुनीतो मारेलज्जाकेक्रोधमें आगया औरसिद्धकी सबबा
तेंभूलकरएकहीबारमियानसे तलवारनिकाल पीछेफिराकि उसमनुष्यकोजोगालीदे
ताहै मारे परउसने वहां किसीकोनदेखा औरसाथही शाहजादा औरउसका घोड़ाकाले
पत्थरबनगये परीजादपरवेजके जानेकेउपरांतहुरवक्समोतियोंकी मालाकोदेखाकरतीथी

और उसके मोती गिना करती और रात्रि को वह माला गले में डाल कर सो जाती निदान उस बुरे दे
नको जिसमें परवेज़ अपने भाई के सदृश पत्थर बन गया था माला को देखा: तो उसके मोती
एक दूसरे से ऐसे मिले चिपटे पाये कि किसी तरह एक दूसरे से अलग न हुये इससे परवेज़ा
को निश्चय हुवा कि परवेज़ शाहज़ादे के भी प्राण गये उसने अपने मन में कहा कि ऐसे दोनों
प्यारे भाइयों के मारे जाने के उपरान्त मेरा जीना वृथा है अब जो होना सो हो अब मैं भी यहां से
चल दे फिर दूसरे दिन मरदाने कपड़े पहिन कर नौकरों चाकरों से कहा मैं थोड़े दिनों के लि
ये किसी ओर को जाती हूं तुम मकान और असबाब की खबरदारी करना फिर शस्त्र बांध घो
ड़े पर सवार होके अकेली उसी ओर को चली शाहज़ादी घोड़े पर खूब सवार होती थी और
शिकार भी खूब कर सक्ती थी इसलिये मार्ग के कष्ट उसे कुछ मालूम न हुये जब शाहज़ादी
उस रस्ते को लांघ कर उस सिद्ध के पास पहुंची तो घोड़े से उतर उसके पास जा बैठी और उससे
पूछा कि यहां से आस पास कौनसी ऐसी जगह है जिसमें बोलती चिड़िया और गाने वाला
वृक्ष और स्वर्ण के रंग का जल है दया करके बता दीजिये सिद्ध ने कहा तुम्हारे शहर से मा
लूम होता है कि तुम स्त्री हो मैं उस जगह को जहां वह तीनों चीज़ें हैं खूब जानता हूं तुमको
रखनी हो परीजाद ने कहा मैं ने तीनों चीज़ों का विचित्र वृत्तान्त सुना है मैं चाहती हूं कि उन

सच
१०५

105

कोअपने घरमेंलेजाकरकहा सिद्धनेकहा गालवमैंवह ऐसीहो विचित्र औरसबसर्व वस्तुहैं
औरतुम्हारेपासरहनेकेलायकहैं परंतु तुम्हें मालूमनहीं किउनचीजोंके प्राप्तकरनेमें।
कैसे २ भयहैं तुम्हारेवास्तेयहीहै उनमेंसे किउनका विचारमनिकरो औरयहींसे अप।
नेघरलौटजाओ परीज़ादनेकहाहे पिताजी मैं बहुतदूरसे आईहूंमें अपने मनोरथके सिद्ध।
करनेविनानहींगयसको अबतुमवहांकेडरसुकेवताओकि कहांसे वहआरंभहोतेहैं
औरवहकिसतरहकेहैं उनकोसुनकरमोहे किमैंउनको सहसकूंगीवानहींउस सिद्धनेव
हांकेडरावनेहालजैसेकिबहमन औरपरवेजसेकहेथे इससेभीकहे औरकहाकिवहप
र्वतपर्वतके आसपासेशाखरनकरतेहैं पहिलेबोलनेवालीचिड़ियामिलेगी औरचि
ड़ियाकेवतानेसेगानेवालादरखत औरसोनेकेरंगकापानीभी प्राप्तहोगाउसपर्वतके चढ़
नेमें बड़ेबड़े भयानकशब्द सुनपड़ेंगे और चारों ओर जितनेकालेपत्थरदेखोगेवहसब म
गयेहोउसकायहहै जवउभयानक औरडरावनेदोंको सुनकरक्रोधमें आया औरडरक
रसुखफेरअपने पीछेदेखनेलगातोमुंहफेरनेकेसाथहीवह औरउसका घोड़ापत्थर
बनजाताहै जबवह सिद्धइसहालको विस्तारसर्वकवर्णनकरचुकातो परीज़ादने का।

ष्टा मुझे अब मालूम हुआ कि वह आवाजें केवल डराने और धमकाने के वास्ते हैं इनके विशे
ष और कोई भय नहीं कि कोई मनुष्य सामने होकर उस पर्वत पर चढ़ने से रोकता है सिद्ध यद्यपि
मैं स्त्री हूं परंतु मैं ऐसी दिलेर और बेधड़क हूं कि सब बातों को सह सकूंगी न तो आवाजों को
सुनकर उनको यकलूंगी और न मुझको भय होगा इसके सिवाय मैं ऐसा उपाय करूंगी कि वह
आवाजें मुझको भी सुनाई न देंगी मैं अपने कानों में रुई भर लूंगी सिद्ध ने कहा बी
बी मुझे मालूम होता है कि वह चीजें तेरे ही भाग्य में हैं क्योंकि किसी को आज तक यह उ
पाय न सूझा पर ध्यान रख उन भयानक आवाजों से न डरना परीज़ाद ने कहा ऐसा ही होगा मे
रा मन साक्षी देता है कि मेरे मनोर्थ अवश्य सिद्ध होगा तुम दया करके उस मार्ग को बताओ
सिद्ध ने फिर उससे समझाया कि अपने घर को लौट जावे पर परीज़ाद ने कुछ न माना जब सि
द्ध समझा शाहज़ादी अपने उद्योग पर दृढ़ है तब उस एक गेंद अपनी झोली से निकाल के
दिया और कहा इसको अपने आगे लुढ़का देना और उसके पीछे चली जाना जब व
ह गेंद पहाड़ के नीचे पहुंच कर ठहर जावे तुम घोड़े से उतर पहाड़ पर चढ़ना शाहज़ादी
ने गेंद लेकर घोड़े पर सवार हुई और जिस तरह सिद्ध ने कहा था अपने आगे गेंद को फेंक
कर उसके पीछे घोड़े को तेज़ किया निदान वह गेंद पर्वत के नीचे पहुंच कर ठहर गया शा

सच
१०९

106

हज़ादी तत्क्षण वहां से अपने कानों को रूई से बंद कर पहाड़ पर चढ़ने लगी जब कई पग ऊ-
पर गई तो चारों तरफ से आवाजें आने लगीं पर रूई के सबब से जो कानों में भरी हुई थी आवाजें न सु-
नाई दीं फिर भयानक शब्द हुये इससे भी उसे खबर न हुई फिर वह गाली जो स्त्रियों के लिये हैं उसको सु-
नाई देने लगीं शाहज़ादी ने उन्हें थोड़ा बहुत सहन कर हंस दिया और कुछ बुरा न माना और मन में
कहा इन दुर्वादों और खुशीवानों से मैं अपने मतलब से न रहूंगी इस बकने से क्या होता है निदान
शाहज़ादी ऐसे भयानक स्थान से जहां रुस्तम आदि योधाओं का जहर पानी होता था बड़े साहस
से लांघकर शिखर पर चालाकी से पहुंची वहां उसने एक पिंजरा रकवाज़ आदि खा जहां एक चि-
ड़िया अति मनोहर वाणी से बोल रही थी पर शाहज़ादी को देखकर अपने छोटे डील के होने
पर भी बादल के समान गरजने लगी और कहने लगी पीछे को फिर जा मेरे पास न आ शाहज़ा-
दी उसको यह वचन सुन हिम्मत बांध वहां से दौड़ शिखर पर चढ़ गई वहां पृथ्वी बराबर पाई
और जल्दी जाकर उस पिंजड़े पर अपना हाथ रख दिया और कहा अब मैंने तुझको पाया अब भी
तू मेरे हाथ से न छूटेगी फिर शाहज़ादी ने अपने कानों से रूई निकाल ली और उस चिड़िया से
उत्तर सुना है अति साहसवान बीबी धीर्य रख अब तुझ से न फेर कुछ कहना होगा जैसा कि
और लोगों को पहुंचा यद्यपि मैं इस पिंजड़े में बंद हूं पर तुझे बहुत से छिपे हुये अहवाल मालू-

मर्हे अबसे मैं तुम्हारी लौंडी ऊई ओर तुम मेरी स्वामिनी मुझे तुम्हारा हाल सब मालूम है ओ
र तुम नहीं जानती एक दिन मैं तुम्हारे काम आऊंगी अब जो कुछ आज्ञा दो तो मैं उसे करूं इन
बातों को चिड़िया से सुनकर शाहज़ादी अति प्रसन्न ऊई परंतु साथ ही अपने भाइयों को या
द करके बऊत रंज किया ओर उस चिड़िया से कहा मैं बऊत सी बातों की इच्छा रखती हूं स
ब के पहिले मेरा यह प्रश्न है कि यहां कहीं सोने के रंग का पानी है जिस के अति विचित्र
गुण मैंने सुने हैं यदि तुझे मालूम हो तो मुझे बता उस चिड़िया ने बह जगह जिस में व
ह पानी था बताया तथा च बह वहां जाकर एक चांदी की गिलिया जो अपने साथ ले गई
थी उस जल से भर लाई फिर उस चिड़िया से कहा मैं गाने वाले वृक्ष को भी ढूंढ़ती हूं मु
झे बताव वह कहां है चिड़िया ने कहा तुम्हारी पीठ के पीछे एक जंगल है जिस में तुम उस
वृक्ष को पावोगी ओर वह जंगल बऊत दूर नहीं है परीज़ाद उस जंगल में गई वहां जाकर उ
स दरख्त से बऊत अच्छा गाना सुना वह दरख्त बऊत ऊंचा था फिर उस चिड़िया से कहा मैंने
उस दरख्त को तो पाया पर उसको उखाड़ कर नहीं ला सकी चिड़िया ने कहा तुम एक छोटी।
सी टहनी उसकी तोड़ कर ले आओ ओर अपने बाग में ले जाकर लगादो वह शाख तुम्हारे
लगाते ही तुरंत ही जड़ पकड़ के लग जावेगी ओर अति सुंदर वृक्ष जैसा कि तुम इस जंगल

मेंदेखतीहोहोजावेगा सो शाहज़ादीपकटहुईतोउसलाई इनतीनोंवस्तुओंकेप्राप्तहोनेसे
अतिप्रसन्नहुई फिरउसचिड़ियासे कहायह मतलब तोपूरा होगयापरंतु दोभाई मेरेयहां
इसी अर्थकेलिये और आये अबवहकाले पत्थरहोके यहांपडेहैं चाहतीहूं जोवहभी
जीजावेंतो अपनेसाथ घरलेजाऊं अबकोईऐसा उपायबता किजिससेमेरी यहइच्छा
भीसिद्धहो चिड़ियाने कहातूटिलियासे थोड़ासासोनेकापानीलेकर उससबकालेपत्थ
रोंपरजो इधरउधरपर्वतपरपडेहैं छिड़कदे वह सब इसजलकेप्रभावसेजी उठेंगे उनसब
केसाथतुम्हारेदोनोंभाईभीजी उठेंगेफिरवहशाहज़ादीचिड़ियासे इसबातकोसुनकरप्र
सन्नहुईऔरवहांसे उनतीनोंचीजोंकोलेकर पत्थरोंके निकटआई उसने उसचांदीकीटि
लियासे थोड़ासापानीलेकरजरा २ सबपत्थरोंपरछिड़का छिड़कनेहीवहसबपत्थरजि
नमेंउसकेदोनोंभाईभीथे घोड़ेसमेतजीकर उठखडेहुये शाहज़ादीने अपनेभाइयों।
कोपहिचानकर उनकेगलेलगी और आश्चर्यमेंहोके उनसेकहातुमयहांकाकरतेथे
उन्होंनेकहा हमयहांसोतेथे परीजादने कहातुमको मेरेबिना सोना अच्छामालूमहुवा
औरतुम्हें यादनहींकि तुमबोलतीचिड़िया औरगानेवालेदरख्त औरसुनहरी पानीकेलाने
कोयहां आयेथे औरतुमनेइसजगहपरकाले पत्थरदेखेथे अबतोदेखोकोई उनमेंसे

यहांवाकीहै यहआदमीजो तुम्हारेखड़ेऔरखड़ेहैं तुम्हारे घोड़ोंसमेतपत्थरबनगयेथे अबवह
जोके तुम्हारीराह देखतेहैं जोतुम सच्चा चाहोकि किसकरामातसेतुमजीगयेहोतोमैं तुमसेकह
तीहूं मैंनेइसढिलियासे पानीलेकरसबपरछिड़का उसकेप्रभावसे सब जीगये इसपिंजड़े बोल
तीचिड़िया औरगानेवाले वृक्षको जिसकीटहनीमेरेहाथमेंहै औरसुनहरीरखोके पानीकोआ
सकरकेयह चाहाकिबेतुम्हारेयह तीनोंचीजलेकरघरमेंनजाऊं इसलिये मैंने इसचिड़िया
सेपूछाकिक्योंकरमेरेभाईजीवेंगेकिमैं उनकोघरमेंलेजाऊं उसनेकहा इसपानीके छि
ड़कनेसेजीजावेंगे मैंने थोड़ा २ पानीसबपरछिड़का इसबातके करतेही वहसब जीगये
यहसुनकरबहमन और परजेब अपनी बहिनकी अतिप्रशंसा औरगुण वर्णनकरनेलगे
औरइसीभांति सबलोगशाहजादीको आशीर्वाददेनेलगे औरहरएककहताथाकिहमतु
म्हारेदासहैं जन्मभरतुम्हारे अहसानमंद रहेंगे अबजो आज्ञाहो उसका प्रतिपालन करेंप
रीजादने कहा सबको अपनेभाईकेजिलाने काप्रयोजनथा इसमें तुमको भीलाभहुआमैंतु
म्हारी कृतज्ञतासे अतिप्रसन्नहुई अबतुम अपने अपने घोड़ों परसवारहोकेजिधरसे आयेथे
उधरको चलेजाओ परीजादने उनसबकोबिदाकरके अपनेघोड़े परसवारहोनेका इरादाकि
या वहमननेउसके पहिलेसवारहोके कहाजोआज्ञाहोतोमैं इसपिजड़ेको उठाकरतुम्हारे

सच
९८

108

आगे आगे चले परीज़ादने कहा यह चिड़िया मेरी लौंडी है मैं इसको आप ही ले चलूंगी जो तुम्हा
री खुशी होतो तुम गानेवाले हंसको साथ ले चलो और जब तक मैं घोड़े की पीठ पर सवार हूं तु
म इस पिंजड़े को थामो फिर जब वह सवार हुई पिंजड़े को अपने आगे जीन पर रख लिया और प
रवेज़से कहा कि तुम उस ठिलिया को कि जिसमें सोनेके रंगका पानी है सावधानीसे उठा ले च
लो परवेज़ने उसको उठा लिया फिर जब और लोग भी जो परीज़ादके पानी छिड़कनेसे जिन्दा
हो गये थे घोड़ों पर सवार होकर तय्यार हुये तब परीज़ादने बहमनसे कहा कि भाइयो जो मनु
ष्य तुममेंसे श्रेष्ठ हो वह आगे चले सभोंने कहा है सुंदरी हममेंसे कोई इस योग्य नहीं जो तु
म्हारे आगे चले जब परीज़ादने देखा कि कोई मनुष्य उनमेंसे आगे चलनेका इरादा नहीं रख
ता और चाहते हैं कि मैं ही सबके आगे चलूं तब उसने नमस्कार करके कहा भाइयो मुझे कि
सी तरह से आगे चलनेकी पदवी नहीं पर जो तुम सब आज्ञा देते हो इससे लाचार हूं यह क
हके वह आगे चली और उसके पीछे दोनों शाहज़ादे और उनके पीछे सब सएएं मनुष्य
हो लिये फिर उन सब लोगोंने कहा कि उस सिंहको देखने और उसके राह बतानेका गुण
मानने पर उन्होंने उस सिंहको उस जगह पर जहां वह रहता था जीता न पाया और न मालू
म हुआ कि वह कितनी बड़ी आयुके प्राप्त होनेसे मुवा था इसवास्ते कि वह इन चीज़ोंके पा

ह बतानेवालाथा और अबशाहज़ादीने उनकोपायाइसलिये मरगयासोवहसमुद्र वहां से
सिधारा मार्गांतरमें जिसमनुष्यके देश औरदेशके मार्गपर टहरते वह परीज़ाद औरशाह
ज़ादीसे विदाहोकर उधरकोचलाजातायहांतक वहतीनोंयहिनभाई अकेले रहगये औ
रमें जिललोचकर अपने घरपऊंचे परीजादने वहांजाकर उसचिड़ियाका पिंजरा बागमें
उसतरफजो बारहदरीके पासथा लटका दिया उसचिड़ियाकेबोलतेही बऊतसी चिड़िया
जैसे किबुलबुलहज़ारदास्ता अगनपिद्दा तोता आदि मनोहर वाणीबोलने वाले उसकी
आगज़ूहूननेकोहर २ सेआकरइकट्ठेऊये इसके उपरांत उसने गाने वालेहंसकीडाली उ
सोबागमेंएक जगहपरजो उसबारहदरीके पासथी लगादी वहडाली तुरंतही जड़ पकड़के
हरीहोगई औरजल्दीसेबढ़के एकबऊतऊंचादरख्तहोगई और उसके पत्तोंसेगानेकी
आवाज उसबड़े हंसके सदृश जिसकी यहडालीथी आनेलगी फिरशाहज़ादीने संगमर
मरका एक अति उत्तम होजबनवाकर चमनमें रखवा औरउसमें सोनेके रंगका पानी
भरा वह तुरंत बढ़नेलगायहांतक किवह बरतन भरगया औरएकफव्वारा उछलकरबी
सफुटतक ऊंचेहोकर छूटनेलगा औरवहपानी ऊपरसे उसी बरतनमें गिरता औरकिसीत
रफकोनबहता उनविचित्रवस्तुका वृत्तांत थोड़ेही दिनमें मशहूरहो गयाउसशहरके

सच
५०९
109

रहनेवाले उसबाग औरघरमें आते जिनका दरवाजा सदा खुला रहता था जो के तमाशा औ
र सैर देखने और अति प्रसन्न और आश्चर्य में होने कितने दिनों के उपरांत जब उन दोनों
भाई बहिनों की सफर की मांदगी गई तो बहमन और परवेज़ सर्वदा शिकार खेलने को
जाने लगे तथाच एक दिन दोनो शाहज़ादे शिकार खेलने को कोस भर के फासले पर
गये इतने में फारस का बादशाह भी संयोग से उसी जगह पर शिकार खेलने को आया शाह
जादों ने सवारों की भीड़ देखकर चाहा कि अपने को बादशाह की दृष्टि से बचाय कर फिर जा
वें इस इरादे से उन्होंने शिकार को छोड़कर घर की राह ली संयोग से वह उसी मार्ग से चले जि
धर से बादशाह की सवारी आती थी उन्होंने कितना ही चाहा कि इस सराईं से फिरके और तर
फ को जावें पर राह तंग होने से न फिरे और बादशाह के साम्हने होगये लाचार हो घोड़ों से
उतर बादशाह को दंडवत की और देखन कपृथ्वी पर झुके रहे बादशाह उनके घोड़े औ
र वस्त्र सब अच्छे देख समझा कि शायद मेरे नोकर होंगे और उनकी सूरत देखने को लाल
सा की और वहां ठहर गया और उनको उठने की आज्ञा दी वह दोनों शाहज़ादे उठकर बाद
शाह के आगे दृष्टि नीचे किये खड़े होगये बादशाह उनके रूप अनूप को देख आश्चर्य में आ
वा और देर तक उनको देखा किया फिर उनका नाम पूछा और कहा तुम कहां रहते हो

वहमन शाहजादेने उत्तर दिया कि हजूर हम दोनों आपके बागोंके रक्षकजी स्वर्गवासी हुवा
उसके पुत्र हैं उसने अपने जीते जी शहरके बाहर एक नया मकान तय्यार किया कि हम उ
समें रहें और बड़े होकर श्री हजूरकी सेवाके योग्य हों बादशाहने कहा कि तुम शिकार
करनेके वालेको आयाकरते हो शिकार करनेके वालेको आयाकरते हो शिकार खेलना
तो बादशाहोंका धर्म है न प्रजा और नौकरोंका वहमनने विनयकी कि हे बादशाह हमक
मउमरके होनेसे राजनीति नहीं जानते बादशाह इस उत्तरसे अतिप्रसन्न हुवा और कहा कि
मैं तुम्हारा शिकार खेलना देखना चाहता हूं तुम चाहो जिस तरह शिकार खेलो फिर वह
दोनों शाहजादे अपने अपने घोड़ोंपर सवार होकर बादशाहके साथ हुये जब जंगलमें
गये तो वहमनने शेरको और परवेजने रीछको अति वीरता और चालाकीके साथ बरछों
से मारा और बादशाहके संमुख रख दिया थोड़ी देरके उपरान्त फिर बनमें जाके वहमनने रीछ
और परवेजने शेरका अहेर किया और उनको बादशाहके साम्हने लाये फिर उन्होंने
शिकारका इरादा किया पर बादशाहने उनको मना किया और खुसरवाके कहा तुम अ
बका मेंसब शिकारी जानवरोंको मार डालोगे मुझे केवल तुम्हारी दिलावरी की परीक्षा
लेनी थी बादशाह उनकी वीरता और साहससे अति प्रसन्न हुवा और कहा कि तुम दोनों

मेरेसाथचलकेभोजनकरो बह्मनने कहाकि श्रीईश्वरनेहमारा अतिसत्कारकिया आज
हमनहीं चलसके औरदिनजो आज्ञाहोगी प्रतिपालनकीजावेगी बादशाहने इन्कार
करनेसे अतिआश्चर्यमेंहोकरपूछा इसकाक्याकारणहै वह्मनने विनयकीहमारी प
कछोटीबहिनहै हमतीनोंबहिनभाईयोंमें अति प्रीतिहै इससे सलाहके विनाकहींजा
तेऔरवहभीहमसेवेपूछेकोईकामनहींकरती बादशाहनेकहा हमतुम्हारी प्रीतिको
सुनकर अतिप्रसन्नहुये अच्छाआजतुम अपने घरजाओ और अपनीबहिनसे सलाहक
रकेकलतुमइसीजगहपरशिकारखेलनेको आना औरमुझकोइसबातकाउत्तरकहना वह
दोनोंशाहज़ादे बादशाहसेबिदाहोकर अपने घरआयेपरबहिनसेपूछना औरबादशा
हसेभेटहोनेकाहाल कहनाभूलगये दूसरेदिन जबशिकारमेंगयेतो शिकारसे लौटने
केवक्तबादशाहनेपूछाकीतुमने अपनीबहिनसे मेरेसाथजानेकासम्मतपूछाथा
औरउसनेतुमसे तुम्हेंजानेकोकहाथानहीं वहदोनोंशाहज़ादे डरगये औरउनकेहाव
कास्वाबदलगया औरएकदूसरेकी तरफदेखनेलगा अंतकोवह्मनने कहाकिस्वामी
हमदोनों भूलगये किसीने हममेंसेइसबातकोनकहा बादशाहनेकहा आजपूछनाऔ
रकलसुबहसे आकरकहना संयोगसे उसदिनभी वहदोनों भाईअपनीबहिनसेपूछना

भूलगये तीसरे दिनभी बादशाह उनके भूलजानेपर ऊबकर अप्रसन्न हुवा और सोनेकी तीन गेंद बा
दशाहने अपनी जेबसे निकाल एक कपड़ेमें बांध वहमनको दी और श्रीमुखसे कहा कि तुम
इनको अपनी कमरमें रखना इनसे अब तुम मेरी बात न भूलोगे कदाचित् जो तुम्हें याद भी न आ
वेगी तो जब तुम अपनी कमर खोलोगे तो यह तीनों गेंद तुम्हारी कमरसे पृथ्वीपर गिर पड़ेंगी
उनकी आवाज़से तुमको यह बात याद पड़ जावेगी इस ताकीदके करनेपर भी उस दिन भी वह
दोनों शाहज़ादे अपने घरमें जाकर इस बातको भूलगये पर शाहज़ादा वहमन जब सोनेके क
पड़े उतारकर जाने लगा तब वह तीनों गेंद उसकी कमरसे धरतीपर गिर पड़ी उनकी आवाज़
से उसको बादशाहकी बात याद आगई सो वह दोनों शाहज़ादे परीज़ादके मकानमें गये
अभी उसने आगमन किया था उससे संमत पूछा परीज़ादने भाइयोंकी भूलपर कि तीनों दिन
तक बादशाहकी बात भूलगयेथे अति पश्चात्ताप किया और कहा यह तुम्हारा बड़ा भाग्य था
कि तुमको इसतरहसे बादशाहसे भेंट होगई इस बातसे तुमको बड़ा लाभ होगा परन्तु मुझे ब
ड़ा खेद हुवा कि तुमने बादशाहकी आज्ञाको न माना कि तुम सोचो जो तुमको मुझसे अ
धिक रंज हुवा होगा तुमने बड़ी ढिठाई की बादशाहकी आज्ञा न मानकर उसके घरतक न
गये अबमैं इस बातको बोलती चिड़ियासे पूछती हूं दौलत बहुत का करती है जो कुछ हुवा सो हा

सव
।।।

कहेउसकोकरताजवपरीजादने बालतीचिड़ियाकोउतारकर अपनेपासरक्खावातो सब्बेनेलगीहे
चिड़ियातकफकोउत्तमभेदमालूमहे औरतेरी अतिनोबबुद्धिहे एकबातमें तफसे सब्बेतोड़
किसंयोगसेमेरेदोनोंभाईयोंकीबादशाहसेभेंटहोगई बादशाह उनपरअतिदयावानहे कि
वहउसको इच्छाहे किउनको अपनामेहमानबनाये निदानसबबीताऊवाहाल शाहजादोंने
वर्णनकिया औरकहा अबनेरीक्यासलाहहे चिड़ियाने कहाहे स्वामिनो शाहजादोंको
बादशाहकी आज्ञाअवश्यमाननी चाहिये क्योंकि वह इससमयका अधिपतिहे उनके
मेहमानबननेमें कुछहानिनहो हिनिएवंकबादशाहके महलोंमेंपधारेंकिंतु शाहजा
दोंकोउचितहे किबादशाहकेनिमंत्रणकेलियेबड़ी धूमधामकेसाथ सामान तय्यारक
रेंऔर अपनेघरबुलावेंजिसमेंकियहउसकी प्रीतिहो परीजादनेकहाहे चिड़िया मेंप्रीतिसे न
हीं चाहतीकि शाहजादेएकचुटकीभरभीमेरी दृष्टिके ओटहों उसचिड़ियानेकहायहबा
तसचहे परउनकोवहांजानेमें कुछडरनहीं परिजादने कहा बजान सच्चापरयह ब
कदाचितमें सामनेनआऊंतोनाहककोबादशाह अप्रसन्नहोगाक्योंकिबादशाह अप
नीप्रजाकोसंतानकेसमान समझताहे औरप्रजाउसको अपनेपिताके समानजाननीहेज

वृद्धमान जवानो दोनों शाहज़ादे शिकार में पहुंचे इतने में बादशाह भी वहां आन पहुंच और वह

मन से पूछा कि तुम्हारी बहिन ने हमारे प्रश्न का क्या उत्तर दिया आज भी कल की तरह भूल गये बह

मन ने आगे बढ़कर विनय की है शहनशाह हम आपके आज्ञाफलक हैं हमारी छोटी बहिन

ने भी हमको आज्ञा दे दी है कि तुम उसने बहुत से उबीद कहे कि क्यों तुमने बादशाह की आज्ञा

न मानी बादशाह ने यह वचन सुनकर कहा मैं तुमसे किसी तरह से अप्रसन्न नहीं कि तुम मन

से प्रसन्न हूं निदान वह दोनों शाहजादे अपने ऊपर बादशाह की ऐसी प्रसन्नता पाकर त

जित होगये इधर बादशाह शिकार खेलने लगा जब थोड़ी देर के उपरान्त बादशाह ने उन

शाहजादों को अपने साथ ले कर खिलते न दोखानो पास बुलाकर बहुत सा थोपदिया और

लेकर वही अपने महल को सिधारा वह दोनों शाहजादे भी बादशाह के साथ थे निदान बाद

शाह उनको अति प्रीति से अपने साथ महल में ले चला और उनकी अति प्रतिष्ठा की बादशा

ह के सब नोकर यह दशा देख बड़ाह की अग्नि से भस्म होगये और नगर के रहने वाले भी उ

नकी इतनी प्रतिष्ठा देखकर आश्चर्य में थे और आपस में कहते थे यह दोनों मनुष्य कोन

हैं कि जिनकी बादशाह इतनी प्रतिष्ठा करता है हम लोग इनको नहीं जानते कि वह इनकी

प्यारी प्यारी सूरत देखकर कहते कि ऐसे सुन्दर शाहज़ादे उसी मलका के उदर से जो बादशा

हकेकौपमेंहैं उत्पन्न होतें तो इतनेही बड़े होते जब बादशाह शाहजादों सहित अपने महलमें
आया तो भोजनका समय होगया दासोंने दिव्यथालियां आदि पात्र बिछा अनेक प्रकारके
भोजन परसे जब बादशाह भोजनपर बैठा तो उनदोनों शाहजादोंको भी बैठनेका इशारह
किया वहमन और परवेज़ कि बादशाहसे वर्त्तावकी रीतिको न जानते थे प्रणाम करके भो
जनपर बैठगये और बादशाहके साथ भोजन किया बादशाहकी इच्छा हुई कि इनकी बु
द्धि और वाचालताकी परीक्षा ले सो बादशाह हरएक बातको उनसे छेड़कर एकान्त वह दो
नों शाहजादे कि संपूर्ण विद्या और हुनरोंको खूब सीखे हुये थे उन्होंने सबके यथार्थ उत्तर
दिये जिनसे बादशाह अतिप्रसन्न होगया और अपने मनमें शोचने लगा कदाचित् ऐसे दो
पुत्र ईश्वर मुझको देता तो बहुत अच्छा होता और उनकी अतिप्रीति होगई और देरतक भो
जनपर बैठकर उनको बातें सुनता रहा जब सुचित हुवा तो बादशाह उनदोनों भाइयों को
अपने साथ लिये हुये अपने केलिगृहमें लेगया और उसका जी उनके मीठे वचनोंसे न भरा
देरतक बोलता रहा उनकी अतिप्रशंसा करने लगा फिर बादशाहने गाने बजानेकी आ
ज्ञा दी सो गाने बजानेवाले अपना अपना साज और सामान लेकर आये और नाच रंग हो
नेलगा नहां अतिसुंदर चंद्रमुखी स्त्रियों ने ताल और स्वरके साथ राग गाया और नकारों

ने नकलेंकीजिससेदोनों शाहज़ादे अतिप्रसन्नहोगयेनिदान सारादिनबड़े आनंदमंगलमें
बीता इतनेमें संध्याहोगई बहमन औरपरवेज़ दोनों शाहज़ादे बादशाहसेबिदाहोकर अ
पनेघरकोसिधारे परन्तुबादशाहने उनकोबिदाहोते वक्तकहाकिकल तुमनियमित समयप
रशिकारको आनामेंतुमको फिर अपने महलमेंलाऊंगाकिंतुमेरी इच्छाहै कितुमबड़ाया।
हमारेसंसुखरहाकरी शाहजादोंने कहाहमारीमनकी यहइच्छाहै किजबहुजूर शिका
रकेलिये मैदानमें सुशोभितहों औरजबशिकारखेलकर सचिन्तहोजावें तबहमारी ऊ
टीमें विराजमानहों यहबातहमारी प्रतिष्ठाकाहेतुहै बादशाहने किउनसे अतिप्रसन्न
था उत्तरदियाकिमुझे तुम्हारीइच्छाहरहालमेंस्वीकारहै हम अवश्यतुम्हारेघरमेंचले
में औरतुम्हारी बहिनकेजिसकीवाचालता औरखूबीहै तुम्हारेबोलने सेप्रगटहै मेहमानव
नेंगे अभानकोहमतुम्हें मिलेंगे जहांआजमिलेथे जबदोनों शाहज़ादेघरपहुंचेतोसारा
हाल घाहीमहलका अपनी बहिनसेवर्णनकरकहाकिहेपरीजाद बादशाहनेकल
शिकारसेलौटकरहमारे घरमें आनेकी प्रतिज्ञाकीहै औरआजहमारी बड़ीप्रतिष्ठाकी
इसलियेहमारी इच्छाहै किहमभीबादशाहकीप्रतिज्ञाके अनुसारसामान तय्यारकरें
परीजादने कहा भाईयो वास्तवमेंतुमबड़े होसलेवरहोजरामहजाओंमें इसविषय

सच
११२
113

में बोलती चिड़िया से संमत सखुं उसकी सलाह के अनुसार काम करूंगी सो परीज़ाद ने उस चिड़ि।
या का पिंजड़ा उठाकर अपने साम्हने रक्खा और पहिला सारा हाल वर्णन किया कि बादशाह ह
मारे घर में स्वयं पाहुने होंगे इसमें क्या सलाह है और कौन २ खाने बनवाये जावें चाहे वह बड़े ।
टोसी चिड़िया थी परन्तु बुद्धि उसकी अलौकिक थी कहने लगी हे स्वामिनी बड़े भाग की बात है
कि बादशाह तुम्हारे घर में आवें हर एक तरह से भोजन आदि तय्यार हों अच्छी रीति से हों कु
छ चिन्ता की बात नहीं परन्तु सब भोजन के पहिले एक थाली खीर की आश की जिस पर
आबदार मोती चुने हों तय्यार करके बादशाह के साम्हने रक्खी जावे यह बात सुनकर परी
ज़ाद आश्चर्य में होकर कहने लगी ऐ चिड़िया मैंने आज तक खीर की आश मोतियों के सा।
थ नहीं सुनी निश्चय है कि बादशाह भी ऐसा भोजन देखकर आश्चर्य में होकर हमारी नि
र्बुद्धिता पर हंसेंगे सिवा इसके आबदार मोती हमारे पास कहां हैं उस चिड़िया ने कहा कि मो
तियों का एकट्ठा करना कुछ कठिन नहीं है स्वामिनी जो कुछ मैं कहती हूं उसे करो औ
र मोतियों के मिलने का उपाय बताती हूं कल प्रभात को तुम अपने रमने में जाकर दाहिनी
ओर अमुक वृक्ष के नीचे खुदवाना वहां से बहुत से मोती मिलेंगे जब यह बात बोलती चिड़ि
या कह चुकी तो चुप हो रही दूसरे दिन भोर को परीज़ाद रमने में गई और उस वृक्ष के नीचे

पहुंची फिर एक बागवानको बुलाकर कहा कि इस जगह पर खोद सो बागवान वहां की धरती
खोदने लगा अकस्मात एक बहुत साफ वस्त्र मट्टीमें मालूम हुई तब मालीने मिट्टी को हटा
कर एक सन्दूक्ची संदूकचा देखा जो अति सुंदर साफ चौकोण था मालीने यह सब हाल
परीजादसे कहा उसने प्रसन्न होकर उत्तर दिया मैं तुझे इसी काम वास्ते लाई थी बड़ी साव
धानीसे निकाल कर मेरे पास ला मालीने उसको निकाल कर शाहज़ादीके हवाले किया परि
जादने जब उसको खोलकर देखा कि वह मुंह तक आबदार मोतियों से भरा है शाहज़ादी
उनको देखकर अति प्रसन्न हुई और उसको लेकर अपने खास मकानमें जाती थी वह मन
और रबरबेज खुबह केवक्त मालीको परीज़ादके साथ बागकी तरफ जाते देख अति आश्च
र्यमें थे कि आज नियमके प्रतिकूल यह क्या बवहार है सो बड़ी जल्दी कपड़े पहिन बागकी
ओर चले कि हर्ष से का देखा कि परीज़ाद अपने हाथों में कोई वस्तु लिये चली आती है जब।
पास पहुंचे तो क्या देखा कि एक सोनेका बक्स उसके बगलमें दबा है एकाबादे जब तमा।
मालीको लेकर बागको और जाती थी तो उस वक्त तुम्हारे हाथ खाली थे अब संदूकचा सोनेका
तुम्हारे पास देखते हैं बताओ कि यह कहांसे हाथ आया परीज़ादने कहा कि मैं चिड़ियाके व
ताने से खबर को बागबान को लेकर अपने रमने में फलाने दरख्तके नीचे गई थी ईश्वर।

सच
११४

114

कीसूरत छपा औरबाग्पेसेयह सहकचा गुफकोमिला इसबातकोसुनकरवह अतिप्रसन्न भये
फिरपरीजादने वह मनसेकहा कि मेरेसाथ आओ कुछकहूंगी यकबड़ीकठिनताहै परं
वेजने कहावहकिनऐसाकोनउत्तमभेदहै जोहमारेसुननेकेलायकनहो आजतकतुमनेको
ई बातहमसे नहींछिपाई परीजादने कहा अपनी प्यारीदो नैनोंकी सौगंदहै कोईबातऐ
सोनहीं जिसकातुमसे पर्दाहो फिरपरीज़ादने दोनोंभाइयोंको अलगले जाकरसारा हा
लउससेमनकाजोचिड़ियानेदियाथाबतायाइसबातको सुनकरवह तीनोंदेरतक शोच
तेरहे किइसबोलतीचिड़ियानेखीरकी आशकोमोतियोंके साथभोजनकेसमयखवानाको
शोचाहै जबकुछनसमझसके तोपरस्पर कहने लगेबोलती चिड़िया अतिचतुरहै कोई
लाभकीबात उसने विचारीहोगीफिर परीजादने अपने कमरेमेंजाकर रसोइयेकोबुलाया
और आज्ञादीकि कलदश बजेतकसबप्रकारके भोजनेबादशाहके भोजनके योग्य त
य्यार होंहो उनके खीरकीआशकोकुछ अवश्यकता नहींपरयह भोजन अति उत्तमरीति
से बनाइयोरसोइयेने पूछावह कौनसी वस्तुहै परीज़ादनेकहा किखीरकी आशका था
ल तय्यारकरना औरउसपर बजन आबदारमोती चुनेहो ऐसा सजाहो कि उसपरमोतीही
मोतीदीखें रसोइयेनखीरकी आशमोतियोंके साथ सुनकरअतिआश्चर्यकिया औरम

नेमें कहने लगा कि आज तक ऐसा खाना किसी ने पृथ्वी भर में न खाया होगा है सो को सुना है
कि वह मोती चुगते हैं निदान परीज़ाद ने वह सेहक चारसोइये को दे दिया और आज्ञा दी
कि जितने मोती उस थाल में लगें उतने खर्च करना जो बाकी रह जावें वह वक्त में रहने देना
नहून होने पावे रसोइया परीज़ाद के वचन सुन कर चित्रवत चुपका रहा और मोतियों का व
क्त लेकर विदा हुवा और रसोई में जाकर तयारी करने लगा परीज़ाद ने अपना महल और बा
ग फुलवाय साफ कराय अति उत्तम बिछौने आदि फ़ाइफ़ानूस से अलंकृत किया फिर जब
दोनों शाहज़ादे उत्तम वस्त्र पहिन कर घोड़े पर सवार हुये नौमैदान में पहुंच कर बादशाह से
भेंट हुई और बहुत देर तक शिकार खेलते रहे उस दिन बहुत समय से गरमी थी इससे बादशा
हने अहेर खेलना छोड़ दिया और उन शाहज़ादों के साथ चला जब उनके महल के निक
ट पहुंचा तो शाहज़ादे बहमन ने आगे बढ़कर अपनी बहिन परीज़ाद को बादशाह के आ
ने का हाल कहा कि बादशाह की सवारी यहां तक आ पहुंची वह यह सुनते ही उठ खड़ी
हुई और अगवानी के लिये आगे बढ़ी और दरवाजे की देहली में जाकर खड़ी हुई बादशाह
उस दिन घोड़े पर सवार थे जब घोड़े से उतर कर भीतर आये तो परीज़ाद ने दौड़ कर अपना शि
र बादशाह के चरणों पर धरा बहमन और परवेज़ दोनों बादशाह के साथ थे उन्होंने

सच
११५
115

परीजादकोपहिचनवाया बादशाहने अतिशीघ्रतासे अपनेहाथोंसे परीजादकाशिर अपने चरणोंसे उठाया औरउसकेरूप अनूपकोसाफदृष्टिसेदेख अतिप्रसन्नहुवा औरमनमेंशोचनेलगा किईश्वरकी कृपासे यहस्त्रीनेंवहिनभाईएक रतनकेहैं फिर परीजाद बादशाहको अपने साथलिये महलमें पहुंची और अच्छेस्थानपरबैठाया बादशाह उसविचित्र महलकोदेख अतिप्रसन्नहोकर परीजादसे कहनेलगाहेसुंदरी तुम्हारामहल अतिसुंदरहै अबमैं बागदेखना चाहताहूं परीजादनेप्रसन्नहो कमरेकाएकदरवाजा जिससे यहसाराबागदिखाताथा खोलदिया पहिलेबादशाहकी दृष्टि फवारेपरपड़ीजोबहुत। साफथा औरउसके आगे सोनेकापानीऊंचेवरस नहीं बादशाह यहसबदेखकर अति आश्चर्यमेंहुवा औरपरीजादसेसरह्याकि यहकैसा अच्छाफवारहै मैंनेकभीयेसाफ। वारह नहींदेखासुनहरी जलकहां रहताहै औरकिसके जोरसे इतनाऊंचेहोकरेछूटताहैमें इसकोपाससे देखूंगा परीजादनेकहा बहुत अच्छा आपपास चलकर दृष्टिसेदेखकअवलोकनकीजिये यहकहकरवह बादशाहको अपनेसाथफवारेके पासलेगई बादशाह अतिरुचिसेध्यानधरके फवारेकोदेखरहाथाकि इतनेमें गानेकी अतिललितबाणी कानमें सुनाईदी औरतानोंसे वहगाना बहुत ठीकथा बादशाहकामन अतिमोहि

नहीं होगया श्रौर चारों तरफ मुख फेरके नजर दौड़ाई श्रौर बहुत नेतरा इधर उधर हरतक देखा पर
गवय्या नजर न श्राया इससे श्रति विस्मित हुश्रा कि हे ईश्वर यह क्या भेद है परीज़ाद से सवाल किया
ह श्रावाज गानेकी कहांसे श्राती है क्या तुम्हारे मकानमें जो पश्चिम में पुनः श्रवतार धारण करके श्राया
रहे हैं परीज़ाद ने मुसकराके कहा कि कोई श्रादमी गाने वाला नहीं यह श्रावाज़ श्रमुक हौज़ से
श्राती है श्राप दो चार पैर श्रागे बढ़कर उस हौज़ को देखें बादशाह तोड़ सहौज़ की जानिब साहीर
ख़ता था श्रागे बढ़कर गाने वाले दरख़्त के पास जा पहुंचा उस हौज़ से विचित्र तान श्रौर राग सुन
कर मस्त होगया जब कुछ चैतन्य हुश्रा तो श्रति श्राश्चर्य से कभी तो फव्वारे को देखता कभी
कान लगाकर गाने वाले हौज़ का राग सुनता निदान चुप न रह सका लाचार होकर परीज़ाद
से सवाल किया कि मैंने ऐसा दरख़्त श्राज तक नहीं देखा तुम्हारे हाथ कहां से लगा यह हौज़ तो बड़ी
बहार की है जीने की बहार यही है कि मनुष्य की श्रायु चैन श्रौर श्राराम में बीते परीज़ाद ने
कहा इसका नाम गाने वाला हौज़ है इस देश में इसका नाम निशान नहीं इसकी मैं बहुत
हर से लाई हूं जिस फव्वारे के पानी का सोने का सा रंग है इसका वर्णन मैं श्रवकाश पर करूं
गी श्रब श्राप बोलती चिड़िया को श्रवलोकन कीजिये बादशाह ने प्रसन्न होकर कहा उ
सकी मुझे दिखाश्रो कि वह कहां है श्रौर कि सोने की है वह भी श्रपूर्व होगी परीज़ाद बाद

सच
११९
516

दशाहको अपनेसाथलियेवहांसेफिरी किबोलनी चिड़ियाकातमाशादिखावे निदानफिर
नेवक्तफिर बादशाहफवारेके पास आया औरउसफवारेकोबहुतध्यानसेदेख कहनेलगा
कियह फवारहनेमें सोनेकापानी लहरारहाहै इसकाखजाना कहीं नहीं दिखता कि कहांसे
पानी फवारेनिकल ऊंचताहै न कोई ऐसाबड़ा बरतन दिखाई देताहै परीजादने कहाहुजूर
इसफवारेकाखजाना नहीं है ईश्वरने इसजलमें यहसामर्थ्य दीहैकि आपही आपहौज
में आगिरताहै वहांसे आगमैं नऊ उछलताहै यह दिनरातएकही तरहपरजारी रहताहै
औरसंगमरमरकेबरतनसेपानी बाहरनहीं जाता औरकभी घटताभी नहीं बादशाह यहसा
राहालसुनकर औरभी आश्चर्यमेंहुवा परीजादसेऐसी ऐसी विचित्रबातें सुनताहुवा बादशा
हकोबारहदरीतक लाई यहां औरभीतमाशादिखायाकि हजारोंसुंदरवाणी बोलजानवर
प्रियशब्दसेफलदारदरख्तोंपरबैठेहुये चहचहारहे हैं बादशाह अति आश्चर्यमेंहोकर क
हनेलगाहै परीजाद यहकौनसा जादूकाजालबिछाहै कि रंगबरंगेजानवर इतनेद
रख्तोंपरबैठेहैं किमानोंसंसारके सबजानवरयहीं हैं परीजादने कहाहुजूर यहसब प
क्षी रसीबोलनी चिड़िया केसबबसेहैं जिसकापिंजड़ाबारहदरीके छतमेंलटकरहाहै
आपआगेबढ़कर औरअच्छे अच्छे रागसुनाई देंगे जबबादशाहबारहदरीके भीतरग

यातोक्यादेखाकि बोलती चिड़िया एकसुनहरी रत्नजड़ितपिंजड़ेमें प्रियवाणीसे चहचहार
हीहै जबबादशाह उसके साम्हने पऊंचातो परीजादने कहाहै मेरी बोलतीचिड़ियाक्यादे
खतीनहीं हैकि श्रीहजूरदरबारह दरीमें सुशोभितऊयेहैं यहसुनकर वह चिड़िया चुपहो र
ही उसकेसाथही सबचिड़िया चुपहोगई पहिलेचिड़ियाने बादशाहकी कुशल प्रश्नकी
बादशाहनेभी यथोचित उत्तरदिया फिरचिड़ियाने बादशाहको आशीर्वाददिया इतना
कहकर मलका शाहरजाद बादशाह शाहरयारसे कहनेलगी किउसबारह दरीमें
अतिउत्तम औरस्वादिष्ट भोजन दिवसोने चांदीकिपात्रोंपरपरसेऊयेथे जबबादशाहभो
जन परबैठातो संयोगसे उसकीदृष्टि उसीथालपरपड़ी बादशाहनेहाथबढ़ाकर उस
थालको अपने साम्हनेंखीचकरचाहाकि उसमें से उठाकरभोजनकरे परक्यादेखताहै
किहजारोंमोती खीरेकी आशपरचुनेऊयेहैं इसबातको देखकरवह अति आश्चर्यमेंऊवा
औरमनमें शोचाकि यह भोजननये प्रकारकाबनाहै उससे हाथहटाकर परीजाद और।
दोनोंभाइयोंसेसपूछाकि यहवस्तु भोजनकेयोग्य नहीं क्याकारणहै किहमासेभोजनकोलि
ये परसीगई परीजाद और उसके भाईतो इसकाकारणनजानतेथे चुपहोगये परबोलती
चिड़ियाकहनेलगीकि ईश्वरकीमामायाहै कि श्रीहजूरखीरेको आशपर आबदार मोती।

सच
११७

117

सुनेहुये देखकर इतने आश्चर्य्यमेंहुयेबड़े आश्चर्य्यकी बातहै कि जबमलकालड़केकेबद
लेकुत्ताविल्ली अपनेपेटसेजनी तब अचंभानआयाक्या मनुष्यके पेटसेजीव जंतुभी पैदाहो
तेहैं अभीतो बादशाह चिड़ियाके मुख्यआशयकोनसमझाथा कहनेलगा कि हे चिड़िया
तेरा वचनसत्यहै और मैंभी जानताहूं कि यह वातेंबुद्धिसेदूरहैं परउनदोनोंस्त्रियों नेजो
मलकाकेप्रसूतिके समयउपस्थितथीं आकर मुझसेकहा मैंने उनकीबातनिश्चयकी औ
रयहनहीं समझा कि उनकाछलहै वह दोनों औरतें गैरनथीं बरनमलकाकीसगीब
हिनेंथीं फिरमैंक्योंकर उनकीबातझूटमानता चिड़ियाने कहाहां मैंभीजानतीहूं कि वहदो
नोंउस औरतें मलकाकीबहनेंहैं परवह इसबातसे कि आपकी मलकापर अतिकृपाह
ैथी इससेमारे ईर्षाके जलगईं औरमलकाके हानिकाउपाय विचारनेलगीं निदान उ
न्होंने यह छलकिया कि श्रीहजूरकामन उससे फिरगया पर अबउनकाछल खुलगया
शाहजादा बहमन परवेज़ औरपरीजाद यह तीनों बहिनभाई बैठेचिड़िया कीबातेंसुनर
हेथे कि उसबोलतीचिड़ियाने बादशाहसे इशारह किया कि यह दोनोंसुंदर जवानतु
म्हारे पुत्रहैं औरयह सुंदरीमृगनयनी चम्पकवरणी आपकीपुत्रीहै मलका तुम्हारी य
होकुत्ताविल्ली औरछछूंदरजनीथी उनदोनोंस्त्रियोंने मारेईर्षाकेजन्मके समयइनकोक

मलके टुकड़े में लपेटकर और उसको पिटारी में धर नहर में फेंक दिया कि यह ज़ेवर दरया
में बहजावें पर इनको आयुशेष थी वह पिटारी बहते २ बादशाही बागोंके दारोगाके हाथ
लगी जिसके संतान न होती थी उसने इनको अपना संतान समझकर पालन पोषण किया ज
ब यह कुछ बड़े भये तो खूब इनको पढ़ाया लिखाया है बादशाह आप ध्यानसे सुनिये यह दो
नों शाहजादे और शाहजादी आपकी संतान हैं जब बादशाहको उन स्त्रियोंकी दुष्टता सू
चित हुई और उनका फरेब खुलगया तो उस चिड़िया से कहा कि अब सब मुझको इनका हा
ल मालूम हुआ पहिले जब मैंने शाहजादोंको शिकारमें देखाथा तो लड़कोंने ऐसा जोश किया
कि मेरे मनको उनकी तरफ खींचता था मुझको निश्चय हुआ कि यह तीनों मेरी संतान हैं यह
कहकर आंखोंमें आंसू भर लाया और प्रीतिसे उन तीनोंको अपने कंठसे लगाया और क
हा अब तुम मुझको अपना बाप समझो वह तीनों यह बात सुनकर दौड़कर बादशाहके
कंठ लगे और परस्पर बैठकर रुचि पूर्वक भोजन करने लगे जब खाचुके और पात्र उठग
ये तो बादशाहने कहा कि अब मैं बिदा होता हूं कल मैं फिर तुम्हारे घर आऊंगा अब तुम
प्रसन्न रहो कि मैं तुम्हारी माताको अपने साथ यहां लाऊंगा उनके चरण छूना यह कहकर बा
दशाह विदा हुवा बादशाह अपने वायुगामी घोड़े पर सवार होकर बेगही अपने मनमह

सहृ
११८

118

लमेंपहुंच औरलश्करंतहीवजीरको बुलाकर आज्ञादीकि वहदो औरतें अर्थात मलकाकोव
हिनेंजोअस्तानकेसमयभीतरथीं औरउनका अति निश्चयथा वहअतिदुष्टा औरअपनेकु
टंबकी बैरननिकली जिनताउनको दंडदियाजावे वहउनके योग्यहै बधिकको आज्ञा।
दोकि उनकोबधकरडालेयरतौ उनकेहाथरकी पियासीहै वजीरनेलश्करनहो बादशाह।
को आज्ञाप्रतिपालनकीजैसा कियाथा वैसापाया तदनंतर बादशाह उसजामामसजि
दमेंजहांमलका कैदथी गयाकईवर्षउसको उसकष्टकेभुगतनेमें बीतगयेथे उसमेंसे
उसको निकाला औरप्रीति पूर्वकगलेसेलगाया और उसकोउदंशापरबहुत रुदा औ
रउसकोमलेलोगोंकेफटेपुरानेवस्त्रदावकर बहुतरुदन करने लगा औरकहा किय
ह अपराध अनजान पुनसे हुवा ईश्वरकेवास्तेक्षमाकरमुझको नेरीदोनो बहनोंनेजाल
औरफरेबकाबिछौना बिछाकरतुझपरकोपकराया अबउन्होंने अपनेकियेका
दंडपाया अर्थात बधकरडालीगईं बादशाहनेहजारनरहसे उसमलकाका आशा।
श्वासकिया औरउसबोलती चिड़ियाकीकहानीकहसुनाई औरकहा कि अब तुममेरे
साथ वहांचलो मलकानेजबयह हालसुनातो प्रसन्नहोगई और पहिले स्नानकिया
औरअतिउत्तमवस्त्र पहिनसुंदर आभूषणादिसे अलंकृतहुई औरवहां पहुंचकर अपनी

संतानसे मिलीईश्वरने दिनफेरे भाग्यउदयहुई किएकवारगी ऐश्वर्य धनधामादि संतान सु
ख प्राप्तहुवा यहखबर सारेराज्यमें फैलगई औरपरवेज औरपरीजाद तीनों बहिनभाई राज्य
के वारिसहुये औरइनको निश्चयहुवा किहमशाहजादेहैं फिर बादशाह औरमलका और
उन तीनोंने बैठकरभोजनकिया जबस्वचितहुये तबबादशाह मलकाकोउसबागकी सैरा
करनेकेवास्तेगया औरगाने वालेदरख्तकागानासुनाया औरफवारेदिखायाफिरबारहद
रीमें आकर उसबोलनेवालीचिड़ियाका तमाशा देखा इसके उपरांतबादशाह घोड़ेपरसवारहु
वा औरदोनों शाहजादे अपने अपने घोड़ोंपरयक दाहिने दूसराबांई और साथथे औरम
लका खासपालकी परसवारहुई उसदिनबाजारबहुत अच्छा सजाथा औरशहरके सबछो
टे बड़े इस सवारीके देखनेको इकट्ठेथे उसदिनबादशाहने इतना कंचन बरसाया कि धरती
सोनेकीबनगई औरयाचक मंगन औरगरीब धनवान बनगये इस तरहसे बादशाहो मह
लमें पहुंचे औरऐसेऐ सभासद औरछोटे बड़ेने बड़े २ पारितोषिकपाये बादशाहने ब
हमनकोजो बड़ापुत्रथा युवराजकिया औरदेशके प्रबंधआदिको उसीकेसंमतपरछोड़ा
औरपरवेजको जनरैली पदपरनियतकर औरपृथ्वी जलकीसेनाकी देखभाल उसके आधी
नकी औरपरीज़ादकी बड़े शाहजादेसेव्याह दिया यहमनोहरकथाबादशाह शहरयार।

सच

११५

सुनकर अतिप्रसन्नहुवा औरक्रोधजोउसके ह्रिदयपरजमाथा जातारहा औरह्रिदय उसका निर्मलहोगया औरमलकाके बधकरने सेहाथ उठाया और मनसे प्रसन्नहोकर उसप्रानदानदिये औरबहुतेति किहरदिन एकनई स्त्रीसेब्याह करकेदूसरेदिन उसको बधकरना यहसबबातें बेदकी औरराजमंत्री जोमलका कापिताथा उसकी चिंता। जातीरही औरप्रजासभी आनंदितहुई ॥ इतिश्रीपंडितप्यारेलालकृतेसहस्त्ररजनीचरित्रेचतुर्थोभागः समाप्त संवत् १९ ४८ ॥ लेखितम् चंद्रकोल लाबोरे ॥

११९